दशोपनिषद्भाषांतर ।

श्रीः ।

दशोपनिषद्भाषांतर ।

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य-
श्रीअच्युतानन्दगिरिजीने विरचित ।

जिसमें

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, माण्डूक्य, तित्तिरि,
ऐतरेय, छांदोग्य, बृहदारण्यक इन दश
उपनिषदोंका यथावत् सुस्पष्ट शांकर
भाष्यानुसार अर्थ वर्णन किया है.

यह पुस्तक
खेमराज श्रीकृष्णदासने
स्वकीय " श्रीवेङ्कटेश्वर " मुद्रणालयमें
छापके प्रसिद्ध किया ।

मुंबई.

शके १८१७ सं० १९५२

प्रस्तावना।

परब्रह्मरूपी परमेश्वरकी जगत् उत्पन्नकरणेकी इच्छा भई तब तत्काल मायाने आकर परमात्माका समागम किया. तब परमात्मासे ॐकार ध्वनि उत्पन्न भया, फिर उस ॐकारसेही संपूर्ण वेद और तद्वारा सर्व जगत् विस्तारको प्राप्त भया. यह बात सर्वत्र पुराणादिकोंमें सुप्रसिद्धतम है. उनवेदोंके मुख्य तीन कांड हैं.–१ ज्ञानकांड, २ उपासनाकांड, ३ कर्मकांड, इन तीनकांडोंमें वेदका मुख्य तात्पर्य ज्ञानकांडमें अधिक है. इतर दो कांडोंका गौण तात्पर्यहै. उस ज्ञानकांडके प्रतिपादन करनेवास्ते जो वेदका मुख्य भाग है. उसको उपनिषद् ऐसा कहते हैं. इस उपनिषद्भागको वेदशीर्ष ऐसाभी द्वितीय नाम है. ऐसा यह उपनिषद्भाग केवल ज्ञानसंपादक है. इसकेभी अनेक अनेक विभाग हैं. जिन्होंमें अनेक अनेक संवादरूपसे ब्रह्मात्मतत्त्वज्ञानका उपदेश कियाहै. उन्होंमें अतिशय मुख्य ऐसे दश उपनिषद् हैं. १ ईश, २ केन, ३ कठ, ४ प्रश्न, ५ मुंड, ६ माण्डूक्य, ७ तित्तिरि, ८ ऐतरेय, ९ छांदोग्य, १० बृहदारण्यक इन दशउपनिषदोंका पदवाक्यप्रमाणपारावारपारीणश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकराचार्यस्वामीजीनें भाष्य निर्माण करके स्पष्ट अर्थका बोध कियाहै.

परंतु सांप्रत संस्कृतविद्याका प्रचार कम रहनेसे उनका अर्थ साधारणोंको समझना कठिन है, यह देखकर परमदयालु श्रीशंकराचार्यसंप्रदायप्रविष्ट श्रीपरमहंसपरिव्राजक श्रीअच्युतानंद स्वामीजीनें अपनी उदारबुद्धीसे इन दशों उपनिषदोंका शांकरभाष्यके अनुसार

भाषांतर करिकै सर्व साधारणजनोंके ऊपर अनंत उपकार प्रगट किये हैं.

यह दशोपनिषद्भाषांतर पुस्तक स्वामीजीने प्रथम एकवार छपवायके प्रसिद्ध कियाथा, वह सब पुस्तक खपगये. फिरभी शुश्रूषु मुमुक्षु सज्जनोंकी अत्यंत उत्कंठापूर्वक पुस्तकप्राप्तीके विषयमें लालसासे सूचना हुई. तब स्वामीजीने अत्यंत उदारतापूर्वक हमको मुद्रित करनेकी आज्ञा दी की छपवायके प्रसिद्ध करो कि, जिससे वेदांतशास्त्रके जिज्ञासुलोगोंकी इच्छा पूर्णहोय. तब हमने उनकी आज्ञानुसार परमप्रसन्नतापूर्वक स्वकीय "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें छपवायके प्रसिद्ध किया है.

सर्व सज्जनोंको सविनय प्रार्थना है कि, इस दशोपनिषद्भाषांतर पुस्तकको संग्रह करके परमतत्त्व परब्रह्मका ज्ञान संपादन करिके भवभयसे रहित होकर यहांही जीवन्मुक्तिका आलंबन करो. और उक्त स्वामीजीके अनंत उपकारके उतारी होवो.

विज्ञापयिता-

खेमराजश्रीकृष्णदास.

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-मुंबई.

श्रीः।

याउपनिषत्सारकी-

प्रस्तावना।

सर्वसज्जनोंकूंविदितहोकि स्वामिअच्युतानन्दगिरिजीने अनेकमुमुक्षुजनोंकीप्रार्थनासे ईशकेनादि दशउपनिषदोंकीभाषाकरीहै ॥ इसग्रंथवरकानाम उपनिषत्सारहै ॥ इसग्रंथमैबहुतअर्थतौ श्रीमच्छंकरभाष्यकेअनुसारहैं ॥ कहीं कहीं आत्मपुराणके अनुसारभी श्रुतियोंके अर्थनिरूपणकरेहैं ॥ और कहींकहीं शारीरकआदिकोंके अनुसार उपरिसें अपेक्षित अर्थभीलिखेहैं ॥ ईशादिदशउपनिषदोंमें केईउपनिषदोंकातौमूलअर्थसंपूर्णलिखाहै ॥ किसीकिसीउपनिषद्में अप्रसिद्ध-उपासनालिखीहैं ॥ तिनअप्रसिद्धउपासनाओंकामुमुक्षुजनोंकूं विशेष-अनुपयोगजानकरि तथाग्रंथविस्तारकेभयसे तिनअप्रसिद्धउपासनाओंका तात्पर्यहीकहदीयाहै ॥ औरश्रीमच्छंकरभाष्यमै उपनिषदोंकेअर्थनिरूपणकरते जगह जगहमै बहुतशास्त्रार्थलिखाहै ग्रंथविस्तारकेभयसे सोशास्त्रार्थभीलिखानहीं ॥ केवलश्रुतियोंकेमूलअर्थही विशेषलिखेहैं ॥ औरजेवेदांतशास्त्रकेग्रंथहैं तिनसर्वकामूलभूतवेदरूपउपनिषदोंहैं ॥ इनकेअनुसार सर्वग्रंथप्रमाणहैं ॥ जोग्रंथउपनिषदोंकेअनुसारनहीं औरवेदरूपउपनिषदोंसेविरुद्धहै सोग्रंथदेवगुरुबृहस्पतिकरि रचितभी प्रमाणनहीं औरकीतौ क्यागिनतीहै ॥ यातेंसर्ववेदांतशास्त्रकेग्रंथोंकी मूलभूतउपनिषदोंकाविचार मुमुक्षुजनोंने अवश्यकरणा चाहिये ॥ परंतुजिनमुमुक्षुजनोंका संस्कृतउपनिषदोंके विचारणेमै सामर्थ्यनहींहै ॥ उनमुमुक्षुजनोंकेवासते श्रीस्वामिअच्युतानन्दगिरिजीने संक्षेपसेसरलतथा अतिउत्तमभाषामै उपनिषदोंकासुंदरअर्थलिखाहै ॥

याग्रंथमैविशेषसेतौ ब्रह्मकाहीनिरूपणहै ॥ कहींब्रह्मज्ञानकानिरूपण-है ॥ कहींब्रह्मज्ञानकेसाधन विवेकवैराग्य गुरुभक्तिसत्यसंभाषण ब्र-ह्मचर्यादिकोंका निरूपणहै ॥कहीं ब्रह्मज्ञानकेफलजीवन्मुक्तिका निरू-पणहै ॥ औरकहींविदेहकैवल्यका निरूपणहै ॥ औरकहीं उपयो-गीअर्थकानिरूपण उपरिसेंभीकराहै ॥ सोभीश्रुतिअर्थकी स्पष्टताअ-र्थहै ॥ औरयाग्रंथमै वारंवार ब्रह्मादिपूर्वकहेपदार्थोंकाही निरूपणक-राहै ॥ यातैंयाग्रंथका विचार मनन निदिध्यासनरूपहै ॥ औरयाग्रं-थकेविचारणेसे ब्रह्मबोधद्वारामोक्षकीप्राप्तिहोवेहै ॥ औरवैराग्यादि-साधनउत्पन्नहोवेहैं ॥ प्रथमउत्पन्नभये तिनवैराग्यादिकोंकूं दोषदृष्टि-आदिकोंके निरूपणद्वारा दृढकरणेहारायहग्रंथहै ॥ और परमउदार सर्वके उपकारविषेआसक्तचित्त विदितकीर्ति तथायाज्ञवल्क्यादिकों-कीन्यांई ब्रह्मविद्वरिष्ठ सर्वदाअपरिलुप्तज्ञानस्वरूप निखिलभूपालपूज्य भावनगरमैसर्वोपरिप्रधान नागरवर श्रीगौरीशंकरजी मंडलीवाले श्री-स्वामि अच्युतानन्दगिरिजीकूं अत्यंतप्रीतिपूर्वक चातुर्मास्यठहरावते-भये ॥ ते श्रीगौरीशंकरजीनिखिलसंसारकूं असाररूपजानतेहूए पर-मवैराग्यवान् संन्यासाश्रमकूं विधिवत्ग्रहणकरतेभये संन्यासाश्रममै तिनका नाम श्रीस्वामिसच्चिदानन्दसरस्वती होताभया ॥ तेश्रीस्वामि सच्चिदानन्दसरस्वतीजी याउपनिषत्सारग्रंथकूं मुमुक्षुजनोंकेविचारणे-विषे अतिउपयोगीमानतेहूए आपनेपूर्वआश्रमके आज्ञामाननेवालेपुत्र-वर श्रीविजयशंकरजी तथा श्रीप्रभाशंकरजीकूं छपावनेवासते आज्ञा करतेभये ॥ औरश्रीस्वामिसच्चिदानन्दसरस्वतीजीकेही पूर्वआश्रमके संबंधि देशाई श्रीसंतोषरामजी भावनगरमै संन्यासीजनोंकेनिवासक-रणेयोग्य अतिउत्तमस्थानकूं बनवावतेभये ॥ औरतास्थानमै संन्या-सिजनोंकेवासते अन्नक्षेत्रकूंभीबांधतेभये ॥ औरसंसारकूं असारजा-नकरिवैराग्यकूंप्राप्तहूए संन्यासाश्रमकूं विधिवत्ग्रहणकरतेभये ॥ सं-न्यासाश्रममें तिनकानाम श्रीस्वामिस्वयंप्रकाशाश्रम होताभया ॥ ति-

नश्रीस्वामिस्वयंप्रकाशाश्रमजीके पूर्वाश्रमकेपुत्र नागरवर अतिउदार बुद्धिकेसागर सच्छास्त्ररसिकशंकरभक्त संन्यासिजनसेवक प्रथितकीर्त्ति श्रीहरिप्रसाददेशाईजी जोके श्रीस्वामिसच्चिदानन्दसरस्वतीजीकीआज्ञामेंवर्त्तमानहैं ॥ तिनश्रीहरिप्रसाददेशाईजीकूभी श्रीस्वामिसच्चिदानन्दसरस्वतीजी इसग्रंथकेछपावनेकी आज्ञाकरतेभये ॥ तेतीनोंनागरवर मिलकरि प्रीतिपूर्वक याग्रंथकूं छपवावतेभये "परोपकारायसतांविभूतयः" उत्तमसत्पुरुषोंकीविभूतियां परपुरुषोंकेउपकारवासतेहोवेहैं ॥ जाविभूतिसे कुछउपकारनहींहोता साविभूतिसर्वहीनिष्फलहै ॥ याग्रंथवरकेछपावनेसे यहग्रंथसुलभहोवेगा ॥ अनेकमुमुक्षुजन इसग्रंथकूंविचारकरि ज्ञानद्वारामोक्षकूं प्राप्तहोवेंगे ॥ इससे अधिकऔरउपकारक्याहै ॥ जोकोईपुरुष किसीपात्रपुरुषकूं अन्नजल वस्त्रादिकोंकाभी दानकरताहै सोदातापुरुषकूं उत्तमलोककीप्राप्ति शास्त्रमेंकहीहै ॥ जबीमोक्षरूपपरमपुरुषार्थकेप्राप्तकरणेहारे याग्रंथकी मुमुक्षुजनोंकूं अल्पद्रव्यसे सुलभताहोवेगी तबसुलभताकरणेवालेपुरुषकूं उत्तमोसेउत्तमफल कैसेनहींप्राप्तहोवेगा किंतुअवश्यहीप्राप्तहोवेगा ॥ परंतु खेदयहहै जोदृष्टफलार्थी पुरुष यासंसारमेबहुतहोएगये अदृष्टफलार्थीउत्तमपुरुष न्यूनसेन्यूनहोतेचलेजातेहैं ॥ श्रीस्वामिसच्चिदानन्दसरस्वतीजी अतिउत्तमहैं ॥ इनजैसासंसारभरमेंदुर्लभहै ॥ शोकहै कि वह अब मोक्षवासी होगये ॥ अब उनके चिरंजीव दोनों पुत्र धर्मात्मा परम विवेकीवर्त्तमानहैं परमेश्वर इनकी दीर्घायुकरे ॥

भवानी शंकर वि॰ नरोत्तम द्विवेदी.

यह ग्रंथ प्रथमावृत्तिका छपाभया मुमुक्षुजनोंने मान्यपूर्वक हाथोहाथ लेलिया, इस कारण अब हमने स्वच्छतापूर्वक इसके छापनेका अधिकार खेमराज श्रीकृष्णदास श्रीवेंकटेश्वर यंत्रालयाध्यक्षको देदिया है, अतएव कोई छापनेका इरादा न करे ।

स्वामी अच्युतानन्द.

श्रीः ।

दशोपनिषद्भाषांतरानुक्रम ।

समाप्तोयमनुक्रमः ।

श्रीः।

अथ

दशोपनिषद्भाषांतरम्।

अथ ईशोपनिषद्भाषांतरम्।

मंगलाचरणपूर्वकग्रंथकरणप्रतिज्ञा।

ॐश्रीगणेशाय नमः।

नत्वागणपतिंदेवं श्रीव्यासंशंकरंप्रभुम् ॥
प्राकृतेनवदिष्याम ईशाद्यर्थमविस्तरम् ॥ १ ॥

अर्थयह—सर्वविघ्नविनाशक श्रीगणपतिदेवकूं प्रणामकरि तथा श्रीनारायणरूप व्यासभगवान्कूं प्रणामकरि तथासर्वकेप्रभुश्रीशंकराचार्योंकूं प्रणामकरि हम भाषावाणीसे ईशादिउपनिषदोंके अर्थकूं संक्षेपसे कथनकरेंगे ॥ प्रथमईशावास्ययजुर्वेदकी उपनिषत्केअर्थकूं कथनकरतेहैं ॥ ईशजोपरमात्माहै तिसनेयहजगत् व्याप्तकराहै ॥ जैसे मृत्तिकाने घटादिव्याप्तकरेहैं ॥ अभिप्राय यह ॥ जैसे मृत्तिकाही घटादिरूपसे स्थितहोरहीहै ॥ मृत्तिकासे भिन्न कदाचित्भी घटादिकनहींहै ॥ तेसे परमात्माही जगत्रूपसे स्थितहोरहाहै ॥ यातें जो कुछ नामरूपजगत् यापृथिवीमंडलमें प्रतीतहोवेहै सो ईश्वरसे पृथक् नहीं ॥ औरईश्वररूपही जीवात्माहै यातें जीवात्मासेभी यहजगत् पृथक् नहीं ॥ ऐसे आपनेस्वरूप आत्मासे विमुखकरणेहारे जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थहैं तिनमें रागकूं त्यागकरि आपने आत्माका पालनकरो ॥ और किसीके धनकी इच्छाकूं मतिकरो ॥ धनतौझूठाहोनेसे किसीकाभीन-

हींहै ॥ आत्माकापालनयहहै ॥ जैसे गंधर्वनगर आकाशसेभिन्ननहीं ॥ तैसे यहजगत् परमात्मासेभिन्ननहीं ॥ यातें नामरूपजगत्में सत्यत्वबुद्धिका त्यागकरो ॥ और आत्माकेनिश्चयवासते वेदांतश्रवणआदिकोंमें प्रवृत्तहोवो ॥ यहही आत्माकापालनहै ताकूंकरो ॥ ऐसे अधिकारीपुरुषोंकूं वेदभगवान् उपदेशकरेहै ॥ १ ॥ अब आत्मज्ञानमें साधनोंके अभावसे अनधिकारीपुरुषोंकूं कर्मकाउपदेशद्वितीयमंत्रकरेहै॥ पुरुषशतवर्ष कर्मकरताहुआही जीवनेकीइच्छाकूंकरे ॥ ऐसे कर्मकरतेहुए ॥ तुम पुरुषमें कर्मकासंबंधनहींहोगा ॥ इससेदूसराप्रकार बंधनरूपकर्मसे छूटनेकानहींहै ॥ २ ॥ आगेकामंत्र अज्ञानीपुरुषोंकी निंदाकूंकरेहै ॥ जे विद्वान्पुरुष आत्मामेंप्रीतिवालेहैं तिनोंकानामसुरहै तिनसेभिन्नअज्ञानीदेवादिकभी असुरहैं ॥ तिनब्रह्मबोधरहितअसुरपुरुषोंकरिप्राप्तहोणेयोग्य जेपुण्यपापकर्मकाफललोकहैं तिनलोकोंकानामअसुर्यहै ॥ तेअसुर्यनामालोक आत्माकेशुद्धरूपकूं आवरणकरणेहारे अज्ञानरूपअंधतमकरिव्याप्तहैं ॥ तिनलोकोंकूं आत्महत्यारेपुरुष प्राप्तहोवेहैं ॥ शंका ॥ नित्यआत्माका तेअज्ञानीपुरुष कैसेहननकरेहैं ॥ समाधान ॥ जैसे किसीश्रेष्ठमहात्मापुरुषकूं मिथ्याकोईकलंकआरोपणकरणा यहताकीहिंसाकहीजावेहै ॥ तैसे नित्यशुद्धआत्मामें जो मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं इत्यादिआरोपहै यहहीआत्माकाहननहै ॥ ३ ॥ अब जिसआत्माकेअज्ञानकरि अज्ञानीआत्महत्यारे जन्ममरणरूपसंसारमें घटीयंत्रकीन्यांईफिरेहैं ॥ पुनःजिसआत्माकेज्ञानकरि विद्वान्मोक्षकोप्राप्तहोवेहैं ताआत्माकेस्वरूपकानिरूपणकरेहैं ॥ यह आत्मा क्रियासेरहितहै ॥ तथा एकहै पुनःमनसेभी अधिकवेगवालाहै ॥ भावयह ॥ जिसजिसपदार्थकामनसंकल्पकरेहै तासंकल्पद्वारा तापदार्थमें मनप्राप्तहोवेहै ॥ तिसतिसपदार्थमें यहआत्मा मनकेगमनसेप्रथमही व्यापकहै ॥ और याआत्माकूं नेत्रादिकइंद्रियप्राप्तहोवैनहीं ॥ तामें हेतुयह ॥ जहां जहांमनइंद्रियजावेहैं तहां तहां यह ब्रह्मात्मा आगेही

प्राप्तहै ॥ और यहआत्मा सुमेरुपर्वतकीन्यांई निश्चलहुआभी शीघ्रगमनकरणेहारे जेमनवायुआदिकहैं तिनसर्वकूं उल्लंघनकरि आगेजावेहै ॥ तिसपरमात्माकरिके प्रेरितहुआ हिरण्यगर्भरूपसमष्टिवायु सर्वप्राणीयोंके कर्मोंकूं धारणकरेहै ॥ यासंसारमेंजाजाचेष्टाहै सासा चेतनआत्मादेवकरिहीसिद्धहोवेहै ॥ चेतनदेवविनाकोईचेष्टा सिद्धहोवेनहीं ॥ ४ ॥ आत्माकेस्वरूपनिरूपणकरणेमें मंत्रआलस्यनहींकरेहैं ॥ यातेंपूर्वकहे आत्माकूंभी पुनःकथनकरेहैं ॥ आत्माकास्वरूप अतिआश्चर्यहै आत्मावास्तवसे गमनादिक्रियारहितहुआभी गमनादिकोंकूंकरेहै ॥ भावयह ॥ निरुपाधिक आत्माकास्वरूप सर्वथागमनादिकोंसेरहितहै ॥ देहादिउपाधिकेसंबंधसे आत्मामेंभ्रांतिसिद्धगमनादिप्रतीतहोवेहैं ॥ और अज्ञानीपुरुषोंके यहआत्माकोटियोजनपर्यंत अत्यंतदूरहै ॥ ज्ञानीपुरुषोंकेतौ आपनास्वरूपहोनेसे अत्यंतसमीपहै ॥ और यहआत्मा सर्वप्रपंचकेअंतरबाहिर परिपूर्णहै ॥ ५ ॥ अब उक्तआत्माकाजोयथार्थज्ञानहै ताकेफलकानिरूपणकरेहैं ॥ जोविवेकीपुरुष ब्रह्मासेआदिलेकरि पिपीलिकापर्यंत सर्वभूतोंकूं आपने आत्मामैं कल्पितदेखताहै तथा तिनभूतोंमें आत्माकूं अधिष्ठानसत्तास्फूर्तिप्रदातारूपसेदेखताहै ॥ सोविवेकीपुरुष किसीदुःखकूंप्राप्तहोवेनहीं वा निंदाकूंकरेनहीं ॥ ६ ॥ जिस विवेकीपुरुषके ज्ञानदशामें सर्वभूतचराचर आत्मभावकूं प्राप्तभयेहैं तथा जिसविद्वान्ने गुरुशास्त्रकेउपदेशसे आत्माकीएकतानिश्चयकरीहै ॥ तिसविवेकीपुरुषके ताज्ञानकालमें वा ताआत्मामें आवरणरूपमोहकी तथा विक्षेपरूपशोककी प्राप्तिहोवेंनहीं॥शोकमोहकीनिवृत्तिभी मूलअविद्यारूपकारणसहितहोवेहै ॥यातेंबीजनाशहोनेसे पुनःकदाचित्भीशोकमोहहोवेनहीं ॥७॥ पुनःआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं औरमंत्रउपदेशकरेहै॥सोआत्मादेव सर्वत्रव्यापकहै तथास्वयंज्योतिहै ॥ लिंगशरीरसेरहितहै॥तथा व्रणऔरनाडीसे रहितहै ॥ व्रणऔरनाडीसेरहितकहनेसे स्थूलशरीरसेरहितसूचनकरा॥शुद्धहै यातेंकारणशरीरसेभीरहितहै॥धर्मअधर्म

सेरहितसर्वकाद्रष्टाहै ॥ मनकेप्रेरणेहाराहै ॥ परिभूःहै ॥ अर्थयह ॥ जोसर्वकेउपरिहै ॥ औरस्वयंभूःकहीये आपहीनीचे तथाआपउपरिहै ॥ सो परमात्मा प्रजापतिरूपसे सर्वप्राणीयोंकेकर्मोंकूं तथा तिनकर्मोंकेफलोंकूं यथार्थरूपसे धारणकरेहै ॥ ८ ॥ अब आत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे साधनजोचित्तशुद्धिहै ताचित्तशुद्धिकेकरणेहारेजेकर्मतथाउपासनाहै तिनकी भिन्नभिन्नरूपसेनिंदाकरेहैं सानिंदा समुच्चयविधानके अर्थहै ॥ समुच्चयकहीये उपासनाकरणी पुनःसाथहीशुभकर्मकरणे ॥ जैसे भिन्नभिन्नकर्मकी तथा उपासनाकीनिंदाकरीहै सोदिखावेहैं ॥ जेपुरुष केवलकर्मकूंकरेहैं तेपुरुष अदर्शनरूपतमकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ और जेपुरुष केवलउपासनामें प्रीतिवालेहैं तेपुरुषदारुणतमकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ ९ ॥ कर्मतथाउपासनाकीनिंदाकरि अनधिकारी पुरुषोंके कर्मतथाउपासनाके त्यागकराणेमें वेदकातात्पर्यनहींहै ॥ किंतु उपासनासहितकर्मके कराणेमेंवेदकातात्पर्यहै यातात्पर्यकेबोधनअर्थ प्रथमकर्म तथा उपासनाकाफलकहेहैं ॥ जबी अनधिकारीपुरुषोंनेभी कर्मतथाउपासनानकरणेहोतेतौ भिन्नभिन्न कर्मतथा उपासनाकफलनलिखते लिखातोहै ॥ यातें अनधिकारी पुरुषोंने चित्तकी शुद्धिवासते कर्मतथाउपासनासाथहीकरणे ॥ भिन्नभिन्न कर्मतथा उपासनाके फलकाअबनिरूपणकरेहैं ॥ उपासनाकाफल ब्रह्मलोककीप्राप्तिहै ॥ कर्मकाफल स्वर्गलोककीप्राप्तिहै ॥ ऐसे बुद्धिमान् आचार्योंकेवचनकूं हमनेश्रवणकराहै ॥ जेकृपालुआचार्यहमारेकूं कृपाकरिकेवचनकहतेभये ॥ १० ॥ जोपुरुष कर्मतथाउपासनाकूं साथहीकरताहै ॥ सोपुरुष निषिद्धकर्मरूपमृत्युकूं त्यागकरि देवभावरूप अमृतकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ११ ॥ कार्यउपासनातथा कारणउपासनाके समुच्चयविधानअर्थ भिन्नभिन्नकार्यउपासनाका तथाकारणउपासनाकानिषेधकरेहैं ॥ जेपुरुष कारण अव्याकृतनाममायाकीउपासना करतेहैं ॥ तेपुरुष अदर्शनरूप तमकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ जेपुरुषहिरण्यगर्भ-

नामकार्यकीउपासनाकरतेहैं॥तेपुरुषअधिकघोरतमकूंप्राप्तहोवेहैं॥ १२॥ अब एकएक अवयवउपासनाकाफलप्रतिपादनकरेहैं ॥ हिरण्यगर्भरूप कार्यकीउपासनासे अणिमादि ऐश्वर्यरूपफलप्राप्तहोवेहैं ॥ कारणरूप-मायाकीउपासनासे मायामेंलयरूपफलप्राप्तहोवेहैं ॥ जैसे सुषुप्तिमेंलय होनेसे विक्षेपकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ तैसे मायामैंलयहोनाभीफलसंभवेहै ॥ ऐसे बुद्धिमान् आचार्योंकेवचनकूं हमनेश्रवणकराहै ॥ जे आचार्य हममुमुक्षुजनोंकूं कहतेभये ॥ १३ ॥ जोपुरुष कार्यउपासनाकूं तथा कारणउपासनाकूं मेलकरिकरताहै ॥ सोपुरुष हिरण्यगर्भरूपकार्यकी उपासनासे अनैश्वर्य अधर्म कामादिरूप मृत्युकूं दूरकरि प्रकृतिमेंलयरू-पफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ १४ ॥ कर्म तथाउपासना इनदोनूंकरियुक्त जोतत्त्वज्ञानार्थीपुरुषहै ॥ सो अधिकारी मरणकालविषे आदित्यभग-वानूके आगेप्रार्थनाकरेहै ॥ तिनप्रार्थनामंत्रोंके अर्थकूंदिखावेहैं ॥ हेसूर्य सत्यपरमात्माकास्वरूप जो आदित्यमंडलमेंस्थितहै ॥ सोप्रका-शमयपात्रसे आच्छादितहै यातें प्रतीतहोवेनहीं सत्यपरमात्माकाउपा-सकजोमैंहूं तिसमेंउपासककेअर्थ आवरणकूं दूरकरो जिससेमैं सत्यपर-मात्माकादर्शनकरूं ॥ १५ ॥ हेजगत्पालकसूर्य हेएकलेगमनकरणेहारे हेसर्वकेनियंता हेरसोंके अंगीकारकरणेहारे हेप्रजापतिकेपुत्र ॥ आप-नीरश्मीयोंकूं दूरकरो रश्मीयोंकेउपसंहारकरणेसे तुमारेप्रकाशरूपकूं तथाकल्याणरूपकूं मैंप्रत्यक्षकरूं ॥ मैंउपासकभृत्यकीन्यांईनहींयांचा करता किंतु आदित्यमंडलमेंस्थितपुरुषमैंहूं स्वयंज्योतिरूपहीमेरावास्त-वरूपहै ॥ १६ ॥ मेरेप्राण परिच्छिन्नअभिमानकूंत्यागकरि समष्टिवायु-रूप हिरण्यगर्भकूंप्राप्तहोवें ॥ कर्मतथाउपासनाकेसंस्कारसहित जोयह मेरालिंगशरीरहै सोयहलिंगशरीर यास्थूलशरीरसेबाह्यगमनकरे ॥ और यहमेरास्थूलशरीर भस्मीभावकूंप्राप्तहोवे॥ मैस्थूलशरीरसेभिन्नहूं॥ यहपंचभूतोंकाकार्यदेह मेरास्वरूपनहींहै ॥ अब मरणकालमेंउपासक

आपनेमनकूंकहेहै हेमन पूर्वजादेशमें तथाजाकालमें जिसपदार्थकूं तूं प्राप्तहोताभयाहै ॥ तिसपदार्थकूं तूं संकल्पसहितकर्मकरिकेहीप्राप्तहोताभयाहै ॥ संकल्पसहितकर्मोंसेविना किंचित्मात्रभीप्राप्तभयानहीं ॥ इसप्रकारकासंकल्पका तथाकर्मकाप्रभाव अबीकिसवासते तुमनेविस्मरणकराहै ॥ विहितउपासना तथाविहितकर्मकेस्मरणकाकालप्राप्तभयाहै यातें जेतुमनेबाल्यादिअवस्थाविषे विहितकर्म तथाविहितउपासनाकरेहैं तिनकूंस्मरणकरो ॥ १७ ॥ ऐसेमनकूं वारंवारकहिकरि अब अग्निदेवताकेआगेप्रार्थनाकरेहै ॥ हेअग्ने आपहमारेकूं सुखकेभोगवासते देवयानमार्गकरिकेब्रह्मलोकविषेलेचलो कैसाहैदेवयानमार्ग जो प्रकाशमान तथासर्वदुःखसेरहितहै ॥ और पापीजेकामक्रोधादिकहमारेशत्रुहैं तिनकानाशकरो ॥ जेहमनेशुभकर्म औरउपासनाकरेहैं तिनकूं जानकरि हमारेकूंब्रह्मलोकविषेलेचलो ॥ औरआपकेउपकारकूंहम निवृत्तनहीकरिसक्ते ॥ यातें हम अधिकारीजनोंका आपके तांई वारंवारनमस्कारहोवे ॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॐ तत्सत् ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादशिष्यसंप्रदायप्रविष्टपरमहंसपरिव्राजकस्वामिअच्युतानन्दगिरिविरचितेप्राकृतोपनिषत्सारे ईशावास्यार्थनिर्णयः ॥ १ ॥

॥ इति ईशोपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ॥१॥

श्रीः ।

अथ
केनोपनिषद्भाषांतरम् ।

ॐ नमःपरमात्मने ॥ अबसामवेदकीकेनउपनिषत्केअर्थकूं दिखावेहैं ॥ केनउपनिषत्कानामही तलवकारहै ॥ कोईएकमुमुक्षु इसलोककेभोगोंसे तथापरलोककेभोगोंसे विरक्तहुआ याप्रकारके विवेककूं प्राप्तभया ॥ जो आत्मानित्यहै तासेंभिन्नसर्वप्रपंच अनित्यहै ॥ और शमदमादिकसाधनोंसहित तथा उत्कटमोक्षकीइच्छासहितहूआ ब्रह्मश्रोत्रिय तथा ब्रह्मनिष्ठगुरुकी शरणकूंप्राप्तभया ॥ गुरुशिष्यद्वाराकथनसे ब्रह्मविद्या शीघ्रबुद्धिमें स्थितहोवेहै ॥ ऐसे भाष्यकारश्रीशंकराचार्यजीनेलिखाहै ॥ तिनके अनुसारहमनेभी अवतरणिकाकिंचित् दिखाईहै ॥ अब उपनिषत्के अक्षरोंकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ शिष्यप्रश्नकरेहै ॥ हेगुरो यहमन किसकरिप्रेरणकरा आपने अनुकूलपदार्थमें प्राप्तहोवेहै और किसीचेतनप्रेरकबिनातो याजडमनकीस्वतंत्रप्रवृत्तिबनेनहीं ॥ जबी स्वतंत्रअंगीकारकरें ॥ तौअनर्थकेहेतुकूं जानकरिभी दुष्टसंकल्पकूंकरेहै ॥ सोक्लेशदातासंकल्प नहींकरनाचाहिये ॥ यातें इसमनकाकौनप्रेरकहै यहकृपाकरिकहो ॥ और हेगुरो जिसप्राणविना किसीइंद्रियकीचेष्टाहोवेनहीं ऐसामुख्यप्राणकिसकाप्रेराभयाचलेहै ॥ यहप्राण जड भौतिक परिच्छिन्न सक्रियहोनेसें अनात्माहै ॥ यातें इसप्राणकाप्रेरककृपाकरिकहो ॥ और जिसवाक्इंद्रियकरि सर्वप्राणी शब्दकूंउच्चारणकरेहैं ॥ सोवाकूइंद्रिय किसकरिप्रेराभया ना-

नाप्रकारके संस्कृतभाषादिशब्दोकूं उच्चारणकरेहै ॥ तथाश्रवणइंद्रिय किसदेवकरिप्रेराभया नानाप्रकारके शब्दकूंश्रवणकरेहै ॥ तथा नेत्रइं- द्रिय किसदेवकरिप्रेराभया नानाप्रकारके हरितपीतादिरूपकूं देखेहै ॥ रसना रसकूंग्रहणकरेहै घ्राणइंद्रियगंधकूं ग्रहणकरेहै ॥ त्वक् स्पर्शकूंग्र- हणकरेहै ॥ ऐसेअन्यइंद्रियमेंभीजानना ॥ स्थूलसूक्ष्मसंघातका प्रेरक- कौनहै यहकृपाकरिकहो ॥ १ ॥ ऐसे शिष्यकेप्रश्नकूंसुनकरि गुरुउप- देशकरेहैं ॥ हेशिष्य जोतुमनेश्रोत्रमनआदिकोंकाप्रेरकपूछाहै ॥ सो आत्माश्रोत्रकाश्रोत्रहै मनकामनहै वाक्कावाक्है प्राणकाप्राणहै नेत्रों- कानेत्रहै ॥ तात्पर्ययहहै ॥ जोमनप्राणादिक आत्माकीसत्तास्फूर्तिक- रिकेही आपनेआपनेकार्योंकूंकरेहैं ॥ आत्माकीसत्तास्फूर्तिवि ना किंचित्मात्रभी करिसकतेनहीं ॥ यातेंहीश्रुतिमाताने इंद्रि- योंकाइंद्रिय मनकामन प्राणकाप्राणकह्याहै ॥ ऐसेंदेहइंद्रियोंकेप्रेरक देहइंद्रियादिकोंसेभिन्नआत्माकूं जानकरि औरदेहइंद्रियादिकोंमेंआत्म- भावकूंत्यागकरि अधिकारीपुरुष अमृतरूपब्रह्मकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ ताअ- मृतरूपब्रह्मकूं प्राप्तभये जन्ममरणरूपअनर्थकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ २ ॥ यहआत्माश्रोत्रकाश्रोत्रहै यातें ताआत्मामेंश्रोत्रप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ तथावा- क्कावाक्है यातें वाक्इंद्रियआत्मामें प्रवृत्तहोवेनहीं ॥ तथा मनका मनहोनेसे मनभीप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ जैसे अग्निआपनेसेभिन्न काष्ठादिकों- कादाहकरेहै आपनेदाहकरनेमेंसमर्थनहीं ॥ तैसेजेघटादिकजडपदार्थहैं तथा आपनेसेभिन्नहैं तिनमें इंद्रियप्रवृत्तहोवेहैं ॥ आपनेअधिष्ठानआ- त्माके प्रकाशकरणेमें श्रोत्रनेत्रादिअसमर्थहैं ॥ हेशिष्य मनइंद्रियादि- कोंसेहीज्ञानहोवेहै आत्मामनआदिकोंका अविषयहै ॥ यातें ताअवि- षयआत्माकूं हममनआदिकोंसेनहींजानसकते ॥ और यहभी हम नहीं जानते जोअधिकारीपुरुषोंकूं आचार्यकैसे उपदेशकरेहैं ॥ हेशिष्य

यद्यपि यहआत्मा मनवाणीआदिकोंकाअविषयहै ॥ तथापि ताआ-त्माकानिषेधरूपसे श्रुतिभगवती उपदेशकरेहैं ॥ सोब्रह्मात्मा कार्यसेभि-न्नहै तथाकारणसेभीभिन्नहै ॥ कार्यकारणकाप्रकाशकहै ॥ ऐसे कार्य-कारणसेभिन्न आत्माकेस्वरूपकूं हमने आचार्योंके मुखसे श्रवणक-राहै ॥ जेआचार्यहमारेकूं तिसअविषयस्वभावआत्माका उपदेशकरते-भये ॥ ३ ॥ हेशिष्य आत्माकेस्वरूपकूं पुनःश्रवणकरो ॥ जोआत्मा वाणीकरि नहींकह्याजाता ॥ और जिसआत्माकी प्रेरणासे वाणी नानाप्रकारकेशब्दोंकूं उच्चारणकरेहै ॥ तिस प्रत्यक्‌देवकूं तुम ब्रह्मरूप जानो ॥ और जिसकाविषयरूपसे पुरुष उपासनाकरतेहैं सो विषयज-डपरिच्छिन्नपदार्थब्रह्मनहींहै ॥ ४ ॥ जा आत्माकूं मनकरि पुरुषनहीं-जान सकता ॥ और जिसआत्माकरिप्रकाशितहुआमन नानाप्रकारके संकल्पविकल्पकूं करेहै ॥ ऐसे महात्माकहतेहैं ॥ तासाक्षीकूं ब्रह्मरूप-जानो ॥ औरजिसपरिच्छिन्नजडपदार्थकी ब्रह्मरूपजानकरि पुरुष उपा-सनाकरतेहैं सोब्रह्मनहींहै ॥ ५ ॥ जिसआत्माकूं नेत्रकरि पुरुषनहींदेख सकता ॥ और जिसस्वप्रकाशआत्माकरि नेत्रकूं विषयकरेहै मेरेनेत्रहैं ऐसे पुरुषजानेहैं ॥ तिसप्रत्यगात्माकूं ब्रह्मरूपजानो जिसपरिच्छिन्नअ-नात्माकी पुरुष उपासनाकरेहैं सोब्रह्मनहींहै ॥ ६ ॥ जिसआत्मादेवकूं श्रोत्रसेपुरुष नहींसुनसकते तथाजिससाक्षीकरि यहश्रोत्र प्रकाशितहो-वेहै ॥ सोसाक्षीब्रह्महै ऐसेजानो जिसकूंविषयमानकरि पुरुष उपासना करेहैं सोब्रह्मनहींहै ॥ ७ ॥ और प्राणकीजाक्रियावृत्तिहैतथा अंतःकर-णकीजा ज्ञानवृत्तिहै तिस क्रियावृत्ति तथाज्ञानवृत्तिसहितहुआ घ्रा-णइंद्रिय जाआत्माकूं विषयकरेनहीं ॥ और जिसआत्माकरिप्रेरा घ्राणइंद्रिय आपने व्यापारकूंकरेहै ॥ ऐसे आत्माकूं तुमब्रह्मजानो ॥ जाकूं विषयरूप जानकरि पुरुष उपासनाकरेहैं सोविषयरूपब्रह्मनहींहै ॥ ८ ॥ ऐसे हेय उपादेयसे शून्यब्रह्मात्माका गुरुने शिष्यकेप्रति उपदेशकरा ॥

शिष्यआत्माकूं मनवाणीकाविषयरूपसेनहीजानलेवे याअभिप्रायसे गुरु शिष्यकी परीक्षाकरेहैं ॥ हेशिष्य यदि तूंमाने ब्रह्मकेस्वरूपकूं में सुखे- नही जानताहूं तवतुमने अल्पही ब्रह्मकेस्वरूपकूं जाना ॥ यथार्थ ब्रह्म- कास्वरूप नहींजाना ॥ और अधिदैव उपाधिकारिविशिष्टब्रह्मकूंजानो तौभीतुमनेयथार्थ ब्रह्मकेस्वरूपकूं जानानहीं ॥ हेशिष्य मैं यह मान- ताहूं जोअबभी तुमको ब्रह्मका विचारकरना चाहिये ॥ विचारविना यथार्थब्रह्मकाबोधहोनादुर्घटहै ॥ ऐसेगुरुनेपरीक्षाकेलेनेवासतेकहा ॥ तब शिष्य एकांतदेशमेंस्थितहुआ जाआत्माकेयथार्थरूपका. गुरुनेउपदेश कराथा ताआत्माकेयथार्थरूपकूं आपनीबुद्धिमें आरूढकरताहुआ गुरुकेसमीप प्राप्तभया याप्रकारकेवचनकूं कहताभया ॥ हे गुरोमैंब्रह्मकूं जानताहूं ऐसे मैं मानताहूं ॥ ९ ॥ गुरुरुवाच ॥ हेशिष्य तूं ब्रह्मकेस्व- रूपकूं कैसेजानताहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेगुरो मेंब्रह्मकूं जानताहूं ऐसे विषयरूपसे ब्रह्मकूं मेंनहींमानता ॥ और मैंब्रह्मकूं जानताहूं वानहीं जानता ऐसे मैं नहींमानता ॥ गुरुरुवाच ॥ हेशिष्ययहतुमने विरुद्धकह्या जो मैं ब्रह्मकूं जानताभीहूं और नहींभीजानता ॥ जबी तूं मानताहैमैं ब्रह्म- कूंनहींजानता तब मैं ब्रह्मकूंजानताहूं यहकैसेकहताहै ॥ जबी मैं ब्रह्मकूं जानताहूं ऐसेतूंमानताहै तब मैं ब्रह्मकूं नहींजानता यहकैसे कहताहै ॥ ऐसे गुरुने परीक्षार्थ कहाभी परंतु शिष्यचलायमाननहींभया और गर्जन करताहुआ आपने अनुभवकूंकहेहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेगुरो जोकोई अधि कारी हमारेब्रह्मचारीयोंकेमध्यमें ताआत्माकेस्वरूपकूं जानेहै सो मेरी- कही रीतिसेहीजानेहै ॥ सारीतियहहै ॥ ब्रह्मात्माज्ञातहै तथा अज्ञातहै ॥ इनदोनोंव्यवहारोंसे विलक्षणहै जोज्ञात अज्ञातसे भिन्नस्वप्रकाश आत्माका गुरुनेशिष्यकेप्रति उपदेशकराथा ॥ तिसस्वप्रकाश आत्माके स्वरूपकूं शिष्यने निश्चयकरकेही ज्ञात अज्ञातसेभिन्नकहा ॥ यहगुरु शिष्यका संवाद तौ समाप्तभया ॥ अब श्रुतिभगवती गुरुशिष्यकेसं-

वादसे विनाही अधिकारीजनोंकूंउपदेशकरेहै ॥ १० ॥ जोविद्वान् मनवाणीका अविषय ब्रह्मकूंमानताहै सो विद्वान् ब्रह्मकेस्वरूपकूं यथार्थजानताहै ॥ जोपुरुष मनवाणीका विषयब्रह्मकूं मानताहै सो पुरुष ब्रह्मके यथार्थस्वरूपकूं नहींजानता ॥ विद्वानोंके ब्रह्म अविज्ञात है ॥ अज्ञानी पुरुषोंके ब्रह्मविज्ञातहै ॥ अर्थयह ॥ मनवाणीका अविषयस्वप्रकाशब्रह्महै ऐसेस्वप्रकाशब्रह्मकूं अविषयरूपसे जाननेवाला विद्वान् यथार्थजानेहै ॥ और अज्ञानीपुरुषोंके तौ देहइंद्रियादिकोंमें आत्मत्वबुद्धिहोनेसे विषयरूपसे जानतेहुएभी तेअज्ञानीपुरुष यथार्थ रूपसे ब्रह्मकूंजानेनहीं ॥ ११ ॥ और जितनीअंतःकरणकीवृत्तियां उत्पन्नहोवेहैं तेसर्वही आत्माके प्रकाशकरि प्रकाशितहुई उत्पन्नहोवे हैं ॥ आत्माकेप्रकाशविना कोईवृत्तिभी उत्पन्नहोवेनहीं ॥ यातें सर्व वृत्तियोंका विषयरूपसे प्रकाशकरनेहारा आत्मा तिनवृत्तियोंसें भिन्नही स्वप्रकाशहै ॥ याआत्माकेज्ञानकरिकेही पुरुष अमृतत्वकूं प्राप्तहोवेहै॥ अर्थयह ॥ जरामरणादिकोंसेरहित तथा आनंदरूपजोब्रह्मात्माहै ताकूं प्राप्तहोवेहै ॥ और आत्माकेजाननेसे बलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जाविद्यारूप बलसे जन्ममरणकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ और धन सहाय मंत्र औषधि तप योग इनोंकरि होनेहारा जोसामर्थ्यहै ॥ तासामर्थ्यकरि मृत्युका तरण होवेनहीं ॥ और ब्रह्मविद्यारूप सामर्थ्यकूंतौ आपने स्वरूपसेही प्राप्त होवेहै ॥ यातें पुनःजन्ममरणकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ १२ ॥ यह पुरुष यदिइसजन्ममेंही आपनेशुद्धरूपकूं जानलेवेतौ सत्यरूप तथा आनंदरूप जोब्रह्महै ताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और जबीयहपुरुषभारतखंडमें याअधिकारी शरीरकूं पाइकरि परमेश्वरकी मायाकरिमोहितहुआ तथातुच्छविषयसुखमें आसक्तहुआ आनंदरूपआत्माकूं नहींजानेहै तबीइसकी बडीहानिहोवे है ॥ जिसहानिकरि यहपुरुषवारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथाकामक्रोधआदिकजेचोरहैं तिनकेआ-

धीनहुआ सोअज्ञानीपुरुष स्वकर्मकेअनुसार अनेकप्रकारके उच्चनीच शरीरग्रहणसे मुक्तहोवेनहीं इसीसे सोअज्ञानीपुरुष नष्टहुएजैसाहोवेहै यातें धैर्यवान् पुरुषप्रमादरहितहुआआत्माकूं याअधिकारीशरीरमेंही अवश्यनिश्चयकरे ॥ और यहएकहीआत्मा अनेक स्थावरजंगमभूतोंमें प्रतीतहोवे है ॥ जैसे वास्तवसेएकहीचंद्रमा जलपात्रोंकेभेदकरि अनेक रूपसे प्रतीतहोवेहै ॥ तैसे एकआत्मादेव उपाधिभेदसे अनेकरूपसे प्रतीतहोवेहै ॥ वास्तवसेएकहीहै ॥ ऐसे सर्वभूतोंमें परमार्थसें एकही परमात्मा अनेकरूपसे स्थितहै इसरीतिके आत्मज्ञानसेही अधिकारी पुरुष देहइंद्रियादिकोंमें अहंताममताकूं त्यागकरि अमृतभावकूंप्राप्त होवेहैं ॥ अर्थयह ॥ जोजरामरणादिक संसारधर्मसेरहित आनंदरूप आत्माहै ताकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ यामें किंचित्भी संशयकरणानहीं ॥ ॥ १३ ॥ अबब्रह्मविद्याकीस्तुतिअर्थ यक्षभगवान्की आख्यायिका लिखेहैं अथवा सर्वसंसारधर्मरहित रूपसे उपदेशकराजोब्रह्महै तामें शून्यताकीशंका अज्ञानीपुरुषोंकूं होवेहै ताशंकाकी निवृत्तिवासते यक्षभगवान्कीकथाहै ॥ अथवा अतिबुद्धिमान् अग्निवायु इंद्रादि-देवताभी यत्नसे उमादेवीके संवादद्वाराही जानतेभये यातें बुद्धिमान् पुरुषकोंभी ब्रह्मविद्याकी प्राप्तिवासते यत्नबहुतकरणा ॥ यातात्पर्यके बोधनवासते यक्षभगवान्की कथाहै ॥ अबताकथाकूंकहेहैं ॥ एक कालमेंदेवता स्वर्गमेंस्थितहुए ब्रह्मविद्याकेप्रतापसे सर्वअसुरोंसे जयकूं प्राप्तभये ॥ जैसे अग्नीकीसमीपतासे पतंग नाशकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ तैसेब्रह्मवेत्ता देवताओंकीसमीपतासे सर्वअसुरक्षयकूं प्राप्तहोतेभये ॥ परंतु ॥ जैसे अग्निकरितप्तलोहकापिंड तृणवस्त्रादिकोंकादाहकरेहै ॥ तैसे ब्रह्मरूपअग्निकरि प्रकाशमानहुएदेवता असुरोंका नाशकरतेभये ॥ जैसे अग्निसंबंधविना लोहपिंड किसीपदार्थकादाहकरिसकेनहीं ॥ तैसे ब्रह्मरूपअग्निके सामर्थ्यविना देवतारूपीलोह असुररूपी

तृणादिकोंका नाशकर सकेनही ॥ यातें ब्रह्मतेजसेही तिनदेवतावोंकूं असुरोंके नाशका सामर्थ्य प्राप्तभया ॥ शंका ॥ जोकदाचित् ब्रह्मरूप बलसेभी देवता जयकूंप्राप्तभये असुरनाशकूंप्राप्तभये ऐसे मानेतौ ब्रह्मरूपबलहमसर्वकेहै ॥ काहेतै ब्रह्मसर्वकाआत्माहै यातें हमारेसर्वशत्रु नाशकूं प्राप्तहोइजावें और हमाराही सर्वत्रजयहुआचाहिये॥ समाधान ॥ यद्यपि ब्रह्मतौ सर्वत्रसमहै ॥ परंतु जैसेसूर्यसर्वत्रव्यापकहुआभी सूर्यकांतमणिमें स्थितहुआ पटादिकोंकादाहकरैहै ॥ अन्यमें स्थितहुआभी दाहरूपकार्यकूं करेनहीं ॥ तैसे यहब्रह्मात्मा सर्वत्रव्यापकहुआभी सत्वगुणप्रधानदेवतावोंकेविषे विशेषकरिप्राप्तहोवैहै ॥ यातें तेदेवताबलवालेहुए असुरोंका नाशकरतेभये ॥ इसप्रकार तेब्रह्मवेत्ता देवताभी भोगोंविषे आसक्तहुए हमारा ब्रह्मसामर्थ्यसेहीजयभयाहै ॥ याकूंभूलजातेभये ॥ उलटा यहमानतेभये ॥ जोहमनेआपने बलसेंही असुरोंकानाशकराहै ॥ जैसे कोईमनुष्य मरणपर्यंतदुःखकूंप्राप्तहोइके किसीकृपालुदेवता वामुनिकीकृपासे तादुःखसेरहितहोइजावे ॥ पुनः विषयोंमें सोईपुरुष आसक्तहुआ तिनके उपकारकूं विस्मरणकरदेवे॥ तैसे ब्रह्मबलकीकृपाकरि जयकूंप्राप्तहुएभी सर्वदेवताभोगोंमें आसक्तहोइकरि ब्रह्मकूं विस्मरणकरतेभये ॥ तिसके अनंतर रजोगुणकरियुक्तहुए तेदेवता याप्रकारकेअभिमानकूं प्राप्तहोतेभये ॥ जाअभिमानकरिपुरुषनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ देवताकहेहैं ॥ हमाराहीविजयहै ॥ हमाराही यशहै ॥ हमदेवताही महान्भाग्यवालेहैं ॥ हमहीसुंदरहैं ॥ रूपयौवनकरिसहितहैं ॥ हमयुद्धमेंबहुतकुशलहैं ॥ हमारेआगे राक्षसक्याहैं ॥ हमारेआगे असुरोंकाबलतुच्छहै ॥ हमारेमें शमदमादिसर्वहैं ॥ हमारेजैसाकोईभी याब्रह्मांडमेंनहीं ॥ ऐसे महान्गर्वकूं तेदेवता प्राप्तहोतेभये॥ कैसाहैगर्व जोरजोगुणसेउत्पन्नहोनेहाराहै ॥ तथापापकीउत्पत्तिका कारणहै ॥ तथापराक्रमका और यशकानाशकहै ॥ १४ ॥ ऐसे

देवतावोंकेगर्वकूं देखकरिसोब्रह्म पिताकीन्यांई तिनदेवतावोंके हितकी इच्छाकरताहुआ इसप्रकारका चिंतनकरताभया ॥ यहदेवता मेरीकृपासेंही सर्वअसुरोंकूं जीतकरि महिमाकूंप्राप्तभयेहैं ॥ उपकारकरणेहारा जोमैंब्रह्महूं ॥ ऐसेमेरेस्वरूपकूं भूलकरि कृतघ्नपुरुषकीन्यांई आपनीस्तुतिकरतेहुए मैं उपकारकर्त्ताकूं सर्वथा विस्मरणकरतेभयेहैं ॥ यातें यहअत्यंतमूढबालकहैं ॥ कृतघ्नतातौ महान्पापहै ॥ जोपुरुष जिसपुरुषके अनुग्रहसे उत्कृष्टताकूं प्राप्तहूआ मोहकेवशसे कदाचित् उपकारकर्त्ताकूं नहींमाने ॥ तौ सोकृतघ्नपुरुष शतअयुत जन्मपर्यंत महान्दुःखकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथा कोटीकल्पपर्यंत विष्ठाविषे कृमिशरीरकूं प्राप्तहोवेहै ॥ यातें ऐसेकृतघ्नतादोषकी निवृत्तिअर्थ ॥ इनआपने प्रियदेवतावोंका कृतघ्नतादिक दोषोंकाजनक जो गर्वहै ताकूंनिवृत्तकरूं ॥ याप्रकारकाचिंतनकरिके एकअद्भुतयक्षकेस्वरूपकूं आपनीमायाकेबलसे सोपरमात्मा धारणकरताभया ॥ कैसाहैसोयक्ष अनंतहैंनेत्रजिसके ॥ तथा अनंतहैंमस्तकजाके ॥ तथासर्वजीवोंकेजेमुखहैं तिनसर्वमुखोंकरिसहितहै ॥ तथाजायक्षभगवान्में सर्वभूत भौतिक पदार्थप्रतीतहोवेहैं ॥ तथासर्वशस्त्रोंकूं तथासर्ववस्त्रोंकूं तथासर्वमालावोंकूं तथास्त्रीपुरुषनपुंसकचिन्होंकूं धारणकरणेहाराहै ॥ ताआश्चर्यरूपयक्षभगवान्कूं देखकरि तेस्थितहुए देवता महान्आश्चर्यकूं प्राप्तहोतेभये ॥ तथा यहयक्ष कौनहै कौनहै याप्रकारकेवचनकूं परस्परकहतेभये ॥ भगवान्नेभी ऐसारूपदिखाया जारूपकूंदेखकरि देवतावोंकूं महान्विस्मयकी तथाभयकीप्राप्तिभयी ॥ महान्भयकूं तथाविस्मयकूं प्राप्तहुए तिनदेवतावोंकेनेत्रउत्फुल्लहोतेभये ॥ तथारोमखडेहोतेभये ॥ कौनहै कौनहै याप्रकारकावचनहीवारंवार कहतेभये ॥ आपनेप्रभावकू सर्वविस्मरणकरतेभये ॥ कोईदेवता यक्षकेसमीप जानेकूंसमर्थनहींभया ॥ १५ ॥ तिसकेअनंतर तेसर्वदेवता मिलकरि अग्निकूंकहतेभये॥

हेअग्ने तुमयायक्षके समीपजाइकरि निश्चयकरो जोयहयक्ष हमारे अनुकूलहै वा प्रतिकूलहै ॥ कैसाहै सोअग्नि जोअग्रगमनकरणेहाराहै ॥ तथा अति बुद्धिमान्है ॥ १६ ॥ सोअग्निदेवता इंद्रादिकोंकीआज्ञाकूंमानकरि यक्षकेसमीपजाताभया ॥ ताकूंयक्षभगवान्पूछतेभये तूंकौनहै ॥ ऐसेतायक्षकेवचनकूं श्रवणकरि अग्निदेवता अभिमानसहित याप्रकारकेवचनकूं कहताभया ॥ मैं अग्निहूं तथामेरानामजातवेदहै॥ जातवेदपदका अर्थयह ॥ जोधनकादाता ॥ वा व्यापक ॥ वा अत्यंतबुद्धिमान्है ॥ याप्रकारकेवचनकूं सुनकरि यक्षकहेहै ॥ हेअग्ने ऐसे तुमारेमेंक्याबलहै ॥ अग्निरुवाच ॥ हेयक्ष जितनामूर्तिमान्पृथिवीमें दिखेहै ॥ तासर्वविश्वकूं मैं अग्निदेवता एकक्षणविषे दाहकरदेवों इतना मेरेमेंबलहै ॥ १८ ॥ तबीसोयक्ष मंदमंदहसताहुआ अग्निकेआगे एकशुष्कतृण राखकरि कहताभया ॥ तुम यातृणकूं भस्मकरो ॥ तबी ताअग्निदेवताने अतिवेगकरिके तथासर्वयत्नकरिके तातृणके दाहकरणेका उद्यमकराभी ॥परंतु तिसतृणकेदाहकरणेकूं समर्थनभया॥ तबीसोअग्निदेवता लज्जितहुआ तथाभयभीतहुआ तादेवतावोंकी सभामें आइकरि सर्वदेवतावोंकूं यहकहताभया ॥ मैं यायक्षकेजाननेमें समर्थनहींहूं ॥ तुमआपहीनिश्चयकरो ॥ १९ ॥ ऐसे सर्वदेवता अग्निकेवचनकूंसुनकरि वायुदेवताकूं कहतेभये ॥ हेवायोतुमनिश्चयकरो यहयक्षकौनहै ॥ तथा याकाक्या अभिप्रायहै ॥ वायुदेवता तथाऽस्तु यहकहकरि यक्षभगवान्केपास आताभया ॥ २० ॥ ताकूंयक्षभगवान् पूछतेभये तूंकौनहै ॥ वायुकहेहै ॥ मैं वायुहूं तथामेरानाम मातरिश्वाहै ॥ अर्थयह ॥ जो आकाशमें विचरणेहाराहूं ॥ २१ ॥ यक्षनेकहा तेरेमेंक्याबलहै ॥ वायुकहेहै मेरेमेंयहबलहै जोसर्वविश्वकूं आपनेकुक्षिमेंगेरकरि याब्रह्मांडसे बाह्यलेजानेकूं समर्थहूं ॥ जैसे सूक्ष्मतृणकूं बालक आपने मुखमें गेरकरिकहींअन्यदेशमें लेजावेहै ॥ तैसे

याजगत्कूं अन्यदेशमें लेजानेकूं मैसमर्थहूं ॥ २२ ॥ ऐसे वायुके अभिमानसहितवचनकूं सुनकरियक्षकहेहै ॥ हेवायो तुमयातृणकूं ग्रहणकरो ॥ अग्निकीन्यांई वायुभी अपनासर्व बललगाइकरिकेभी जबी तृणके ग्रहणकरणेकूं समर्थनहींभया ॥ तबीसोवायु लज्जितहुआ तथा भयभीतहुआ देवतावोंकीसभामें आइकरि कहताभया ॥ मैंया यक्षकेजाननेमें समर्थ नहींहूं ॥ २३ ॥ याप्रकारके वायुकेवचनकूं श्रवणकरि सभावासीदेवता इंद्रकूंकहतेभये ॥ हेदेवराज तुम यायक्षकेअभिप्रायकूं निश्चयकरो ॥ ऐसे देवतावोंके वचनकूंमानकरि यक्षकेपास इंद्रआताभया ॥ ताइंद्रकूं समीपआतादेखकरि यक्षभगवान् ताके विशेषअभिमाननिवृत्तिअर्थ अंतर्धानहोताभया ॥ २४ ॥ तिसकालमें देवराजइंद्र चारोंदिशावोंविषे देखताहुआ तास्थानविषेहीस्थितहोताभया ॥ औरयक्षकेदेखनेकी उत्कटइच्छावालाइंद्र तथागर्वआदिकदोषरहितहुआ जादेशमें यक्षअंतर्धानहुआ तादेशमेंही एक किसीअपूर्व स्त्रीकूं देखताभया कैसीहै सादेवीजा बहुतशोभावालीहै उपमासेरहित शरीरकूं धारणकरणेहारीहै ॥ ब्रह्मविद्या यानामकरिके जाप्रसिद्धहै ॥ हिमाचलकीकन्याहै ॥ अनेकस्वर्णकेभूषणोंकरिभूषितहै ॥ और जाब्रह्मविद्यारूपीउमादेवीकीकृपासे संन्यासी आपने अखंडस्वरूपकूंजानेहैं॥ जाउमादेवी महादेवजो कामकेनाशकरणेहाराहै ताकेसाथहीरहेहै ॥ तादेवीकूंदेखकरि इंद्रपूछताभया ॥ हेदेवीयहअंतर्धानभयाजोयक्षहै सोकोनथा ॥ २५ ॥ सादेवीकहेहै ॥ हेइंद्र यहयक्षतौब्रह्मरूपहै ॥ तुमारे अभिमानकीनिवृत्तिअर्थ यक्षरूपकूं धारणकरताभयाहै ॥ और इसब्रह्मकीकृपाकरिकेही तुमशत्रुवोंकूं जीततेभयेहो ॥ तथापूज्यभयेहो ॥ तुमारा यश बल ऐश्वर्य सर्वताकीकृपासेहीसिद्धहै ॥ तिसदेवीकेवाक्यकूं सुनकरि देवताभी जानतेभये ॥ जोहमारेकूं सर्वसुखतापरमेश्वरकीकृपासे प्राप्तभयाहै॥ऐसे देवीकीकृपासे परमेश्वरकूंही याजग-

त्का उपादानतथानिमित्तकारण तेदेवता जानतेभये ॥ २६ ॥ तायक्षरूपब्रह्मकूं इंद्रदेवता तथाअग्निदेवतातथावायुदेवता अत्यंतसमीपताकरि प्राप्तहोतेभये ॥ यातें यहतीनदेवता औरदेवतावोंसे अधिक है ॥ २७ ॥ यातीनोंविषेभी इंद्रदेवताअधिकहैं ॥ जिसमें सोइंद्रदेवता याब्रह्मकेस्वरूपकूं उमादेवीकेमुखसे यथार्थजानताभया ॥ २८ ॥ अब ताब्रह्मके अधिदैवरूपकूंतथाअध्यात्मरूपकूं कथनकरेहैं ॥ ब्रह्मकाअधिदैवरूपतौयहहै ॥ जोसमष्टिहिरण्यगर्भभगवान्काशरीरहै तिसहिरण्यगर्भकेसमष्टिदेहमेंजोपरमात्मा विद्युत्केसमान प्रकाशमानहै ॥ विद्युत्काप्रकाशतौजडहै तासेविलक्षण चेतनप्रकाश और आपनीसमीपताकरिके सर्वप्राणीयोंके इंद्रियोंका तथामनकाप्रेरकहै ॥ सोतत्त्वही ताब्रह्मका वास्तवस्वरूप अधिदैवरूपहै ॥ जैसेविद्युत्कीउपमाब्रह्मकूं श्रुतिदेतीभयी ॥ तैसेनेत्रके निमीलनकीउपमाभी श्रुतिदेतीभयी ॥ सोदिखावेहैं ॥ नेत्रकेनिमीलनकरणेकीन्यांई आत्माकाप्रकाशहै ॥ अर्थयह ॥ जोब्रह्मयक्षरूपकूंधारकरि अंतर्धानताकूंप्राप्तहुआ सोविद्युत्केप्रकाशकीन्यांई तथानेत्रके निमीलनकीन्यांई अंतर्धानहोताभया ॥ २९ ॥ अबअध्यात्मरूपकूंश्रवणकरो ॥ यहमन जोसंकल्पविकल्पकरेहै सोयाआत्मासाक्षीकरिकेही संकल्पादिककरेहै ॥ मनकाविषयोमें गमनभी साक्षीप्रत्यग्देवकेहीआधीनहै ॥ स्वतंत्रमनकिंचित्भीकरणेकूं समर्थनहीं ॥ ऐसाअध्यात्मरूप आत्माकाहै ॥ ३० ॥ ऐसासाक्षीआत्माकास्वरूपही है ॥ अर्थयह ॥ जोअधिकारीपुरुषोंकरिके भजनीयहै ॥ जोपुरुषवनं इसनामकरिके ताब्रह्मकाध्यानकरे है ॥ सर्वभूत आराधनकरणेवासते तापुरुषकीइच्छाकरते हैं ॥ ३१ ॥ ऐसे अध्यात्म अधिदैवरूपकरि आचार्यनेशिष्यकूं उपदेशकरा ॥ अब उक्तअर्थका प्रश्न उत्तरद्वारा निरूपणकरेहैं ॥ हेगुरो मेरेकूं उपनिषत् श्रवण करावो ॥ गुरुकहेहैं हेशिष्य ब्रह्मकेस्वरूपकूं कथनकरणेहारी

उपनिषत् तेरेकूं हमपूर्वकथनकरिआएहै ॥ ३२ ॥ साधनतौ ताब्रह्मविद्याके यहहैं ॥ तपब्रह्मविद्याकीप्राप्तिमें साधनहै ॥ तपका अर्थ इस स्थानमेंयहहै ॥ जोमनकीएकाग्रता ॥ तथादमभी ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिमें साधन है ॥ दमकाअर्थयहजो बाह्यनेत्र श्रोत्र आदिक इंद्रियोंकी स्ववशता ॥ तथाजेनिष्काम कर्म हैं तेभीअंतःकरणकी शुद्धिद्वारा ब्रह्मविद्याकेउत्पादकहैं ॥ तप दम कर्म यहतीनब्रह्मविद्याके प्रतिष्ठाहैं ॥ प्रतिष्ठाकहिये स्थितिकेहेतु याप्रसंगमेंपादलेने ॥ ऋग् यजुर् साम अर्थव यहचारिवेद ब्रह्मविद्याकेअन्यअंगहैं ॥ सर्वदासत्यवचनकाकथन यह ब्रह्मविद्याकाआयतनहै ॥ अर्थयह ॥ जोयाकेआश्रयब्रह्मविद्यारहेहै ॥ सत्यवचनकहनायहहीपरमधर्म शास्त्रमेंप्रसिद्धहै ॥ यातें सत्यवक्तापुरुषमें विद्यारहेहै ॥ ३३ ॥ जोअधिकारी याब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोवैहै सो पुरुष सर्वपापोंकूं तथासर्वअनर्थकेकारण अज्ञानकूं निवृत्तकरि परम ब्रह्मानंदमें स्थितिकूंपावैहै जोआनंदसर्वथाअविनाशीहै ॥ ३४ ॥ ॐ शांतिःशांतिःशांतिः ॐतत्सत् ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादशिष्यसंप्रदायप्रविष्टपरमहंसपरिव्राजकस्वामि. अच्युतानन्दगिरिविरचितेप्राकृतोपनिषत्सारे तलवकारार्थनिर्णयः॥ २॥

इति केनोपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ॥२॥

श्रीः ।

अथ
कठोपनिषद्भाषांतरम् ।

ॐनमःश्रीगुरुभ्यः ॥ अबयजुर्वेदकी कठउपनिषत्का अर्थकहेहैं ॥ एकउद्दालकनामाऋषि वरुणऋषिकापुत्र होताभया ॥ जो उद्दालक अन्नकेदानसे महान्कीर्तिकूं प्राप्तभयाथा ॥ सोउद्दालकमुनि विश्वजित्नामकयज्ञकरणेका आरंभकरताहुआ सर्वधनकेदेनेकासंकल्प करताभया ॥ और तिसउद्दालकमुनिका नचिकेता नामवालापुत्र होताभया ॥ और उद्दालककेगृहमें धनतौगौरूपहीबहुतथा ॥ और आपनेपुत्रमें ताऋषिकाबहुतस्नेहथा ॥ सोउद्दालकमुनि आपनीगौवोंके दोविभागकरताभया ॥ सुंदरगौवां जो दूध तथासंतान देनेवाली हैं तिनका एक विभाग किया ॥ सोसर्वगौवां आपनेपुत्रवासते रखलेताभया ॥ और दूसराविभाग दानकरणेवासते राखा जिनकादानकरणाहै तेगौवां ऐसीहैं ॥ जिनोंनेजलपानकरिलीयाहै ॥ तथा तृणादिकोंकूं भक्षणकरलियाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोअबसामर्थ्यजिनकी जलकेपीनेमें तथातृणादिकोंके भक्षणकरणेमेंनहीं है ॥ जबीजलपानादिकोंमेंभी तिनकीसामर्थ्यनहींतौ तेदूधदेवैंगी वा संतानदेवैंगी यामेंक्याआशाहै ॥ ऐसीगौवोंकेदानका जबीताउद्दालकमुनिने आरंभकरा तबी नचिकेतानामा उद्दालककापुत्र स्वभावसेही शास्त्रमेंश्रद्धावान् पंचवर्षकाबालक याप्रकारकेविचारकूं करताभया ॥ जोप्राणी किसीकूं सुखदेताहै सोसुखदातापुरुषभी सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जोकिसीकूं दुःखदेवैहै सोदुःखदातापुरुषभी दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहमेरापिता दुःखदेनेहारीगौवोंकूं

ब्राह्मणोंकेतांई देकरि कैसेसुखकूं प्राप्तहोवेगा किंतु दुःखकूंहीप्राप्त-होवेगा और सुंदरगौवोंजेमेरी वासतेराखींहैं ॥ तिनकूं ब्राह्मणोंकेतांई किसवासतेनहींदेता ॥ मेरीचिंता किसवासतेकरताहै ॥ अंतर्यामीहीमे-रापालकहै ॥ यातें पिताकूं मेरीचिंताकरणी निष्फलहै ॥ औरमैं इस उद्दालकऋषिकापुत्रहूं ॥ पुत्रसोईहै जोनरकादिकदुःखोंसे पिताकी रक्षाकरे ॥ जोदुःखसे पिताकीरक्षानहींकरे सोपिताकामलहै पुत्रपदका-अर्थ तामें घटेनहीं ॥ यातें मैं इसनिषिद्धदानसे पिताकूं निवृत्त-करूं ॥ याअभिप्रायकूंमनमेंधारकरि नचिकेता पिताकूंकहेहै ॥ हे पिताजैसेगौवां आपकाधनहै तैसेमैं पुत्रभी आपकाधनहूं मेरेकूं किस-ब्राह्मणकेतांई देवोगे ॥ यहवचन नचिकेताने इसवासतेकहा जो मे-रापिता सुंदरगौवांकादानकरेगा अथवा मेरेसेपूछेगा ॥ तबमैं धर्मशा-स्त्रके अनुसार आपनाअभिप्रायकहूंगा ॥ ऐसे पिताकूं जबीदूसरीवार कहा मेरेकूं किसब्राह्मणकेतांई देवोगे ॥ पितातूष्णींरहे जबीतीसरीवार फेरकहा तबी पिता क्रुद्धहुआ यहकहताभया तेरेकूं मृत्युकेतांईदेवोंगा॥ याप्रकारकेवचनकूं नचिकेताश्रवणकरि विचारकरताभया ॥ यह जोमेरेपिताने हमारेकूं वचनकहाहै इसकरिके कुछमेरीहानिनहीं है ॥ उलटा मेरेकूंतौ पुण्यकीप्राप्तिहोवेगी ॥ काहेतै जो जो शरीर उत्पन्न भयाहै ॥ सो सो किसीकालमें तौ अवश्य मृत्युकूं प्राप्तहोवेगा ॥ सो मैंनेभी मरणातोथाही ॥ परंतु अब पिताकी आज्ञाकापालनहोगा॥ यापिताकी आज्ञाकेपालनसे कल्याणकरणेहारा और धर्मकौनहै पिताकी आज्ञाहीपरमधर्महै ॥ ऐसेंमेरेकूं पुण्यप्राप्तिअवश्यहोवेगी ॥ परंतु यापिताका मेरेमें महान्स्नेहहै ॥ यातें मेरेबिना पिता महान् दुःखकूं प्राप्तहोवेगा ॥ तापिताकेदुःखकूं विचारकरि मेरेचित्तविषे महान्क्लेशहोवेहै ॥ आपनेमृत्युकरि हमारेकूं किंचित्मात्रभी क्लेश नहीं है ॥ यातें हमारेकूं अवश्य मृत्युकेपास जाना चाहिये ॥ उत्तम

सोपुरुषहै जो गुरु वा पिताके मनकीबातकूं समझकरि करताहै ॥ और मध्यमसोहै जो कह्यामानकरिकरे ॥ अधमसोहै जोकहेपरभी नकरे ॥ मेरेपिताके शिष्यबहुतहैं ॥ तिनसर्वमें मैं नचिकेता अधमभावकूं नहींप्राप्तहोवों ॥ उत्तमभावकूं वामध्यमभावकूं प्राप्तहोवों ॥ उत्तमभावकीप्राप्ति वामध्यमभावकीप्राप्तितौ पिताकीआज्ञामाननेसेही होवेगी ॥ और मेरे धर्मराजकेपासजानेसे धर्मराजका तथा पिताजीका किंचित्मात्रभी प्रयोजनसिद्धहोनानहीं ॥ केवल पिताकूं दुःखहीप्राप्तहोवेगा ॥ और जबी मैं मृत्युकेपासनहींजावों तौ मेरेपिताकूं मिथ्यासंभाषणसे महान्दुःखकी प्राप्तिहोगी ॥ और मैंअधमभावकूं प्राप्तहोवोंगा ॥ यह चित्तमें धारकरि नचिकेतापिताकूंकहेहै हेपिताजी आपआपनेपिता पितामहादिकोंकूं देखो तिनोंने कबीमिथ्यासंभाषण नहींकरा ॥ और दूसरे जेमहात्मा यासंसारमें वर्तमानहैं ॥ तिनकूंदेखो और तिनकेआचारकूं धारण करो ॥ और आपनेभी अबतक अगेकबीनहीं मिथ्यासंभाषणकरा ॥ यातें मेरेमेंस्नेहकूंत्यागकरि मृत्युकेपासभेजो ॥ आपनासत्यपालनकरो ॥ और यहशरीरतौक्षणभंगुरहै ॥ जैसे सूर्यकरि पाककूंप्राप्तहुए आम्रआदिफल पृथिवीपरगिरेहैं ॥ तैसे कालभगवान्करि जीव वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोवेहैं तथाजन्मकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ यातेंहेपिता ऐसेक्षणभंगुरशरीरमें स्नेहकूंत्यागकरि और आपने सत्यधर्ममेंस्थितहोइकरि मेरेकूं धर्मराजकेपासभेजदेवो ॥ इसप्रकार जबीपिताकूं नानावाक्यकहे तबी सोउद्दालकपिता अत्यंतदुःखीहुआभी जावो ऐसेकहताभया ॥ तबी नचिकेता आपनेपिताकीभक्तिके बलसे ॥ तथा आपने तपकेप्रभावसे तथा चित्तशुद्धिकेप्रभावसे स्थूलशरीरसहितही गमनकरताभया ॥ और आगे यमराजा कहीं ग्राममेंगयाथा ॥ पीछे आए धर्मराजकूं यमराजकेभृत्योंनेयहकहा हेयमराज नचिकेतानामब्राह्मण अतितेजवाला साक्षात् अग्निआयाहै

ताकूंप्रसन्नकरो ॥ तानचिकेताने तीनउपवासकरेहैं ॥ उपवासकरणेका तात्पर्ययह जोमेरेकूं धर्मराजाग्रहणकरिलेवैं अन्यथामेरेपिताकावचन मिथ्याहोगा और यमराजासर्वज्ञ सर्वजानतेहुए नचिकेताकीपरीक्षाअर्थ आपनेकिंकरोकूंजातेहुए यहकहगयेथे ॥ जोतुमारेकूं यमनहींग्रहणकरेगा ऐसे तुमनेनचिकेताकूंकहदेना ॥ यह कहकरि तीनदिन बाहिररहे॥ पीछेसे आएनचिकेताकूं यमकिंकरोंनेकहा ॥ हेनचिकेता अबीतुमाराआयुसमाप्तनहींभया यातें तुमारेकूं यमराजानहींग्रहणकरेगा तुम पृथिवीलोकमें चलेजावो ॥ ऐसे यमकिंकरोंने नानाप्रकारकेवचनकहेभी ॥ परंतु नचिकेता आपनेधैर्यसे चलायमानभयानहीं ॥ तापीछे तीसरेदिनमें यमराजा आपनेगृहमेंआताभया ॥ तायमराजाकूं किंकरकहेहैं ॥ हेयमराज अग्निकीन्याईजो अतिथिब्राह्मण तुमारेगृहमें आयाहै ॥ ताकीशांतिवासते शीघ्रही जलआसनभोजनादिकोंसे तुमपूजनकरो ॥ और हेयमराज जिसमूढप्रमादीगृहस्थकेगृहविषे अतिथिमहात्मारूपअग्नि अन्नजलआदिकोंसे सत्कारकूंप्राप्तहोवेनहीं तिसमंदबुद्धिवाले गृहस्थके या सर्वपदार्थोंकूं नाशकरेहै ॥ सोपदार्थयहहैं जिसपदार्थकेप्राप्तिका निश्चयनहीं है तापदार्थके प्राप्तिकी इच्छाकानाम आशाहै ॥ जापदार्थकेप्राप्तिकानिश्चयहै तापदार्थकेप्राप्तिकीइच्छाकानामप्रतीक्षाहै ॥ तथासत्संगसे होनवालाजो फलहै ताकूंसंगतकहेहैं ॥ तथासुखकेप्राप्ति करणेहारी वाणीकानाम सूनृताहै ॥ यज्ञकानाम इष्टहै ॥ वापी कूप तडागआदिकोंकू पूर्त कहेहैं ॥ इनपदार्थोंका और पुत्र पशु आदिसर्वपदार्थोंका नाशकरणेहारागृहविषे सत्कारकूं नप्राप्तहुआ अतिथि है ॥ यातें हेयमराज आप अवश्य नचिकेताका पूजनकरो ॥ ऐसे वाक्यसुनकरि यमराजा अत्यंतभयवान्हुआ ॥ नचिकेताकेपास जाइकरि यहकहताभया ॥ हेनचिकेता तुम मेरेगृहविषे तीनरात्रि भोजनादिकोंकूं नकर-

तेहुए स्थितभयेहो ॥ अब तुम मेरेपरकृपाकरो तुमारीकृपासे मेरेकूं कल्याणहोवे ॥ तेरेकूं मेरावारंवारनमस्कारहै ॥ और तीनदिन भोजनविनाही तुममेरेगृहमेंरहेहो ॥ यातें तुम तीनवरमांगो जैसेआपकूं अपेक्षितहोवैं ॥ जोमांगोगे मैंयमराजा सत्यकहताहूं सर्वदेवोंगा ॥ यामें किंचित्भी संशयकरणानहीं ॥ ऐसे जबी यमराजानेकहा तबी नचिकेता तीनवर मांगताभया ॥ एक आपनेपिताकीप्रसन्नता द्वितीयअग्निविद्या ॥ तीसराब्रह्मविद्या ॥ अबतीनूंकूं क्रमसे निरूपणकरेहैं॥ हेयमराज मैं जैसे तुमारीकृपासे तुमारेलोकमेंस्थितहूं ॥ सर्वदुःखरहित तथा क्रोधादिकोंसेरहित होइकरि प्रसन्नताकूंप्राप्तहूं ॥ तैसे मेरे पिताभी सर्वदुःखरहित तथाक्रोधरहित तथासंतापरहितहोइकरि स्थितहोवैं ॥ जैसे मेरेकूं पूर्व आपनापुत्रजानकरि संभाषणकरतेथे तैसे अबभीसंभाषणकरें ॥ और हेभगवन् यहलोकमें प्रसिद्धहै जोमृत्युलोकमें जाइकरि आतानहीं ॥ तैसेंमेरेपिता मेरेमेंअविश्वासनहींकरें ॥ किंतु यहजानेजो सोई मेरापुत्रहै ॥ यहपिताकी प्रसन्नतारूपमें प्रथमवरमांगताहूं ॥ यमराजाकहेहैं हेनचिकेता ॥ जैसेपूर्वतुमारेमें निश्चयवाले पिताहोतेभये ॥ तैसे अबभीमेरीकृपासे तेरेमें तैसाहीनिश्चयकरेंगे ॥ दुःख संताप क्रोधरहितहोइकरि सुखपूर्वक दिनरात्रिमें भोजन निद्रादिकोंकूं करतेहुए स्वस्थचित्तहोइकरि स्थितहोवेंगे ॥ अबद्वितीयवर अग्निज्ञानरूपकूंनचिकेता मांगेहै ॥ हेयमराज मैंनेवेदवेत्ताब्राह्मणोंसे ऐसेसुनाहै ॥ जोस्वर्गमेंस्थितपुरुषकूं भयप्राप्तहोवेनहीं ॥ और हेमृत्यो तुमसे भयकूंप्राप्तहोवेनहीं तथाजराअवस्था व्याधि शत्रु क्षुधा तृषा शोक मोहसे भयकूंप्राप्तहोवेनहीं॥और स्वर्गमें पुरुष महान्आनंदकूं प्राप्तहोवेहै ॥ हेमृत्यो तास्वर्गका साधनरूप अग्निविद्याकूं तुम भलीप्रकार जानतेहो ॥ और जा अग्निविद्याके प्रभावसे कर्मीपुरुष देवभावरूप जो अमृतत्वहै ताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ ताअग्निविद्याकूं मेरेतांई कथनकरो ॥

श्रद्धावान्अधिकारीकूंतौगुरु गोप्यवस्तुकूंभीकहेहैं ॥ और हेभगवन् मैंभी आपसे श्रद्धासहितहोइकरिहीपूछताहूं ॥ मेरेकूं कृपाकरि अवश्यकहो ॥ ऐसे द्वितीयवरकूं मांगनेवाले नचिकेताकूं यमराजाकेहेहैं ॥ हेनचिकेता यास्वर्गकीसाधनअग्निविद्याकूं भलीप्रकारसे मैं जानताहूं ॥ तुमसावधानहोइकरिश्रवणकरो मैं तुमारेप्रतिकथनकरताहूं ॥ हेनचिकेता यहअग्निविराट्रूपहै ॥ यहअग्नि स्वर्गादिकलोकोंकी प्राप्तिका तथा स्थितिका कारणहै ॥ तुमयाविराट्रूपअग्निकूं बुद्धिरूपीगुहामें साक्षीरूपसेस्थितजानो ॥ ऐसे नचिकेताकेप्रति सर्वलोकोंकाकारणरूपविराट्अग्निकूं यमराजा कथनकरतेभये ॥ जितनीयां इष्टका जैसे रखीजातीहैं जैसे स्वरूपवालीहैं ॥ औरजेमंत्र तथाक्रियादिकहैं ॥ तिनसर्वकूं यमराजा नचिकेताकेतांई कहतेभये ॥ ऐसे नचिकेताभी यमराजाके मुखसे श्रवणकरिके ताअग्निग्रंथका अनुवादकरताभया ॥ पुनःयमराजा नचिकेताकी अलौकिक बुद्धिदेखकरि ॥ प्रसन्नहुए यहकहतेभये ॥ हेनचिकेता मैंने तीनवरदेनेकीजाप्रतिज्ञाकरीहै ॥ सा तौ मैंने पूर्ण करणीहीहै॥प्रथम औरवरकूं तुमारेतांई मैं प्रसन्नहुआ देताहूं॥जबतकयहसूर्यरहेगा ॥ तथाजबतक यासंसारमेंवेदरहेगा तबतक जो अग्नितुमने मेरेसेश्रवणकराहै ॥ याअग्निकानाम नाचिकेतहोगा ॥ अर्थ यह नचिकेताकाजोहोवे ताकूंनाचिकेतऐसेकेहेहैं ॥ दूसरायह ॥ जोदिव्यमालारूपवर मैं तुमारेकूंदेताहूं ॥ कैसीमालाहै ॥ जामैं अनेक रत्नजटितहैं ॥ तथा अनेकस्थूल आमलकफलकेसमान जामालामें मोतीजटितहैं ॥ ऐसीस्वर्णजटितमालाकूं कंठमें तुमधारणकरो ॥ जैसेमेघोंमें विद्युत्प्रकाशकरेहै तैसे नचिकैताकेकंठमें सामालाप्रकाशकरतीभयी ॥ अब नाचिकेतनामक अग्निका माहात्म्यवर्णनकरेहैं ॥ हेनचिकेता जोतुमनेमेरेसे अग्निग्रहणकराहै ता अग्निका जो पुरुष तीनवारअनुष्ठानकरेगा सोपुरुष माता पिता तथागुरुकी

शिक्षाकूंप्राप्तहुआ ॥ ब्रह्मलोकप्राप्तिद्वारा जन्ममृत्युकूं तरजावेगा ॥ अर्थयह ॥ जोनिवृत्त करेगा ॥ अथवा यालोकमेंही अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा जन्ममृत्युके अभावरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवेगा ॥ कैसाभी विराड्रूपअग्निहै ॥ जोहिरण्यगर्भसेउत्पन्नभयाहै ॥ औरजोदेवतावों-करिके स्तुतीकरणेयोग्यहै ॥ ऐसे विराट् अग्निकूं जानकरिपुरुषशांति-कूं प्राप्त होवेहै ॥ ऐसे अग्निज्ञान शोकनिवृत्तिका तथा स्वर्गप्राप्तिका तथामृत्युपाश निवृत्तिकासाधनमें यमराजाने तुमारेकूं कहदिया ॥ जा अग्निकूं तुमने दूसरावरमांगा सो अग्नि तेरेनामसेही नाचिकेतरूपकरिके कथनकराजावेगा ॥ अबतीसरावरमांगो ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेभग-वन् मृत्युसर्वकाहोनाहै मेरेकूंयामें संशययहहै जेकोई चार्वाकादिकतौ मरणअवस्थाकेअनंतर आत्मानहींहै ॥ ऐसेकहेहैं ॥ और तामें यह युक्तिकहेहैं ॥ जोआत्मा देहसें भिन्न मानेतौ देहसेंजबीमस्तककूंपृथक् करदेवैं तब जैसे ग्रीवासे रुधिरनिकसे हैं तैसे आत्माभी निकसताप्रतीत होवे प्रतीततौहोवेनहीं यातेंदेहसे भिन्ननहींहै ॥ और नास्तिकोंकी यु-क्तिअनंतहै मुमुक्षुजनोंके परमार्थमें अनुपयोगीजानकरि तिननास्तिकों-कीयुक्तिलिखीनहीं ॥ और दूसरे वेदकूंमाननेवाले जेआस्तिकहैं तेदेहसे भिन्नआत्माकूंमानेहैं ॥ हमारेकूं दोप्रकारकेमतकूंश्रवणकरि यहसंशय उत्पन्नभयाहै जोदेहसे भिन्नआत्माहै वानहीं ॥ आपकृपाकरि मेरेकूं ऐसाउपदेशकरो जाउपदेशसें यासंशयकूं निवृत्तकरी आत्माकूंजानलेवों ॥ यहहीमैं तीसरावरमांगताहूं ॥ याप्रकारकेनचिकेताकेवचनकूं श्रवण करि यमराजा आपनेहस्तकी भ्रमणरूपचेष्टाकूं करताहुआ नचिकेता-की परीक्षावासते ऐसेकहताभया ॥ यमराजोवाच ॥ हेनचिकेता ॥ यहतौ सूक्ष्मआत्माहै ॥ यामें देवतावोंकूंभीसंदेहहै ॥ ऐसे संशयग्र-स्तवरके मांगनेसे क्याहै तुमऔरकोई सुंदर वरमांगो॥ और यादुर्विज्ञे-यवस्तुके पूछनेसे तुमारेकूं क्या मिलेगा तुम या आग्रहकूं त्याग करो ॥

मैंतो वररूपीपाशकरिबांध्याहूं ॥ मेरेकूं क्लेशनहींदेवो ॥ मेरेसें कोई औरवरमांगकरि सत्यवचनरूपी पाशसैमुक्त करो ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेभगवन् आपकहतेहो जो यामैं देवतावोंकूंभीसंशयहै ॥ और आपभीदुर्विज्ञेयकहतेहो और तुमारेजैसावक्ता यासंसारमेंदूसराप्रतीतनहींहोता जासे मैं आपनेसंशयकूंनिवृत्तकरूं ॥ और इसवरसे अधिकश्रेष्ठदूसरावरमैंमानतानहीं ॥ यमराजा नचिकेताके वैराग्यकी परीक्षाकरेहै ॥ यमराजोवाच ॥ हेनचिकेता तुम याप्रकारके सुंदरवर मांगो ॥ तेवर यहहै ॥ शतवर्षकी आयुवालेपुत्र ॥ तथा पौत्र ॥ बहुतपशु ॥ हस्ती॥स्वर्ण॥ अश्व ॥ मंडलाधिपत्य॥चिरजीवन॥धन॥ आपनीस्थिरजीविका ॥ चक्रवर्तीराज्य ॥ दिव्यमानुष्यलोकमें कामप्राप्ति ॥ सत्यकामता ॥ दिव्यस्त्रीयां ॥ तिनस्त्रीयोंकीदासीयोंकानृत्यवादित्रादिकोंविषे कुशलपणा ॥ यहषोडशवर तुमनचिकेताकेतांईमैं यमराजदेताहूं ॥ यहतीसरावरमांगो ॥ और मैंने दिव्यअप्सराआदिकजेभोग्य तुमकूंदेनेवासते कहेहैं ॥ तिनसेआनंदकूं प्राप्तहोवो ॥ और हेनचिकेता बुद्धिमान्सोहै जोसुखकरणेवालेवस्तुकूंमांगे ॥आत्मज्ञानतौ किंचित्मात्रसुखकरणेवालानहीं है ॥ याते तुमपूर्वकहे सुखजनकषोडशवरकूंमांगो ॥ और आत्मा मरगया वा नहींमरा तामें प्रश्नमतकरो ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेभगवन् जिनस्त्रीआदिकपदार्थौंकूं तुमने सुखका साधन कथनकराहै ॥ तेसर्वपदार्थ दूसरेदिनपर्यंत रहेंगे वानहींरहेंगे ॥ ऐसे निश्चयनहींकराजाता ॥ और दुःखरूपइनविषयोंमें सुखभ्रांति मूढोंकूंहोरहीहै ॥ जैसे पित्तदोषकरि दुष्टनेत्रवाले पुरुषकूंश्वेतशंखभी पीतरूपहोइकरि प्रतीतहोवेहै तैसे दुःखरूपविषयसुखभी कामरूपीज्वरसै उत्पन्नभयाजोव्यामोहहै ताव्यामोहरूपी दोषकरि दुष्टचित्तपुरुषकूं सुखरूपप्रतीतहोवेहै ॥ और हेयमराज यहस्त्रीआदिकभोगतो कूकर शूकर आदिदेहमेंभी प्राप्तहोवेहैं ॥ और पुरुषके इंद्रियोंकाजोतेजहै ॥ ताके

नाशकरणेहारेहं ।। धर्मके तथामोक्षके महान्विरोधीहैं ।। और हेभगवन् जीवनभी मैं नहीं मांगता ।। काहेते जोअतिदीर्घ आयुवालाब्रह्माहै। तानेभी अंतमें मृत्युकूंप्राप्तहोनाहै।। यातें गाने बजानेवालीस्त्रीयोंकी दासीगण तथा अप्सरा पुत्र पौत्र हस्ती चिरजीवन चक्रवर्तिराज्य धन स्थिरजीविका औरजे आपनेकहे तेसर्व आपनेपासराखो।।मेरेकूं इनकी किंचित्भी इच्छानहीं ।। और हेभगवन् जोतुमने मेरेताईंधनदेनेकूं कहा ।। सोताधनकरि पुरुष कदाचित् तृप्तिकूं प्राप्तहोतानहीं ।। जैसे घृतकरिअग्नि और जैसे समुद्र जलोंकरि तृप्तहोवेनहीं ॥ तैसे तृष्णावालेकी धनकरि तृष्णानिवृत्तहोवेनहीं ॥ और जबीव्यवहारमें मेरे कूंधनअपेक्षितहोवेगा तौ आपकेशरणमें प्राप्तजोहमहैं तिनहमकूं धन तौ आपहीप्राप्तहोवेगा ताधनकीप्रार्थनाकरणीनिष्फलहै ॥ तथा जीवनभी मेरेकूंमांगनेयोग्यनहीं है ॥ काहेतै जोजीवनआगेहीप्राप्तहै ॥ जबी आपही स्थावरजंगमरूपजगत्केमारणेवालेमृत्युहैं ॥ और हम आपकेशिष्यहैं तथातुमारेशरणमें स्थितहैं ॥ तौहमकूं मरणेकाक्या भयहै ॥ तातेंतीसरावरमेरेकूं आत्मविद्याहीदेवो ॥ और हेयमराज जबीतुमारेजैसे जरामरणसैरहितदेवतावोंकीसमीपताकूं यापृथिवीमें रहनेवाला जरामरणकरिग्रस्तयहपुरुष प्राप्तहोवेतौ तुच्छ पदार्थोंकी इच्छाकरनीयोग्यनहीं ॥ प्रथमतो तुमारीप्राप्तिदुर्लभहै कदाचित्दैवयोगसे तुमारीप्राप्तिभीहोजावेतौ बुद्धिमान्कूं चाहिये जरामरणादिकोंसे रहित वस्तुकूंहीप्राप्तहोवे ॥ और यहतुच्छजोस्त्रीसुख तथाजीवन धन इत्यादिकहैं तिनकूंमांगेनहीं ॥ इसरीतिसे यमराजने नचिकेताकूं चलायमानकराभी ॥ परंतु सोनचिकेता चलायमाननहींभया ॥ और यह कहतभया ॥ हेभगवन् जामेंदेवतावोंकूंभीसंशयहै ॥ ऐसादुर्विज्ञेयजो वस्तुहै ताआत्माविषेही मेराप्रश्नहै ताप्रश्नकेउत्तररूपीवरसेभिन्नतौ मैं किंचित्भी मांगतानहींहूं ॥ ऐसे योग्यअधिकारीनचिकेताकूंजानकरि

यमराजाकहेहैं ॥ यमराजोवाच ॥ हेनचिकेता यासंसारमें दोप्रकारका फलहै ॥ एकश्रेयहै ॥ दूसराप्रेयहै ॥ अर्थयह ॥ ज्ञानकरिप्राप्तहोने-हाराजोनित्यफलहै ॥ ताकूं श्रेयकहेहैं ॥ और मूढपुरुषोंकी इच्छाका विषय तथाक्षणभंगुर जोविषयानंदहै ॥ ताकूंप्रेयकहेहैं ॥ ऐसे दोनों भिन्नभिन्नहैं ॥ यहदोनोंपुरुषकूंबांधतेहैं ॥ अर्थयह ॥ पुरुषआपकूं अधिकारी मानकरि तिनमेंप्रवृत्तहोवेहैं ॥ मुमुक्षुसाधनसंपन्नतौ ज्ञानद्वाराश्रेयरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ और अज्ञानी काम्यकर्मकूंकरिके विषय सुखरूपप्रेयकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ और मुमुक्षुपुरुष तौ नित्यमोक्षकूंप्राप्तहोता है ॥ परंतुजोविषयोंका अर्थीहुआ विषयसुखरूपप्रेयकी प्राप्तिवासते अनेकप्रकारके कर्मोंकूंकरेहै ॥ सोविषयी यामोक्षरूपपुरुषार्थसे भ्रष्ट होवेहै ॥ यहश्रेय औरप्रेय अविवेकीपुरुषोंकूं वास्तवरूपसेभिन्नभिन्न प्रतीतहोवेंनहीं ॥ और जैसे हंसपक्षी आपनेमुखसे क्षीरनीरकूं पृथक् करिदेवेहै ॥ तैसे विवेकीपुरुष विवेकसे श्रेयप्रेयकूं भिन्नभिन्नजानेहैं ॥ औरजानकरि श्रेयरूपमोक्षकीप्राप्तिवासते साधनकूं संपादनकरेहैं ॥ और अल्पबुद्धिवाला जोअविवेकीहै सोशरीरादिकोंकीवृद्धिवासते तथा भोगोंकीप्राप्तिवासते कर्मोंकूं करेहै ॥ औरतुमारेकूं मैं यमराजाने अनेकदिव्यस्त्री पुत्रआदिकभोगदीयेभी परंतु तुमने अनित्यजानकरि त्यागकीएहैं ॥ और यालोकमें सर्वपुरुष धनरूपी श्रृंखलासेबांधेहुएहैं ॥ ताधनरूपी श्रृंखलासे आपमुक्तभयेहो ॥ हेनचिकेता यासंसारमें कर्मतथाज्ञानरूपीदोमार्गहैं कर्मसे अनित्यस्वर्गादिक लोककूं पुरुष प्राप्तहोवेहैं॥ ज्ञानसे नित्यमोक्षरूपफलकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ और तुमतौ केवलज्ञानकूं चाहते हैं ॥ और भोगोंमें लोलुपनहींभये ॥ यातें आपधन्यहैं मैं आपकीस्तुतीकरीनहींसकता ॥ हेनचिकेता कर्मभीदोप्रकारकाहै एकविहित है जाकूंशास्त्र सुखप्राप्तिवासतेकहेहै ॥ दूसरा निषिद्ध नरकादिकोंकूंदेनेहाराहै ॥ विहितकर्मभीदोप्रकारकाहै एकतो निष्कामहै ॥ दूसरा

सकामहै ।। निष्कामयहहै अनित्यफलजे स्वर्गस्त्रीपुत्रादिकहै तिनकी इच्छाविनाकर्मकरणा तिनसेतौ चित्तशुद्धिद्वारा मोक्षकूंहीप्राप्तहोवे हैं।। सकामसे जन्ममृत्युकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ सकामकर्मकरणेवालेपुरुषोंका यह निश्चयहै जोहमही पंडितहैं हमही बुद्धिमान्हैं ऐसेअविद्यामें वर्त्तमान हुए तेमूढ सर्वदा कुटिलगतिकूंही प्राप्तहोवेहैं ।। जैसे अंधपुरुषकेपीछे अंधगमन करेहैं ।। तैसे सकामकर्मकेकरणेवाले जेअंधगुरुहैं तिनके पीछेचलनहारे जेअंधशिष्यहैं तेभी सकामकर्मकूंहीकरेहैं ।। और निषिद्धकर्मके करणेहारे जेपुरुषहैं तिनकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकासाधन कर्मउपासनादिक प्रतीतहोवेनहीं ।। तेबालक धनकेअभिमानकरिमूढहोरहेहैं और स्त्री पुत्र धन आदिक सहित यहलोकही श्रेष्ठहै ऐसेमाननेवालेहैं ।। और सकामकर्मकरणेवालेतौ स्वर्गादिक लोकोंकूं प्राप्तहोवेहैं ताअनंतर मेरेपाशोंमें आवेहैं ।। अथवाकबी किसी निष्कामकर्मकेप्रभावसे शुद्धअंतःकरणवालेहुए ज्ञानप्राप्तिद्वारा मोक्षकूंभीप्राप्तहोवेहै ।। और निषिद्धकर्मकरणेहारेतौ साक्षात् मेरे वशहुए अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरेहैं ।। औरहेनचिकेता ऐसेपापीपुरुषोंकूं आत्माका श्रवणभीदुर्लभहै ॥और बहुतपुरुष भूत भावी वर्त्तमान प्रतिबंधसहितहुए आत्माकेश्रवणकूं करतेभी यथार्थब्रह्मबोधकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ तीनप्रकारके जेप्रतिबंध कहे तिनमें भूतप्रतिबंधतौ यहहै त्यागकरे किसीस्त्रीआदिकविषयका वेदांतश्रवणकालमें वारंवार स्मरणहोना ॥ भावीप्रतिबंधयहहै जो और जन्मकादेनेवाला प्रारब्धकर्म जाकीभोगेविनानिवृत्ति होनीनहीं ।। जैसे वामदेवके एकजन्मकेदेनेवाला प्रारब्धकर्मथा प्रथमजन्ममें अनेकप्रकारके श्रवणादिक वामदेवमहात्मानेकरेभी ।। परंतु ताभावीप्रतिबंधसे ज्ञानभयानहीं द्वितीयजन्मकूंप्राप्तहोइकरि ऋषिवामदेव प्रारब्धकर्मकूं भोगकरिक्षयकरताहुआ ज्ञानकीप्राप्तिसे मोक्षकूंप्राप्तभया ।। यह वामदेवकीकथा अन्य उपनि-

षत्कीहै यातें ईहां ताकथाका संकोचकराहै आगेलिखेंगे प्रतिबंधप्र-
संगसे किंचित्‌दिखाईहै ॥ इसरीतिसे भूतप्रतिबंधकीतौ जिसपदार्थमें
प्रीतिहै तापदार्थउपहितआत्माकेध्यानसे निवृत्तिहोवेहै ॥ परंतु भावी-
प्रतिबंधकीनिवृत्ति विनाभोगसे होवेनहीं ॥ और वर्त्तमानप्रतिबंध
च्यारिप्रकारकाहै ॥ एकतौ विषयोंमें आसक्तिहै ॥ औरद्वितीयबुद्धि-
कीमंदताहै ॥ जोवेदांतश्रवणकरतेभी बुद्धिमें अर्थआरूढ नहोना ॥
और तृतीय कुतर्कहै जोश्रुतिसेविपरीत शुष्कतर्कहै ॥ और चतुर्थवि-
पर्ययदुराग्रहहै ॥ अर्थयह ॥ जोआत्माके कर्तृत्वभोक्तृत्वमें युक्ति
प्रमाणसेविना हठकरणा ॥ अब प्रसंगसे तिनवर्तमानप्रतिबंधोंकी निवृ-
त्तिभीकहेहैं ॥ प्रथमविषयआसक्तिरूपप्रतिबंधकी निवृत्तितौ शमसे
तथादमसे होवेहै ॥ जब नेत्रादिकोंकूं तथामनकूं आपनेवशकरेहै तथा
सत्संगकरेहै तब विषयआसक्तिरूपप्रतिबंधकी निवृत्तिहोवेहै ॥ वारंवार
वेदांतश्रवणसे बुद्धिमंदतारूप जोद्वितीयप्रतिबंधहै ताकीनिवृत्तिहोवेहै ॥
और युक्तिपूर्वक आत्माकेमननकरणेसे कुतर्करूपतृतीयप्रतिबंधकी
निवृत्तिहोवेहै ॥ अनात्मप्रत्ययरहितआत्माकारवृत्तिकरणेसे विपर्ययदु-
राग्रहरूप जोचतुर्थप्रतिबंधहै ताकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ इसरीतिसे भूत
भावी वर्त्तमान प्रतिबंध तथातिनकीनिवृत्तिकाप्रकार प्रसंगसेकिंचित्‌-
मात्रकह्या ॥ अब उपनिषत्‌अर्थकूंही कथनकरेहैं ॥ हेनचिकेता ऐसे
भूत भावी वर्त्तमान प्रतिबंधसहित केईपुरुषआत्मश्रवणकूं करतेहुएभी
आत्माकूं यथार्थजानेनहीं ॥ और मनवाणीके अविषय याआत्माका
उपदेश करणेवालावक्ता आश्चर्यहै ॥ अर्थयह ॥ जोदुर्लभहै ॥ और
याआत्माके दृढतर अपरोक्षनिश्चयवालादुर्लभहै ॥ तथा ताआपरोक्ष-
ज्ञानीसे शिक्षाकूंप्राप्तहुआजोशिष्यहै सोभीदुर्लभहै ॥ सोशिष्यभी
आत्माकेयथार्थरूपकूं जानैहै ॥ ब्रह्मज्ञानीगुरुविनातौ बहुतवार उपदे-
शकराहुआभी आत्माजानाजावेनहीं ॥ यातें अज्ञानीगुरुकूं त्यागकरि

ज्ञानीसे उपदेशग्रहणकरि ज्ञानसंपादनकरणा ॥ और यहदुर्विज्ञेयआत्मा आपनीतर्कोंसे स्वतंत्र जानाजावेनहीं ॥ इसआत्माकेज्ञानसेही जन्ममरणकी प्राप्तिहोवेनहीं॥और हेनचिकेता श्रुतिविरुद्धतर्कतौउलटा ज्ञानमेंप्रतिबंधकहै ॥ तातर्ककरिआत्मा जाननाअतिकठिनहै ॥ अर्थ यह ॥ कवीशुष्कतर्कसे जानाजावेनहीं ॥ यातें श्रुतिभगवतीवारंवार ब्रह्मवेत्ताआचार्यकी शरणकूंहीज्ञानकीप्राप्तिमें साधनकथनकरेहैं ॥ हेनचिकेता जैसेतुम आपनेपुण्योंकेप्रतापसे धैर्यकूंप्राप्तभयेहैं तैसे किसीपुरुषकूं तीनकाल भूत भविष्यत् वर्तमानमें होनादुर्लभहै ॥ और मैंने अनेकप्रकारकेपदार्थ तुमारेकूंदियेभी तुमसर्वकात्यागकरतेभये यातें तुमारेजैसा शिष्य अतिदुर्लभहै ॥ और मैं यहइच्छाकरताहूंजोतुमारेजैसा शिष्य वापुत्र प्रश्नकरणेहारा हमारेकुलमें औरहोवे ॥ हेनचिकेता दूसरेपुरुषोंकीतौक्यावार्ताहै मैंयमराजा मेरेभी तेरेजैसाधैर्यनहींहै॥ काहेते मैं यमराजा हृदयमें स्थितब्रह्मानंदकूं नित्यअपरोक्षजानताहूं और कर्मकाफलरूपसर्वअनित्यहै ऐसेभी जानताहूं ॥ परंतु मेरेमें तेरेजैसीपदार्थोंमे त्यागबुद्धि नहींहै ॥ और यहपुरुष यज्ञआदिककर्मोंकरिकेमोक्षरूपनित्यफलकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ ऐसे नजानकरि मैंने अग्निसाध्ययज्ञादिअनेककर्मकरे तिनकर्मोंकरि यालोकपालपदवीकूं प्राप्तभयाहूं ॥ ऐसेयत्नोंसे सर्वकामकीप्राप्तिकूं मैं यमराजा प्राप्तभयाहूं ॥ और सर्वऐश्वर्यकूंप्राप्तभयाहूं सर्वजगत्कानियंताभयाहूं ॥ और अभयकी परमपदवीकूंप्राप्तभयाहूं तथाअणिमादिऐश्वर्यकूं प्राप्तभयाहूं ॥ तेसर्वपदार्थ तुमारेकूं मैं यमराजाने दियेभी परंतु तुमने सर्वपदार्थोंकूं अनित्यजानंकरित्यागहीकराहै ॥ यातें तुमारेधैर्यकीमें स्तुतिकरिनहींसकता ॥ हेनचिकेता जिसआत्माकेजाननेवासते तुमने सर्वपदार्थत्यागकरेहैं ॥ ता आत्माकूं श्रवणकरो ॥ यहआत्मा दुर्दर्शहै॥ अर्थयह ॥ जो अतिसूक्ष्महोनेसे याकाप्रत्यक्षकरणाकठिनहै ॥ और

जीवोंके बाह्यपदार्थोंकेज्ञानकरि आत्मा जानाजावेनहीं ॥ और सर्वकीबुद्धिरूपीगुहामें स्थितहै तथायाशरीरमेंहीस्थितहै ॥ बुद्धिभीतौ शरीरमेंहीहै ॥ यातें बुद्धिमेंस्थितहै यहकहा ऐसे आत्माकेज्ञानसेही स्वप्रकाशआत्माकूं विवेकीपुरुष जानताहुआ हर्षशोकआदिकअनर्थकूं निवृत्तकरेहै ॥ और याआत्माकूं सत्शास्त्रकेउपदेशसे तथामहात्मावोंकेउपदेशसे श्रवणकरिके शरीरादिकोंसे भिन्नजानकरि तासाक्षीकूंही ब्रह्मरूपसेजानतेहुए अधिकारीपरमआनंदकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसे ब्रह्मरूपी मंदिरकी प्राप्तिवासते हेनचिकेता तुमारेकूंहम खुलेद्वार मानतेहैं ॥ भावयह ॥ जोतुममोक्षकेयोग्यहैं ॥ इसरीतिसे नचिकेताने देहकेनाश होनेसेभी आत्माकानाशनहीं होता यहतौनिश्चयकरा ॥ काहेते जीवकूं श्रेयकीप्राप्ति तथास्वर्गनरकप्राप्ति जा यमराजानेकही तासेजाना जो देहसेभिन्नहै देहतौ इहांहीनाशकूंप्राप्तहोवेहै यादेहसेभिन्नजोआत्माहै ताकूंही श्रेय प्रेय आदिकोंकीप्राप्तिसंभवेहै ॥ यातें इसदेहसेभिन्नतौ नचिकेतानेनिश्चयकरा अब आत्माकेवास्तवरूपके जाननेकीइच्छावाला हुआ नचिकेताप्रश्नकरेहै ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेभगवन् जोआत्मा पुण्यपापसेभिन्नहै ॥ तथापुण्यपापकाजेफल तथापुण्यपापकेजेकारक तिनसर्वसे आत्माभिन्नहै ॥ तथाकार्यकारणसेभिन्नहै ॥ तथाभूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालसेरहितहै ॥ ऐसेआत्माकूं आप प्रत्यक्षनिश्चयकरिरहेहैं ॥ ता आत्माके वास्तवस्वरूपकूं मेरेतांईकथनकरो ॥ यमराजोवाच ॥ हेनचिकेता जाआत्माका तैनेप्रश्नकराहै ॥ ताआत्माकेस्वरूपकूंही च्यारिवेदबोधनकरेहैं ॥ औरजाआत्माकीप्राप्तिवासते अनेकप्रकारके तप शास्त्रनेकहेहैं ॥ और जिस आत्माकीप्राप्तिवासते अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्य आदिकसाधनोंकूंकरेहैं ॥ सो यहआत्मा ॐकाररूप है ॥ हेनचिकेता यह ॐ प्रणवअक्षरही सगुणब्रह्महै ॥ तथा परजोनिर्गुणब्रह्महै ॥ सोभी ॐकाररूपहीजानना ॥ जैसे शालिग्रामका

विष्णुरूपसे नर्मदेश्वरकाशिवरूपसे शास्त्रने ध्यानकह्याहै ॥ तैसे ॐ अक्षरकाभी परब्रह्म तथाअपरब्रह्मरूपसे ध्यान श्रुतिभगवती यमराजाद्वारा सर्वमुमुक्षुजनोंकूं बोधनकरेहै ॥ जोअधिकारी ॐकारकासगुण रूपसे ध्यानकरेहै सोसगुणरूपकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जोनिर्गुणरूपसे प्रणवका ध्यानकरेहै सोध्याता निर्गुणरूपकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ या ॐअक्षरके सगुणरूपकरि ध्यानकरणेसे तथा निर्गुणरूपकरि ध्यानकरणेसे ब्रह्म लोकमें प्राप्तहोवेहै ॥ ताब्रह्मलोकमें महाआनंदकूंप्राप्तहोइकरि कैवल्यमोक्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अबजाआत्माका ॐरूपसेध्यानकहा ताआत्माकावास्तवरूपकहेहैं ॥ यहस्वप्रकाशआत्माजन्ममरणसे शून्यहै ॥ काहेते अनित्यघट देहादिकही उत्पत्तिनाशवालेहोवेहैं ॥ नित्यआत्माका उत्पत्तिनाशादि कोईविकारबनेनहीं ॥ औरयह नित्यआत्मा किसी कारणसे उत्पन्नहोवे नहीं ॥ और यहआत्मा अद्वितीयहै यातें वास्तव सेयाआत्मासेभिन्न कोईकार्यभी उत्पन्नहोवेनहीं ॥ अबषट्भावविकार रहितआत्माकाउपदेशकरेहैं ॥ जिसहेतुसे यहआत्माअजहै ॥ इसीसे याआत्माकाजन्मनहीं ॥ नित्यहोनेसे नाशरूपमरणभीहोवेनहीं ॥ और शाश्वतहै ॥ अर्थयह ॥ जो अपक्षयवर्जितहै ॥ औरयह आत्मा पुराणहै ॥ अर्थयह ॥ प्रथमही नवीनहै यातेंहीवृद्धिरहितहै ॥ जन्मरूप प्रथम विकारके निषेधकरणेसे अस्तिरूपजोद्वितीयविकारहै ताकाभी निषेधजानलेना ॥ जोजन्मकूंप्राप्तहोवेहै सो अस्तित्वरूपद्वितीयविकारकूंप्राप्तहोवेहै ॥ या आत्माका जन्महीनहीं यातें अस्तित्वरूपजो द्वितीयविकार ताकूं कैसेप्राप्तहोवेगा ॥ नाशकेनिषेधसे विपरिणामकानिषेधहै ॥ ऐसे यहआत्मानित्यहै ॥ यातें यास्थूलशरीरके नाशहोनेसेभी यानित्यआत्माका नाश होवे नहीं ॥ हेनचिकेता जोपुरुष याआत्माकूंमारणेवाला मानताहै और जोपुरुष आत्माकूं मारागयामानताहै ॥ तेदोनों आत्माकेयथार्थरूपकूं जानते नहीं ॥

जिसहेतुसेयहआत्मान किसीकूंमारताहै ॥ नकिसीकरिकेमारा जाताहै ॥ औरहेनचिकेता यहआत्मा सूक्ष्मपरमाणुआदिकोंसेभी अति सूक्ष्महैं ॥ अर्थयह ॥ जो दुर्विज्ञेयहै ॥ और बडे आकाशादि-कोंसेभीबडाहै ॥ और याजीवकी बुद्धिरूपीगुहामेंही स्थितहै ॥ ऐसे आत्माकूं जोनिष्कामपुरुषहै सोईमनकी शुद्धिकरिके प्रत्यक्षकरेहै ॥ ता आत्माकेज्ञानकरि सर्वकर्मकेकरणेसे वृद्धिक्षयरहितरूप जोआत्माकाम-हिमाहै ताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ इससे अनंतर शोक मोहसे रहितहोवेहै ॥ हेनचिकेता यहआत्मा अचलहुआभी दूरदेशमें गमनकरेहै ॥ तथा शयनकरताहुआभी सर्वदेशमेंप्राप्तहोवेहै और विद्या धन आदिकोंके अभिमानसहितहुआभी यहआत्मा सर्वमदसेरहितहै ॥ भावयह ॥ आत्माबुद्धिसाथमिलकरि बुद्धिकेधर्म मदादिकोंकूं धारणकरेहै ॥ और वास्तवसेतौ बुद्धिसंबंधसेरहितहै ताकेधर्ममदादिकोंसेरहित स्पष्टहीहै ॥ ऐसे आत्माकूं सूक्ष्मबुद्धिमान् जेमेरेजैसे पंडितहैं तेपंडितही प्रत्यक्षरूप-करिजानेहैं ॥ औरजेपुरुष अनात्मपदार्थोंमेंआसक्तहैं तथाअतिबहिर्मु-खहैं ॥ तेपुरुष आत्माकेस्वरूपकूं कैसेजानेंगे तिनकूं आत्माजानना दुर्घटहै॥ हेनचिकेता यहआत्मा वास्तवसे स्थूल सूक्ष्म कारण यातीन शरीरोंसेरहितहै ॥ तथायातीनअनित्यशरीरोंमेंस्थितहै ॥ औरयहआ-त्मा आकाशादिकजेव्यापकहैं तिन सर्वसे अधिकव्यापकहै ॥ ऐसे आत्मदेवकूं अपरोक्षजानकरि अधिकारी सर्वशोककूंनिवृत्तकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ कर्तृत्व भोक्तृत्वरूपबंधका नामशोकहै ॥ सोबंध अज्ञा-नकाकार्यहै ॥ अधिकारी पुरुषके अज्ञानकीनिवृत्ति ब्रह्मज्ञानसेहोवेहै ॥ अज्ञानकीनिवृत्तिहोनेसे बंधरूप शोककीनिवृत्तिहोवेहै ॥ हेनचिकेता यहआत्मा बहुत वेदके पठनकरिप्राप्तहोवेनहीं ॥ और ग्रंथकेअर्थधारण-कीजोसामर्थ्यहै ताकूंमेधाकहेहैं ॥ तामेधाकरिभी आत्माप्राप्तहोवे-नहीं ॥ और बहुत श्रवणकरणेसेभी प्राप्तहोवेनहीं जो अधिकारी याआ-

त्माका अभेदरूपसे नित्यचिंतनरूप भजनकरेहै ॥ सोअधिकारी आत्मा स्वरूपकूं प्राप्तहोवेहै॥ तिस अधिकारीकेतांई आत्माआपने परमार्थस्वरूपकूं प्रकटकरेहै ॥ अर्थ यह ॥ जोयथार्थरूपकूं सोअधिकारीहीध्यानकर्त्ताजानेहै ॥ हेनचिकेता जोपुरुष पापकर्मसेनिवृत्तनहींभया तथाजो पुरुष शम दमसेरहितहै ॥ तथा समाधिसेरहितहै ॥ ऐसेबहिर्मुखपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारहोवेनहीं ॥ और जामायाविशिष्टब्रह्मात्माका यहब्राह्मण क्षत्रियादिक सर्व जगत्ओदनहै ॥ तथासर्वकेमारणेवालामृत्यु जाका शाकादिरूपहै ॥ तामृत्युरूपशाककूं मेलकरि सर्वजगत्रूप ओदनके भक्षणकरणेहारा जोस्वरूपमेंस्थितहै ऐसे आत्माके परमार्थरूपकूं विचाररहित कैसे जानसकेहै विचाररहित आत्माकेस्वरूपकूं सर्वथाजानेनहीं॥ हेनचिकेता जिसध्यानरूपउपायकरि यहआत्माजानाजावेहै ॥ ताउपायकूंश्रवणकरो जैसे लोकप्रसिद्धपिप्पलआदिक वृक्षोंविषे पक्षिरहेहैं ॥ तैसे बुद्धिरूपीवृक्षमें जीवईश्वरदोनूरहेहैं ॥ कैसीबुद्धिहै देहकीअपेक्षासे जाउत्कृष्टहै ॥ तथापरब्रह्मकी स्थितियोग्यहै ॥ तामें जीवतौ कर्मकेफलकूंभोगेहै ॥ औरईश्वर कर्मफलकूं भोगावेहै ॥ आप ईश्वर कर्मफलकूंभोगेनहीं ॥ और तेईश्वरजीव सर्वज्ञता अल्पज्ञतारूप विरुद्धधर्मवालेहैं ॥ ऐसे ब्रह्मवेत्ता तथा स्वर्गमेघादिपंचपदार्थोंमें अग्निबुद्धिकरनेवाले गृहस्थकर्मी कथनकरेहैं ॥ और तीनवार नाचिकेतअग्निकूंजिनोंने चयनकराहै ॥तेभी ईश्वरजीवस्वरूपकूं कथनकरेहैं ॥ औरजे अग्निहोत्रादिक कर्मोंकूं निष्कामहोईकरि करतेहैं ॥ तिनकूं संसारसमुद्रसे पारकरणेहारा जो परमेश्वरहै सोईसेतुहै ॥ और संसारसमुद्रसे तरणेकी इच्छावालेहुए मुमुक्षुजनोंका यहआत्माही अभयरूप परतीरहै ॥ हेनचिकेता यहजीव पुण्यपापरूपकर्मके फलका भोक्ताहै ॥ सो रथीहै ॥ अर्थयह ॥ जोरथकास्वामीहै ॥ और शरीररूपीरथहै ॥ बुद्धिसारथी शरीररूपी रथकूं चलानेवालाहै ॥ मन रूपी

रज्जुहै ॥ इंद्रियरूपीअश्वहैं ॥ शब्दस्पर्शादिरूपभूमिविषेचलेहैं ॥ और आत्मा देह इंद्रिय मन इनसेमिलकरिकर्त्ताभोक्ताहोरहाहै ॥ वास्तवसे उपाधिविना यहआत्माशुद्धहै ॥ कदाचित्भी कर्तृत्व भोक्तृत्वकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ औरजैसे अश्वादिकोंकेचलावनेका तथानिग्रहणकरणे-का जाकूंज्ञानहै ॥ ऐसा सारथी रथवालेस्वामीकूं आपने अभिलषित देशमें प्राप्तकरेहै ॥ तैसे जाकेबुद्धिरूपी सारथीमें यहदोनूंप्रकारका सामर्थ्यहै इंद्रियोंकूं शुभमार्गमेंचलाना तथास्वाधीनराखणा ॥ सोबुद्धि-रूपीसारथी ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरेहैं ॥ याअर्थकूंहीस्पष्टकरेहैं ॥ हेनचि-केता जिसपुरुषका बुद्धिरूपीसारथी अविवेकीहै ॥ तथामनरूपीरज्जुकूं जाकेबुद्धिरूपीसारथीने वश करानहीं ॥ ताकेइंद्रियरूपीअश्वभी दुष्ट-अश्वकीन्यांई वशहोवेनहीं॥ और जापुरुषका बुद्धिरूपीसारथी विवेकीहै तथामनरूपीरज्जुजाकेवशहै ताकेइंद्रियरूपीअश्व सर्वदावशवर्तीहैं॥ जैसे श्रेष्ठअश्व सदासारथीके वशवर्तीहोवेहैं तैसेप्रमादरहित बुद्धिसारथीके वश इंद्रियहोवेहैं और जाका बुद्धिरूपीसारथी विज्ञानसहितनहींहै ॥ तथा मनरूपीरज्जु जासारथीकेवशनहींहै ॥ और सर्वदाअंतरबाह्यसे अशुचि रहेहैं ॥ सोविवेकहीनमूढपुरुष ताब्रह्मरूपदेशकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ उलटा जन्ममरणरूपसंसारकूंही प्राप्तहोवेहै॥औरजाका बुद्धिरूपीसारथी विवेक सहितहै तथामनरूपरज्जूअंतर्मुखहै ॥ औरजो अधिकारी सर्वदाशुचिर-हेहै सो अधिकारी ताब्रह्मकेस्वरूपकूं प्राप्त होवेहै ॥ जासे पुनःजन्मम-रणकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता इसप्रकार जिसकेबुद्धिरूपीसारथीने मनरूपीरज्जूकरिके इंद्रियरूपी अश्वोंकूं वशकराहै ॥ सोअधिकारी यासंसाररूपसमुद्रके पाररूप परमात्माकूंप्राप्तहोवेहै अब आत्माहीसर्वके अंतरहै ताकीप्राप्तिवासते विवेकादिक संपादनकरणेचाहिये याअर्थके प्रतिपादनकरणेवासते अंतरकीपरंपराकूं दिखावेहैं ॥ हेनाचिकेता शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचभूतआकाशादिकोंकासाररूपहैं यातें यहशब्दा-

दिसूक्ष्मरूपसे इंद्रियोंकेकारणहैं।।यातें इंद्रियोंसे शब्दस्पर्श आदिकपरहै।। इंद्रियोंकूं मनहीप्रवृत्तकरेहै ।। यातें मनइंद्रियोंसेपरहै ।। और निश्चयविना संकल्प विकल्पकरणेहाराजोमनहै ।। तासे किंचित्‌भी प्रयोजनसिद्ध होवेनहीं ।। यातें मनसे निश्चयरूप बुद्धिपरहै समष्टिरूपहिरण्यगर्भकी बुद्धि व्यष्टिबुद्धिकाकारणहै ।। यातें व्यष्टिबुद्धिसे समष्टिबुद्धिपरहै ता समष्टिबुद्धीकूंही श्रुतिभगवतीने महत्तत्त्वरूपकरि कथनकराहै ।। तामहत्तत्त्वसे अव्यक्तजो महत्तत्त्वका कारण मायाहै ।। सामाया महत्तत्त्वसेपरहै अव्यक्तरूपमायाभी आपनेआश्रयविषयकी प्राप्तिवासते चैतन्यकी अपेक्षाकरेहै ।। यातें तामायासेभी पुरुषपरहै ।। और पुरुषजोव्यापकआत्माहै सोआपनीउत्पत्तिवासते तथाआपनेप्रकाशवासते किसीपदार्थकी अपेक्षाकरेनहीं।।याते यहचेतनपुरुषही सर्वसेपरहै ।। तथासर्वकीपर्यवसानभूमिहै।।और सर्वमुमुक्षुजनोंकूं फलरूपहै ।। पूर्व सर्वप्रसंगमें परशब्दकाअर्थ सूक्ष्म तथाव्यापक यहजानना ।। और यहआत्मा सर्वभूतोंमें स्थितहैभी परंतु अज्ञानकरिआच्छादित होनेसे अज्ञानीपुरुषोंकूं सर्वत्रप्रतीतहोवेनहीं ।। औरजेविवेकीहैं तेसूक्ष्म तथाएकाग्रबुद्धिसे आत्माकूंप्रत्यक्षकरेहैं ।। हेनचिकेता याआत्माकीप्राप्तिवासते मैं योगकाउपदेशकरताहूं तुमश्रवणकरो॥प्राज्ञ जोबुद्धिमान्‌है सो आपनेकर्मइंद्रिय तथा ज्ञानइंद्रिय तिनसर्वकूं मनमें लयकरे ।। तात्पर्ययह ।। जोसर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंकूं त्यागकरिके केवलमनकाजोव्यापारहै यहहीमनमेंइंद्रियोंकालयहै तथाइच्छारूपजोमनहै तामनका निश्चयरूपबुद्धिमेंलयकरै इच्छावृत्तिकूं त्यागकरी निश्चयरूपसे स्थितहोवे तानिश्चयरूपव्यष्टिबुद्धिका समष्टिबुद्धिमेंलयकरे ।। तात्पर्ययह ।। जोसामान्याहंकारजो अहंअस्मियहहै ।। तारूपसे स्थितहोवे ।। तामहत्तत्त्वरूपसमष्टिबुद्धिकूं शांतात्माजो शुद्धब्रह्महै तामेंलयकरे ।। अबश्रुतिभगवती स्वतंत्रही आपनेप्रियमुमुक्षुजनोंकूं उपदेशकेरहै ।। भोमुमुक्षवः तुमआत्मज्ञानकेसन्मुखहोवो ।। अज्ञानरूपी

निद्राकी ब्रह्मज्ञानरूपजागरणसे निवृत्तिकरो ॥ जबपर्यंत तुम अज्ञानरूपीनिद्राकरि शयनकरतेहो ॥ अर्थयह ॥ जोआत्माकेयथार्थस्वरूपकूं नहींजानते ॥ तबपर्यंत जन्ममरणरूप संसारस्वप्न महाभयंकर निवृत्त होवेनहीं यातें ब्रह्मज्ञानरूप जागरणसे अज्ञानरूपीनिद्राकी निवृत्तिकरो ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति साधनसंपन्नहोइकरि गुरुउपसत्तिसेहोवेहै ॥ यातें श्रेष्ठजेआचार्यहैं तिनकूंब्रह्मरूपजानकरि तिनसेउपदेशकूंग्रहणकरो ॥ और जैसे क्षुरकीधारा अतितीक्ष्णहै ताकेउपरि गमनकराजावेनहीं ॥ तैसे दुःसंपाद्य जोज्ञानमार्गमहात्माकथनकरेंहै ताकीप्राप्तिवासते यत्न अतिअवश्यकरणा हे नचिकेता यहआत्मा शब्द स्पर्श रूप रस गंध इन सर्वसेरहितहै नाशरहितहै ॥ आदिअंतसेशून्यहै ॥ महत्तत्त्वसेपरहै ॥ तथा निश्चलहै ताआत्माकूं गुरुमुखसेश्रवणकरिके ॥ तथाश्रुतिअनुकूल तर्कोंसे मननकरिके तथाताआत्माविषे अनात्मप्रत्ययरहित सजातीयप्रत्ययकरेंहैं।।ऐसे अधिकारीआत्माकेश्रवणादिकोंकूं करतेहुए ताआत्मा कूं साक्षात्करेंहैं ॥ तिस साक्षात्कारसेही यासंसाररूपमृत्युकेमुखसे मुक्त होवेहैं।।अब इसकठवल्लीग्रंथका माहात्म्यकहेहैं॥ यहयमराजाने जोनचिकेताकेतांई ग्रंथउपदेशकराहै सोसनातनहै॥ अर्थयह ॥ वैदिकहोनेसेचिरकालकाहै ॥ ताग्रंथकूं कथनकर्त्ता तथाश्रवणकर्त्ता बुद्धिमान्पुरुष ब्रह्म लोकमेंप्राप्तहोवेहै।।तात्पर्ययह।।ज्ञानजाकूंभयानहीं सोतोयाग्रंथकाकथन कर्त्ता तथा श्रवणकर्त्ता ब्रह्मलोकमेंप्राप्तिद्वाराही मुक्तिकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जो पुरुषप्रतिबंधरहितहै सोपुरुष इसजन्ममेंहीज्ञानद्वारा परममोक्षकूंप्राप्तहो वेहै और जोपुरुष यापरमगोप्यग्रंथकूं ब्राह्मणोंकीसभामें श्रवणकरावेहै॥ सोपुरुष महान्फलकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथा जोपुरुष पवित्रहोइकरि श्राद्धकालमें श्रवणकरेंहै ॥ सोश्राद्ध तापुरुषकूं अनंतफलकी प्राप्तिकरेंहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोआत्माकाप्रतिपादक यहग्रंथकेकथनका तथाश्रवणकाभी जबीयह पूर्वउक्तफलहै तौज्ञानप्राप्तहोनेकरि मोक्षकूंप्राप्तहोवेहै

यामेंक्याआश्चर्यहै पूर्वयहकहा आत्मासर्वत्रव्यापकभीहै परंतु आवरण-सेहितहोनेसे सर्वत्रप्रतीतहोवेनहीं ॥ यातें हे नचिकेता श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरि आत्माकाप्रत्यक्षहोवेनहीं ॥ यामेंहेतुयहहै ॥ जोजगत्काकर्त्ता स्वतंत्रपरमेश्वरहै ॥ सोपरमेश्वर श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरआत्मासे बहिर्मुखहीरचताभया ॥ इसीसे तापरमात्माने इनश्रोत्रादिकोंका हिंसनकराहै ॥ जैसेराजा आपनेकिसीमंत्रीकूं आपनेपुरका अधिकार-छुडाइकरि किसीदूरदेशमें अधिकारदेवे ॥ यह तामंत्रीकीहिंसाकही-जावेहै ॥ तैसे आत्माकूं इनइंद्रियोंने विषय नकरणा यहही इनइंद्रि-योंकीहिंसाहै ॥ जिसहेतुसे ईश्वरने इंद्रियबहिर्मुखहीरचेहैं ॥ इसीसे यहपुरुष बाह्यनामरूपप्रपंचकूंहीदेखेहैं ॥अंतरआत्माकूं प्रत्यक्षकरेनहीं ॥ कोईबुद्धिमान् जितइंद्रिय तथाउत्कटमोक्षकी इच्छावालाहुआ याआ-त्माकूं अपरोक्षरूपसे प्रत्यक्षकरेहै ॥ हेनचिकेता यालोकके तथापरलो-कके जेविषयहैं ॥ तिनबाह्यविषयोंकूं अतियत्नोंकरि बाल ग्रहणक-रेहैं ॥ बालपदकाअर्थ आत्मविचाररहितहै ॥ तेअविवेकी वारंवार मृत्युजोमैंहूं तिसमेरी पाशकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ औरकैसाहूंमैं जोसर्वलोकमें व्यापकहूं ॥ और विवेकीपुरुषतौ ब्रह्मासेलेकरि स्तंबपर्यंत स्थावरजंग-मसर्वप्राणीयोकूं मृत्युग्रस्तजानकरि कर्मउपासनाकेफलकूं अनित्यही जानेहैं ॥ आत्मज्ञानकेफलमोक्षकूं नित्यजानेहैं ॥ इसप्रकार कर्मफलकूं अनित्यजानकरि तेविवेकी तरीन्यांई स्वर्गादिकोंकी इच्छाकूंकरेनहीं॥ हेनचिकेता जिसआत्माकेज्ञानकरि ताआत्माकूंही विवेकीप्राप्तहोवेहैं तथासर्वइच्छासे निवृत्तहोवेहैं ॥ ताआत्माकेस्वरूपकूं श्रवणकरो ॥ जिसआत्माकरि यहपुरुष नेत्रजन्यअंतःकरणकीवृत्तिद्वारा रूपकूंजाने-है॥ तथा रसनाइंद्रियजन्यअंतःकरणकीवृत्तिद्वारा यहपुरुष मधुरादिरसकूं जानेहै ॥ तथाजाआत्माकरिही यहपुरुष गंध तथाशब्द तथास्पर्शकूं जानेहै ॥ तथाजाआत्माकरि मैथुननिमित्तसे उत्पन्नभयेसुखकूंजानेहै ॥ हेनचिकेता जोआत्मा तुमनेपूछाथा ताआत्माकरिही सर्वसंघातकी

चेष्टासिद्धहोवेहै ॥ जोआत्मा तुमनेपूछाथा सोयहहै यातें भिन्न और आत्मानहीं ॥ और याआत्माकेज्ञानकरिकेही विवेकी कृतकृत्यभावकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ हेनचिकेता जाआत्माकरि यहपुरुष स्वप्नअवस्थाकूं-जानेहै ॥ तथाजागरितकूं जाआत्माकरिजानेहै ॥ ऐसे आकाशादिकोंसेभी व्यापकआत्माकूं यहविवेकी प्रत्यक्षकरताहुआ शोककूंप्राप्त होवेनहीं ॥ हेनचिकेता यहआत्मा बुद्धिआदिकोंकासाक्षीहोनेसे अत्यंतसमीपहै ॥ और कर्मके फलसुखदुःखकूं अनुभवकरेहै ॥ तथा प्राणादिकोंकूं धारणकरणेहाराहै ॥ प्राणबुद्धिआदिकोंसेभिन्नहै ॥ ऐसे सर्वजगत्केनियंताआत्माकूं अधिकारीपुरुष जानकरि किसीसंशयकूं तथानिंदाकूंकरेनहीं ॥ इसप्रकार त्वंपदार्थकाशोधनकरा अब तत्पदार्थकेशोधनका प्रकारकहेहैं ॥ हेनचिकेता जिसचेतनपरमात्मासे हिरण्यगर्भउत्पन्नहोवेहै ॥ कैसाहैहिरण्यगर्भ जोपंचभूतोंसे उत्पन्नभयाहै ॥ आपनेहिरण्यगर्भसेपूर्वजन्ममें अनुष्ठानकरेजेकर्म तथाउपासना तिनसेउत्पन्नहोवेहै ॥ जोहिरण्यगर्भ सर्वकीबुद्धिरूपीगुहामें कार्यकारणरूपभूतोंसहित स्थितहै ॥ ऐसे हिरण्यगर्भकूं अधिकारीपुरुष आत्मरूपजानेहैं ॥ सोईयहआत्माहै जोतुमने धर्माधर्म तथाकार्यकारणसेरहित पूछाथा ॥ और सर्वदेवतारूपजोहिरण्यगर्भहै सोईप्राणस्वरूपहै ॥ और ताहिरण्यगर्भकानाम अदितिहै ॥ अर्थयह ॥ जोसर्वस्थूलप्रपंचकूं भक्षण करेहै ॥ याहिरण्यगर्भकीही सर्वदेवता विभूतियांहैं ॥ यातेंहिरण्यगर्भ सर्वदेवमयहै ॥ सर्वव्यष्टिभूतप्राणीयोंविषे तादात्म्यसंबंधकरिकेरहेहै ॥ यातेंसर्वभूतमयहै ॥ जैसे सुवर्णकाकार्य सुवर्णसे भिन्ननहीं तैसे परमात्माकाकार्यहिरण्यगर्भ परमात्मासेभिन्ननहीं ॥ ऐसाहिरण्यगर्भ सर्वभूतोंसहित जापरमात्मासे उत्पन्नहोवेहै तापरत्माकूं तुम अद्वितीयजानो ॥ और हेनचिकेता दोनूंकाष्ठोंसे उत्पन्नभया विराट्रूपजो अग्निहै ताविराट्रूपअग्निकूं श्रद्धापूर्वक याज्ञिकधारण करेहैं ॥

जैसे गर्भिणीयांस्त्रीयां स्नेहपूर्वकआपनेगर्भकूं धारण करेहैं ॥ तैसेयज्ञकरणेवाले जाविराट्‌रूप अग्निकूं श्रद्धापूर्वकधारणकरेहैं ॥ और निद्रारहित जे योगीपुरुषहैं तेभीआपनेचित्तमें ताविराट्‌रूपअग्निकूं धारण करे हैं ॥ और सर्वभूतोंमें सोविराट्‌स्थितहै ॥ और ताविराट्‌कूंही योगीपुरुषहृदयमें जानकरि दिनदिनमें ताकीस्तुतिकरेहैं ॥ और यज्ञमेंस्थित ताविराट्‌रूपअग्निकूं कर्मीपुरुष दिनदिनमें स्तुति करतेहैं॥ सोयहविराट्‌भी परमात्मरूपहै ऐसेजानो ॥ हे नचिकेता जाप्राणसे सूर्यउदयहोवेहै और जाप्राणमेंही दिनदिनमें अस्तहोवेहै ॥ और अग्निआदिकजेअधिदैवहैं तथा अध्यात्मजेवाक्‌आदिकहैं ॥ तेसर्व जाप्राणकेस्वरूपमें स्थितिकालमेंरहेहैं ॥ औरजाप्राणके उल्लंघनकरणेविषे कोईसमर्थनहीं है ऐसेप्राणकूं अद्वितीयपरमात्मरूपजानो ॥ ऐसेतत्त्वंपदार्थोंकूं कथनकरि अबदोनूंकाअभेदनिरूपण करेहैं॥ हेनाचिकेता जोपरमात्मा तुमारेशरीरविषे तथाहमारेशरीरविषे तथाअन्यसर्वजीवोंके शरीरोंविषे साक्षीरूपसे स्थितहै ॥ सोईपरमात्मा परोक्षईश्वरशरीरविषे तथाहिरण्यगर्भशरीरविषे स्थितहै ॥ तथा जो चेतनईश्वरहिरण्यगर्भादिरूपशरीरोंविषेस्थितहै ॥ सोईसाक्षीरूपसे अस्मदादिशरीरोंमेंस्थितहै ॥ औरजोपुरुष यापरमात्मामें किंचित्‌मात्रभी भेददेखताहै ॥ सोपुरुष वारंवार जन्ममरणकूं प्राप्तहोवेहै ॥ औरयहआत्मा शुद्धमनकरिप्राप्तहोवेहै ॥ नेहनानाऽस्ति किंचन ॥ अर्थयह ॥ जोयाब्रह्ममें किंचित्‌मात्रभीभेदनहींहै ॥ मृत्योः समृत्युंगच्छतियइहनानेवपश्यति ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष याआत्मामें नानाकीन्यांईदेखेहै सोभेदद्रष्टा मृत्युसे मृत्युकूं प्राप्तहोवेहै ॥ अर्थयह ॥ जोवारंवार मृत्युंकूंही प्राप्तहोवेहै ॥ और यहआत्मा अंगुष्ठपरिमाणहृदयमेंस्थितहै यातेंही श्रुतिभगवतीने अंगुष्ठपरिमाणवालाआत्माहै यहकहा ॥ ऐसेआत्माकूं जेअधिकारी भूतभविष्यत्‌पदार्थोंका ईशानरूपजानेहैं ॥ तिनकूं संशयादिकप्राप्तहोवें नहीं ॥ हेनचिकेता

यहअंगुष्ठमात्रआत्माही प्रकाशरूप जोधूमरहितअग्निहै ताकीन्यांई स्वयं-ज्योतिरूपहै ॥ और यह तीनकालोंविषे विपरीतभावकूं प्राप्तहोवैनहीं॥ औरजैसे ऊंचेपर्वतोंमें मेघोंसें पतनभयाजोजलहै सोनीचेदेशविषेविकीर्ण-भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसे आत्माकूं भिन्न देखनेहारा नानाप्रकारकी उच्च नीचयोनियोंकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता स्वभावसे शुद्धजोजलहै सोजबीकिसी शुद्धदेशमें मेघोंसेगिरेहै सोजलपूर्वजैसा शुद्धहीरहेहै ॥ तैसे आत्माभी वास्तवसेशुद्ध तथाभेदरहितहै ॥ ऐसेजाननेवाले अधि-कारीकाआत्माभी जन्ममरणसे रहितहोईकरिस्थितहोवैहै ॥ पूर्वअने-कप्रकारकेभेददर्शनसे अनंतयोनियोंकूं प्राप्तहोइकरि सर्वअनर्थकूंप्राप्त भया ॥ अबसत्‌शास्त्रके तथासंतजनोंकेउपदेशसे अभेदरूपसे सर्वकूं देखताहुवा स्वस्वरूपमें स्थितिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अबप्रकारांतरसे आत्मा-काउपदेशकरेहैं॥हेनाचिकेता याआत्मारूपराजाका यहशरीररूपीपुरहै॥ यापुरकेएकादशद्वारहैं ॥ नाभिसहित तीन नीचेके तथासप्तशिरमें औरएकमस्तकमेंहै ॥ पुरकास्वामीजोराजाहै सो जन्ममरणादिकविका-रोंसे रहितहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै॥मनसेतथावाक्‌आदिकइंद्रियोंसे रहितहै ॥ ऐसेआत्माकूं ध्यानकरताहुआ विवेकीपुरुष ज्ञानप्राप्तिसे सर्व बंधरूपजोशोकहै ताकूंनिवृत्तकरेहैं ॥ मुक्तहुआहीमुक्तहोवैहै ॥ काहेते आत्मातो नित्यमुक्तहै ॥ कदाचित्‌भी वास्तवआत्मामेंबंधभयानहीं ॥ परंतु अज्ञानकरि आपनेमें कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपबंध प्रथममानताथा ॥ अबब्रह्मज्ञानप्राप्तिसे अज्ञानकूंनिवृत्तकरि सर्वबंधसेमुक्तहोवैहैं ॥ हेनचि-केता यहआत्मा केवल एकशरीरमेंनहींरहता किंतु सर्वदेहमेंरहेहै ॥ यह प्रतिपादनकरेहैं ॥ यहआत्माहंसहै ॥ आत्माकारवृत्तिमेंस्थितहोइकरि जोअज्ञानतत्कार्यका नाशकरे ताकूंहंसकहेहैं ॥ औरयहआत्मा आ-दित्यरूपहै ॥ औरयहआत्माजीवोंकूं धनकीन्यांईप्रियहै यातेंवसुकहा है ॥ यह आत्मा अंतरिक्षमेंगमनकरणेहारा वायुरूपहै ॥ औरयहआ-

त्मा अग्निरूपहै ॥ और भोक्तारूपहै ॥ औरयहपृथिवीमेंस्थितहै ॥ तथा सूर्यमंडलमेंस्थितहै ॥ हृदयदेशमेंस्थितहै ॥ औरजापुरुषके कुल-गोत्रकाज्ञाननहीं तथामध्याह्नादिकालमें गृहस्थकेगृहमें अन्नआदिकेअर्थ प्राप्तभयाहै ताकूंअतिथिकहेहैं ॥ सोअतिथिभी आत्मरूपहै ॥ और यहआत्मा सोमरूपसे कलशमेंस्थितहोवेहै ॥ और मनुष्योंमें स्थितहै ॥ तथादेवतावोंमेंस्थितहै ॥ औरयहआत्मा सत्यमेंस्थितहै ॥ औरयह समष्टिबुद्धिमें तथाव्यष्टिबुद्धिमें साक्षीरूपसेस्थितहै ॥ औरयहआत्मा शंखशुक्त्यादिरूपसे जलसेउत्पन्नहोवेहै ॥ औरपृथिवीमें यवव्रीहिआ-दिरूपसेउत्पन्नहोवेहै ॥ और इंद्रियरूपकरिउत्पन्नहोवेहै ॥ औरपर्व-तोंसे नद्यादिरूपसेउत्पन्नहोवेहै ॥ औरयहआत्मा हिमाद्रिपर्वतसे गिरि-जारूपकरिउत्पन्नहोवेहै ॥ हेनचिकेता बहुतक्याकहें ॥ जोयहआत्मा सत्यरूपसेप्रतीतहोवेहै ॥ औरसर्वकाकारणहोनेसे सर्वप्रपंचमेंव्यापकहै ॥ ऐसेआत्माकेजाननेमेंलिंगकहेहै ॥ हेनचिकेता यहआत्मा सर्वकेहृदयमें स्थितहुआ प्राणरूपवायुकूं ऊर्ध्वलेजावेहैं ॥ और अपानवायुकूं नीचे लेजावेहै ॥ अंगुष्ठपरिमाणहृदयदेशमेंस्थितहोनेसे परिच्छिन्नपरिमाण-वालाप्रतीतहोवेहै ॥ औरयाआत्माकूं नेत्रआदिकइंद्रिय रूपादिकोंके ज्ञानरूपीबलीयांकूं प्राप्तकरेहैं ॥ जैसेवैश्यलोकभेटालेकरि राजाकूंमिले-हैं ॥ तैसेयाआत्माकूं नेत्रादिक आपनेआपनेविषयोंके ज्ञानोंकूं लेक-रिशरणमेंप्राप्तहोवेहैं ॥ जबीराजाआपनेपुरसेगमनकरे तबीमंत्रीभृत्य राजाकेसाथहीगमनकरेहैं ॥ तैसे याआत्माके याशरीररूपपुरसे गमन करणेसे इंद्रिय प्राण मन सर्वसाथही गमनकरेहैं ॥ औरपुनःयाशरीररू-पीपुरकी शोभारहेनहीं तथादाहकरणेयोग्यहोवेहै ॥ यहही आत्मा तु-मारेप्रश्नकाविषयहै ॥ हेनचिकेता यहशरीरभी प्राण अपान तथानेत्रा-दिकोंकरिजीवेनहीं ॥ काहेते यहसर्वजडहै इनसर्वकीस्थिति तथास्व स्वव्यापारोंमेंप्रवृत्ति रथकीन्यांई बिनाचेतनदेवसे होवेनहीं ॥ यातेंइन

सर्वकाप्रेरकइनसर्वसेभिन्नहै ।। हेनचिकेता यहधर्मादिकोंसेरहित आत्माकाउपदेशकरा ।। औरजोतुमने मरणसेअनंतर आत्माकासत्त्वपूछाथा सोअबकहेहैं ।। हेनचिकेता ब्रह्मजोगोप्यहैं तथाअनादिहै यातें भिन्न वास्तवसे जीवनहींहै ।। औरयहजीव आपनेपरमार्थरूपकूं नजानकरि जन्ममरणकूंप्राप्तहोवेहै ।। हेनचिकेता जैसेयहजीव शरीरकूंत्यागकरि आपनेअज्ञानसे क्लेशकूंप्राप्तहोवेहै ।। सोश्रवणकरो जिनकेपुण्य विशेषहैं और पापन्यूनहैं ते मानुष्यादिजंगमदेहकूं प्राप्तहोवेहैं ।। और जिनपुरुषोंके पापअधिकहैं पुण्यन्यूनहैं तेपशुआदिशरीरकूंप्राप्तहोवेहैं ।। और पापकर्मकी अतिअधिकतासे वृक्षादिदेहकूं प्राप्तहोवेहैं ।। हेनचिकेता यामानुष्यदेहमें जैसेपुरुषने कर्मकरेहैं तथाजैसीयापुरुषके मनमें वासना उत्पन्नभयीहैं ।। तिनकर्मवासनाके अनुसार याजीवका वारंवार घटीयंत्रकीन्यांई यासंसारमें नीचे उपरी गमन आगमनहोवेहै ।। विनाब्रह्मबोधसे याजन्ममरणरूपसंसारसे कदाचित् मुक्ति होवेनहीं ।। औरजीवब्रह्मके एकत्वज्ञानसे यासंसारकीनिवृत्तिहोवेहै ।। यातेंजीवब्रह्मके अभेदज्ञानवासते अबपुनःउपदेशकरेहैं ।। हेनचिकेता स्वप्नमें देहइंद्रियआदिक शयनकूंप्राप्तहोवेहैं ।। औरयहस्वयंज्योतिआत्मा शयनकूं प्राप्तहोवेनहीं सर्वकूंप्रकाशकरेहै ।। औरस्वप्नअवस्थामें अनेकपदार्थोंकूं यहआत्माही अविद्यासाथमिलकरि उत्पन्नकरेहै ।। और यहसाक्षीही शुद्धरूपहै स्वप्नमें जे अनेक पदार्थ स्त्री गृह क्षेत्रादिक उत्पन्नभयेहैं तिनका आत्मामैं किंचित्भीसंबंधनहींहै ।। और साक्षी अद्वितीयब्रह्मरूपहै और मोक्षरूपहै ।। हेनचिकेता भूरादिचतुर्दशलोक तथातिनलोकोंमें स्थितजे जरायुज अंडज स्वेदज उदभिज्ज यहच्यारिप्रकारकेप्राणीहैं ।। तेसंपूर्णहीयाब्रह्मात्माके आश्रितहोइकरिरहेहैं ॥ ताआत्माकूं कोई उल्लंघनकरिसकतानहीं ॥ ताब्रह्मात्माकूंही श्रुतिभगवती अनेकदृष्टांतोंसे कथनकरेहै ॥ हेनचिकेता जैसेवास्तवसे अग्निएकहीहै और

काष्ठादिउपाधिकरि अनेकरूपसेप्रतीतहोवेहै तैसे एकहीआत्मा सर्वभूतोंमेंस्थितहै औरहस्तीपिपीलिकादिकोंमें अनेकरूपसे प्रतीतहोवेहै ॥ औरजैसेवायुएकहुआभी अनेकप्राणियोंमें स्थितहोइकरि अनेकरूपसें प्रतीतहोवेहै ॥ तैसेएकहीआत्मा ब्रह्मासेआदिस्तंबपर्यंत सर्वभूतोंमें व्यापकहै ॥ हेनचिकेता जैसेयहसूर्यभगवान् सर्वभूतोंकेनेत्रोंकादेवताहो इकरि सर्वकेनेत्रोंमेंस्थितहोवेहै ॥ और नेत्रोंके अंधत्वादिकदोषोंसे तथा स्वच्छतादिगुणोंकरि लिपायमानहोवेनहीं ॥ तैसेयह आत्मा साक्षीरूपसे स्थूलसूक्ष्मशरीरोंविषे स्थितहुआभी तिनशरीरोंके गुणदोषोंकरि लिपायमानहोवेनहीं ॥ और यहआत्मा असंगहै यातें आध्यासिकलोकोंकेदुःखोंसे कदाचित् लिपायमानहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता यहएकहीआत्मा सर्वभूतोंके अंतरहै तथा सर्वजगत्का नियंताहै॥ और वास्तवसे एकहुआभी अनेकरूपोंकूं उपाधिकरिधारणकरेहै ॥ ताआत्माकूं जेअधिकारी आपनेअंतःकरणमें साक्षीरूपसेप्रत्यक्षजानेहैं ॥ तिनविवेकीपुरुषोंकूंही नित्यब्रह्मानंदकीप्राप्तिहोवेहै ॥ और जेविषयआसक्तचित्तहैं तेकदाचित् तानित्यआत्मानंदकूं प्राप्तहोवेंनहीं ॥ उलटासंसारचक्रमेंही क्लेशकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ हेनचिकेता यहआत्मा नित्योंकानित्यहै नित्यजे अन्यशास्त्रमें कालआकाशादिकहैं तिनसर्वकूं सत्तास्फूर्त्तिदेनेहाराहै ॥ यातेंहीश्रुतिभगवतीने नित्यकानित्यकहाहै ॥ औरयहआत्माचेतनजे ब्रह्मादिकहैं तिनसर्वकूंचेतनकरणेहाराहै ॥ यातें श्रुतियांआत्माकूंचेतनोंकाचेतनकहेहैं ॥ यहआत्मासर्वज्ञपरमेश्वरही सर्वप्राणियोंकेकर्मअनुसार फलदेनेहाराहै॥ ताआत्माकूं जेधीर अंतःकरणमें साक्षीरूपसेजानेहैं तेअधिकारी नित्य शांतिकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ इतरबहिर्मुखोंकूं शांतिप्राप्त होनीदुर्लभहै ॥ वाणीकाअविषय परमसुखरूपजोब्रह्महै ॥ ताकूं संन्यासी अपरोक्षरूपसेजानेहैं ॥ ऐसेसुखकूं मैं अधिकारी कैसे निश्चयकरूं सो सुखरूपब्रह्मप्रकाशताहै वानहीं ॥ तहांयहउत्तरहै ॥ यहब्रह्मात्माप्रकाश-

ताहै ॥ औरस्वयंज्योतिरूपहै ॥ याआत्माकेप्रकाशकरणेमें सूर्य तथा चंद्र तथातारे तथाविद्युत् यहसर्वसमर्थनहींहैं ॥ और जबीसूर्यादिकभी याआत्माके प्रकाशकरणेमें समर्थनहींतौ यह अग्नि आत्माकूंप्रकाश करेगा यामेंक्याकहनाहै ॥ यातेंआत्माकेप्रकाशकेपश्चात्ही तेसूर्यचंद्रादिप्रकाशकरेहैं ॥ स्वतंत्रप्रकाशसूर्यादिकोंकानहीं है ॥ किंतु आत्माकेप्रकाशकरिकेही यहसूर्यादिसर्वजगत्प्रतीतहोवेहै ॥ अबकारणब्रह्मका निरूपणकरेहैं जैसेवृक्षादिकार्यद्वारा कारणबीजका अनुमान होवेहै ॥ तैसे याजगत्रूपकार्यद्वारा ताकारणब्रह्मका अनुमानहोवेहै ॥ हेनचिकेता यहसंसाररूपी अश्वत्थकावृक्षहै ॥ जोवस्तु दूसरेदिनपर्यंत नरहै ताकूंअश्वत्थकहेहैं ॥ यहशरीरादिरूपसंसार क्षणभंगुरहै यातें यासंसारकूंभी अश्वत्थरूपसे श्रुतिभगवतीने कथनकराहै ॥ और यहसंसार कदलीके स्तंभकीन्यांई साररहितहै ॥ यासंसाररूपवृक्षका मूलकारण सर्वसेऊर्ध्वब्रह्महै ॥ तथा चतुर्दशभुवनमें होनेवाले जेअंडजादिचतुर्विधजीवहैं तेसर्वब्रह्ममूलकीअपेक्षासे नीचेकीशाखाहैं ॥ और जैसे बीजसेअंकुरअंकुरसेबीजहोवेहै ॥ तैसेयहजगत् स्वरूपसेतौ अनित्यहै परंतुप्रवाहरूपसे अनादिहै ॥ पुण्यपापरूपकर्मसे शरीरादिउत्पन्नहोवेहैं ॥ औरशरीरसे उत्पन्नहोवेहैं ॥ ऐसेश्रुतिमाताने प्रवाहरूपसे यासंसारकूं अनादिकहाहै ॥ जोयासंसारवृक्षका मूलकारणब्रह्महै सोब्रह्मशुद्धहै तथास्वप्रकाशहै ॥ औरसोईब्रह्मअविनाशीहै ॥ ताब्रह्ममेंही सर्वलोकस्थितहैं ॥ औरताब्रह्मकूं कोईपुरुष उल्लंघनकरिसकेनहीं ॥ हेनचिकेता जोतुमनेधर्मादिकोंसेरहितपूछाथा सोयही आत्माहै ॥ हेनचिकेता यहसंपूर्णजगत् जापरमात्मासे उत्पन्नभयाहै ॥ तथाजापरमात्मामें स्थितहोइकरि आपनेआपनेव्यापारोंमें प्रवृत्तहोवेहै ॥ सोयहआत्माहीमृत्युरूपहोइकरि सर्वका संहारकरेहै ॥ और इंद्रके उद्यतवज्रकीन्यांई यहआत्माही संपूर्ण इंद्र चंद्र सूर्यादि जगत्कूं

महान् भयकाहेतुहै ॥ याआत्माकूंही विवेकीजानतेहुए अमृतरूप-मोक्षकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ हेनचिकेता जैसेलोकपालभी परमात्मासे भयभीत हैं सोश्रवणकरो ॥ यापरमात्माकेभयकरिकेही अग्निसर्वत्रव्यापकहु-आभी आपनेकार्य प्रकाश पाकादिकोंकूंकरेहै।।सर्वजगत्केभस्मकरणेमें समर्थहैभी परंतु तापरमात्माकीआज्ञासे सर्वजगत्कादाहकरेनहीं ॥ औरतापरमात्माकेभयसेही सूर्य जगत्कूं तपावेहै। । औरतापरमेश्वरके भयसेही इंद्र वर्षाकरेहै ॥ तापरत्माकेभयसेही वायुचलेहै ॥ तापरमा-त्माकेभयसेही मृत्युसर्वजीवोंकेप्राणोंकूं निकासेहै ॥ पूर्वच्यारिदेवता-वोंकीअपेक्षासे मृत्युकूं पंचम वेदनेकहाहै ॥ जबीऐसेमहान्प्रभाववाले देवताभी यापरमात्मासे भयकूंप्राप्तहोवेहैं तौअन्यजीवकीक्याकथाहै ॥ भयकीनिवृत्तिका उपायब्रह्मज्ञानहै ॥ हेनचिकेता जबीयहपुरुष याश-रीरकेहोतेही आत्माकूंनजाने तौअनंतयोनियोंमें वारंवारजन्ममरणकूंही प्राप्तहोवेहै ॥ औरपुण्यकर्मकेअनुसार जबीस्वर्गादिकफलोंकूंभी प्राप्त होवेहै तहांभी मरणादिकोंका क्लेशतौनिवृत्तहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता जैसेशुद्धदर्पणविषे मुखस्पष्टप्रतीतहोवेहै ॥ तैसे याअधिकारी देहमें जाशुद्धबुद्धिहै तामें यहआत्मास्पष्टप्रतीतहोवेहै ॥ औरजैसेस्वप्नअव-स्थामें अपनास्वरूप जीवोंकूंस्पष्टप्रतीतहोवेनहीं ॥ तैसे स्वर्गलोकमें भोगोंकीअधिकतासे यहआत्मा स्पष्टप्रतीतहोवेनहीं जैसे सकंपज-लमें कंपादिविपरीतधर्मवाला आपनामुखप्रतीतहोवेहै ॥ तैसे गंधर्वलोकमें विषयोंकीआसक्तिसे विपरीतधर्मसहित आत्माप्रतीतहो-वेहै ॥ इसरीतिसे औरलोकोंमें यथार्थबोधहोनादुर्घटहै ॥ और छाया आतप जैसे भिन्नभिन्नप्रतीतहोवेहैं तैसे ब्रह्मलोकमें आत्मापंचकोशसे भिन्नरूपसेप्रतीतहोवेहै ॥ परंतुसो ब्रह्मलोक उपासनाकरिकेप्राप्तहोवेहै॥ और ताब्रह्मलोककीप्राप्तिमें विघ्नअनंतहैं यातेंताब्रह्मलोककी आशाकरि याअधिकारिदेहमें वेदांतश्रवणादिकोंसे विमुखहोनानहीं ॥ हेनचिकेता

आकाशादिकपंचभूतोंसे भिन्नभिन्नउत्पन्नभयेजेइंद्रियहैं तिनसर्वइंद्रियों-से आत्मभिन्नहै ॥ और यहइंद्रियादिक सुषुप्तिआदिअवस्थामें लय-भावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ औरजागरितअवस्थामें उदयहोवेहैं ॥ और आत्मा कदाचित्भी उदय अस्तकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ ऐसेविवेकी जानताहुआ जन्ममरणकेहेतु कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपबंधकूं निवृत्तकरेहै ॥ हेनचिकेता इंद्रियोंसेमनपरहै ॥ मनसेनिश्चयरूपबुद्धिपरहै ॥ ताव्यष्टिबुद्धिसे समष्टि-बुद्धिरूपमहत्तत्त्वपरहै ॥ तामहत्तत्त्वसे अव्यक्त जामायाहै सामायाप-रहै ॥ तामायाकूं प्रकाशकरनेहारा जोपुरुषआत्माहै सोपरहै ॥ सो आत्माव्यापकहै औरबुद्धिआदिकोंसेरहित है ॥ याआत्माकूंही जान-करि विवेकीजन्ममरणसेरहितहुआ परममोक्षकूं प्राप्तहोवेहै ॥ और यहआत्मा नेत्रादिकोंकाविषयनहीं इसीसे याआत्मामें नेत्रादिप्रवृत्तहो-वे नहीं ॥ यातेंइननेत्रोंकरि कोईपुरुषभी याआत्माकूं देखसकेनहीं ॥ यातें संकल्पसहितमनकूं वशकरणेहारी जाअंतर्मुखशुद्धबुद्धिहै ताबुद्धि-सेही विवेकीपुरुष आत्माकूंजानेहैं ताआत्मज्ञानसेही परममोक्षकूंप्राप्त-होवेहैं ॥ हेनचिकेता जाकालमें यापुरुषके ज्ञानइंद्रिय तथामन आप-नीचंचलताकूं त्यागकरि निश्चलताकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ ताकालमें तानिश्च-लताकूं परमगति यानामकरि महात्माकहेहैं ॥ ताएकाग्रताकूंही महा-त्मा योगमानतेहैं ॥ यहइंद्रियोंकी निश्चलधारणाही परमयोगहै ॥ यह इंद्रियोंकी धारणारूपयोगही ब्रह्मप्राप्तिद्वारा याजगत्के उत्पत्ति तथासं-हारकी सामर्थ्यरूपऐश्वर्यकी प्राप्तिकाकारणहै॥ यातें तायोगकीप्राप्तिवास-ते प्रमादकूंत्यागकरे ॥ हेनचिकेता तायोगकेविनातौ यहआत्मावाणी-करि प्राप्तहोवेनहीं तथाश्रोत्रनेत्रादिकोंकरि यहआत्माप्राप्तहोवेनहीं ऐसाशुद्धचेतनही सत्यरूपहै याप्रकारकेवचनोंकूं कथनकरणेहारे जे आस्तिकपुरुषहैं तिनआस्तिकपुरुषोंकेमतकूं त्यागकरिके जेबहिर्मुख-नास्तिकोंकेमतमें श्रद्धाकरेहैं तिनबहिर्मुखोंकूं आत्मबोध कदाचित्हो-

वेनहीं ॥ हेनचिकेता यहअधिकारी प्रथम आत्माकूं बुद्धिआदिउपाधिवालानिश्चयकरे ॥ तथाजगत्काकारण अस्तिरूपसे निश्चयकरे ॥ ताअनंतर वास्तव अविक्रिय शुद्धरूपसे निश्चयकरे ॥ ऐसेजाअधिकारींने प्रथम अस्तिरूपसे आत्माकूंनिश्चयकराहै ॥ ताअधिकारीकूंही आत्माप्रसन्नहोईकरि आपनेयथार्थरूपकूंदिखावेहै ॥ हेनचिकेता यापुरुषकीबुद्धिमें स्थितजेविषयोंकीइच्छाहैं तेसंपूर्ण जिसकालमें निवृत्तहोवेहैं ॥ तिसकालमें अमृतभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और अज्ञानकालमें मर्त्यनाममरनेवाला मानताथा अबब्रह्मबोधकेप्रतापसे मरणादिकोंकूंत्यागकरेहै ॥ और याशरीरमेंही ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेनचिकेता जिसकालविषे यापुरुषकेग्रंथिकीन्यांई हृदयमेंस्थितबंधनरूप देहादिकोंमेंअहंता औरपुत्रादिकोंमें ममता निवृत्तहोवेहै ॥ ताकालमेंहीपुरुष अमृतभावकूं प्राप्तहोवेहै ॥ औरजन्ममरणकूं त्यागकरि यहांहीब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवेहै जाकीअविद्यादिग्रंथिनिवृत्तिकूंप्राप्तहोवेहै ताकीतौ याशरीरमेंही मुक्तिहोवेहै ॥ ताकास्वर्गनरकादिकोंमें गमनहोवेनहीं ॥ औरजेउपासकहैं तथा अन्यशुभअशुभ करणेहारेहैं तिनकीगतिकाप्रकारकहेहैं ॥हेनचिकेता हृदयरूपमूलसे प्रधाननाडीयां एकउपरिशत१०१ निकसेहैं ।। तिनसर्वनाडीयोंसेविलक्षण जाकूं सुषुम्नाकहेहैं ।। सासुषुम्ना नाडी ब्रह्मलोककीप्राप्तिमेंद्वारहै औरसूर्यमंडलपर्यंत प्राप्तभयीहै ॥ तासुषुम्नानाडीकरि यहजीव ब्रह्मलोककूं प्राप्तहोवेहैं ॥ अन्यनाडीयोंकरि यहजीव उच्च नीच शरीरकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ अबसर्वकठउपनिषत्केअर्थकूं संक्षेपसेंप्रतिपादनकरेहैं ॥ हेनचिकेता यहसर्वकेअंतरआत्मा अंतःकरणके अंगुष्ठपरिमाणहोनेसे अंगुष्ठपरिमाणवालाहै ॥ औरयहआत्मा सर्वकेहृदयमेंस्थितहै ॥ ताआत्माकूं तीनशरीरसेभिन्नजाने ॥ जैसेमुंजरूपबाह्यत्वचासे इषीकारूपमध्यकेतृणकूं भिन्नकरेहैं ॥ तैसे अन्वयव्यतिरेककरि स्थूलसूक्ष्मकारणयातीनशरीरसे आत्माकूं भिन्नकरे ॥ संक्षेपसे अन्वयव्यतिरेककूंप्रसंगसे कहेहैं ॥ स्वप्नअवस्थामें

यहस्थूलशरीर प्रतीतहोवेनहीं ॥ यातेंयास्थूलशरीरका व्यतिरेकहै ॥ आत्मास्वप्नमेंभी प्रकाशकरैहै ॥ यहआत्माका स्वप्नमेंअन्वयहै ॥ सुषुप्तिमेंसूक्ष्मशरीरकाअभावहै ॥ यह सूक्ष्म शरीरका सुषुप्तिमेंव्यतिरेकहै ॥ आत्मासुषुप्तिमेंभी अज्ञानकूंप्रकाशकरैहै यहआत्माकासुषुप्तिमें अन्वय है ॥ और अज्ञानरूपकारणशरीर समाधिअवस्थामेंरहेनहीं यहकारण शरीरकाव्यतिरेकहै ॥ और आत्मा समाधिअवस्थामेंभी प्रतीतहोवैहै ॥ यहआत्माकासमाधिअवस्थामेंअन्वयहै ॥ ऐसेधैर्यसे अन्वयव्यतिरेकरूपयुक्तिकरिके तीनशरीरोंसे आपनेसाक्षीरूपकूंपृथक्करे ॥ तासाक्षीकूं ब्रह्मरूप निश्चयकरे ॥ कैसाब्रह्महै ॥ स्वयंप्रकाशहै तथाशुद्धहै जराम-रणशून्यहै ॥ ताशुद्धब्रह्मकूं जाननेवालाविवेकीभी शुद्धब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ कथाकूंसमाप्तकरैहैं ॥ ऐसेयमराजासेउपदेशकूंग्रहणकरि तथासंपूर्णसमाधिके प्रकारकूं ग्रहणकरि नचिकेताब्रह्मकूं प्राप्तहोताभया॥ और पुण्यपापसे रहितहुआ अमृतभावकूं प्राप्तभया ॥ ऐसेनचिकेताकीन्यांई कोईअन्यभी याब्रह्मकूंजाननेवाला अमृतभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अबशांतिमंत्रकेअर्थकूं कहेहैं॥सोपरमात्मा हमगुरुशिष्यदोनोंकूं ज्ञानप्रकाशकरनेसेरक्षाकरे ॥ तथा ज्ञानके फलप्रगटकरनेकरि हमारापालनकरे ॥ और हमगुरुशिष्यका पठनबलवालाहोवे सर्वविघ्नोंके नाशकरणेवालाहोवे ॥ और हमारेप्रमादकरिपठनेपठानेसे भया जोदोष तादोषसेउत्पन्नभया जो हमगुरुशिष्यमेंद्वेष सोद्वेष हमकूं मतिप्राप्त होवे॥अध्यात्म अधिभूत अधिदैव यातीनप्रकारकेविघ्नोंकी निवृत्तिवासते अंतमें तीनवारशांतिपाठहै सोयहहै ॥ ॥ ॐ शांतिःशांतिःशांतिः ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य-श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपाद-शिष्यसंप्रदायप्रविष्ट-परमहंसपरिव्राजकस्वामि-अच्युतानन्दगिरिविरचिते प्राकृतोपनिषत्सारे यजुर्वेदीय-कठोपनिषदर्थनिर्णयः ॥ ३ ॥

इति कठोपनिषद्भाषांतरम् ।

श्रीः ।

अथ प्रश्नोपनिषद्भाषांतरम् ।

ॐ नमोवेदपुरुषाय ॥ अथ अथर्ववेदीयप्रश्न उपनिषत्प्रारंभः ॥ किसी देशमें षट्ऋषि परस्परस्नेहवालेहुए एकठेहोतेभये ॥ तिनषट्ऋषीयोंके नाम वर्णनकरेहैं ॥ भरद्वाजऋषिकापुत्रहोनेसे भारद्वाजनामकूंप्राप्तभया सुकेशानामवालाएकहोताभया ॥ द्वितीय शिविऋषिकापुत्रहोनेसे शैव्य नामकूंप्राप्तहुआ सत्यकामनामाऋषिहोताभया ॥ औरतीसरा गोत्रकरि गार्ग्यसंज्ञाकूंप्राप्तभया ॥ सौर्यायणिनामाऋषिथा ॥ औरचतुर्थ अश्वल ऋषिकापुत्रहोनेसे आश्वलनामवालाहुआ कौशल्यनामकऋषि होताभया ॥ औरपंचम विदर्भऋषिके कुलविषे उत्पन्नहोनेसे वैदर्भियानामकूं प्राप्तहुआ भार्गवनामाऋषिहोताभया ॥ षष्ठ कतऋषिकेकुलविषे उत्पन्नहोनेसे कात्यायननामकूं प्राप्तहुआ कबंधीनामाऋषिथा ॥ यहषट् ऋषि च्यारिवेदोंकूंपठकरि वेदउक्तकर्मउपासनाकूं करतेभये ॥ ताकर्मउपासनाके करणेसे शुद्धअंतःकरणवालेहुए निर्गुणब्रह्मके जाननेकीइच्छाकूं करतेभये ॥ और आपसमें मिलिकरि याप्रकारका विचार करतेभये ॥ जोगुरु ब्रह्मश्रोत्रिय तथाब्रह्मनिष्ठहोवे सोहमकूं निर्गुणब्रह्मका उपदेशकरे ॥ ऐसेविचारकरतेहुए तेऋषि ब्रह्मश्रोत्रियतथाब्रह्मनिष्ठ पिप्पलादगुरुकी शरणकूंप्राप्तहोतेभये ॥ औरकहतेभये हमकूंनिर्गुणब्रह्मका उपदेशकरो ॥ दंतधावन काष्ठरूपभेटाकूं ग्रहणकरि शरणकूं प्राप्तभये जेषट्ऋषिहैं तिनकूं पिप्पलादऋषि यहकहताभया ॥ हेऋषयः यद्यपितुमआगेही तपस्वीहो तथापि तुममेरेसमीप ब्रह्मचर्यसे तथाश्रद्धासे इंद्रियसंयमरूपतपकूं धारकरि एकवर्षपर्यंतरहो ॥ एकव-

र्षके पश्चात् जैसीतुमारीइच्छाहो तैसेतुमने प्रश्न करने औरयदि हम तुमारेप्रश्नोंके उत्तरदेनेमें समर्थभये तबतुमारेप्रति सर्वउत्तरदेवेंगे ॥ ऋषिपिप्पलादने जोकहा हमजानेंगे तबहमउत्तरदेवेंगे ॥ याकहनेसे अभिमानराहित्य यहब्रह्मवेत्ताकाचिन्हहै यहजनाया ॥ तामें हेतुयहहै जोआगेपिप्पलादनामाऋषिने षट्ऋषियोंके प्रश्नोंके उत्तर दियेहैं ॥ ऐसे जबी पिप्पलादऋषिने नम्रतापूर्वककह्या तबीते ऋषि श्रद्धापूर्वक तापिप्पलादऋषिकेसमीप ब्रह्मचर्यसहित तपकूं करतेभये वर्षकेव्यतीतभयेसेअनंतर कबंधीनामा कतऋषिकापुत्र होनेसे कात्यायननामकूं जोप्राप्तभयाथा ॥ सोपिप्पलादमुनिकूं दंडवत् प्रणामकरि यहप्रश्नकरताभया ॥ हेभगवन् यहसंपूर्णप्रजा किसकारणसेउत्पन्नहोवेहैं ॥ यहकृपाकरिहमारेकूंकहो ॥ ऐसेकबंधीऋषिके प्रश्नकूं श्रवणकरि पिप्पलादगुरुउपदेशकरेहैं॥ हेकबंधीकात्यायन प्रजापतिजो विराट्है सोविराट्विचारकरिके भोक्तारूपअग्निकूं औरभोग्यरूपचंद्रमाकूं रचताभया॥ यद्यपि मायाविशिष्टपरमेश्वरसेजगत्उत्पत्तिकथनकरणेयोग्यथी ॥ तथापि ॥ कात्यायन महासृष्टि परमेश्वरसे उत्पन्न भयीहै ऐसेपूर्वहीभलीप्रकारसेजानताहै ॥ ऐसेजानकरि तामहासृष्टिकी उपेक्षाकरिके विराट्सेउत्पन्नभयीसृष्टिकूं पिप्पलादगुरु निरूपणकरेहैं ऐसे उत्पन्नकरेजेअग्निचंद्रमाहैं यहदोनूं अग्नि चंद्रमा मेरीबहुतप्रजाकूं उत्पन्नकरेंगे ऐसेविचारकरि ताविराट्ने अग्नि चंद्रमा यहदोनूंउत्पन्नकरे॥ सोभोक्तारूपअग्नि दोप्रकारकाहै ॥ एकअध्यात्मप्राणहै सोभोक्ताहै ॥ दूसराअधिदैव अग्निहै सोसूर्यरूपहै॥ और चंद्रमा अन्नरूपहै॥ अर्थयह भोग्यरूपहै ॥ जोमूर्त्तरूपस्थूलहै तथाअमूर्त्तरूपसूक्ष्महै सोसर्वअन्नरूपहै ॥ औरवास्तवसेतो अमूर्त्तप्राणअत्ताहै ॥ अर्थयहभोक्ताहै ॥ गौणसेअमूर्त्तकूंभी श्रुतिनेपूर्वअन्नरूपताकही अन्नतौकेवलमूर्त्तजोस्थूलहै सोईभोग्यहै। अबभोक्ताजो अधिदैवरूपकरि आदित्यहै ताकूंकहेहैं॥ सूर्यभगवान् पूर्व-

दिशासेउदयहुआ पूर्वदिशामेंजेप्राणहैं तिनकूं आपनीकिरणोंमें धारणक-रेहै ॥ अर्थयह॥ जोआपनेप्रकाशसे पूर्वदिशाकेनेत्ररूपप्राणोंकूं प्रकाशकरे है ॥ तैसेदक्षिणदिशामें स्थितप्राणोंकूं तथातादिशाकूंप्रकाशकरेहै ॥ तथापश्चिम उत्तरदिशाकूं प्रकाशकरेहै ॥ तथातिनदिशामेंस्थितनेत्ररूप-गौण प्राणोंकूं प्रकाशकरेहै तथाच्यारिकोणोंकूं औरतिनकोणोंमेंस्थित नेत्ररूपप्राणोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ तैसेऊर्ध्वदिशा तथानीचेकीदिशाकूं प्रकाशकरेहै औरउपरिनीचेस्थितजेनेत्रहैं तिनकूंप्रकाशकरेहै ॥ हेका-त्यायन यहसूर्यभगवान् सर्वदिशावोंमें प्रकाशताहुआ सर्वनेत्ररूपप्राणोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ औरसर्वप्रकाश्यवस्तुका भोक्तापुरुषहै तथासर्वविश्वका आत्माहै ॥ हेकात्यायन यहसर्वरूपतथा किरणवाला तथाज्ञानरूपसर्व-प्राणोंका आश्रयसूर्य है ॥ सर्वप्राणीयोंकानेत्ररूप औरअद्वितीय तथा तपावनेहारा तथाप्राणीयोंकेप्राणोंकरि सहस्ररूपोंसेवर्त्तमान जोसूर्यउदय होताहै ताकूंपंडितपुरुषजानतेहैं ॥ हेकात्यायन यहप्रजापतिविराट्वर्ष-रूपहै ॥ तावर्षरूपप्रजापतिके दक्षिणायन तथाउत्तरायणरूप दोमार्ग हैं ॥ जेपुरुषअग्निहोत्रादिरूप इष्टकर्मकूंकरेहैं तथावापीरूप तडाग देव-तामंदिर अन्नदान आदिरूपपूर्त्तकर्मकूंकरेहैं ॥ तैसेनित्यकर्म करणेहारे चंद्रलोककूंप्राप्तहोवेहैं ॥ ताचंद्रलोकसे यालोककूं प्राप्तहोवेहैं कर्मफल-भोगकेअनंतर चंद्रलोकमें तिनकारहनाहोवेनहीं ॥ ऐसेस्वर्गलोकार्थी तथाप्रजाकीकामनावालेहुए दक्षिणायनमार्गकूंही प्राप्तहोवेहैं ॥ तामार्ग-करि भोग्यरूपचंद्रमाकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ हेकात्यायन उत्तरायणमार्गकरि भोक्तारूपसूर्यकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ अबउत्तरायणमार्गकीप्राप्तिमें साधनोंकूं श्रवणकरो ॥ तपजोइंद्रियोंकाजयहै ॥ तथाब्रह्मचर्य श्रद्धा सगुण-उपासनादिक ताउत्तरायणमार्गकीप्राप्तिमें साधनहैं ॥ तिनसाधनोंकरि जेपुरुष यहमानतेहैं ॥ स्थावरजंगमजगत्का पालकजोआदित्यहै सोईहमहैं ऐसेमाननेवालेपुरुष उत्तरायणमार्गद्वारा आदित्यकूंप्राप्त होवे

हैं॥ यहआदित्यसर्वप्राणोंकाआश्रयहै ॥ तथाअभयहै॥ तथाअमृतहै ॥ उपासकपुरुषोंकीपरमगतियहहै ॥ यासूर्यमंडलद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्त- भयाजोउपासकहै सोयासंसारमें पुनःप्राप्तहोवेनहीं ॥ औरकेवलकर्मी उपासनाविना याआदित्यमंडलकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ यद्यपि गीतामें भगवान्ने यहकहाहै हेअर्जुन ब्रह्मलोकपर्यंत जेलोकहैं तिनसर्वसेंया- संसारमें अवश्यआगमनहोवेहै ॥ यास्थानमेंश्रुतिने तिनउपासकपुरु- षोंका आगमनकाअभाव प्रतिपादनकराहै ॥ यातें गीतावचनसे यह श्रुतिवचन विरुद्ध प्रतीतहोवेहै ॥ जैसेवेदईश्वररचितहै तैसेगीताभी श्रीकृष्णभगवान्रचितहै यातेंगीताकूं अप्रमाणताकहनाभी बनेनहीं ॥ तथापि जेपुरुषईश्वरउपासनाविना पंचाग्निविद्या अश्वमेध दृढब्रह्मचर्य इत्यादिसाधनोंकरि उत्तरायणमार्गद्वारा ब्रह्मलोकमेंप्राप्तभयेहैं तिनका आगमनहोवेहै ॥ और जेईश्वरउपासनाकरि तथाअहंग्रहउपासना करि ब्रह्मलोकमें प्राप्तभयेहैं तिनकायासंसारमें आगमन होवेनहीं ब्रह्मलोकमें ईश्वरकृपाकरि ज्ञानकूंप्राप्तहुए परममोक्षकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ यातें गीतामें ईश्वरउपासकसेविना जेपुरुषपंचाग्निविद्या अश्वमेधादि- उपायसे ब्रह्मलोकमें प्राप्तभयेहैं तिनका आगमनकहाहै ॥ औरया उपनिषत्में आदित्यभगवान्की अहंग्रहउपासनासे आगमनकाअभा- वप्रतिपादनकराहै ॥ यातेंगीतावचनसे विरोधनहीं ॥ हेकात्यायन यासूर्यभगवान्काषट्ऋतुरूप पादहैं ॥ मूलश्रुतिमें हेमंतशिशिरकीएक- ताकेअभिप्रायसेसूर्यकेपंचऋतुपादकहेहैं ॥ द्वादशमासरूप अन्यअवय- वहैं ॥ औरयहसूर्य तीसरेआकाशमेंहै ॥ जलवान्है ॥ सूर्यसेंही वर्षा- होवेहै ॥ दूसरेवेदकेआचार्यतो ऐसेकहेहैं ॥ सप्तअश्वोंवालाजोरथहै तामेंस्थितजोसूर्यहै सोईवर्षरूपचक्रहै तावर्षरूपचक्रकी षट्ऋतुरूपअ- राहैं ॥तासूर्यमेंजगत्स्थितहै ॥ मासरूपप्रजापतिहै मासरूपप्रजापतिका कृष्णपक्षअन्नहै शुक्लपक्ष भोक्ताप्राणहै ॥ ऐसेप्राणआदित्यरूपअग्नि

भोक्ताकूं जेजानतेहैं तेकृष्णपक्षमेंभी यज्ञकरतेहुए शुक्लपक्षमेंहीकरतेहैं॥ ऐसेनजाननेवाले शुक्लपक्षमेंभी यज्ञकरतेहैं तौभी कृष्णपक्षमेंहीकरतेहैं ऐसेजानना ॥ दिनरात्रिरूपप्रजापतिहै तिसप्रजापतिका दिनप्राणहै रात्रि अन्नहै ॥ जेपुरुष दिनमेंस्त्रीकेसाथमैथुनकरतेहैं ते आपनेप्राणोंका नाश करतेहैं ॥ जेगृहस्थ विधिपूर्वक रात्रिमें आपनीस्त्रीकेसाथमैथुनकरतेहैं तेब्रह्मचारीहीहैं ॥ हेकात्यायन अन्नरूपभीप्रजापतिहै ॥ मातापिता-नेभक्षणकियाजोअन्नहै ताअन्नसे वीर्यऔररक्तउत्पन्नहोवे हैं ॥ ता वीर्यऔररक्तसे यहसर्वजीवउत्पन्नहोवेहैं ॥ ऐसेरात्रिमेंआपनीस्त्रीके साथगमनकरणा यहप्रजापतिकाव्रतकहावेहै ॥ याव्रतकूंजेगृहस्थवि-धिपूर्वककरतेहैं ॥ तिनकूं प्रत्यक्षफलतौ पुत्रकन्याकीप्राप्तिहोवेहै ॥ द्वितीय अदृष्टफल स्वर्गप्राप्तहोवेहै ॥ हेकात्यायन निर्मलब्रह्मलोकतौ तिनकूंप्राप्तहोवेहै जिनकेसर्वदासत्यसंभाषणहै ॥ तथाजिनका किसीव्य-वहारमें कौटिल्यनहींहै और जिनकेमायानहीं ॥ मायानामबा-ह्यसेऔरप्रकारकाप्रतीतहोना अंतरसेऔरप्रकारकाहोना ॥ सत्यसं-भाषण तथा कौटिल्यराहित्य तथामायाराहित्य तथाईश्वरउपा-सना इनसाधनोंकेविना ब्रह्मलोकप्राप्तहोवेनहीं ॥ ऐसे पिप्पलादऋषिने अग्नि चंद्रमाद्वाराप्रजापतिंही सर्वजगत्काकर्त्ता है यहकहा ॥ ऐसेप्रजा-पतिविराट्कूं जगत्काकारणनिश्चयकरि कात्यायनतौतूष्णींहोताभ-या॥ १ ॥अधिदैवसूर्य अग्निआदिरूपसे प्राणकीउपासनामें उपयोगीअर्थ का प्रथमप्रश्नमें कथनकरा अबअध्यात्मरूपसे प्राणकेप्रभावकेनिरूपण-वासते द्वितीयप्रश्नकाआरंभहै ॥ अबवैदर्भिनामा भार्गवऋषिप्रश्नकरेहै ॥ भार्गवउवाच॥हेभगवन् यासंघातकूं कितनेदेवताधारणकरेहैं ॥ और तिनदेवतावोंमेंभी कितनेदेवता प्रकाशकरणेहारेहैं ॥ तिनसर्वदेवतावों-विषेभी श्रेष्ठकीर्त्तिअधिकतादिगुणोंवालाकौनहै॥ यातीनप्रश्नोंकाउत्तरक-

हो॥अबपिप्पलादगुरुउत्तरकहेहैं॥पिप्पलादउवाच॥हेभार्गव आकाशा-
दिपंचभूतश्रोत्रादिपंचज्ञानइंद्रिय वागादिपंचकर्मइंद्रिय एकमन एकप्राण
इनके अभिमानीसप्तदशदेवता यासर्वशरीरोंकूं धारणकरेहैं ॥ तिनसर्वमें
पंचज्ञानइंद्रिय एकमन यहषट् प्रकाशकरेहैं ॥ तिनषट्मेंभीप्राणश्रेष्ठहै ॥
काहेते अंधबधिरआदिनेत्रश्रोत्रादिकोंसेरहितहुएभी जीवतेदेखनेमें
आवेहैं ॥ जबीप्राणनिकसनेलगे तबीसर्वविवरणहोइजावेहैं ॥ यातें
प्राणहीयासंघातमेंश्रेष्ठहै ॥ याप्राणकीश्रेष्ठताअबकथनकरेहैं ॥ यह
श्रोत्रादिइंद्रिय यासंघातकूं प्रकाशतेहुए अभिमानकरतेभये औरयह
कहतेभये हमहीयाशरीरकूं धारणकरतेहैं ॥ ऐसेअभिमानवालेश्रोत्रा-
दिकोंकूं श्रेष्ठप्राणकहताभया ॥ तुमअविवेककरि अभिमानकूंमतिकरो
याशरीरकूं प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचरूपसे मैं रक्षाकर-
ताहूं ॥ तुमकिसवासते व्यर्थअभिमानकरतेहो ॥ ऐसेप्राणकेवचनकूं
श्रवणकरिकेभी ते नेत्रादि श्रद्धा न करतेभये॥प्राणने तिनश्रोत्रादिकोंकी
अश्रद्धा निश्चयकरी तबप्राणमहान्क्रोधकूं प्राप्तभया और याशरीरसेबा-
ह्यनिकसजाताभया ॥ तबीश्रोत्रादिकभी दुःखीहुए निकसजातेभये ॥
जैसेमधुकरराजानामा प्रधानमक्षिका जबीमधुदेशसेचलीजावे तबीदू-
सरीमक्षिका तामधुदेशमेंस्थितहोवेनहीं किंतु तिसराजाकेसाथही गम-
नकरेहैं ॥ जबीराजास्थितहोवेहै तबीदूसरीमक्षिकास्थितहोवेवैं ॥
तैसे जबीप्राणगमनकरें तबीश्रोत्रादिकभीगमनकरें जबीप्राणस्थित-
होवें तबीश्रोत्रादिकभीस्थितहोतेभये ॥ ऐसेश्रोत्रादिक सर्वआपनी
स्थिति प्राणकेआश्रयही निश्चयकरि प्राणकीस्तुतिकरतेभये ॥ हे-
प्राण तुमहीसूर्यहो ॥ तुमहीअग्निहो ॥ मेघ इंद्र वायु पृथिवी अन्नदे-
वता स्थूल सूक्ष्म और देवतावोंका भोग्यरूपअमृत यहसर्वपदा-
र्थतुमहीहो ॥ जैसेरथकीनाभिमें अरास्थितहोतीहैं तैसेतुमप्राणमें

सर्वजगत्स्थितहै ॥ ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद यज्ञ क्षत्रिय ब्राह्मण यह-
सर्व तुमारेमेंस्थितहैं ॥ प्रजापति विराट्तुमहो तुमहीमाताके गर्भमेंप्रथ
मस्थितहोइकरि उत्पन्नहोतेहो ॥ जोतुमप्राणरूपकरि याशरीरमेंस्थि-
तहो तुमारेवासते यहमनुष्यादिसर्वजीव नेत्रादिकोंकरि रूपादिकोंकेज्ञा-
नरूपबलीयोंकूंदेवेहैं ॥ हेप्राण देवतावोंमें हविकेभक्षणकरणेहारा
जोश्रेष्ठअग्निहै सोतुमारास्वरूपहै ॥ पित्रोंकाअन्नभीतुमहो ॥ इंद्रियों-
केमध्यमें जोश्रेष्ठतुमप्राणहो तुमारेकरिकेही याशरीरकीचेष्टाहोवेहै ॥
हेप्राण तुमहीपरमेश्वरहो औरशिवरूपहुए आपनेबलकरि याजग-
त्कानाशकरतेहो ॥ औरविष्णुरूपसे जगत्कीपालनाकरतेहो ॥ और
सर्वज्योतियोंकेपतिसूर्यरूपसै अंतरिक्षमें विचरतेहो ॥ औरहेप्राण
जबीतुममेघरूपहोइकरिवर्षाकरतेहो तबअन्नबहुत होवेहै ॥ ताअन्नकूं
प्राप्तहोइकरि यहसर्वतेरीप्रजासुखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेप्राण तुमस्वभावसे
शुद्धहो ॥ अथर्वणवेदकेवेत्ताजेऋषिहैं तिनकेअग्निकानाम एकर्षी है ॥
हेप्राण एकर्षिअग्नि हविभक्षणकर्तातुमहो ॥ याजगत्केश्रेष्ठपतितुमहो॥
हमश्रोत्रादि तुमारेकूंहविदेनेहारेहैं ॥ हेप्राण तुम हमारेसर्वकेपिताहो ॥
हमारेअपराधकूंआप क्षमाकरो ॥ जातुमारीमूर्तिवाक्मेंस्थितहै और
जाश्रोत्रमें तथानेत्रोंमेंस्थितहै तथाजातुमारी मूर्त्ति मनमेंस्थितहै ॥
तामूर्त्तिकरिही सर्वहमारेमेंबलहै ॥ तामूर्त्तिकूं कृपाकरि मतिनिकासो॥
तामूर्त्तिकरिही हमारासर्वका कल्याणहै ॥ हमसर्व आपके किंकरहैं ॥
हेप्राण हमबहुतक्याकहैं जोस्वर्गमेंभीपदार्थहैं तिनसर्वकेआपरक्षकहो ॥
जैसेमातापुत्रोंकीरक्षाकरेहै तैसेतुम हमारीरक्षाकरो॥हमारीधनादिरूपजा
श्रीहै ताकीरक्षाकरो तथाताश्रीकीरक्षावासते हमारेतांई बुद्धिकादान
करो ॥ ऐसेअन्यश्रोत्रादिरूपदेवता प्राणकीस्तुतिकरतेभये ॥ यातेंप्राण-
हीसर्वसेश्रेष्ठहै ॥ ऐसेभार्गवऋषिश्रवणकरितूष्णींकूंप्राप्तभया ॥ तिसके-
अनंतर आश्वलायननामवाला कौशल्यऋषि प्राणकेउत्पत्तिस्थिति

आदिकोंकेनिर्णयवासते षट्प्रश्नोंकूंकरताभया ॥ आश्वलायनउवाच ॥ हेभगवन् याप्राणकी किससेउत्पत्तिहोवेहै ॥ १ ॥ किसनिमित्तसे याशरीरमेंसंबंधहोवेहै ॥ २ ॥ औरयहप्राण आपनेकूंभिन्नभिन्नकरिके किसप्रकारसे याशरीरमेंस्थितहोवेहै॥ ३ ॥ औरकिसद्वारसे किसवृत्तिकरिके तथाकिसनिमित्तसे याशरीरसे बाह्यनिकसेहै ॥ ४ ॥ औरयह प्राण बाह्यअधिदैव तथा अधिभूतकूं कैसेधारणकरेहै ॥ ५ ॥ औरयहप्राणअध्यात्मकूंकैसेधारणकरेहै॥ ६ ॥ याप्रश्नोंकाहमकूं आपउत्तरकहो॥ पिप्पलादउवाच ॥ हेआश्वलायन तुमअतिशयकरिकेब्रह्मपरायणहो यातेंब्रह्मिष्ठहो जिसहेतुसे तुमने अतिसूक्ष्मप्रश्नकरेहैं यातेंहीतुमब्रह्मिष्ठहो॥ अबमैंतुमारेप्रश्नोंका उत्तरकहताहूं तुमसावधानहोइकरि श्रवणकरो॥ यह प्राणआत्मासेउत्पन्नहोवेहै॥ यहप्रथमप्रश्नकाउत्तरहै॥ १ ॥ मनकेसंकल्पकरिकेउत्पन्नभयेजेशुभाशुभकर्महैं तिनकर्मोंकरिकेही यास्थूलशरीरमेंप्राप्त होवेहै॥ यहदूसरेप्रश्नकाउत्तरहै॥ २ ॥ औरजैसेचक्रवर्तीराजा आपनेमंत्रियोंकूं आज्ञाकरेहै ॥ इनग्रामोंमेंतुमआज्ञाकरोऔरन्यायकरो ऐसेद्वितीयतृतीयादि आपनेसर्वमंत्रीयोंकूंप्रेरणकरेहै॥ ऐसेयहप्राण सर्वनेत्रादिकोंकूं आपनेआपनेस्थानोंमें स्थापनकरिके तिनसर्वनेत्रादिकोंकूं प्रेरणकरेहै ॥ और पायु उपस्थमेंअपानेरूपसे यहप्राण स्थितहोवेहै ॥ दोनेत्रदोश्रोत्र दोनासिकाएकमुख इनसप्तछिद्रोंविषे प्रधानप्राणरूपकरिके आपप्राणस्थितहोवेहै ॥ तथामुखनासिकाद्वारा बाह्यगमनागमनकरेहै ॥ यहसमाननामाप्राण शरीरकेसर्वदेशोंमें व्यापकहोइकरिरहेहै ॥ सोसमाननामाप्राणही भक्षणकरे अन्नकूंतथापानकरेजलकूं समानकरेहै ॥ यातेंसर्वशरीरमें व्यापकरूपसेरहेहै ॥ अबव्यानकेआश्रयकहनेवासते प्रथमनाडीयों की संख्याकथनकरेहैं ॥ हेआश्वलायन हृदयदेशमें यहजीवात्मा विशेषकरिकेरहेहै ॥ याहृदयदेशमें एकसुषुम्नारूपमूलसहितएकसोएक १०१ नाडीहैं ॥ तिससुषुम्नानाडीकूं छोडकरितिनशतस्कंधनाडीयोंमेंभी

एकएकनाडीमें सौसौशाखानाडीयांरहेहैं ॥ तिनसौसौशाखानाडीयोंमेंभी एकएकमें बहत्तरसहस्र बहत्तरसहस्र प्रतिशाखा नाडीयांरहेहैं ॥ शाखाप्र-तिशाखानाडीयांमिलकरि तेनाडीयां बहत्तरकोटि ७२०००००० संख्यावालीहोवेहैं ॥ तिनसर्वमेंव्याननामाप्राणवर्तेहै ॥ औरतिनसर्वमें जासुषुम्नानामानाडीहै ॥ ताकरिकेउदाननामाप्राणहीविचरेहै ॥ कैसाभी उदानहै ऊर्ध्वगमनकरणेकाहैस्वभावजिसका ॥ ३ ॥ इतनेक रिके किसद्वारसे तथाकिसवृत्तिसे तथाकिसनिमित्तसे प्राणनिकसेहै याप्रश्नमेंदोप्रथमअंशोंकाउत्तरकहदिया ॥ सुषुम्नानाडीरूपद्वारसे तथा उदानवृत्तिसेनिकसेहै ॥ ऐसेप्रथमदोअंशोंकाउत्तरकहिकरि अबकिस-निमित्तसेनिकसेहै यातृतीयअंशकाउत्तरकहेहैं ॥ हेआश्वलायन जापु-रुषनेपुण्यकर्मकरेहैं तापुरुषकूं उदाननामाप्राण स्वर्गादिऊर्ध्वलोककूं लेजावेहै ॥ औरजापुरुषने पापकर्मकरेहैं ॥ तापुरुषकूं सोउदाननरका-दिनीचलोककूं प्राप्तकरेहै ॥ जापुरुषनेपुण्यपापमिश्रितकर्मकरेहैं तापु-रुषकूं मानुष्यलोकमें सोउदाननामाप्राण प्राप्तकरेहै ॥ ४ ॥ अबबाह्य अधिदैवरूपजगत्कूं तथाअधिभूतरूपबाह्यजगत्कूं कैसेधारणकरेहै तथाअध्यात्मजगत्कूं कैसेधारणकरेहै यापंचम तथाषष्ठ प्रश्नकाउत्तर कहेहैं ॥ हेआश्वलायन बाह्यजोआदित्यरूप अधिदैवप्राणहै यहबाह्य-अध्यात्मरूपजगत्काधारणकरेहै॥ यहआदित्यरूपप्राणउदयहुआ नेत्रोंमें स्थितअध्यात्मप्राणकूं घटादिज्ञानमें उपकारकरेहै औरपृथिवीमेंअभि-मानी जोप्रसिद्धअग्निदेवताहै सोयहदेवता पुरुषकीअपानवृत्तिकूं आपने आधीनकरिकेवर्तेहै ॥ तिसदेवताविना शरीरभारीहोनेसेगिरपडेवा आ-काशमें उपरिचलाजावे नीचेनगिरना वाउपरिनजाना यहकेवलअग्निरूप पृथिवीकीहीकृपाहै ॥ पुरुषकेशरीरमेंजोसमानवायुहै ॥ सोसमानवायु आकाशस्थ बाह्यवायुरूपहै ॥ जोबाह्यपृथिवी स्वर्गकेमध्यमें स्थितहुआ अंतर समानवायुउपरिअनुग्रहकरेहै ॥ सोसामान्यरूपसे बाह्यव्यापक-

वायुहै सोव्यानरूपहै ॥ व्यानभी सर्वनाडीयोंमेंव्यापकहै व्यापकतासेही बाह्यवायुकूंव्यानरूपकह्या ॥ सोसामान्यरूपसे बाह्यवायु व्यानके उपरिअनुग्रहकरताहुआवर्तेहै ॥ जैसेउदान ऊर्ध्वगमनकरेहै ॥ तैसेबाह्यतेजभी ऊर्ध्वगमनकरेहै ॥ यातेंतेजउदानरूपहै ॥ बाह्यतेजकी कृपासेही उदान याशरीरमेंवर्त्तताहै ॥ जबयहशरीरशीतलहोइजावे तबयाकूं लोकमरणेवालाजानेहैं ॥ तबमनमें वागादिकइंद्रियसर्व मिलजावेंहैं ॥ तामनसहितइंद्रियोंकरि यहजीवअन्यशरीरकूंप्राप्त होवेहै ॥ मरणकालमें याजीवका जाशुभशरीरमें वाअशुभशरीरमें चित्तहोवेहै प्राणवृतिसहितहोइकरि पूर्वशरीरकूं त्यागकै उदानवृत्तिसे ताशरीरकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यहांयहभावहै ॥ सूर्यअग्निआकाशसामान्यवायु औरतेजरूपहुआ मुख्यप्राण सूर्यअग्निआदिकबाह्य अधिदैवकूंधारणकर्त्ताहै ॥ सूर्यआदिरूपसेस्थितहोनाही तिनसूर्यआदिकोंकाधारणहैं ॥ और सूर्यभगवान् उदयहुआ चक्षुआदिकोंकाअनुग्रहकरताहै इत्यादिकथनसे चक्षुआदिरूपबाह्यअधिभूतकूं मुख्यप्राणसूर्यआदिरूपसे धारण करेहै यहसूचनकरा ॥ औरअन्यश्रुतिमेंयहकहाहै सोप्राणहीचक्षुवाक्मनश्रोत्रादिरूपसेस्थितहोवेहै याकथनसे चक्षुआदिअध्यात्मकाधारणकहा ॥ हेआश्वलायन जोपुरुष पूर्वकहीरीतिसे प्राणकूं उत्पत्तिआदिसहितजानेहै ॥ सोज्ञातापुरुष यालोकमें पुत्रपौत्रादिकोंकेवियोगकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ औरशरीरकूंत्यागकरि प्राणसायुज्यरूप अमृतभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ उक्तअर्थकूंही संक्षेपसे यहमंत्रकहेहै ॥ जोपुरुष प्राणकी उत्पत्ति परमात्मासेजानेहै ॥ कर्मकरियाशरीरमेंस्थितिकूंजानेहै ॥ तथाप्राण सर्वकास्वामीहै तथाप्राणअपानादिपंचरूपसे स्थितहै ॥ तथाबाह्यआदित्यादिरूपसे अध्यात्मनेत्रादिरूपसे स्थितिकूंजानताहुआ सोपुरुष प्राणसायुज्यरूप अमृतत्वकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे आश्वलायनऋषि श्रवणकरितूष्णींकूंप्राप्तभया ॥ अबगार्ग्यनामा सौर्यायणिऋषि प्रश्नकरेहै ॥

गार्ग्यउवाच ॥ हेभगवन् याशरीरमेंकौनशयनकूं प्राप्तहोवेहै ॥ जोजागताहोगा सोई शयनकरेगा यातेंजाग्रतकिसकाधर्महै ॥ १ ॥ औरयाशरीरमें कौनजागरितकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अर्थयह ॥ शरीरकीअवस्थात्रयमें रक्षाकौनकरेहै सावधानहुआही याशरीरकीरक्षाकरेगा यातेंजागरितकूं कौनप्राप्तहोवेहै॥ २॥ और कौनस्वप्नोंकूंदेखेहै॥अर्थयह ॥ जोस्वप्नमें सावधानरहेगा तिसीकेआश्रयस्वप्नहोगा यातेंस्वप्नकाआश्रयकौनहै ॥ यहप्रश्नहै ॥ ३ ॥ और सुषुप्तिअवस्थामें कौनसुखकूंप्राप्तहोवेहै॥ अर्थयह॥ सुषुप्तिमेंजोरहेगा तिसीकूंसुषुप्तिका सुखप्राप्तहोगा ॥ औरतामेंही सुषुप्तिकीआश्रयताहोगी यातेंसुषुप्तिकाआश्रयकौनहै ॥ यहचतुर्थप्रश्नहै॥ ४॥ औरसुषुप्तिमें सर्वप्राणादिक किसमेंस्थितहोवेहैं ॥ याप्रश्नसेअवस्थात्रयरहित तुरीयअक्षरकूंपूछा ॥ ऐसेप्रश्नोंकाअभिप्रायहै ॥ ५ ॥ पिप्पलादउवाच ॥ हेगार्ग्य जैसेसूर्यके अस्तहोनेकालमें जेतीसूर्यकीयां किरणां हैं तेसर्वसूर्यमेंलयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ जबीसूर्यउदयहोवे तबीपुनः तेकिरणां उदयहोवेहैं॥ तैसे नेत्रादिकोंकाप्रकाशकजोमनहै सोमनसुषुप्तिमें लयहोइजावेहै तथामनकेलयहोनेसे नेत्रादिकइंद्रियभी लयहोवेहैं ॥ इंद्रियोंके लयहोनेसेयहपुरुषदेखतानहीं॥ तैसेही श्रोत्र घ्राण रसना त्वचा वाक् शिश्न गुदा पाद इनसर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंसे रहितहोवेहै ॥ ताकूं लोककहेहैं जोयहशयनकरेहै ॥ यातेंनेत्रादिक इंद्रियसहित मनकाही जाग्रतअवस्थाधर्महै ॥ हेगार्ग्य सुषुप्तिअवस्थाविषे मनसहितइंद्रियोंके लयहुएभी प्राण अपान व्यान समान उदान यहपंचप्रकारकाही प्राण अग्निकी न्यांई स्थितिरूपजाग्रतकूं प्राप्तहोवेहै ॥ यातेंप्राणहीयाशरीरकीरक्षाकरेहै ॥ २ ॥ इहांसुषुप्तिमेंविद्वान्पुरुषकूं श्रुतिनेअग्निहोत्रकीप्राप्तिकहीहै सोदिखावेहैं ॥ जैसेप्रसिद्धअग्निहोत्रीपुरुषोंका गार्हपत्यनामाअग्नि सर्वदास्थिररहेहै ॥ औरआहवनीयनामा अग्नितो होमकरणेवासते गार्हपत्यअग्निसे उठाइके प्रज्वलितकराजावेहै ॥ तैसेईहां अंतर-

प्रवेशकरणेहारे अपानवायुसे बाह्यगमनकरणेहारा प्राणवायु उठाया-जावैहै यातेंप्राण आहवनीयरूपहै औरअपानगार्हपत्यरूपहै ॥ व्यानवायु दक्षिणअग्निरूपहै ॥ काहेतेजैसेप्रसिद्धअग्निहोत्रकीशालामें दक्षिणदेशमें सोदक्षिण अग्नि स्थितहोवेहै ॥ तैसे यहव्यानवायु हृदयके पंचछिद्रोंमें दक्षिणछिद्रमेंरहेहै यातेंहीव्यानकूं दक्षिणअग्निरूपकह्या ॥ यहसमानवायुहोतारूपहै ॥ काहेते यह समानवायु ऊर्ध्वश्वासनिःश्वासरूपदोनों आहुतियोंकूं समभावसे प्राप्तकरेहै ॥ मनरूपयजमानहै ॥ स्वर्गादिफलहीउदानहै ॥ काहेतेउदानकरिकेही स्वर्गादिकफलकूं यहपुरुषप्राप्तहोवेहै ॥ औरयामनकूं दिनादिनविषेसुषुप्तिअवस्थामें उदानवायुब्रह्मानंदकूं प्राप्तकरेहै ॥ ऐसेविद्वान्का सदाअग्निहोत्रहोवेहै ॥ अबतृतीयप्रश्नका उत्तरकहेहैं ॥ औरयहमनहीचेतनप्रतिबिंबकेसहितहुआ नानाप्रकारके स्वप्नोंकूंदेखेहै ॥ औरस्वप्नअवस्थामें जापदार्थकूंदेखेहै बाहुलताकरि याजाग्रतमें वापूर्वजन्ममें देखेहीपदार्थ स्वप्नअवस्थामेंप्रतीतहोवेहैं याकूंहीप्रातिपादनकरेहैं ॥ जेपुत्रादिजाग्रतमेंदेखेहैं तिनकेसंस्कारसहितहुआ यहपुरुष अविद्याकरिके देखेकीन्यांईदेखेहै ॥ ऐसेही जोपदार्थ जाग्रतमेंश्रवणकराहै ताकेसंस्कारसहितहुआ यहमनउपाधिकपुरुष अविद्याकरिके श्रवणकरतेकीन्यांईश्रवणकरेहै ॥ तथाअनेकदेशोंमें जेअनेकपदार्थवारंवारअनुभवकरेहैं तिनकूं स्वप्नमेंअनुभवकरेहै ॥ औरजैसे जेपदार्थ याजन्ममेंदेखे तथाश्रवणकरेहैं तिनपदार्थोंकूं स्वप्नअवस्थामें देखे श्रवणकरे अविद्याकरिमानेहै ॥ तैसेजेपदार्थ केवलमनकरिके याजाग्रतमें वापूर्वजन्मकीजाग्रतअवस्थामें अनुभवकरेहैं तिनकूंभी स्वप्नअवस्थामें अनुभवकरेहै ॥ औरआपहीयह मनविशिष्ट पुरुषसर्वरूपहुआ सर्वकूंदेखेहै ॥ यातें चेतनकेप्रतिबिंबसहितहुआ यहमनही स्वप्नअवस्थाकाआश्रयहै ॥ ३ ॥ हेगार्ग्य यहमनही सुषुप्तिकूं प्राप्तहोवेहै ॥ और जबीयामनकी पित्तरूपतेजकरि वासनानिवृत्तहोवेहैं

तबयहमनरूपदेव स्वप्नोंकूंदेखेनहीं तथा ताकालमें सुखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यद्यपि स्पष्टरूपसे मन सुषुप्तिमेंरहेनहीं ॥ तथापि ॥ सूक्ष्मरूपकरि यहमनरहेहै ॥ यातें तामनकेहीआश्रय सुषुप्तिअवस्थाहै ॥ ४ ॥ हेगार्ग्य जाआत्माकाप्रतिबिंब मनमेंस्थितहै ताआत्मामेंही यहप्राणादि-सर्वजगत्स्थितहै ॥ जैसे यालोकमें सायंकालविषे अनेकदिशाओंसे आइकरि अनेकपक्षी किसीवृक्षमें आपनेवासअर्थस्थितहोवेहैं॥ तैसे पृथिव्यादिपंचभूत तथातिनपृथिवीआदिकोंके गंधादिकपंचगुण तथानेत्रा-दिदशइंद्रिय तथाचतुष्टयअंतःकरण तथापंचप्रकारकाप्राण यहसर्वता-आत्मामेंहीस्थितहैं॥ हेगार्ग्य सोअधिष्ठानआत्माही नेत्रादिकोंसेमिलकरि द्रष्टा श्रोता स्प्रष्टा घ्राता रसयिता मंता बोद्धा कर्त्ता विज्ञानात्मापुरुषहै॥ याआत्माकीउपाधिका अक्षर आत्मामेंलयहोवेहै यातेंताउपाधि उपहि-त आत्माकाभी अक्षरमेंलयकहाहै ॥ अबकथनकरेंनिर्गुणआत्माकेज्ञा-नकाफलकहेहैं ॥ यहआत्मा अज्ञानरहितहै तथासूक्ष्मशरीररहितहै तथालोहितादिगुणरहितहै याविशेषणसेही स्थूलशरीरकानिषेधकरा॥ यातेंहीशुद्धहै ॥ ऐसेशुद्धअक्षरआत्माकूंजोअधिकारी आपनेअंतःकरणमें आपनेस्वरूपसेनिश्चयकरेहै ॥ सोअधिकारी ताअक्षरआत्माकूं प्राप्तहो वेहै ॥ याफलकूंही यहमंत्रकथनकरेहै ॥ जाअक्षरआत्मामें इंद्रियोंसहित मन तथापंचप्राण तथापृथिवीआदि आपनेगंधादिगुणोंसहितलयहोवेहैं॥ ताअक्षरआत्माकूं जोअधिकारीप्रत्यक्षकरताहै सोअधिकारीसर्वज्ञहोवेहै तथासर्वभावकूं प्राप्तहोवेहै ॥ पूर्वअज्ञानकालमेंभीसर्वरूपहीहै परंतु ताआपनीसर्वरूपताकूं अज्ञानकरिविस्मरणकरेहै ज्ञानकरिअज्ञान निवृत्तहोनेसे आपनीसर्वरूपताकूं तथासर्वज्ञताकूं प्राप्तहुएकीन्यांईप्राप्त होवेहै ॥ जैसेकंठमेंभूषणविस्मृतहुआ बोधकालमेंप्राप्तहुआहीप्राप्तहोवे है ॥ तैसे यहआपसर्वरूपहै तथासर्वज्ञपरमात्मारूपहै आपनेज्ञानकरि आपनेस्वरूपकूंही प्राप्तहोवेहै ॥ ५ ॥ ऐसेगार्ग्यऋषितो उपदेशकूंश्रवण

करितूष्णींकूंप्राप्तभया ॥ जापुरुषकेचित्तमें अक्षरकेउपदेशकरनेसेभी ताअक्षरपरमात्माका ज्ञानहोवेनहीं ॥ तापुरुषकेअर्थप्रणवकीउपासना अबकहेहैं ॥ शैब्यनामवाला सत्यकामऋषि तापिप्पलादकेआगे या प्रकारकाप्रश्नकरेहै ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन् पुरुषोंकेमध्यमें जोअधिकारी आपनेमरणेपर्यंत ॐकाररूपप्रणवकाध्यानकरेहै ॥ सो ध्यातापुरुष पृथिवीआदिलोकोंविषे किसलोककूं प्राप्तहोवेहै ॥ याप्रकारकेप्रश्नकूं श्रवणकरि तासत्यकामकेप्रति पिप्पलादमुनि याप्रकारका उत्तरकहेहैं ॥ पिप्पलादउवाच ॥ हेसत्यकाम यहॐअक्षर परब्रह्महै ॥ परब्रह्मनामअक्षरकाहै अपरब्रह्मनामप्राणस्वरूपकाहै ॥ जैसेशालिग्राममें विष्णुकाध्यानशास्त्रमेंविधानकराहै तैसेॐकारमेंपरब्रह्मका तथाअपरब्रह्मकाध्यानकहाहै ॥ जोपुरुषपरब्रह्मरूपसे ॐकारकाध्यानकरेहैं सोपरअक्षरब्रह्मकूं प्राप्तहोवेहै ॥ जोपुरुषअपररूपसे ॐकारकाध्यानकरेहै सोपुरुषअपरब्रह्मरूपप्राणकूं प्राप्तहोवेहै ॥ हेसत्यकाम ॥ ॐकारकीजाअकारमात्राहै ॥ ताकूंऋग्वेदरूपकरिकेजोपुरुष चिंतनकरेताध्यातापुरुषकूं ऋगवेदकेअभिमानीदेवता शीघ्रहीयापृथिवीलोककूं प्राप्तकरेहैं ॥ और यामनुष्यलोकमें प्राप्तहुआ अधिकारीदेहमें इंद्रियसंयमरूपीतपकूं तथा ब्रह्मचर्यकूं तथाश्रद्धाकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे उत्तमसाधनोंसे यथार्थशुद्धरूपब्रह्मकूं निश्चयकरि ताशुद्धब्रह्मस्वरूपकूंही प्राप्तहोवेहै ॥ औरजो पुरुष अकार उकार याॐकारकी दोमात्रावोंकूं यजुर्वेदरूपसे चिंतन करेहै ॥ ताध्यातापुरुषकूं यजुर्वेदके अभिमानीदेवता स्वर्गलोकमें प्राप्तकरेहैं ॥ तास्वर्गलोकमें अनेकप्रकारकीविभूतिकूं अनुभवकरिके यामानुष्यलोकमेंही प्राप्तहोवेहै ॥ औरजोपुरुष अकारउकारमकारयातीनमात्रासे ॐकारकाचिंतनकरेहै तथाताॐकारकूं अक्षरब्रह्मरूपसे ध्यानकरेहै ॥ सोध्यातापुरुष सामवेदकेअभिमानीदेवतावोंकरि ब्रह्मलोककूं प्राप्तहोवेहै ॥ औरध्यानकेप्रभावसे सूर्यमंडलमेंप्राप्तहुआ

ब्रह्मलोकमेंप्राप्तहोवेहै तथातासे आवृत्तिकूं प्राप्तहोवेनहीं॥ स्वर्गादिकलोकोंसेकर्मफलभोगअनंतर आवृत्तिहोवेहै ॥ ॐकारकाब्रह्मरूपकरि ध्याता पुरुषआवृत्तिकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ औरजैसे सर्पआपनीत्वचाकूं जीर्णजानकरि त्यागकरेहै औरपुनःनवीनदूसरीत्वचासहितहोवेहै ॥ तैसे यहउपासक सर्वपापरहितहुआ ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरब्रह्मलोकमें प्राप्तहोइकरि हिरण्यगर्भसे उपदेशकूंग्रहणकरि अज्ञानसेपरे तथापरिपूर्ण आत्माकूंप्रत्यक्षकरेहै ॥ याअर्थकूं संक्षेपसे यहदोमंत्रकथनकरेहैं ॥ ॐकारकी तीनमात्राके भिन्नभिन्नध्यानकरणेहारातौ मृत्युकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और जोअधिकारी तीनमात्राकूंमेलकरि ध्यानकरताहै ॥ सोध्यातापुरुष जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तथास्थूल सूक्ष्म कारण शरीर तथातीनशरीरोंके अभिमानी विश्व तैजस प्राज्ञ तथासमष्टिशरीरअभिमानी वैश्वानर हिरण्यगर्भ ईश्वर तिनसर्वका क्रमसे अकार उकार मकारकेसाथअभेदचिंतनकरणेसे कदाचित् विक्षेपकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ औरयाॐकार उपासनाकी विशेषरीतितौ मांडूक्यउपनिषत्‌मेंकहेंगे ॥ इहांश्रुतिमें रीतिमात्रजनाईहै ॥ ग्रंथविस्तारकेभयसे हमनेअधिकअर्थलिखानहीं॥ ऐसेहीपूर्वउक्तअर्थकेकहनेहारेदोमंत्रोंके अर्थकूंकहेहैं ॥ अकारमात्राके ध्यानकरणेवालेकूं ऋग्वेदकेअभिमानीदेवता यामानुष्यलोकमें प्राप्तकरेहैं ॥ तथाअकारउकाररूपदोमात्राकेध्यानसे यजुर्वेदकेअभिमानीदेवता स्वर्गमेंप्राप्तकरेहैं ॥ औरॐकारकूं तीनमात्रासे ध्यानकर्त्तापुरुष ब्रह्मलोककूं प्राप्तहोवेहै ॥ ताकूं सामवेदकेअभिमानीदेवता ब्रह्मलोकमेंलेजावेहैं॥ औरहिरण्यगर्भकेउपदेशसे शांतब्रह्म तथाअजर अमृत अभयब्रह्मकूं प्राप्तहोवेहै ॥ अथवाईहांमानुष्यलोकमेंहीध्यानसें एकाग्रताकूंप्राप्तभया पुरुष अजर अमर ब्रह्मकेउपदेशसे ताब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे सत्यकामऋषि उपदेशकूंग्रहणकरि तूष्णींकूंप्राप्तभया ॥ तिसके अनंतर भरद्वाजकापुत्रहोनेसे भारद्वाजनामवाला सुकेशाऋषिप्रश्न

करेहै ॥ सुकेशाउवाच ॥ हेभगवन् हिरण्यनाभनामवाला कोशल-
देशका राजाक्षत्रिय मेरेकूंप्राप्तहोइकरि यहपूछताभया ॥ हेभारद्वा-
ज तुम षोडशकलावालेपुरुषकूंजानतेहैं तौतापुरुषकूं मेरेप्रतिकहो ॥
ताविनयसहित राजपुत्रकूं मैंकहताभया ॥ हेराजन् जोतुमने षोडश-
कलपुरुषपुछाहै ताषोडशकलपुरुषकूं मैं नहींजानता ॥ ऐसेमैंनेतारा-
जपुत्रकूंकहाभी परंतु सोराजपुत्र विश्वास न करताभया जोयहभारद्वाज-
ऋषि षोडशकलपुरुषकूं जानतेतौहै ॥ मेरेकूं किसीनिमित्तसेनहींकहते
ऐसेमाननेवालेराजपुत्रकूं पुनःमैंयहकहताभया ॥ हेराजन् यदिमैं षोड-
शकलपुरुषकू जानतातौमैं तुमारेतांई किसवासतेनकहता ॥ जोपुरुष
यालोकविषे मोहकेवशसे मिथ्यावचनकूंकहेहै ॥ सोमिथ्यावादीपुरुष-
रूपवृक्ष मूलसहितनाशकूं प्राप्तहोवेहै ॥ अर्थयह जोयालोकका सुख
तथास्वर्गादि परलोकका सुखरूपफल ताकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और भाग्य-
रूपमूलसहितनाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेमिथ्यासंभाषणकेदोषकूं जानता-
हुआ मैंभारद्वाज स्वप्नमेंभी मिथ्यावचनकूं कहतानहीं ॥ जाग्रतअव-
स्थाविषे मैं भारद्वाजऋषि कैसेमिथ्यासंभाषणकरूंगा ॥ यातेंहेराजन्
तुममेरेवचनमेंविश्वासकरो मैं षोडशकलपुरुषकूं जानतानहींहूं यदि
जानतातौ तुमअधिकारीके तांईअवश्यमैं कहता ॥ हेभगवन् पिप्प-
लादमुने ॥ सोहिरण्यनाभराजपुत्र मेरेवचनकूंश्रवणकरि तूष्णींभावकूं
प्राप्तहोइके रथपरआरूढहुआ शीघ्रहीआपनेदेशमें गमनकरताभया ॥
यावत्काल जिज्ञासितवस्तु जानीनजावे तावत्कालपर्यंत सो अज्ञा-
तवस्तु हृदयमेंबाणकीन्यांईक्षोभजनकहोवेहै ॥ यातेंभगवन् मेरेहृद-
यमें तापुरुषकेअज्ञानरूपबाणके विक्षेपकीनिवृत्तिवासते आपकृपा-
करि ताषोडशकलपुरुषकूं मेरेतांई प्रतिपादनकरो ॥ और सो षोडश-
कलपुरुष कहांरहेहै यहभीकहो ॥ ऐसेप्रश्नकूं श्रवणकरि ता सुकेशाऋ-
षिकेतांई पिप्पलादमुनि उत्तरकहताभया ॥ पिप्पलादउवाच है॥ सो-

म्य सो षोडशकलावालापुरुष शरीरकेहृदयदेशमें साक्षीरूपसेस्थितहै ॥ यहषोडशकलायासाक्षीपुरुषमेंहीस्थितहैं ॥ सोसाक्षीआत्माही सर्वजगत्काअधिष्ठानहुआ सर्वकानियंताहै ॥ याआत्माकूं अद्वितीयताबोधनअर्थ सर्वजगत्रूपषोडशकलावोंकी याआत्मासेही उत्पत्ति श्रुतिभगवतीकहेहै ॥ हेभारद्वाज यहआत्मा आपनेबंधनवासते षोडशकलारूपउपाधिकेउत्पत्तिअर्थ याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ मैं आत्मा साक्षीरूपसे याशरीरमें स्थितहुआभी व्यापकहूं तथाक्रियारहितहूं ऐसेमैं व्यापकपरमात्मा लोकपरलोकमें गमनआगमनरूपसंसारकूं कैसेप्राप्तहोवोंगा ॥ याप्रकारकाचिंतनकरिके सोपरमात्माही पंचवृत्तिवालेप्राणकूं उत्पन्नकरताभया॥ ताप्राणकरिके आत्माकाशरीरसे बाह्यनिकसना तथा लोकपरलोकमें गमनागमनादिसिद्धहोवेहैं ॥ १ ॥ ताप्राणरूपप्रथम कलाकं उत्पन्नकरिके सोआत्माहीशुभकर्मोंमें प्रवृत्तिकरणेहारी आस्तिक्यबुद्धिरूपश्रद्धाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ २॥ तिसतेअनंतर सोपरमात्मा कर्मोंके करनेका तथा तिनकर्मोंकेफलभोगकाआधाररूपजे आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी यहपंचभूतरूप पंचकलाहैं तिनकूंउत्पन्नकरताभया ॥ ७ ॥ तिसतेअनंतर सोपरमात्मापंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय यहदशइंद्रियरूपअष्टमीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ८ ॥ तिसते अनंतर मनकी स्थितिकरणेहाराजोअन्नहै ताकूंउत्पन्नकरताभया ॥ १० ॥ ताअनंतर अन्नकरि उत्पन्नभयाजोसामर्थ्यहै तासामर्थ्यरूपवीर्यकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ११ ॥ ताअनंतरवीर्यसे उत्पन्नहोनेहारा तथाचित्तशुद्धिकेकरणेहाराजो तपहै तातपकूं उत्पन्नकरताभया ॥ १२ ॥ ताअनंतर कर्मकेउपयोगी ऋग् यजुर् साम अथर्व याच्यारिवेदरूपमंत्रकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तिसते अनंतर वैदिककर्मरूपचतुर्दशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ १४ ॥ तिनकर्मोंसेअनंतर कर्मकाफलरूपचतुर्दशलोकउत्पन्नभये ॥ सोलोकही पंचदशीकलाहैं ॥ १५ ॥ तिसके अनंतर तिनलोकोंमें उत्पन्न-

भयाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ १६ ॥ तिनतें अ

भयेप्राणियोंकेदेवदत्तयज्ञदत्तादिनाम उत्पन्नभये ॥ सोनाममुक्तपुरुषका भीरहेहै यातेंप्रलयपर्यंतरहनेवालाजोनामहै सोईषोडशीकलाहै ॥ ताकूं परमात्मा उत्पन्नकरताभया ॥ १६ ॥ हेसुकेशा जापुरुषकूं कलाके अधिष्ठानआत्माका यथार्थप्रत्यक्षभयाहै ताकीउपाधिरूपकला सर्व-लयहोवेइजावेहैं ॥ जैसे गंगायमुनादि नदीयां समुद्रकूं प्राप्तहोइकरि-भिन्ननामरूपसेरहितहोवेहैं ॥ तैसेयाज्ञातापुरुषकी षोडशकलानिवृत्तहो-वेहैं ॥ तिनकलावोंकानामरूपरहेनहीं ॥ ताअनंतरकेवलशुद्धपुरुषही शेषरहेहै ॥ यहपुरुषअकलहै॥ अर्थयह ॥ कलारहितहै ॥ तथाअमृत-रूपहै ॥ याअर्थकूंयहमंत्रकहेहै ॥ जैसे अरानाभिमेंस्थितहोवेहैं ॥ तैसेजाआत्मामें यहषोडशकलास्थितहैं ॥ हेऋषयः ताअधिष्ठानरूपअ-कलपुरुषकूं तुमसर्वनिश्चयकरो ॥ औरताआत्माकेज्ञानविनातौ तुमारे-कूंमृत्युत्यागकरेगानहीं ॥ यातें ताआत्माकेज्ञानसे मृत्युकीनिवृत्तिकरो जैसेस्वप्नकीनिद्राकरि उत्पन्नभयाजोस्वप्नकासिंहहै ताकीजाग्रतसेविना निवृत्तिहोवेनहीं ॥ तैसेअज्ञानसेउत्पन्नभयाजो मृत्युरूपसिंह ताकीब्र-ह्मज्ञानरूपजागरणविना निवृत्तिहोवेनहीं ॥ यातेंमृत्युकीनिवृत्तिवासते आत्माकानिश्चयकरो ॥ अबपिप्पलादमुनि तिनकीकृतकृत्यताअर्थक हेहैं ॥ हेऋषयः ऐसे मैं इतनाहीब्रह्मजानताहूं अधिकनहींजानता और यातोंभिन्नअधिककिंचित्मात्रतुमारेकूंज्ञातव्यहैभीनहीं॥ ऐसेउपदेशकूंग्र-हणकरि तेषट्ऋषि पिप्पलादमुनिकेपादोंमें दंडवत्करतेहुए तथापु-ष्पादिकोंसे अनेकप्रकारकीपूजाकूंकरतेहुए ताऋषिपिप्पलादगुरुकेतांई याप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ हेभगवन् आपनेहमारेसर्वसंशयनिवृत्तक-रेहैं ॥ तथाआपनेहमारेकूंकृतार्थकराहै ॥ औरहेभगवन् आपहमारे पिताहैं ॥ औरयहमातापितातौ स्थूलशरीरजोबंधनकाहेतुहै ताकूंउ-त्पन्नकरेहै ॥ जाशरीरमें रागकरणेसे पुरुषअनर्थकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे शरीरकूंउत्पन्नकरणेहारापितातौ गौणपिताहै यथार्थपितातौ तुमहीहो॥

अविद्याकरिआच्छादित जोहमारावास्तवब्रह्मरूपशरीरहै ताब्रह्ममेंअविद्याकी आपनेउपदेशसेनिवृत्तिकरतेभयेहो ॥ यातें तुमहमारेब्रह्मरूपवास्तवशरीरकेजनकहो ॥ अविद्याकीनिवृत्तिपूर्वक निरावरणब्रह्मकूं निश्चयकरना यहहीब्रह्मशरीरकीउत्पत्तिजाननी घटादिकोंकीउत्पत्ति जैसीउत्पत्तिईहांनहीं है और अविद्यारूपसमुद्रसे ज्ञानरूपदृढनौकाकरिके आपनेपारकराहै ॥ अर्थयह ॥ हमाराअज्ञाननिवृत्तकराहै ॥ यातें तातुमारेउपकारकीनिवृत्तिवासते कोईपदार्थभी यासंसारमें हमदेखतेनहीं यातेंहमाराआपकूं वारंवारनमस्कारहै हमाराब्रह्मविद्याकेसंप्रदायके प्रवर्त्तक परमऋषियोंकेतांईवारंवारनमस्कारहै ॥ ॐशांतिः शांतिः शांतिः ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादशिष्यसंप्रदायप्रविष्टपरमहंसपरिव्राजकस्वामिअच्युतानंदगिरिविरचिते प्राकृतोपनिषत्सारेषडृषिसंवादपूर्वकप्रश्नोपनिषदर्थनिर्णयः ॥ ४ ॥

॥ इति प्रश्नोपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ॥४॥

अथ मुंडकोपनिषद्भाषांतरम् ।

ॐ नमःश्रीगुरुभ्यः ॥ अथअथर्ववेदीयमुंडकोपनिषत्प्रारंभः ॥ उपनिषत्केआदिमें ब्रह्मविद्याकासंप्रदायकहेहैं ॥ ब्रह्मा सर्वदेवताइंद्रादिकोंमें प्रधानहोताभया ॥ कैसाहै सोब्रह्माजोसर्वविश्वकाकर्त्ता है तथा सर्वप्रपंचकारक्षकहै सोब्रह्मा आपनेवृद्धपुत्रअथर्वानामाकेतांई ब्रह्मविद्याकूं कथनकरताभया ॥ कैसीहैसाब्रह्मविद्या जामूलअज्ञानकानाश करणेहारीहै यातेंसर्वविद्याकाआधाररूपहै ॥ ब्रह्मविद्यासेंभिन्न और सर्वविद्यातो किंचित्‌किंचित्‌अर्थकाप्रकाशकरेहैं ॥ यहब्रह्मविद्या सर्वअर्थकाप्रकाशकरेहै ॥ यातें और सर्वविद्याब्रह्मविद्याकेअंतर्भूतहैं ॥ जैसेतृप्तिरूपफलविषे सर्वग्रासोंकारस अंतर्भूतहै तैसेयाब्रह्मविद्यामें सर्व विद्याअंतर्गतहैं ॥ ब्रह्मा जाब्रह्मविद्याकूं अथर्वानामास्वपुत्रकूं कथन करताभया ताब्रह्मविद्याकूंही अथर्वानामाऋषि आपनेशिष्यअंगीनाम ऋषिकूं कथन करताभया ॥ ताअंगीनामाऋषिका सत्यवहनामवालाजो भारद्वाजऋषिहै सो शिष्यहोताभया ॥ ताशिष्य भारद्वाजकेप्रति अंगी नामगुरु ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ सोभारद्वाज आपनेशिष्य अंगिरा नामाऋषिकूं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ ताअंगिरा ऋषिकेशरणकूं शौनकऋषिप्राप्तहोताभया ॥ सोशौनकऋषि बहुतअन्नदानादिकोंकरिकै महानूगृहस्थभावकूं प्राप्तहोताभया ॥ सोशौनक ऋषि शिष्यहोइकरि अंगिरानामास्वगुरुसेब्रह्मविद्याकूंप्राप्तभया ॥ ता शौनकऋषिके सर्वद्विजशिष्यहोतेभये ॥ जैसे शौनकऋषि अंगिरानामागुरुसेब्रह्मविद्याकूं ग्रहणकरताभया सोप्रकारकहेहैं ॥ एककालमें अंगिरानामाऋषि प्रातःकालविषे स्नानादिकोंकूंकरिकै किसीएकांत स्वच्छदेशमें स्थितहोताभया ॥ सोअंगिरानामाऋषि सर्ववेदोंकावेत्ता तथातिनवेदोंकरिप्रतिपादितब्रह्ममेंनिष्ठावालाथा ॥ औरसर्वइच्छासे रहितनिष्कामथा ॥ ऐसेब्रह्मश्रोत्रिय तथाब्रह्मनिष्ठ गुरुअंगिरानामाऋषिकूंदेखकै सोशौनकऋषि समित्‌रूपजोदंतधावनकाष्ठादिकहैं तिनकूंह-

स्तमेंग्रहणकरि विधिपूर्वकशरणकूंप्राप्तहुआ याप्रकारकाप्रश्नकरता भया ॥ हेभगवन् किसएककेजाननेसे सर्वजगत्जानाजावेहै ॥ जिस एककेज्ञानसे सर्वकाज्ञानहोवेहै ताएकवस्तुकूं आपकृपाकरिकहो ॥ ऐसेप्रश्नकूं श्रवणकरि अंगिरानामागुरु उत्तरकहेहैं ॥ हेशौनक पुरुषकूंशब्दरूपब्रह्म तथापरब्रह्म यहदोप्रकारकाब्रह्मजाननेयोग्यहै ॥ षट्अंगोंसहितच्यारिवेद यहशब्दब्रह्महै ॥ याशब्दब्रह्मकाज्ञान परब्रह्मप्राप्तिमेंद्वारहै ॥ यातें शब्दब्रह्मभीजाननेयोग्यहै ॥ परब्रह्मकेज्ञानविना मोक्षहोवेनहीं ॥ यातें मोक्षकेअर्थपरब्रह्मज्ञातव्यहै ॥ ऐसेदोप्रकारकी पुरुषकीविद्याहै एकतौ अपराविद्याषट्अंगोंसहित च्यारिवेदरूपहै ॥ दूसरीपराविद्याहै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तादोप्रकारकी विद्याकूं कथनकरेहैं ॥ तिनदोनूंविद्याकेस्वरूपकूंविस्तारसेकहनेवास्ते प्रथमअपरा विद्याकूंकहेहैं ॥ हेशौनक ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद यहच्यारिवेद तथाशिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छंद ज्योतिष् यहषट्अंगहैं ॥ षट्अंगोंके अर्थकूं किंचित्प्रतिपादनकरेहैं ॥ शिक्षाकाकर्त्तापाणिनिऋषिहै ॥ वेदकेशब्दोंके कंठ तालुआदिस्थानकाज्ञान तथाशब्दोंकेस्वरकाज्ञान शिक्षासेहोवेहै॥ १ ॥कात्यायनऋषि तथाआश्वलायनआदिऋषियोंने कल्पनामसूत्रकरेहैं तिनसे वेदउक्तकर्मकेअनुष्ठानकीरीतिजानीजावेहै ॥ २ ॥ पाणिनिऋषिने व्याकरणकराहै व्याकरणरूप अंगसेशब्दशुद्धिकाज्ञान होवेहै ॥ ३ ॥ यास्कमुनिने निरुक्तअंगकराहै तानिरुक्तमें वेदमंजेअप्रसिद्धपदहैं तिनकेबोधअर्थनामनिरूपणकरेहैं ॥ ४ ॥ पिंगलमुनिने छंदअंगकराहै ताअंगसेवेदमेंजेगायत्रीजगतीआदिकछंदहैं तिनकाज्ञानहोवेहै॥ ५॥आदित्य गर्गादिकोंने ज्योतिष्अंगकराहै ताज्योतिष्अंगसे कालकाज्ञानहोवेहै वैदिककर्मकेअनुष्ठानअर्थ कालकाज्ञानअपेक्षितहै॥ ६ ॥ ऐसेयहषट्हीवेदके उपयोगीहोनेसे वेदकेअंगकहेजावेहैं ॥ यहसर्वमिलकेअपराविद्याकहावेहै ॥ यद्यपि च्यारिवेदत्रिकांडरूपहै यातेंब्रह्मविद्या-

रूप उपनिषत्कूं अपराविद्यासेभिन्न पराविद्यारूपताबनेनहीं ॥ तथापि कर्मउपासनाकावेदमें बाहुल्यहै यातें ताकर्मऔर उपासनाकाप्रतिपादकवेदही ईहांअपराविद्यारूपसे विवक्षितहै ॥ वैराग्यआदिसाधनसहित-अधिकारीपुरुषने श्रवणकरिजाब्रह्मप्रतिपादकउपनिषत्है साउपनिषत् अपराविद्याअंतर्गतनहीं किंतुपराविद्याहै ॥ अनात्मसंसारकूं कथनकरणेहारी जाविद्याहै ताविद्याकानामहीअपराविद्याहै ॥ जाविद्याकरिके शुद्ध अक्षर वस्तुकानिश्चयहोवे ताविद्याकानामपराविद्याहै ॥ ताअक्षरब्रह्मकाहीनिरूपणकरेहैं ॥ कैसाहैसोअक्षर पंचज्ञानइंद्रियोंकाअविषयहै तथाकर्मइंद्रियोंका अविषयहै वंशरूपगोत्रसेरहितहै ॥ तथाब्राह्मणत्व-क्षत्रियत्वादिजातिसेरहितहै ॥ तथानेत्रश्रोत्रादि ज्ञानइंद्रिय जाअक्षर-आत्माकेनहींहैं ॥ तथाजोअक्षरआत्मा हस्तपादादिककर्मइंद्रियोंसे रहितहै ॥ नित्यहै तथाव्यापकहै तथा आकाशादिकपंचभूतोंका कारणहै ॥ सोअक्षरही साधनहीनपुरुषोंकूं दुर्विज्ञेयहै यातेंसूक्ष्महै ॥ सोईअक्षर अव्ययनामनाशरहितहै जाअक्षरकूं विवेकीपुरुष आपनेआत्मरूपकरिकैनिश्चयकरेहैं ॥ ताअक्षरकीविद्या नामब्रह्मज्ञान वा ताब्रह्मकीप्रतिपादकउपनिषत् ताकानामपराविद्याहै ॥ अबताअक्षरआत्माकेज्ञानसे सर्वप्रपंचकेज्ञानकीसिद्धिवासते ताअक्षरआत्माकूं सर्वजगत्कीकारणता दृष्टांतोंसेप्रतिपादनकरेहैं ॥ हेशौनक जैसेऊर्णनाभिजंतु आपहीतंतुवोंकाउपादानकारणहै तथाआपहीनिमित्तकारणहै ॥ जाकारणमें स्थितहुआ कार्यउत्पन्नहोवे ताकारणकूंउपादानकारणकहेहैं जैसेघटादि मृत्तिकामेंउत्पन्नहुए मृत्तिकामेंस्थितहोवेहैं ॥ यातें तिनघटादिकोंका मृत्तिका उपादानकारणहै ॥ जो कारणतटस्थहुआ कार्यकूंउत्पन्नकरे ताकारणकूं निमित्तकारणकहेहैं ॥ ऐसेदंडचक्रकुलालादि घटादिकोंके निमित्तकारणकहेजावेहैं ॥ औरजो आपही निमित्तकारणहोवे तथाआपही उपादानकारणहोवेताकूंअभिन्ननिमित्तउपादानका-

रणकहेहैं ॥ ऐसे तंतुवोंका ऊर्णनाभिजीव आपहीउपादानकारणहै तथाआपहीनिमित्तकारणहै यातेंसोऊर्णनाभिकीट तंतुवोंका अभिन्न निमित्तउपादानकारणहै ॥ जैसेऊर्णनाभिकीटतंतुवोंकूं आपनेसेउत्पन्न- करेहै औरआपनेमेंलयकरेहै ॥ तैसेयहपरमात्मा नामरूपजगत्का आपहीनिमित्तकारणहै और आपहीउपादानकारणहै यातेंयहअक्षर आत्मा याजगत्काअभिन्ननिमित्तउपादानकारणहै ॥ जैसेएकही पृथि- वीसे बीजभेदकरि नानाप्रकारकी व्रीहियवादिऔषधीयांउत्पन्नहोवेहैं ॥ तैसेएकहीआत्मासे आपनेकर्मोंकेअनुसार सुखीदुःखीप्रजा उत्पन्नहोवेहैं कोईआत्मामेंविषमता तथानिर्दयतादोषनहीं॥ यदिकर्मोंसेविना परमात्मा सुखीदुःखीरूपसंसारकूं उत्पन्नकरता तबतौईश्वरमें विषमता निर्दयता यहदोनोंदोषप्राप्तहोते ॥ काहेंते किसीकूंसुखीउत्पन्नकरणा तथाकिसी कूं दुःखीउत्पन्नकरणा यहतौसमताका अभावरूपविषमताहै ॥ और जाकूंदुःखीउत्पन्नकरेहै तामेंनिर्दयताहै ॥ याकूंनिर्घृणताभीकहेहैं॥ईश्वर कूंकर्मसापेक्षहोनेसे दोनोंदोष ईश्वरमेंप्राप्तहोवेनहीं ॥ यातेंईश्वरकर्मसा- पेक्षहुआ जगत्कूंउत्पन्नकरेहै ॥ चेतनआत्मासे यहजडजगत्कैसे उत्पन्नहोवेगा याशंकाकीनिवृत्तिवासते औरदृष्टांतकूं श्रुतिभगवतीप्र- तिपादनकरेहै ॥ जैसेजीवनअवस्थाविषे चेतनरूपकरिकेप्रसिद्धजोयह पुरुषहै ताचेतनपुरुषसे जड नखकेशलोमादिकउत्पन्नहोवेहैं ॥ तैसे याचेतनरूप अक्षरसे जडजगत्उत्पन्न होवेहै ॥ अबजगत्उत्पत्तिके प्रकारकूंकहेहैं ॥ जगत्कीउत्पत्तिसेप्रथम आत्मा जगत्कूंविषयकर- णेवालेज्ञानकरि स्थूलताकूंप्राप्तहोताभया ॥ जैसेपृथिवीमेंस्थितबी- जजलकेसंबंधकरिके स्थूलताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ ब्रह्ममेंस्थूलताभी जगत्- कीउत्पत्तिकीअनुकूलतारूपजाननी ॥ तास्थूलताकूंप्राप्तहुए ब्रह्मसे अव्याकृतजोअज्ञानहै सोउत्पन्नहोताभया ॥ यद्यपि अज्ञानसिद्धांतमें अनादिहै यातेंताकीउत्पत्तिकहनीविरुद्धहै ॥ तथापिजगत् उत्पत्तिका-

लमें जगत् उत्पन्नकरणेकेसन्मुख अवस्थाकीप्राप्तिरूपजन्मकूं प्राप्तहोवे-
है ॥ ताचिदाभाससहितअज्ञानसे ज्ञानशक्तितथाक्रियाशक्तिविशिष्ट-
हिरण्यगर्भउत्पन्नहोताभया ताहिरण्यगर्भसे विराट्उत्पन्नहोताभया ॥
ताविराट्उत्पत्तिसेअनंतरभूरादिसप्तलोकउत्पन्नहोतेभये ॥ तिसतेअनंतर
तिनसप्तलोकमें रहनेवालेप्राणीयोंकेकर्म उत्पन्नहोतेभये ॥ तिसते अनं-
तर अवश्यप्राप्तहोनेवालाजोकर्मकाफलहै सोस्वर्गादिरूपफल उत्पन्नहो-
ताभया ॥ हेशौनक यासर्वजगत्काकर्त्तापरमात्मा सामान्यज्ञानवालाहै
औरविशेषज्ञानवालाहै या अर्थकूं यहश्रुतिकहेहै ॥ यःसर्वज्ञःसर्ववि-
द्यस्यज्ञानमयंतपः याश्रुतिकाअर्थयहहै ॥ जोपरमात्मासर्वकूं सामान्य-
रूपसेजानेहै तथाजोसर्वकूंविशेषरूपकरिजानेहै औरजापरमात्माकाज्ञा-
नरूपहीतपहै ॥ सामान्यरूपसेज्ञानतोयहहै जैसेएकशतब्राह्मणमें यह
ब्राह्मणहैंऐसेज्ञानहोना ॥ तिनब्राह्मणोंमेंही एकएकके यज्ञदत्तदेवदत्ता-
दिनामकाज्ञान तथातिनके शुभाशुभकर्मोंकाज्ञान ऐसेज्ञानकूंविशेषज्ञा-
नकहेहैं ॥ ऐसादोनूंप्रकारकाज्ञानईश्वरमेंहै ॥ ताउक्तअर्थकूंही यहमंत्र
कहेहै ॥ तापरमात्मासेहिरण्यगर्भकीउत्पत्तिहोवेहै ॥ तापरमेश्वसेही
देवदत्तादिनामउत्पन्नहोवेहैं ॥ नीलपीतादिरूप तथाव्रीहियवादिरूपअन्न
तापरमात्मासेउत्पन्नहोवैहे ॥ अबवैराग्यकी प्राप्तिवासते अपराविद्याके
विषयकूंदिखावेहैं ॥ हेशौनक यहवेदउक्तकर्मकाफल अवश्यप्राप्तहोवे
है यातेंकर्मोंकूंश्रुतिमेंसत्यरूपकहाहै तिनकर्मोंकूं वसिष्ठआदिकऋषि
वेदकेमंत्रोंमें देखतेभये ॥ तेकर्मपुनःत्रेतायुगमें विस्तारकूंप्राप्तभये ॥ तिन
कर्मोंकूं आपनेअभिलषितफलकीप्राप्तिवासतेकरो ॥ यहकर्मही इष्ट
फलकीप्राप्तिवासते मार्गहै ॥ विनाकर्मसे किंचित्मात्रभीफलप्राप्तहोवे
नहीं ॥ स्वर्गादिफलतौ सकामकर्मविना प्राप्तहोवेनहीं ॥ निष्कामकर्म
विनाचित्तशुद्धिहोवेनहीं चित्तशुद्धिविना ज्ञानभीप्राप्तहोवेनहीं ॥ ज्ञान
विनामोक्षहोवेनहीं ॥ ऐसे कर्मविना किंचित्फलकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥

यातेंफलकीप्राप्तिवासतेकर्मकूंकरो ॥ प्रथमअग्निहोत्रकर्मकूंदिखावेहैं ॥ जाकालमें काष्ठघृतादिकोंसे अग्निप्रज्वलितहोवे ताकालमें आज्यभाग नामहोमकूंकरे ताअनंतरदेवतावोंकूं अनेकआहुतिसेप्रसन्नकरे ॥ श्रद्धापूर्वककर्मकीसिद्धितो अतिकठिनहै विपत्तिमध्यमेंअनंतहोवेहैं सोईदिखावेहैं ॥ जापुरुषका अग्निहोत्र अमावास्यामेंजोयज्ञहोवेहै ताकूंदर्श कहेहैं तादर्शयज्ञसेरहितहै ॥ तथाजापुरुषका अग्निहोत्र पौर्णमास्ययज्ञसेरहितहै ॥ तथाचातुर्मास्य कर्मसेरहितहै ॥ शरदृतुकेआदिमेंजो नूतनअन्नकरिके कर्मकराजावे ताकूंआग्रयणकहेहैं ॥ तथाताआग्रयणकर्मसेरहितहै ॥ तथाजाकेअग्निहोत्रमें अतिथिकापूजन नहींकरा॥ तथाजाकाअग्निहोत्र अग्निकालमेंनहींभया ॥ तथाजाअग्निहोत्रमें वैश्वदेवनामककर्मनहींभया ॥ तथाजापुरुषका अग्निहोत्रभयाभी विधिपूर्वकनहींभया ॥ ऐसेपुरुषका सोअग्निहोत्रही सप्तलोकोंका नाश करेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जो विधिपूर्वक तथाआपनेअंगसहितकरेकर्मका स्वर्गादिफलहोवेहै ॥ उक्तपुरुषके विधिसहितकर्मके अभाव होनेसे स्वर्गादिलोकरूपफल प्राप्तहोवेनहीं ॥ यातें तापुरुषके तेसप्तलोकनाश हुए जैसेजानने ॥ हविकेभक्षणवासते ताअग्निकीयहसप्तजिह्वाहै ॥ काली १ कराली २ मनोजवा ३ सुलोहिता ४ सुधूम्रवर्णा ५ स्फुलिंगिनी ६ विश्वरूपी ७ यहदेवीरूपजिह्वाहैं तिनसेभक्षण करेंहै ॥ इन प्रज्वलित सप्तजिह्वामें जोपुरुष यथाकालसे आहुतिका प्रक्षेपकरेहै ॥ तापुरुषकूं तेआहुतियां रश्मिरूपहोइकरि स्वर्गमेंलेजावेहैं ॥ जास्वर्गमेंदेवतावोंकापति इंद्ररहेहै ॥ जैसे स्वर्गमें यापुरुषकूं आहुतियांलेजावेहैं ताप्रकारकूंकहेहैं ॥ जोअग्निहोत्रादिकर्मकूंकरेहै तामेंजेआहुतिहैं तेआहुति प्रकाशकूंप्राप्तहुई तथाआवोआवो ऐसे यजमानकूं बुलातीहुई तायजमानकूंब्रह्मलोकमें लेजावेहैं ॥ ब्रह्मलोकपदसेईहांस्वर्गलोकविवक्षितहै केवलकर्मसेतो स्वर्गहीप्राप्तहोवेहै ॥ और

तेआहुतियां यजमानकी पूजाकूंकरेहैं औरयहकहेहैं यहतुमारेकर्मका फलस्वर्गहै याकूंभोगो ॥ अबज्ञानप्राप्तिसेविना अन्यकिसीफलवासते करेजेकर्म हैं तिनकीनिंदाकरेहैं ॥ हेशौनक यहयज्ञरूपनौका संसारसमुद्रसे पारकरणेवासतेसमर्थनहींहै ॥ जैसे तृणादिकोंकरिरचित अति अल्पनौकासे समुद्रकेपारउतरणाहोवेनहीं किंतु मत्स्यआदिकजलचारी जीव तानौकासेमारेजावेहैं ॥ तैसे तिनकर्मोंसे संसारसमुद्रसे पारउतरणाहोवेनहीं ॥ स्वर्गादिकफलरूपमत्स्यकीप्राप्तिकर्मसेहोवेहै ॥ संसाररूपसमुद्रकेपारउतरणेवासते तौ ज्ञानरूपीजहाजहीअपेक्षितहै कर्मतो ज्ञानसेअत्यंतन्यूनहै ॥ औरयहकर्म षोडशऋत्विज्जेयज्ञकरानेहारे ब्राह्मणहैं तथायजमान औरयजमानकी स्त्री याअष्टादशोंसेसिद्धहोवेहै ॥ याकर्मकूंहीजेमूढ मोक्षकासाक्षात् साधनमानतेहैं ॥ तेमूढ वारंवार जन्म जरा मृत्युकूंहीप्राप्तहोवेहैं किंचित्कालपर्यंतस्वर्गमेंस्थितहोतेहैं ॥ परंतुतास्वर्गसेभीगिरेहुए यासंसारमेंघटीयंत्रकीन्यांईघूमतेहैं ॥ तेकर्मी सदा अविद्यामेंहीवर्ते हैं औरहैंतौअत्यंत मूढ परंतु आपकूं बुद्धिमान् पंडितमानतेहैं ॥ जैसेएकअंधकेपीछेचले औरअंधे क्लेशकूंही अनुभव करेहैं ॥ तैसे कर्मीअंधगुरुकेपीछे शिष्यभी वारंवारसंसारदुःखकूंही अनुभवकरेहैं ॥ औरतेमूढअविद्यामेंरहतेहुएभी आपकूंकृतार्थमानतेहैं ॥ आपनेस्वरूपकूंनजानतेहुए तेकर्मी स्वर्गसेभीगिरकरि यासंसारमेंआवेहै ॥ और यज्ञ वापी कूप तडागादि कर्मकूंही मोक्षकासाधनमूढमानेहैं ॥ औरकहेहैं जोआत्मज्ञानमोक्षका साधननहीं है ॥ यहकर्मही बहुत सुंदरमोक्षकाउपायहै ॥ ऐसेमाननेवालेकर्मी आपनेकरेकर्मकेफलकूं भोगकरि यामनुष्यलोककूं वा नरककूं वासर्पादितिर्यग्योनिकूं प्राप्त होवेहैं ॥ हेशौनक जेपुरुषतपकूंकरेहैं तपनाम आपने वर्णआश्रमके कर्मकाहै तिनकर्मोंकूं तथासगुणउपासनाकूंकरेहैं ॥ तेगृहस्थ वा संन्यासीवनमेंरहनेहारे तथाजितइंद्रिय तथानिवृत्तपाप उपासक भिक्षा-

करिकेशरीरकी रक्षाकरणेहारे तेउत्तरायणमार्गकरिब्रह्मलोककूंप्राप्त होवेहैं ॥ जाब्रह्मलोकमें ब्रह्मारहेहै ॥ कैसाहै सोब्रह्मा हिरण्यगर्भ जबीतकसंसारहै तबपर्यंतजोस्थायीहै ॥ हेशौनक मुमुक्षुने ब्रह्मलोककी प्राप्तिकीइच्छाकरिके श्रवणादिकोंकात्यागनहींकरणा ॥ काहेते ब्रह्मलोकप्राप्तिमेंअनंतविघ्नहैं ॥ यातेंमुमुक्षु सर्वलोकोंसेवैराग्यकूं प्राप्तहोवे औरयहविचारकरेजोकर्मकरिप्राप्तहोवेहै ताकीअवश्यनिवृत्तिहोवेहै ॥ जैसेपुरुष क्षेत्रमेंअन्नादिकोंकूं कर्मकरिउत्पन्नकरेहै औरतिनकीभोगकरिनिवृत्तिहोवेहै ॥ तैसेयहलोक तथापरलोक कर्मकरिरचितहोनेसे सर्वहीविनाशींहैं ॥ ऐसेअनेकदृष्टांतोंकरि सर्वलोककूं अनित्यजानकरि वैराग्यकूंप्राप्तहोवे ॥ औरयहविचारे जोकर्मोंकरि नित्यमोक्षकीप्राप्ति होवेनहीं जेसंसारमेंपदार्थकर्मजन्यहैं तेसर्वअनित्यहीहैं ॥ ऐसेविचारकरि समित्पाणिहुआ ब्रह्मश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकी शरणकूंप्राप्तहोवे ॥ जोवेदकेअर्थकूंजाने ताकूंब्रह्मश्रोत्रियकहेहैं ॥ जाकीब्रह्ममेंनिष्ठानाम स्थितिहोवे ॥ अर्थयह ॥ करमेंबिल्ववत्जाकूं ब्रह्मकाअपरोक्षज्ञानहै ताकूंब्रह्मनिष्ठकहेहैं ॥ ऐसेगुरुकीशरणकूंप्राप्तहोवे ॥ केवलकाषायमात्रकरानेवालेसे वाशिरमुंडन तिलक जटा कंठी धारण आदिकचिन्होंकूंकरानेवालेसे यामुमुक्षुकाकल्याणहोवेनहीं ॥ यातेंमुमुक्षुआपनेमोक्षवासते ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठगुरुकीशरणकूंआवे ॥ हेशौनक जबीसो मुमुक्षु चित्तशांतहुआ तथाविरक्तहुआतागुरुकीशरणकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तबीजाब्रह्मविद्याकरि यहमुमुक्षु ब्रह्मअक्षर तथासत्यरूपपूर्णआत्माकूं निश्चयकरे ताब्रह्मविद्याकूंही तेगुरुअधिकारीकेतांईकहेहैं ॥ अबपराविद्याकेविषयकूं विस्तारसेकथनकरेहैं ॥ हेशौनक कर्मकाफलतौ किंचित्कालसत्यहै सर्वकालमेंसत्यनहीं है ॥ यह अक्षरसर्वकालमें सत्यहै ॥ तासत्यआत्मासेही यहचराचरजगत्उत्पन्नहोवेहै ॥ जैसे प्रज्वलितअग्निसे विस्फुलिंग प्रकाशरूपही अनंतउत्पन्नहोवेहैं ॥ तैसे या

अक्षरसे जड चेतन सर्वजगत् उत्पन्नहोवेहै ॥ तासेउत्पन्नहोइकरिं ता-अक्षरमेंही लयभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यातेंताअक्षरआत्मासे किंचित्भी भिन्ननहीं ॥ ऐसेएक अक्षर आत्मासे किंचित्मात्रभिन्नसत्यनहीं यह-हीएकके ज्ञानसेसर्वकाज्ञानश्रुतिमें अपेक्षितहै ॥ जगत्केनामरूपकाज्ञा-नहोवेहै याअभिप्रायसे एकके ज्ञानसेसर्वकाज्ञान श्रुतिमेंअपेक्षितनहीं ॥ जैसेएकमृत्तिकाकेज्ञानसे सर्वदेशोंमेंस्थित जेघटादिहैं तेसर्वमृत्तिकामा-त्रहै ऐसेसर्वघटादिकोंकाज्ञानहोवेहै ॥ तैसेआत्माकेनिश्चयकरणेसे कार्य-प्रपंच आत्मसत्तासे भिन्नसत्तावालानहीं यहहीज्ञानहोवेहै ॥ ऐसेशौन-कऋषिकेप्रश्नके समाधानवासते वारंवारप्रपंचकीउत्पत्ति अंगिरानामा गुरुनेकथनकरी ॥ औरएकज्ञानसे सर्वकाज्ञानकैसेहोवेहै याप्रश्नकास-माधानभी अनेकवारदृढ़ता अर्थजानना ॥ हेशौनक याजगत्का जनकअक्षर आत्मास्वप्रकाशहै ॥ तथाअमूर्त्तहै ॥ अर्थयह ॥ जोस्थू-लतादिरहितहुआ सर्वत्रव्यापकहै ॥ औरयाआत्मासेभिन्नकार्यकारण नहीं है औरअजन्माहै ॥ तथाप्राणसे औरमनसेरहितहै तथाशुद्धहै ॥ कार्यकीदृष्टिसेपरजोअज्ञान तासेभी यहआत्माअज्ञानकाअधिष्ठान परहै॥ औरयहप्राणादिक सर्वआत्मासेही उत्पन्नहोवेहैं ॥ यातेंब्रह्मअ-द्वितीयहै ॥ स्वाभाविकभेदतौब्रह्ममेंहैनहीं ॥ भेदकेसिद्धकरणेहारे उपाधिरूप मन औरप्राणादिकहीहैं औरतेमनप्राणादिकउपाधिरूप याब्रह्मात्मासेउत्पन्नहोवेहैं ॥ यातेंवास्तवसेब्रह्ममें औपाधिकभेदभीन-हीं है ॥याअर्थकीसिद्धिवासते ब्रह्मसे प्राणादिकोंकीउत्पत्ति अबकहेहैं॥ याब्रह्मात्मासे प्राणउत्पन्नहोवेहै तथामनसहितसर्वइंद्रिय उत्पन्नहोवेहैं ॥ तथा आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी यहपंचभूत आपनेगुणोंसहित उत्पन्नहोवेहैं ॥ शब्दयाएकगुणसहितआकाश तथाशब्द स्पर्शइनदो-गुणोंसहित वायु तथा शब्द स्पर्श रूप इनतीनगुणोंसहितअग्नि तथा शब्दस्पर्शरूपरसइनच्यारिगुणोंसहितजल तथाशब्द स्पर्श रूप रस गंध

इनपंचगुणोंसहितपृथिवी ताब्रह्मसेहीउत्पन्नहोवेहै ॥ इनभूतोंमेंएक-एकगुणआपनाहै औरदूसरेकारणकेजानने ॥ प्रपंचकीउत्पत्तिमें वेदका तात्पर्यनहीं यातेंआकाशादिकोंकीउत्पत्ति प्राणादिकोंसेपश्चात्कहने-सेविरोधनहीं ॥ औरताब्रह्मात्मासेही विराट्उत्पन्नहोवेहै ॥ ताविराट्-कूंही अवयवसहितनिरूपणकरेहैं ॥ जाविराट्का अग्निमस्तकहै तथा जाकेसूर्यचंद्रमानेत्रहैं ॥ तथाजाविराट्केदिशाहीश्रोत्रहैं ॥ औरजा विराट् भगवान्का च्यारिवेदवाक्इंद्रियहै ॥ तथावायुजाविराट्का प्राणहै ॥ यहसंपूर्णजगत्जाविराट्काहृदयहै॥औरजाविराट्भगवान्का पृथिवीपादरूपहै ॥ तथाजोसमष्टिरूपविराट्व्यष्टिसर्वभूतोंकाआत्माहै ॥ औरजाविराट्भगवान्से स्वर्गलोकरूपअग्निउत्पन्नहोवेहै जास्वर्गलोक-रूपअग्निकासूर्यहीकाष्ठहै ॥ ताकेअनंतर चंद्रनामासोम उत्पन्नहोवेहै॥ ताद्रवीभूतसोमसे पर्जन्यरूपमेघउत्पन्नहोताभया सोपर्जन्यहीदूसराअ-ग्निहै ॥ मेघरूपपर्जन्यसे वृष्टिद्वारा पृथिवीरूपतीसरेअग्निसे व्रीहियवादि-रूप अन्नउत्पन्नहोतेभये ॥ तेअन्न पुरुषरूपीचतुर्थअग्निमेंप्राप्तहुए वीर्य-रूपताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ स्त्रीरूपपंचम अग्निमें प्राप्तहुए वीर्यसेगर्भद्वारा पुत्रपौत्रादिकप्रजाउत्पन्नहोतीभयी ॥ ऐसेपरमात्मासे उत्पन्नभयाजो विराट्है ताविराट्भगवान्से पंचअग्निउत्पत्तिद्वारा ब्राह्मणक्षत्रियादि-कसर्वप्रजाउत्पन्नहोतीभयी यहनिरूपणकरा ॥ अबजापरमात्मासे विराट्उत्पन्नहोताभया तापरमात्मासेही औरवेदादिकोंकीउत्पत्तिक-हेहैं ॥ हेशौनक ताअक्षरपरमात्मासे ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद उत्पन्न-होतेभये ॥ तथामुंजबंधनादि कर्मकेनियम उत्पन्नहोतेभये ॥ अग्निहो-त्रादियज्ञ तथायूपसहितजे अन्ययज्ञहैं तिनकूंहीक्रतुकहेहैं यूपरहित-यज्ञ तथायूपसहितक्रतु तापरमेश्वरसेहीउत्पन्नहोतेभये ॥ तथागोस्वर्ण आदिरूप दक्षिणा तथासंवत्सरादिकाल तथायज्ञकराणेवालेयजमान तथातिनकर्मकाफलरूपस्वर्गादिलोक तापरमात्मासेउत्पन्नहोतेभये ॥

जिनसर्वलोकोंमें चंद्रमा तथासूर्यविचरेहैं तिनसर्वलोकोंकी परमात्मासे उत्पत्तिकही अब अन्यपदार्थोंकी उत्पत्तितापरमात्मासेकहेहैं ॥ हेशौनक ताअक्षरसेवसुआदिदेवता तथासाध्यनामवालेदेवता तथामनुष्य पक्षी उत्पन्नहोतेभये तथाप्राण अपान समान उदान व्यान यहपंचप्रकारकेप्राण तथाव्रीहियवादिअन्न तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिरूप तप तथाश्रद्धा तथासत्य संभाषण तथाउपस्थसंयमरूप ब्रह्मचर्य तथावेदविहितकर्मरूपविधि यहसर्वपदार्थब्रह्मात्मासेउत्पन्नहोतेभये ॥ तापरमात्मासेही शरीरकेमस्तकमेंरहनेहारे दोश्रोत्र दोनेत्र दोनासिका एकवाक् यहइंद्रियरूपसप्तप्राण उत्पन्नहोतेभये ॥ तथातिननेत्रादिकोंसे उत्पन्नभयीजे सप्तप्रकारकीवृत्तियां हैं तिनकेजेरूपादि सप्तविषयहैं तथातिनविषयोंका तिनइंद्रियोंमें जोलयचिंतनरूपउपासनाहै ॥ तथा सप्तनेत्रादिकोंके जेसप्तगोलकहैं ॥ जिनविषेनेत्रादिकविचरतेहैं ॥ सर्व प्राणियोंकेयह सप्तसप्तउत्पन्नहोतेभये॥ याअक्षरसेहीसप्तसमुद्र तथा हिमाचलादिपर्वत तथाश्रीगंगादिनदीयां यहसर्वपदार्थउत्पन्नहोतेभये ॥ तथा व्रीहियवादिऔषधीयां औरतिनकेरस उत्पन्नभये जा रसकरिस्थूलशरीरमें लिंगशरीरविशिष्टआत्मास्थितहोवेहै ॥ हेशौनक यहसर्वजगत् जिसहेतुसेपरमात्मासेउत्पन्नभयाहै याहेतुसेही यापुरुषअक्षरसेकिंचित् भीभिन्ननहीं ॥ यहपुरुषही सर्वविश्वहै तथाकर्मअग्निहोत्रादि तथाउपासना तथावेदादिसर्वजगत् परब्रह्मसेभिन्ननहीं ॥ ताब्रह्मकूं विवेकी आपनीबुद्धिरूपीगुहामें साक्षीरूपसेस्थितजानेहै ॥ ऐसेएकज्ञानसेसर्वका ज्ञानकैसेहोवेहै याप्रश्नकेअनेकरीतिसे समाधानकथनकरिके अबताब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते साधनकूंकहेहैं ॥ हेशौनक यहअक्षरब्रह्म नित्य स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथाबुद्धिरूपीगुहामेंस्थितहै ॥ यातेंअत्यंतसमीप है तथाव्यापकहै ॥ औरजैसेरथकीनाभिमें अरास्थितहैं तैसेयाअक्षरमें सर्वजगत्स्थितहै ॥ तथाप्राणापानादिवाले मनुष्य पशुआदिशरीरसे

मिलकरि यहआत्माही प्राणापानादिचेष्टाकूं तथानेत्रादिकोंकीचेष्टाकूं करेहै ॥ याअक्षरसेस्थूलसूक्ष्मभिन्ननहींहै ॥ औरसर्वअधिकारीजनों-करिके प्रार्थनीयहै ॥ अर्थयह ॥ जोताअक्षरसे भिन्नकोईपदार्थ नित्य नहीं जापदार्थकी अधिकारीपुरुष याचनाकरे यातेंयह नित्यआत्मा अक्षरही अधिकारीकूंवररूपहै ॥ श्रुतिभगवती स्वतंत्रभीअधिकारी मुमुक्षुजनोंकूं उपदेशकरेहै ॥ भोमुमुक्षवः यहजोअक्षरआत्मा सर्वप्राणी-योंकेइंद्रियादिजन्यज्ञानोंका अविषयस्वभावहै ताआत्माकूंनिश्चयकरो॥ औरयहअक्षरही प्रकाशमानसूर्यआदिरूपहै॥ तथासूक्ष्मजे श्यामाकादिहै तिनसेभीयहअक्षरसूक्ष्महै॥ औरस्थूलपृथिवीआदिकोंसेभीअतिस्थूलहै॥ तथाजाअक्षरमें भूरादिसर्वलोकस्थितहैं ॥ तथातिनलोकोंमें रहनेहारे मनुष्यदेवतादिभी जाअक्षरमेंस्थितहैं ॥ तथासोअक्षरही प्राण वाक् मन आदिसर्वकरणरूपहै ॥ ताअक्षरकेकृपाकटाक्षसेही प्राणादिजडसंघात चेष्टाकरेहै ॥ यहअक्षरहीसत्यहै ॥ तथायहअक्षरहीअमृतहै ॥ अर्थ यह ॥ जोजन्ममरणरहितहुआ आनंदस्वरूपहै ॥ औरयहअक्षरही ताडनेयोग्यहै ॥ अर्थयह ॥ जोताअक्षरमेंहीमनसमाधानकर्त्तव्यहै ॥ यातें हेशौनक ताअक्षरमेंमनकूं अर्पणकरो ॥ जैसेमनकरताडनेयोग्यहै सोप्रकारदिखावेहैं ॥ हेशौनक जैसेकोईशूरवीरपुरुष आपनेधनुषसे बाणकूंचलाइके किसीमृगादिलक्ष्यवस्तुकूं वेधनकरेहै ॥ तैसे यहमुमुक्षु धैर्यकरियुक्तहुआ तथाआपनेवैराग्यके बलसे तथाआत्मविवेककेबलसे कामक्रोधादिकोंकूंजीतनेहाराहै तामुमुक्षुने अक्षररूपलक्ष्यकूं वेधनक-रणा ॥ हेशौनक सर्वउपनिषदोंमें प्रसिद्धजोप्रणवहै सोईमहाअस्त्रहै ॥ औरदेहइंद्रियादिकोंसेभिन्न शोधित साक्षी बाणरूपहै ॥ औरमैंब्रह्म-रूपहूं इसरीतिसेजो महावाक्यकाचिंतन सोधनुषका आकर्षणहै ॥ शुद्धब्रह्मअक्षरही लक्ष्यस्वरूपहै ॥ ऐसेप्रणवधनुषमें शोधितत्वंपदार्थ-साक्षीरूपबाणके अर्पणसे तथा अभेदचिंतनरूपधनुषके आकर्षणसे

लक्ष्यरूपब्रह्ममें साक्षीरूपबाण प्राप्तहोवेहै ॥ तालक्ष्यरूपशुद्धब्रह्ममें साक्षीरूपबाणप्राप्तहुआ तद्रूपहीहोवेहै ॥ तासे किंचित्मात्रभीभेदरहे नहीं ॥ हेशौनक याअक्षरमेंही स्वर्गलोक तथापृथिवीलोक तथा अंतरिक्षलोक यहतीनोंलोकस्थितहैं ॥ तथामननेत्रादिसर्वइंद्रियस्थितहैं ॥ श्रुतिभगवती मुमुक्षुजनोंकूं पुनःआपउपदेशकरेहैं ॥ हेमुमुक्षु जनाः ताएकआत्माअक्षरकूं निश्चयकरो ॥ औरअनात्मपदार्थोंकाचिंतनकरनानहीं ॥ तथातिनअनात्मपदार्थोंके कथनकरणेहारे जेअनंत वचनहैं तिनकाभीत्यागकरो ॥ जैसेकाककेदंतोंकापरिगणनकरणा निष्फलहै ॥ तैसे अनात्मशब्दोंके चिंतनसेभी किंचित् फलहोवेनहीं ॥ केवलतिनशब्दोंके उच्चारणसे कंठकाशोषणहोवेहै ॥ तथातिनअनात्मशब्दोंकेध्यानसे मनकूंविक्षेपरूपफलहोवेहै ॥ यातें केवलउपनिषदोंकरिकैजाननेयोग्यजोआत्मवस्तुहै ताप्रत्यग्अभिन्नब्रह्मकूं उपनिषदोंकरिकेहीनिश्चयकरो ॥ औरवेदांतरूपउपनिषदोंकेविचारसे तथा तिनउपनिषदोंकातात्पर्यरूप जोव्यासभगवान्कृतशारीरकहै तथाउपनिषद्अर्थकेतुल्य अर्थवालीजेगीतादिस्मृतियां हैं तथा तिनउपनिषदोंकेउपयोगीजे अन्यप्रकरणहैं तिनवेदांतरूप सर्वग्रंथोंके विचारणेसेतौ ब्रह्मज्ञानप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपफलकीप्राप्तिहोवेहै ॥ यातेंजोपुरुषवेदांतविचारकूंभी न्यायकाव्यादिकोंकेतुल्यमानेहै सोपुरुष वेदांतशास्त्रकेतात्पर्यकाअनभिज्ञबालकहै ॥ तथावेदांतशास्त्रकूं निरर्थकमानकरितामेंप्रवृत्तिके अभावसे तथानिषिद्धकर्मकेअनुष्ठानसे नरककूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ यातें ब्रह्मज्ञानवासते मुमुक्षु सुषुप्तिपर्यंत तथामरणपर्यंत वेदांतविचारकूं करे ॥ जैसेसेतुरूपमार्गकरिकै नदीसेपारतरणहोवेहै ॥ तैसेयाब्रह्मज्ञानकरिकेही संसारसमुद्रसे पाररूपब्रह्मकीप्राप्तिहोवेहै ॥ यातेंज्ञातहुआब्रह्महीसेतुरूपहै ॥ हेशौनक जैसेरथकेचक्रकीनाभिमें अरास्थितहोवेहैं ॥

तैसेहृदयकमलमें शतसहस्र नाडियांस्थितहैं ॥ ताहृदयकमलमें यहस्वप्रकाशरूपआत्मासर्वदावर्त्तताहै ॥ औरयहआत्मावास्तवसेजन्मरहितहुआभी शरीरादिउपाधिकरिकै जन्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जोपुरुषमैंब्रह्महूं ऐसेजाननेकूंसमर्थनहीं सोपुरुषप्रणवरूपसेब्रह्मकाध्यानकरे सोध्यातापुरुषभीताध्यानकेवलसे प्रतिबंधरूपपापकूंनिवृत्तकरिकै ब्रह्मकूंजानलेवेहै ॥ जैसेप्रणवकाध्यान पापकानिवर्त्तकहै तैसेब्रह्मवेत्तागुरुकाआशीर्वादभी पापकानिवर्त्तकहै ॥ यातेंगुरुकूं अधिकारीपुरुषने प्रसन्नकरणा ! प्रसन्नहुए गुरुआपनेशिष्यकूं ऐसेआशीर्वादकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ अज्ञानतथाताकाकार्यरूपसमुद्रकापाररूपजोब्रह्महै ताब्रह्मकीप्राप्तिवासते तुमारेकूंनिर्विघ्नहोवे ॥ याआशीर्वादसेभीपापनिवृत्तिद्वारा ज्ञानप्राप्तहोवेहै ॥ हेशौनक यहपरमात्मा सर्वपदार्थोंकूं सामान्यरूपसे तथाविशेषरूपसे जानेहै ॥ ताआत्माकाप्रताप सर्वपृथिवीमेंव्याप्तहै सोप्रतापरूपमहिमा यहहै जाआत्माकरिभयभीतहुए सूर्य चंद्रमा सर्वदा भ्रमणकरेहैं ॥ ताआत्माकेभयकरिही समुद्र नदीयां आपनीमर्यादाकूं त्यागकरेंनहीं ॥ जाआत्माकीआज्ञामें स्थावरजंगमस्थितहैं ॥ तथा दिन रात्रि मास ऋतु दक्षिणायन उत्तरायण वरस युग इत्यादिकाल जापरमेश्वरकी आज्ञाकूं उल्लंघनकरेनहीं ऐसाजापरमेश्वरकामहिमा सर्वलोकमेंप्रसिद्धहै ॥ जैसेसर्वदेशके अधिपतिभी श्रीरामचंद्र अयोध्यामें विशेषकरिप्रतीतहोनेसे अयोध्यामेंरहेहैं यहकह्या जावेहै ॥ तैसेसर्व जगत्में व्यापकब्रह्मकूं हृदयमें साक्षीरूपकरि प्रतीतहोनेसे हृदयमें ब्रह्महै यहकह्याजावेहै ॥ यातेंहीश्रुतिभगवतीहृदयकूं ब्रह्मपुर यानामसे कथनकरेहै ॥ औरयह आत्माही मनरूपउपाधिकरिकै मनोमय यानामकरिकथनकराजावेहै ॥ यहमनोमय आत्माही प्राणादिरूपसूक्ष्मशरीरकूं एकस्थूलशरीरसे द्वितीयस्थूलशरीरमें प्राप्तकरेहै ॥ औरसर्वसंघातकूंप्रकाशकरताहुआ यास्थूलशरीरकेहृदयदेशमें स्थितहै ॥ जालिंग-

शरीरउपहितआत्मासेविना यहस्थूलशरीर श्मशानमें भस्मकरणेयोग्य-होवेहै ॥ ताआत्माकूं प्रथमसाक्षीरूपसे प्रत्यक्षकरतेहुए विवेकीपुरुष तासाक्षीकूं पुनःपूर्णरूपजानेहैं ॥ जोप्रत्यग्‌अभिन्नब्रह्मआनंदरूप स्वमहिमामेंस्थितहै सोआनंदरूपब्रह्मात्मा तिनविवेकीपुरुषोंकूं भासताहै ॥ आत्मज्ञानकेफलकूं यहश्रुतिप्रतिपादनकरेहै ॥ भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः । क्षीयंतेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ याश्रुतिका अर्थयहहै परावरनाम कार्यकारणरूपजाआत्मासेभिन्ननहीं ॥ ताआत्मा-केसाक्षात्कारकरिके अज्ञानरूपकारणकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ देहादिकोंमें आत्मत्व अध्यासरूपहृदयग्रंथिकी निवृत्तिहोवेहै ॥ तथासर्वसंशयनिवृत्तहोवेहै ॥ और सर्वकर्मक्षयहोवेहैं ॥ तेसंशययहहै आत्मादेहरूपहै वादेहसेभिन्नहै भिन्नहुएभी इंद्रियवाप्राण वामनरूपहै वाइनसर्वसेभिन्नहै ॥ भिन्नहुएभी कर्त्तारूपहैवा अकर्त्तारूपहै अकर्त्ताहुएभी भोक्ताहै वाअभोक्ताहै अभोक्ताहुएभी ज्ञानआनंदकाआश्रयहै वाज्ञानआनंदरूपहै इत्यादिसंशयत्वंपदार्थजीवमेंहै ॥ तैसे तत्पदार्थमेंभी अनेकप्रकार-केसंशयहै ॥ परिच्छिन्नहस्तपादादिकअवयववान् तथावैकुंठआदिलोकवासीईश्वरहै वाहस्तादिकोंसेरहितविभुहै॥व्यापकमानेतौभी परमाणु-आदिसापेक्ष जगत्कर्त्ताहैवातिनसेनिरपेक्षकर्ताहै ॥ परमाणुआदिनिरपेक्षकर्त्ताकहे तौभी ईश्वर केवलनिमित्तकारणहै वाअभिन्ननिमित्त-उपादानकारणहै॥उभयरूपकारणकहेंतौभी कर्मनिरपेक्षहोनेसे विषमता-निर्घृणतारूपदोषवान्है वाकर्मसापेक्षहोनेसे सर्वकलंकरहितहै ॥ ऐसे तत्पदार्थईश्वरमेंसंशयहोवेहैं॥तथाएकतामेंसंशयहोवेहै॥जीवईश्वरकीएकतानहींबनेहै वाबनेहै॥ चेतनमात्रकीएकताहोवेतौभी मोक्षकालमेंएकता होवेहै वासर्वदाएकताहोवेहै ॥ इत्यादिसंशयएकतामेंहै ॥ औरयहमोक्षसाधनमेंसंशयहोवेहै ॥ कर्महीमोक्षकासाधनहै वाउपासनामोक्षका साधनहै वाज्ञानहीमोक्षकासाधनहै ॥ ज्ञानमोक्षकासाधनकहेतौभी

कर्मउपासनासहितज्ञान मोक्षकासाधनहै अथवाकेवलज्ञानमोक्षका साधनहै॥ मोक्षकेस्वरूपमेंयहसंशयहै वैकुंठादिलोकप्राप्तिमोक्षहै वाब्रह्मप्राप्तिमोक्षहै॥ब्रह्मप्राप्तिमोक्षकहेतौभी सविशेषब्रा ह्मप्राप्तिमोक्षहै वानिर्विशेषब्रह्मप्राप्तिमोक्षहै॥ निर्विशेषब्रह्मप्राप्तिरूपमोक्षकहेतौभी ज्ञानकेप्रथमनप्राप्तहोनेसे तथाज्ञानकेपश्चात्प्राप्तहोनेसे कादाचित्कहै वामोक्षसदाहीहै ज्ञानकरिभीप्राप्तकीहीप्राप्तिहोवेहै॥ ऐसेयहसर्वसंशयप्रमेयसंशयकहेजावेहैं तिनसर्वसंशयोंकीब्रह्मज्ञानसेनिवृत्तिहोवेहै॥ तथाप्रमाणसंशयनिवृत्तहोवेहै॥ प्रमाणजोवेदतिनमेंजोसंशयहोवे ताकूंप्रमाणसंशयकहेहैं॥ सोयहहै वेदकर्मकूं तथा उपासनाकूं और कर्म उपासनाके अंगदेवतादिकोंके स्वरूपकूं कहेहै॥ वाअद्वितीयब्रह्मके स्वरूपकूं कहेहै॥ याप्रकारके संशय ज्ञानकरिविवेकीकेनिवृत्तहोवेहैं कहेसंशयोंमेंपूर्वपूर्वकोटीपूर्वपक्षहै उत्तरउत्तरकोटीसिद्धांतजानना॥ यद्यपि विपर्ययरूपअध्यासकीनिवृत्ति निदिध्यासनसेहोवेहै॥ मननसेप्रमेयगतअनेकप्रकारकेसंशयोंकीनिवृत्तिहोवेहै॥ तथाश्रवणसेप्रमाणगतसंशयनिवृत्तहोवेहै॥ ऐसेअद्वैतकौस्तुभादिवेदांतग्रंथोंमें लिखाहै॥ केवलज्ञानसे सर्वसंशयविपर्ययकीनिवृत्तिकथन तिनग्रंथोंसेविरुद्धहै॥ तथापि श्रवणादिकोंसे संशयादिकोंकीनिवृत्तितौहोवेहै॥ परंतुसंशयादिकोंके कारणअज्ञानकीनिवृत्ति तिनश्रवणादिकोंसेहोवेनहीं॥ ज्ञानसेतौ तिनसंशयादिकोंकाकारणअज्ञान निवृत्तहोवेहै॥ अज्ञानरूपकारणकेनिवृत्तिहोनेसे कार्यसंशयादिकोंकीनिवृत्ति अवश्यहोवेहै यातेंकिंचित्विरोधनहींहै॥ऐसेसंशयकीनिवृत्तिकहिकरि अबकर्मकीनिवृत्तिकाप्रकारकहेहैं॥ कर्मतीनप्रकारकेहै एकसंचितहै द्वितीयक्रियमाणहै तृतीयप्रारब्धरूपहै॥ तिनमें संचितकर्मयहहै अनंतकोटीजन्मोंकेबीजभूत अदृष्टरूपकरिरहनेहारेजेकर्महैं तिनकूंसंचितकर्मकहेहैं॥ क्रियमाणकर्म तिनकर्मोंकूंकहेहैं॥ ब्रह्माहमस्मि याज्ञानके उत्तरकालमें जेकर्मकरेजावेहैं॥ और जिनक-

मौंनेयाशरीरकूंउत्पन्नकराहै ॥ तथायालोकमेंसुखदुःखरूपफलकूं देनेवालेजेकर्महैं तिनकूंप्रारब्धकहेहैं ॥ ऐसेतीनप्रकारकेकर्मोंकेमध्यमें संचितकर्मोंकातौ ज्ञानरूपअग्निकरिके भस्मीभावहोवैहै ॥ औरक्रियमाणकर्मकासंबंधहोवैनहीं ॥ जैसेजलकेमध्यमेंकमलपत्रअसंगहोइकरि स्थितहोवैहै ॥ तैसेज्ञानी आगामीकर्मकरि लिपायमानहोवैनहीं ॥ औरप्रारब्धकर्मका भोगकरिकेनाशहोवैहै ॥ विनाभोगसे प्रारब्धकर्मकानाशहोवैनहीं ॥ यद्यपि गीतामेंयहलिखाहै ज्ञानरूपअग्निसर्वकर्मोंकूंभस्मकरैहै ॥ यातें ज्ञानसेउत्तरकालमें प्रारब्धकाशेषमानना गीतावचनसेविरुद्धहै प्रारब्धभीतौएककर्म है जबीसर्वकर्मकीनिवृत्तिकही तब प्रारब्धरूप कर्मकी स्थितिबनेनहीं ॥ तथापिछांदोग्यश्रुतिमेंयहलिखाहै ॥ ज्ञानीकाजबतकप्रारब्धकर्महै तबपर्यंत विदेहकैवल्यमें विलंबहै ॥ भोगकरिप्रारब्धकर्मकूं क्षयकरताहुआ विद्वान्विदेहकैवल्यकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातेंगीतावचनमें श्रुतिकीअनुसारतासे प्रारब्धकर्मसे भिन्नसर्वकर्मकाग्रहणहै ॥ प्रारब्धकाभोगेविनानाशहोवैनहीं ॥ तथा जीवन्मुक्तिप्रतिपादकश्रुतिस्मृतिआदिकवचनोंमें प्रारब्धकीस्थितिअंगीकारहै ॥ यातेंप्रारब्धकानिराकरण श्रुतिस्मृतिविरुद्धहै ॥ और किसी आचार्यकेवचनमें प्रारब्धकर्मकानिषेधलिखाहोवैतौ ताकापरमार्थसे निषेधमेंतात्पर्यहै ॥ व्यवहारमेंताप्रारब्धकानिषेधबनेनहीं ॥ श्रीव्यासकेसूत्रोंमें तथातिनसूत्रोंकेमूलभूतश्रुतिमें तथास्मृतिमें तथाभाष्यमें औरअनेकग्रंथोंमें प्रारब्धशेषमानाहै यातें तिनसर्वसेविरुद्ध प्रारब्धकर्मकानिषेधकरणाहै ॥ औरवेदांतकेतात्पर्यकूं नजानकरि किसीएकवचनसे प्रारब्धकासर्वथानिषेधकरणा यहवेदांततात्पर्यके अनभिज्ञताका द्योतकहै ॥ ऐसेआत्मज्ञानसे अध्यासकीनिवृत्ति तथासर्वसंशयोंकी निवृत्ति तथाप्रारब्धभिन्नसर्वकर्मोंकीनिवृत्ति संक्षेपसेप्रतिपादनकरि ॥ अबजाआत्माकेज्ञानसे पूर्वउक्तफलहोवैहै ताआत्माकेस्वरूपकूंकहेहैं ॥

हेशौनक यहआत्मानिरवयवहै ॥ तथामायासेरहितहै ॥ देहादिकों-कीअपेक्षासे परतथाप्रकाशस्वरूपजाबुद्धिहै ताबुद्धिमेंआत्मा साक्षीरू-पसेस्थितहै ॥ ऐसेशुद्धआत्माकूं तथासूर्यादिकोंकेप्रकाशक स्वयं-ज्योतिरूपकूं विवेकीआपनास्वरूपनिश्चयकरेहैं ॥ आत्माकीस्वप्र-काशताकूंहीनिरूपणकरेहैं ॥ यहसूर्य सर्वघटादिकोंकेप्रकाशकरणे-मेंसमर्थहुआभीताआत्माकूं प्रकाशकरसकेनहीं ॥ तथाचंद्रमा तारे विद्युत् आत्माकरिप्रकाशकूंप्राप्तहुए आत्माकूंकैसेप्रकाशकरेंगे ॥ जबीसूर्यादिकोंने यास्वयंज्योतिआत्माकूं प्रकाशनकरा तबयहअग्नि आत्माकूंप्रकाशकरेगा यामेंक्याकहनाहै ॥ ताआत्माकेप्रकाशकरिही प्रकाशितहुए सूर्यादि घटादिकोंकूंप्रकाशेहैं ॥ जैसेप्रकाशरहितकाष्ठादि अग्निकेप्रकाशकरि प्रकाशितहुए पटादिकोंकूंप्रकाशेहैं ॥ तथादाहकरे हैं ॥ तैसेयाआत्माकरिकैही सूर्यादिकघटादिकोंकूंप्रकाशकरेहैं ॥ और स्वतंत्रतिनमेंअपनाप्रकाशनहीं ऐसेयाआत्माकेप्रकाशकरिही सर्व नामरूपप्रतीतहोवेहै ॥ अबब्रह्मात्माकीसर्वरूपताकूंनिरूपणकरेहैं ॥ पूर्वदिशामेंभीब्रह्मव्यापकहै ॥ तथायहब्रह्मात्मा पश्चिमदिशामेंभीस्थि-तहै ॥ दक्षिणदिशामें तथाउत्तरदिशामें तथानीचे तथाउपरि तथा च्यारिकोणोंमें ब्रह्मात्माव्यापकहै ॥ औरजाप्रपंचमेंब्रह्मव्यापकहै सो प्रपंचब्रह्मात्मासे भिन्ननहीं ब्रह्महीसर्वश्रेष्ठहै औरसर्वकाअधिष्ठानहै ॥ कल्पितवस्तु ताअधिष्ठानसे पृथक्होवेनहीं ॥ जैसेस्वप्नकाप्रपंच स्वप्न-द्रष्टासेभिन्ननहीं ॥ रज्जुमेंकल्पितसर्परज्जुसेभिन्ननहीं ॥ तैसेब्रह्ममेंकल्पि तजगत् ब्रह्मसेभिन्ननहीं ॥ अबप्रकारअंतरसे ताआत्माकानिरूपणकरेहैं तथासत्यादिसाधनोंकूंनिरूपणकरेहैं ॥ शरीररूपीवृक्षमें जीव ईश्वररूप दोपक्षीरहेहै दोनोंएकठेरहेहैं ॥ तथासत्चित्आनंदरूपसे समानस्व-भाववालेहैं ॥ जैसे किसीएकवृक्षमें दोपक्षीरहेहैं ॥ एकफलकूंभोगे दूसराउदासीनहोइकरिस्थितहोवे ॥ तैसेयहजीव शरीररूपवृक्षमेंस्थित

हुआ कर्मकेफल सुखदुःखकूंभोगेहै ॥ औरईश्वरतौ उदासीनहोइकरि प्रकाशकरताहुआ स्थितहोवेहै किंचित्भीसुखदुःखकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ ऐसे यहजीव शरीररूपवृक्षमें कर्मोंकेफलसुखदुःखका आपनेकूंभोक्ता मानताहुआ शोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ कर्मकेअनुसार प्राप्तभयेजेदुःख तिनकेदूरकरनेमें असमर्थहुआ अनंतसंतापकूंप्राप्तहोवेहै ॥ संतापकास्वरूपकिंचित्दिखावेहैं ॥ बडाकष्टहै ॥ मैं किसीकार्यकेकरणेमेंसमर्थ नहीं ॥ मैंबहुतदुःखीहूं ॥ मेरेसंबंधीमृतभयेहैं ॥ अबमेरारक्षकयासंसारमेंकौनहै ॥ औरमेरापुत्रमृतभयाहै ॥ मेरीभार्यानेपरलोकमेंगमन कराहै ॥ अबमेरेजीवनकूंधिक्कारहै ॥ ऐसे आपने शुद्ध सच्चिदानंद अखंडस्वरूपकूं नजानकरि महान्क्लेशकूं यहजीवअनुभवकरेहै ॥ और जबीनिष्कामकर्मसे चित्तशुद्धिकूंप्राप्तहुआ यहजीव शुद्धब्रह्मकूं अपना रूपजानकरि ध्यानकरेहै ॥ औरताध्यानकरणेसे यहजानेहै जो मैं नित्यशुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभावपरमानंद अद्वितीयहूं ॥ औरसर्वभूतोंमें साक्षीरूपसेमैंहीस्थितहूं ब्रह्मारूपसेजगत्की उत्पत्तिकरताहूं विष्णुरूप करिपालनकरताहूं रुद्ररूपसे जगत्कासंहारकरताहूं ॥ ऐसेआपकूं सर्वरूपजानताहुआ अद्वितीयभावकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ ताअद्वितीयभावकीप्राप्तिकरिही तापूर्वउक्तसंतापकूं निवृत्तकरेहै ॥ ब्रह्मबोधसेविना सर्वसंतापकीनिवृत्तिहोवेनहीं ॥ यातेंमुमुक्षु यत्नकरि ब्रह्मज्ञानकूंहीसंपादनकरे ॥ हेशौनक यहमुमुक्षु जबीस्वप्रकाशआत्माकूं अभेदरूपकरि निश्चयकरेहै कैसाहैसोआत्मा जाआत्मानेही हिरण्यगर्भकूंउत्पन्नकरा है ॥ तथाअन्यसर्वजगत्कूं जापरमात्मानेउत्पन्नकराहै ॥ तथासर्वजगत्काजोनियंताहै ॥ ऐसेआत्माकूंअभेदरूपसे निश्चयकरताहुआ विद्वान् अविद्याकूंनिवृत्तकरेहै ॥ अविद्याकूंनिवृत्तकरि पुण्यपापसेरहितहुआ ब्रह्मभावकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ यहआत्माही सर्वभूतरूपसेप्रतीतहोवेहै ॥ ऐसेसर्वरूपब्रह्मात्माकूंजानकरि विवेकीपुरुष अतिवादीनहींहोवेहै ॥

अर्थयह ॥ अन्यपुरुषोंकेमतकूंखंडनकरि स्वमतकूंस्थापनकरनेवाले-
कानामअतिवादीहै ॥ विवेकीजोजीवनमुक्तहै तिसकूंभेदकीप्रतीतिहोवे
नहीं ॥ यातेंहीकिसीकेमतकाखंडनकरेनहीं यातें अतिवादीहोवेनहीं ॥
जैसेबालकक्रीडाकरेहै तैसेयहविद्वान् अद्वितीयब्रह्ममेंक्रीडाकरेहै ॥
तथाजैसेयुवानपुरुष आपनीयुवानस्त्रीविषेही प्रीतिकरेहै ॥ तैसेयह
विद्वान् ब्रह्ममेंहीप्रीतिकरेहै विषयोंमें प्रीतिकरेनहीं ॥ जैसेयागकर्ता
पुरुष नानाप्रकारकीक्रियाकूंकरेहै ॥ तैसेयहविद्वान् ज्ञानध्यानवैराग्या-
दिक्रिया ताअद्वितीयआत्मामेंहीकरेहै ॥ ऐसेसर्वदा आत्मचिंतनपरायण
जोविद्वान्है सोसर्वविद्वानोंमेंश्रेष्ठहै ॥ अबताब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते
साधनोंकूंकहेहै ॥ हेशौनक मिथ्यावचनका त्यागरूपजोसत्यहै तथा
मनसहितनेत्रादिकइंद्रियोंका निरोधरूपजोतपहै तथायथार्थब्रह्मबोध-
रूपजोज्ञानहै तथाउपस्थइंद्रियका संयमरूपजोब्रह्मचर्यहै इनदृढसा
धनोंसे ब्रह्मात्माकीप्राप्तिहोवेहै ॥ जाआत्माकूं संन्यासी रागद्वेषा-
दिदोषरहितहुए आपनेअंतःकरणमेंप्रत्यक्षकरेहैं ॥ ताशुद्धस्वप्रकाश
आत्माकीप्राप्ति सत्यादिसाधनोंसेहीहोवेहै ॥ अन्यसाधनोंसे सत्यसंभाष-
णकीश्रेष्ठताकूंकहेहैं ॥ हेशौनक जोपुरुषसत्यवक्ताहै तापुरुषकाहीजय
होवेहै ॥ मिथ्यावादीकाजय कदाचित्होवेनहीं ॥ औरदेवयान-
मार्गकीप्राप्तिभी यासत्यसेहीहोवेहै॥मिथ्यावादीपुरुषकूं देवयानकीप्राप्ति
होवेनहीं ॥ जादेवयानमार्गकरि निष्कामऋषि ब्रह्मलोकमेंप्राप्तहो-
वेहैं ॥ ताब्रह्मलोकमें ज्ञानकूंप्राप्तहोइकरि अधिष्ठानकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥
अबताब्रह्मकीआश्चर्यरूपताकूं निरूपणकरेहैं ॥ यहआत्माआकाशा-
दिकोंसेभीव्यापकहै तथास्वप्रकाशहै ॥ स्वप्रकाशहोनेसेही बुद्धिका
विषयनहींहै ॥ तथासूक्ष्मजेपरमाणुआदिकपदार्थहैं तिनमेंभीव्याप-
कहोनेसे सूक्ष्मसेभीसूक्ष्महै ॥ यहब्रह्मही सूर्यचंद्रादिरूपसेप्रकाशक-
रेहै ॥ औरबहिर्मुखपुरुषोंकूं दूरपदार्थोंसेभीअत्यंतदूरहै ॥ औरजे

साधनसंपन्नहैं तथाअंतर्मुखहैं तिनकूंआपनीबुद्धिरूपीगुहामें अत्यंतसमीपप्रतीतहोंवेहै ॥ औरयाआत्माकूं नेत्रादिज्ञानइंद्रिय तथावाक्आदिकर्मइंद्रिय ग्रहणकरिसकेनहीं तथायहआत्मा केवलअग्निहोत्रादिकर्मोंसेभी प्राप्तहोवेनहीं आत्माकीप्राप्तिमें अन्यसाधनकहेहैं ॥ जो अधिकारीयास्वप्रकाश तथानिरवयवआत्माकाध्यानकरैहै ॥ तथावारंवार आत्माकारवृत्तिकेकरणेसे चित्तशुद्धिकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोविवेकी ताशुद्धअंतःकरणमें ताब्रह्मकूं आत्मरूपसेप्रत्यक्षकरैहैं ॥ हेशौनक यह सूक्ष्मआत्मा केवलशुद्धचित्तसेहीजानाजावैहै जाआत्मामेंपंचप्रकारका प्राणस्थितहै ॥ याशरीरकेहृदयदेशमेंही आत्माप्राप्तहोंवेहै ॥ जाआत्माने सर्वप्राणीयोंकेचित्त तथाप्राणव्याप्तकरेहैं जैसेघृतने दूधव्याप्तकराहै तथाजैसेअग्निने काष्ठकूंव्याप्तकराहै ऐसेसर्वप्राणीयोंकेप्राण तथाअंतःकरणकरिके उपलक्षितसर्वजगत्कूं व्याप्तकरणेहाराजोआत्माहै ॥ सोआत्माही रागद्वेषादिकलंकसेरहित शुद्धअंतःकरणमें नित्य अजर अमरपरिपूर्ण आनंदरूपकरिप्रतीतहोंवैहै ॥ अबउपासनाकेफलकूं निर्गुणआत्माकेज्ञानकीस्तुतिवासतेकहेहैं ॥ हेशौनक जोविवेकी सर्वरूपआत्माकूंही आपनास्वरूपजानैहै ॥ सोपुरुषआपनेअर्थ वाकिसीअन्यपुरुषकेअर्थ जास्वर्गादिकलोकोंकासंकल्पकरैहै तिनसर्वलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै तथासोशुद्धअंतःकरणवालाअधिकारी जिनजिनभोगोंकूंआपनेवासते वाकिसीअन्यवासतेसंकल्पकरैहैं तिनतिनभोगोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तातेंजापुरुषकूंविभूतिकीइच्छाहोवे सोपुरुष सत्यसंकल्पजोज्ञानीहै ताकावारंवारपूजनकरे ॥ औरजेमुमुक्षुनिष्कामहुए ताज्ञानीकापूजनकरैहैं तेमुमुक्षुमाताकेगर्भमेंआवैनहीं ॥ कैसा हैसोज्ञानी जाका मुमुक्षुकूंपूजनअवश्यकर्त्तव्यहै ॥ जोज्ञानी संशयविपर्ययसेरहित आपनेअखंडस्वरूपकूं भलीप्रकारजानताहै ॥ ताज्ञानीरूपब्रह्ममेंही यावत्चराचरविश्वस्थितहै तथाशुद्धस्वप्रकाशहै ॥ ज्ञानप्राप्तिमें

मुमुक्षूकूं कामनात्यागहीपरममोक्षकासाधनहै याकूंनिरूपणकरेहैं॥ हेशौ-नक जोपुरुष यालोकके भोगोंकूं वापरलोकके भोगोंकूंचाहताहै ॥ सोमूढ भोगोंकीइच्छाकरताहुआ तिनतिनभोगोंमें स्ववासनाकर्मकेअनुसार जन्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जोविवेकी आपनेयथार्थरूपकूंजानताहै ॥ सोआप्तकामहै ॥ अर्थयह ॥ सोज्ञानीहिरण्यगर्भादिरूपसे आपकूं सर्वपदार्थोंकाभोक्तामानताहुआ तुच्छविषयसुखकीइच्छाकरतानहीं ॥ यातआत्मकाम तथाआप्तकामजोज्ञानीहै ताज्ञानीकीविषयसुखोंकी सर्वकामना निवृत्तहोवेहैं ॥ अबताआत्मप्राप्तिमें साधननिरूपणकरेहैं ॥ जैसे रोगीपुरुषकूं पथ्यवारंवारनिरूपणकरणायामेंपुनरुक्तिदोषनहीं ॥ तैसेश्रुतिभगवती मुमुक्षुजनोंपरकृपाकरतीहुई वारंवारआत्माकेस्वरू-पकूं तथा ज्ञानकेस्वरूपकूं तथाज्ञानकेसाधनोंकूं कथनकरेहै यामेंभीपु-नरुक्तिदोषनहीं ॥ हेशौनक यहआत्माकेवलवेदकेअध्ययनकरिप्राप्त होवेनहीं ॥ तथातीक्ष्णबुद्धिकरिकैभी प्राप्तहोवेनहीं ॥ और अनंतअ-नात्मप्रतिपादकशास्त्रकेश्रवणसेभी प्राप्तहोवेनहीं ॥ जाआत्माकूंअभे-दरूपसे अधिकारी चिंतनकरेहै सोमुमुक्षुध्याताही ताआत्माकूंप्राप्तहो-वेहै ॥ तामुमुक्षुध्याताकूंही आत्मा आपनेशुद्धसच्चिदानंदअद्वितीय-रूपकूं प्रकटकरेहै जैसेशुद्धअचलजलमें सूर्यकाप्रतिबिंबस्पष्टप्रतीत होवेहै ॥ तैसेनिष्कामकर्मसे शुद्ध तथाध्यानकरणेसेएकाग्रअंतःकर-णमें ताशुद्धआत्माकीअभिव्यक्तिहोवेहै ॥ और कामक्रोधादिकश-त्रुवोंकरिकै नहीं वशभयेजे मनइंद्रियादिकहैं तिनमनइंद्रियादिकोंका स्ववशकरणारूपजोधैर्यहै ताधैर्यसेरहितपुरुष याआत्माकूंप्राप्तहोवे नहीं ॥ तथाविषयोंमें आसक्तिहोनेसे जोकर्त्तव्यकाविस्मरणरूप-प्रमादहै ताप्रमादकरिआत्माकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ तथासंन्यासर-हितशुष्कज्ञानसेभीआत्मप्राप्तिहोवेनहीं ॥ यद्यपि इंद्र अजातशत्रु जनक गार्गी इत्यादिकोंनेसंन्यासनहींकरा और आत्माकेवास्तवरूपकूं

प्राप्तभयेहैं ॥ यातेंसंन्यासरहितकेवलज्ञानसे ताआत्माकीप्राप्तिहोवेनहीं यहकथनविरुद्धहै ॥ यथापिसंन्यासविनातौ आत्माकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ जनकआदिकोंकेभी जन्मांतरकासंन्यासथाऔरइसजन्ममेंभी अंतरसे संन्यासथा औरकेवलबाह्यसंन्यासकाभी मोक्षमेंअतिउपयोगनहीं किंतुअंतरसंन्यासकाही उपयोगहै ॥ और यदिअंतरसंन्यासभीहै और दृष्टविक्षेपनिवृत्तिअर्थ बाह्यसंन्यासभीहै तौताकामहिमाक्याकहें ॥ ताअंतरसंन्यासपूर्वकबाह्यसंन्यासकूं श्रुतिभगवतीने और सर्ववर्णआश्रमधर्मोंसेश्रेष्ठकहाहै ॥ यातें शुष्कज्ञानसे ताआत्माकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ औरजोविवेकीधैर्यसहितहै ॥ तथाप्रमादसे रहितहै ॥ तथासंन्यासकूं प्राप्तभयाहै ॥ औरआत्माकीप्राप्तिवासतेवेदांतश्रवणादिकोंमेंयत्नकूंकरताहै ॥ सोविवेकीब्रह्मरूपधामकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अबजीवन्मुक्तिफलकूंकहेहैं ॥ हेशौनक जेविवेकीज्ञानकरि याआत्माकूंप्राप्तभयेहैं तेविद्वान् आपनेस्वरूपज्ञानकरिहिसर्वदातृप्तहोवेहैं ॥ औरशरीरकूंस्थूलकरणेहारेजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंकरितृप्तनहींहोवेहैं तथावीतरागहैं तथाचित्तशांतिकूंप्राप्तभयेहैं ॥ ऐसेजीवन्मुक्त परिपूर्णअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकूं प्राप्तहुए तथासर्वदासमाहितहुए शरीरस्थितिकालमेंभीब्रह्ममेंहीस्थितहैं॥ ऐसेजीवन्मुक्तोंने वेदांतकेश्रवणसे ब्रह्मैक्यनिश्चयकराहै तथासंन्यासके करणेसे जेसंन्यासीअंतःकरणकीशुद्धिकूंप्राप्तभयेहैं ॥ ऐसेजीवन्मुक्त प्रारब्धकूंभोगकरि नाशकरतेहुए तथाब्रह्मभावकूंप्राप्तहुएं मोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ अबजैसेप्राणादिकोंकालयहोवेहै ताकूंनिरूपणकरेहैं ॥ याज्ञानीकीप्राणादिपंचदशकलावोंका आपनेआपनेकारणमेंलयहोवेहै ॥ तेकलाप्रश्नउपनिषत्केभारद्वाजऋषिकेप्रसंगमें हमकथनकरिआयेहैं ॥ नेत्रादिकोंमेंअध्यात्मरूपसेस्थित जेसूर्यादिकहैं तेआपने अधिदैवरूपदेवभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तथाकर्मयाविद्वान्केनाशहोवेहैं ॥ औरयाविद्वान्कावुद्धिउपाधिवाला जोविज्ञानमयनामाजीवहै सोजीवस्थूलसू-

क्ष्मउपाधिकेनाशहोनेसे ब्रह्ममेंएकताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जैसेघटकेनाशहोनेसे महाकाशरूपसैघटाकाशस्थितहोवेहै ॥ तैसेबुद्धिआदिउपाधिकेनाशहोनेसे जीवात्माभीब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यद्यपि बृहदारण्यकउपनिषत्में सर्वप्राणादिकोंका ब्रह्ममेंलयकथनकराहै औरइसउपनिषत्में आपनेआपनेकारणमेंलयकथनसेविरोधप्रतीतहोवेहै ॥ तथापि जोजाकाकार्यहोवेहै ताकारणमेंताकालयहोवेहै यहलोकमेंनियमहै ॥ यानियमकूंआश्रयकरिकेही याश्रुतिनेआपनेआपनेकारणमें प्राणादिकोंका लयप्रतिपादनकराहै ॥ औरबृहदारण्यकीश्रुतितौ ज्ञानीकीदृष्टिकूंआश्रयकरि प्राणादिकोंका ब्रह्ममेंलयकथनकरेहै ॥ श्रुतिद्वयकातात्पर्ययहहै ॥ प्राणादिककलाका लयतौ आपनेआपनेउपादानमेंहोवेहै ॥ औरतिनकलावोंकेउपादान वायुआदिकोंकालयब्रह्ममेंहोवेहै ॥ ऐसे सर्वअनात्मपदार्थोंका ब्रह्ममेंलयहोवेहै यातेंकिंचित्भीविरोधनहीं ॥ हे शौनक जैसेगंगायमुनादिकनदीयां समुद्रकूंगमनकरतीहुई समुद्रमेंलयभावकूंप्राप्तहोवेहैं औरनामरूपकूंत्यागकरेहैं तैसेयहविद्वान् नामरूपसेरहितहुआ अज्ञानतत्कार्यसेरहित जोशुद्धआत्मदेवहै ताकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ हेशौनक जोकोईविवेकी आत्माकेयथार्थरूपकूंजानताहैसोब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यामेंश्रुतिपाठदिखावेहैं ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ॥ जोब्रह्मकूंजानताहै सोब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ इसब्रह्मवेत्ताकेसंतानमें अब्रह्मवित्नहीं होवेहै किंतुब्रह्मवित्हीहोवेहै ॥ यथासोब्रह्मवेत्तासर्वशोककूंनिवृत्तकरेहै ॥ तथाधर्माधर्मरूपसे तथाअध्यासरूपग्रंथिसेरहितहोवेहै ॥ यामुंडकउपनिषत्केपठनकीरीतिकहेहैं ॥ आगेका मंत्र विद्याकेसंप्रदायकूंही निरूपणकरेहै ॥ जेअधिकारीआपनेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूंकरेहैं तथावेदअध्ययन तथासगुणब्रह्मकीउपासनापरायण हैं ॥ औरनिर्गुणब्रह्मकीजिज्ञासावालेहैं तथाशिरमेंअग्निधारणरूपव्रत जिनअधिकारीयोंनेधारणकराहै ॥ एकर्षिनामकरिप्रसिद्धजो आथर्व-

णिकोंका अग्निहै तामेंश्रद्धासेहवनकरतेहैं तिनअधिकारीजनोंकूंही यामुं-
डकउपनिषत्काउपदेशकरे ॥ और अंगिरानामाऋषिने आपनेशरण-
कूंप्राप्तभयाजोशौनकहै ताशौनककेप्रति सत्यरूपआत्माकाउपदेशकरा-
है ॥ जेपुरुषमुमुक्षुहुए वैराग्यादिकोंकरिसंपन्नहैं ॥ तिनकूंतौश्रवणक-
रीउपनिषत् ब्रह्मज्ञानप्राप्तिद्वारामोक्षकरेहै ॥ यातेंसाधनसहितहुआही
याउपनिषत्कूंपठनकरे ॥ औरजाने शिरमेंअग्निधारणरूपव्रतकूं तथा
वैराग्यादिसाधनोंकूं नहींसंपादनकरा सोपुरुषयाउपनिषत्कूंपठनकरे-
नहीं ॥ जिनब्रह्मादिकऋषीयोंसे यहब्रह्मविद्या यासंसारमेंप्राप्तभयीहै ॥
तथाहमअधिकारीयोंकूं प्राप्तभयीहै ॥ तिनसर्वऋषीयोंकूं हमअधिका-
रीजनोंका वारंवारप्रणामहै ॥ ॥ ॐशांतिःशांतिःशांतिः ॥
इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य-श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादशिष्य-
संप्रदायप्रविष्टपरमहंसपरिव्राजकस्वामि-अच्युतानन्दगिरिविरचिते प्राकृ-
तोपनिषत्सारेमुंडकोपनिषदर्थनिर्णयः ॥ ५ ॥

इति मुंडकोपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ॥५॥

श्रीः ।

अथ

मांडूक्योपनिषद्भाषांतरम् ।

ॐनमःपरमात्मने ॥ अबअथर्वणवेदकीमांडूक्यउपनिषत्‌के अर्थकूं निरूपणकरेहैं ॥ ॐकारही यहसर्वनामरूपप्रपंचहैॐकारसेभिन्ननहीं ॥ तात्पर्ययह जोब्रह्मसर्वकाअधिष्ठानहै कल्पितवस्तु अधिष्ठानसेभिन्न होवेनहीं ॥ यातेंब्रह्मसे किंचित्‌भीभिन्ननहीं औरताअधिष्ठानब्रह्मकावाचकहोनेसेॐकारहीब्रह्महै ॥ और जैसेशालिग्राममें विष्णुमूर्तिकाध्यानकरनेसे शालिग्रामकूंविष्णुरूपताहै ॥ तैसेयाॐकारमें ब्रह्मस्वरूपकाध्यानकरनेसेॐकारभीब्रह्मरूपहै ॥ तथाजैसेभ्रांतिकालमें प्रतीतभयाजोचोरहै सोस्थाणुकेनजाननेसेही प्रतीतहोवेहै ॥ जबी स्थाणुकायथार्थबोधहोइजावे तबचोरबाधहोइजावेहै ॥ तबऐसीप्रतीतिहोवेहै जोयहचोरहै सोस्थाणुहै याकूंही बाधसामानाधिकरण्यकहेहैं ॥ तैसेॐकारका अधिष्ठानब्रह्महै यातेंॐकारब्रह्महै यामेंभीबाधसामानाधिकरण्यहै ॥ औरनामके आधीननामीकीसिद्धिहोवेहै ॥ ॐकारभीब्रह्मकानामहै नामसेनामीभिन्नहोवेनहीं तैसेॐकारनामसेनामीब्रह्म भिन्ननहीं ॥ औरजैसेअर्थप्रपंचमेंव्यापकब्रह्महै तैसेशब्दप्रपंचमेंव्यापक ॐकारहै ॥ यातेंव्यापकताकूंग्रहणकरि ॐकारहीब्रह्महै ॥ औरताब्रह्मसे कार्यप्रपंचभिन्ननहीं तथाब्रह्मरूपॐकारसेभी यहप्रपंचभिन्ननहीं यातेंयहसिद्धभयाॐकारहीसर्वनामरूपप्रपंचहै अबताॐकारकास्पष्ट कथनकरेहैं ॥ जेतीनकालकरिपरिच्छिन्नपदार्थ हैं तेसर्वॐकाररूपहैं॥ औरजोअनादि अव्यक्तसाभासअज्ञानहै सोकालकाभीकारणहोनेसे

कालकरिपरिच्छिन्ननहींहै ॥ तथा हिण्यगर्भसे पूर्ववर्षादिरूपकाल न होताभया ऐसेश्रुतिभगवतीकहेहै यातेंत्रिकालअतीत अव्यक्त तथा हिरण्यगर्भयहदोनों हैं ॥ तेदोनों अव्यक्त तथाहिरण्यगर्भ ॐकारसेभिन्न नहीं ॐकाररूपहीतेदोनों हैं ॥ पूर्वतौॐकारहीसर्वनामरूपप्रपंचहै ऐसे श्रुतिमेंकहाथा अबसर्वजोवाच्यप्रपंचहै ताप्रपंचकूं वाचकजोॐकारहै तावाचकॐकाररूपसेनिरूपणकरेहैं ॥ प्रयोजनतौदोनोंकेपरस्पर अभेदकथनकायहहै जोवाच्यवाचकदोनोंकूं शुद्धब्रह्ममेंलयकरि अधिष्ठाननिर्विशेषब्रह्मकूंनिश्चयकरे ॥ यहसर्वप्रपंचब्रह्मरूपहै ॥ ऐसेपरोक्षरूपसे कथनकराजोब्रह्महै ताब्रह्मकूंहीश्रुतिभगवतीआपनेहस्तकूं हृदयदेशमेंप्राप्तकरि प्रत्यक्षरूपसेकथनकरेहै ॥ अतिकृपावतीजामहावाक्यरूपाश्रुतिहै साश्रुतिआपनेअतिप्रियमुमुक्षुजनोंकूं यहउपदेशकरेहै ॥ भोमुमुक्षवः ॥ अयमात्माब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ नित्यअपरोक्षजोयहसाक्षीआत्माहै ॥ यहसाक्षीआत्माहीब्रह्महै यातेंब्रह्मभिन्ननहींजानना ॥ ऐसेमहावाक्यके श्रवणसेभी जामंदबुद्धिपुरुषकूं ज्ञानभयानहीं तापुरुषकेबोधवासते अबताआत्माके च्यारिपादकथनकरेहैं ॥ यहआत्माही चतुष्पादहै ॥ जैसेएकरूपीयाविषेव्यवहारवासते च्यारिभागकहेजावेहैं ॥ तैसेएक आत्मामें मुमुक्षुजनोंकेबोधअर्थ च्यारिपादकावर्णनहैं ॥ जैसे विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय यहजीवकेच्यारिपादहैं तैसे विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वरं तथाईश्वरसाक्षी यहईश्वरकेच्यारिपादहैं ॥ अबविराट्काविश्वसे अभेदकूंमनमेंधारिकरि विश्वरूपप्रथमपादकूं वर्णनकरेहैं ॥ विश्वसेअभिन्न जोविराट्है ॥ यहआत्माकाप्रथमपादहै ॥ कैसाहै यहविश्वअभिन्नविराट् जागरितअवस्था तथास्थूलशरीरकाअभिमानीहै ॥ बाह्यशब्दादिकोंमेंवृत्तिवालाहै ॥ याविश्वअभिन्नविराट्के सप्तअंगहैं ॥ स्वर्गलोकमस्तकहै ॥ चंद्रसूर्यनेत्रहैं ॥ वायुप्राणहै ॥ आकाशधडहै ॥ समुद्रादिरूपजलमूत्रस्थानहै ॥ पृथिवीपादहैं ॥ जाअग्निमेंहवनकरेहैं ताअग्निकूं

आहवनीयकहेहैं सोआहवनीयअग्नि याविश्वअभिन्नविराट्कामुखहै ॥ औरयाविश्वकेउनीसमुखहैं ॥ तथाहि ॥ पंचकर्मइंद्रिय पंचज्ञानइंद्रिय पंचप्राण मन बुद्धि अहंकार चित्त यहच्यारिअंतःकरण ॥ यहउनीसही मुखकीन्यांई भोगकेसाधनहोनेसे मुखकहेजावेहैं ॥ याविश्वकूं स्थूलभुक्भीकहेहैं ॥ स्थूलशब्दादिकविषयोंकूं भोगेहै यातेंहीस्थूलभुक्है ॥ औरयहहीसर्वनररूपहैंयातेंवैश्वानरहै ॥ यहप्रथमपादनिरूपणकरा ॥ अबद्वितीयपादकूंकहेहैं ॥ व्यष्टिसूक्ष्मशरीरकेअभिमानीतैजसका समष्टिसूक्ष्मशरीरकेअभिमानी हिरण्यगर्भकेसाथअभेदहै ॥ हिरण्यगर्भसे अभिन्न तैजसही स्वप्नअवस्थाकाअभिमानीहै ॥ औरयहतैजस मनोमात्रजेपदार्थ हैं तिनकूंभोगेहै ॥ यातेंहीतैजसकूं अंतःप्रज्ञकहेहैं ॥ अर्थ यह ॥ अंतरहै सूक्ष्मअविद्यारचितपदार्थोंमें प्रज्ञाजाकी ताकानामअंतःप्रज्ञहै ॥ जैसे सप्तअंग उनीसमुखविश्वकेकहे तैसेहीतैजसकेहैं विश्वकेतौ ईश्वररचितहैं ॥ औरतैजसकेमनोमात्रहैं ॥ अबतृतीयपादकेनिरूपणवासते सुषुप्तिअवस्थाकूंप्रथमकहेहैं ॥ जाअवस्थामेंप्राप्तहुवायहजीव किसीभोगमेंइच्छाकरेनहीं ॥ तथाजाअवस्थामें अनेकप्रकारकेविपर्ययरूपस्वप्नदर्शनकूंकरेनहीं ॥ ताअवस्थाकूंसुषुप्तिकहेहैं॥ऐसीसुषुप्तिअवस्थावाला ईश्वरअभिन्नप्राज्ञही तृतीयपादहै ॥ ताव्यष्टिकारणशरीरअविद्याकेअभिमानीप्राज्ञकेही विशेषणकहेहैं ॥ यहप्राज्ञ सुषुप्तिमें ईश्वरकेसाथएकताकूंप्राप्तहोवेहैं याकूंहीप्रज्ञानघनकहेहैं ॥ जाग्रतकेतथा स्वप्नकेसर्वज्ञान अविद्यामेंएकरूपहोइजावेहैं ॥ इसीसेयाकूं प्रज्ञानघन कहा ॥ तथाअधिकआनंदकूंप्राप्तहोवेहै यातेंआनंदमयकहेहैं ॥ और यहप्राज्ञही अविद्याकीवृत्तियोंसे अज्ञानआवृतआनंदकूंभोगेहैं यातें आनंदभुक्है ॥ औरजाग्रतस्वप्नकेज्ञानमेंद्वाररूपसेजोस्थितहोवे ताकूं चेतोमुखकहेहैं ॥ प्राज्ञहीजाग्रतस्वप्नमेंद्वारहै यातें ताकूंचेतोमुखकहेहैं ॥ याकूंहीभूतभविष्यत् वर्तमानपदार्थोंकाज्ञान जाग्रत्स्वप्नमेंहोताभया यातें

प्राज्ञकहेहैं ॥ जाग्रतस्वप्नकेज्ञानोंसे रहित केवलचेतनप्रधानतारूपकरि स्थितहोनेसेभी यातृतीयपादकूंप्राज्ञकहेहैं ॥ अबप्राज्ञकूं ईश्वररूपताकेसूचनअर्थईश्वरकेधर्मोंका प्राज्ञमेंवर्णनकरेहैं ॥ यहप्राज्ञहीसर्वकाईश्वरहै ॥ तथायहप्राज्ञही सर्वज्ञहै ॥ यहप्राज्ञही सर्वभूतोंकेअंतरस्थितहुआ सर्वकानियंताहै ॥ तथासर्वभूत याप्राज्ञसेहीउत्पन्नहोवेहैं औरयाप्राज्ञमेंहीलयहोवेहैं ॥ अबचतुर्थपादकूं साक्षात्‌शब्दकाअविषयहोनेसे निषेधमुखसे ता तुरीयआत्मारूपचतुर्थपादकानिरूपणकरेहैं ॥ यहतुरीयआत्मा तैजसनहींहै॥ तथाविश्वनहीं है॥ तथाजाग्रत्‌स्वप्नअवस्थाकेजा मध्यअवस्थाहै साअवस्थाभी तुरीयरूपआत्मानहीं ॥ तथासुषुप्तिअवस्था आत्मानहीं ॥ तथाएककालमें सर्वविषयोंकाज्ञातानहीं ॥ तथासर्वपदार्थोंकाअज्ञाताभीनहीं ॥ औरयहतुरीयआत्मानिर्विशेषहोनेसेही ज्ञानइंद्रियोंकाअविषयहै ॥ यातेंहीक्रियासेरहितहै तथाकर्मइंद्रियोंकाअविषयहै तथास्वतंत्रअनुमानकाअविषयहै ॥ तथाबुद्धिकाअविषयहै तथाशब्दकाअविषयहै ॥ सर्वप्रकारसेआत्माकूं अविषयहोनेकरिप्राप्तभयीजाशून्यताकीशंका ताशंकाकूंनिवृत्तकरतेहैं ॥ यह आत्मात्रितयअवस्थामेंअनुगतहोइकेप्रकाशकरेहै ऐसीवृत्तिकरिजाननेयोग्यहै यातेंशून्यताकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ तथातुरीयआत्माआपनीसिद्धिमें आपहीप्रमाणहै यातेंभीशून्यताकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ तथासर्वप्रपंचकाजातुरीयमेंअभावहै ॥ तथानिर्विकारहै तथाशुद्धपरमानंदबोधरूपहै तथाभेदकल्पनासेरहितहै तथा तीनपादसेविलक्षणहैं इसीसे या आत्माकूंचतुर्थकहेहैं ॥ तिनकी अपेक्षासेतुरीयकह्याजावेहैं औरउक्तपादत्रय याआत्मासेभिन्नवास्तवहैंनहीं यातेंयाआत्माकूंतुरीयकथनकेवलउपदेशअर्थ है ॥ कोईश्रुतिभगवती स्वअभिप्रायसे याआत्माकूंतुरीयरूपतानहींकहेहैं ॥ ऐसेसर्वकल्पनासेरहिततुरीयआत्माकूंही विवेकीपुरुष आत्मरूपसे मानतेहैं भिन्नरूपसेमानेनहीं ॥ ऐसाआत्मा

सर्वकल्पनाका अधिष्ठानतुरीयहीमुमुक्षुकूंजाननेयोग्यहै ॥ याकेज्ञानसे मुमुक्षुकृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ अबविश्वआदिकपादोंका आकारादिमात्राओंसे अभेदवर्णनकरेहैं ॥ पूर्वचतुष्पाद्रूपसे निरूपणकराजो आत्मा सोआत्मा ॐकाररूपहै ॥ ॐकारकीतीनमात्राहैं प्रथमकानाम अकारहै द्वितीयकूंउकारकहेहैं तृतीयकूंमकारकहेहैं ॥ अबजामात्रासे जाआत्माकेपादका अभेदहैताकूंकहेहैं॥जागरितअवस्थावालाजोविश्वसे अभिन्नवैश्वानरहै सो प्रथमअकारमात्रारूपहै ॥ अभेदकेसंपादक तुल्यधर्मकूंवर्णनकरेहैं ॥ जैसेसर्वप्रपंचमें व्यापकविराट्है तैसेअकारहीसर्ववाक्रूपहै ऐसे श्रुतिमेंकहाहै यातेंआकारभीव्यापकहै ॥ जैसेआत्माकेपादोंमेंप्रथमपादविराट्है तैसेओंकारकीमात्रामें प्रथममात्रा अकारहै ॥ ऐसे व्यापकतातथाप्रथमतारूपदोसमानधर्मोंसे दोनोंकीएकताहै ॥ अब दोसमानधर्मोंसे प्रथमपादकीप्रथममात्रासे जोपुरुषअभेद चिंतनकरेहै ताकूंफलप्रतिपादनकरेहैं॥ जोपुरुषप्रथमपादका प्रथममात्रासे उक्ततुल्यधर्मोंकरि अभेदचिंतनकरेहैं ॥ सोपुरुषसर्वकामनावोंकूंप्राप्तहोवेहै तथा सर्वमहात्मावोंकेमध्यमें अग्रणीयहोवेहै ॥ स्वप्नअवस्थावालाजोतैजसहै सोद्वितीयउकारमात्रारूपहै ॥ दोनोंमेंसमानधर्मयहहैं उत्कृष्टता तथा द्वितीयता ॥ तैजसरूपद्वितीयपादमें तथाउकाररूपद्वितीयमात्रामें समान धर्मउत्कृष्टतातथाद्वितीयतारूपजानकरि जोपुरुषदोनोंकाअभेदचिंतनकरताहै ताकूं फलप्राप्तिकहेहैं ॥ उच्चारणकी अपेक्षासे उकारमेंउत्कृष्टतागौणजाननी ॥ वास्तवसे तोउत्कृष्टतासर्ववर्णोंमेंव्यापकजो अकारहै तामेंहीहै ॥ ऐसेद्वितीयपादमें औरद्वितीयमात्रामें उत्कृष्टतारूपसमानधर्मकरिअभेदचिंतनसे अत्यंतज्ञानकीवृद्धिकूं पुरुषप्राप्तहोवे है ॥ तथाद्वितीयरूपसमानधर्मकरिअभेदचिंतनसे शत्रुमित्रमेंसमानतारूप फलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ दोनोंधर्मोंकरिअभेदचिंतनसे यावक्ष्यमाणफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ याध्यातापुरुषकीकुलमें कोईअज्ञानीपुत्रादिकनहींहोवे

हैं किंतुसर्वब्रह्मवेत्ताहीहोवेहैं ॥ सुषुप्तिअवस्थावालाप्राज्ञतृतीयमात्रारूपहै ॥ विश्वतैजसकूं उत्पत्तिप्रलयमें निर्गमनसे तथाप्रवेशसेप्राज्ञ परिमाणरूप मिनतीकरेहै ॥ तथाॐकारकेवारंवारउच्चारणकरणेसे अकार उकारकामकारमेंलय तथामकारसेउत्पत्तिप्रतीतहोवेहै ॥ यातें उत्पत्तिप्रलयकालमें मकार अकारउकारदोनोंकीमिनतीकरेहै ॥ यामिनतीरूपधर्मसे प्राज्ञकातथामकाररूपतृतीयमात्राका अभेदकह्या ॥ जैसे ॐकारकेउच्चारणकरे मकारमें अकारउकारकीसमाप्तिहोनेसेदोनोंकी मकारमेंएकताहोवेहै ॥ तैसेविश्व तैजस सुषुप्तिमेंप्राज्ञविषे एकताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ याएकीभावरूपसमानधर्मसे प्राज्ञकामकारसेअभेदहै ॥ अब प्राज्ञ मकारकेअभेदचिंतनका फलवर्णनकरेहैं ॥ जोपुरुष प्राज्ञकामकारसे मिनतीरूपसमानधर्मकरि अभेदचिंतनकरेहै ॥ सोपुरुषजगत्के यथार्थस्वरूपकूंजानेहै ॥ औरएकीभावरूपसमानधर्मसे जोपुरुष प्राज्ञकामकारसेअभेदचिंतनकरेहै ॥ सोपुरुष सर्वजगत्काकारणहोवेहै ॥ ईहांजोविश्वकाअकारमें अभेद तथातैजसकाउकारसे अभेद तथाप्राज्ञकामकारसे अभेद ऐसेअभेदकूंनिरूपणकरिकेपुनःया त्रितयअभेदचिंतनके जेभिन्नभिन्नफलनिरूपणकरे ॥ तेप्रधानॐकारकेध्यानवासतेकहे हैं ॥ यातेंॐकारकेध्यानकीस्तुतिरूपहोनेसे अर्थवादरूपजानने ॥ श्रुतिभगवती भिन्नभिन्नफलनिरूपणमें तात्पर्यवालीनहीं ॥ किंतु प्रधानजो ॐकारकाध्यानताकेफलनिरूपणमेंही श्रुतिभगवतीकातात्पर्यहै ॥ अन्यथाउपासनाकीअनेकताप्राप्तहोवेगी ॥ औरकेवलएकॐकारकाध्यानही श्रुतिमेंविवक्षितहै ॥ अबचतुर्थपादजोतुरीयहै ताकाअमात्रॐकारके साथ अभेदनिरूपणकरेहैं ॥ जोचेतनअध्यस्तत्रिमात्रावालेॐकारके साथ अभेदरूपसेप्रतीतहोवेहै सोईहांॐकाररूपसेविवक्षितहै ताॐकाररूपचेतनकी परब्रह्मकेसाथएकताहोवेहै॥ऐसेमात्राकल्पनासेरहित जोॐकारकावास्तवअमात्ररूपहै ताअमात्ररूपका तुरीयसेअभेदहै॥अमात्ररूप

तुरीय क्रियासेरहितहै तथाप्रपंचकेसंबंधसेशून्यहै तथाआनंदरूपहै और सर्वभेदकल्पनासे रहितहै ॥ ऐसेजाननेवालाअधिकारी आपने पारमार्थिकस्वरूपमें प्रवेशकरेहैं ॥ अज्ञानकेनिवृत्तहोनेसे पुनःजन्ममृत्युकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ ॐकारकेध्यानसेहीकृतार्थताहोवेहै ॥ याअर्थकूंकारिकासेकहेहैं ॥ युंजीतप्रणवेचेतःप्रणवोब्रह्मनिर्भयम् ॥ प्रणवेनित्ययुक्तस्यनभयंविद्यतेक्वचित् ॥ १ ॥ अर्थयह ॐकारनिर्भयब्रह्मरूपहै ॥ यातेॐकारमेंचित्तकूंपुरुषजोडे ॥ और जोपुरुष ॐकारमें चित्तकूंजोडताहै ॥ तापुरुषकूंकहींभी भयप्राप्तहोवेनहीं ॥ १ ॥ या स्थानमेंयहनिष्कर्षहै ॥ पूर्वनिरूपणकराजोविराट्सेअभिन्नविश्व सोअकाररूपकह्याहै ताविश्वरूपअकारका तैजसरूपउकारमेंलयकरे ॥ विश्वरूपअकार तैजसरूपउकारसेभिन्ननहीं ऐसेचिंतनकानाम याउपनिषत्मेंलयचिंतनइष्टहै ॥ ऐसे औरमात्रामेंभीजानलेना ॥ तथातैजसरूपउकारका प्राज्ञरूपमकारमेंलयकरे ॥ प्राज्ञरूपमकारका ॐकारकेपरमार्थरूपअमात्रमेंलयकरे ॥ काहेते ॥ स्थूलकीउत्पत्ति तथा लय सूक्ष्ममे होवेहैं ॥ यातेंस्थूल विश्वरूपअकारकासूक्ष्मतेजसरूपउकारमेंलयकह्या ॥ सूक्ष्मकीउत्पत्ति औरलय कारणमेंहोवेहैं यातेंसूक्ष्मतैजसरूप उकारका कारणप्राज्ञरूपमकारमेंलयकह्या ॥ विश्वादिकोंकेलयकथनसे समष्टिविराट् तथाहिरण्यगर्भभी ग्रहणकरिलेने ॥ जाप्राज्ञरूप मकारमें तैजसअभिन्नहिरण्यगर्भरूपउकारका लयनिरूपणकरा ॥ ताईश्वरअभिन्नप्राज्ञरूपमकारका तुरीयरूपजो ॐकारकापारमार्थिक अमात्ररूपहै तामेंलयकरे ॥ काहेते ॥ ॐकारका परमार्थरूपअमात्रहै सोअमात्रतुरीयरूपहै तातुरीयकाब्रह्मसेअभेदहै शुद्धब्रह्ममें मायाउपाधिविशिष्टईश्वर तथाअविद्याविशिष्टप्राज्ञ दोनूं कल्पितहैं ॥ कल्पितवस्तु अधिष्ठानसेपृथक्होवेनहीं यातेंईश्वरअभिन्नप्राज्ञरूपमकारकालय अमात्रमेंनिरूपणकरा ॥ ऐसेजोॐकारके

वास्तवअमात्रस्वरूपमें सर्वकालयकराहै सोमेरास्वरूपहै ॥ सर्व नाम-रूपप्रपंचकाअधिष्ठान नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावपरमानंदअद्वैतस्वरूप जो ॐकारकापारमार्थिकस्वरूपहै सोईमैंहूं ॥ ऐसेचिंतनसे ज्ञान उदयहोवेहै ॥ ऐसेज्ञानद्वारामोक्षकेकरणेहारा यहप्रणवरूप ॐकारकाचिंतनहै ॥ जोपुरुष याप्रकारसे ॐकारकेध्यानकूंकरताहै ताकूं श्रीगौडपादाचार्यवृद्ध मुनिरूपकरिवर्णनकरतेभये ॥ जोपुरुष अनेकप्रकारके अनात्मप्रतिपादकशास्त्रकूं जानताभीहै ॥ परंतु याॐकारकेध्यानसेरहितहै ॥ तौभीसोपुरुषमुनिनहींहै ॥ परमहंसमहात्माघोंकूं यहअतिप्रियहै ॥ तथाजोबहिर्मुखहै तथारागद्वेषादिदोषकरिदूषितअंतःकरणहै ताका या ॐकारकेध्यानमें अधिकारनहीं ॥ जोपुरुष रागद्वेषादिदोषरहितहै तथाअंतर्मुखहै ताकायाॐकारध्यानमेंअधिकारहै ॥ जापुरुषकीभोगोंमेंकामनानहीं ताकूंइसजन्ममेंही याध्यानसेज्ञानप्राप्तहोवेहैं ॥ जापुरुषकी परलोककेभोगोंमेंकामनातौहै परंतुताकामनाकूं रोककरि गुरुमुखसे ॐकारकेउपदेशकूंश्रवणकरि ॐकारकाध्यानकरेहैं ॥ ताप्रतिबंधकेवशसेज्ञानतौहोवेनहीं ॥ किंतु देवयानमार्गकरि ब्रह्मलोकमेंप्राप्तहोवेहैं ॥ ताब्रह्मलोकमेंप्राप्तहुआ सोउपासक ईश्वरकेसमानसत्यसंकल्पहोवेहै ॥ परंतुजगत्कीउत्पत्तिआदिकोंकेकरणेमेंतौईश्वरमेंही सामर्थ्यहै ॥ उपासकमें जगत्के उत्पत्तिआदिककरणेकासामर्थ्यहोवेनहीं ॥ और उपासक ता लोकमेंहीज्ञानकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरप्रलयकालमें जबीब्रह्मलोककानाशहोवेहैं तबहिरण्यगर्भकेसाथही यहउपासकविदेहकैवल्यकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरयदिॐकारके ध्यातापुरुषकी यालोककेभोगोंमें कामनारही होवे तौयालोकमें जेशुद्धकुलवालेधनाढ्यहै तिनकेगृहमें सोयोगभ्रष्टउत्पन्नहोवेहैं ॥ ताजन्ममेंअनेकप्रकारकेभोगोंकूं भोगकरि वैराग्यकूंप्राप्तहुआ ॐकारकेध्यानमें वाश्रवणादिकोंमेंप्रवृत्तहोइकरि ज्ञान-

द्वारामोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ औरॐकारकेध्यातापुरुषकी जबीयालोककेवापरलोककेभोगोंमें कामनातौहैनहीं ॥ कोईप्रारब्धकर्मरूपभावीप्रतिबंधहै तौ ताध्यातापुरुषकाद्वितीयजन्मयोगीतथाज्ञानीपुरुषोंके कुलमेंहोवेहै ॥ ताद्वितीयजन्ममें अभ्यासवैराग्यादिसाधनोंकूंसंपादनकरताहुआ ज्ञानप्राप्तिद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ऐसीयोगभ्रष्टकी व्यवस्थाभगवद्गीताके अनुसार हमनेलिखीहै ॥ औरमांडूक्यउपनिषत्का तात्पर्यरूपवृद्धश्रीगौडपादाचार्योंकी यां कारिकाहै ॥ तिनकारिकावोंके च्यारिप्रकरणहैं ॥ तिनच्यारिप्रकरणोंकाभाष्य भगवत्पूज्यपादश्रीशंकरस्वामिने विस्तारसेकराहै ॥ च्यारिप्रकरणोंके नामयहहै ॥ प्रथमकानामॐकारप्रकरणहै ॥ द्वितीयका नाम वैतथ्यप्रकरणहै ॥ तृतीयकानामअद्वैतप्रकरणहै ॥ चतुर्थकानाम अलातशांतिप्रकरणहै ॥ प्रथमॐकारप्रकरणमें मूलमांडूक्यउपनिषत्कीव्याख्याहै ॥ तिसमूलमांडूक्यउपनिषत्का अर्थतौ हमनेकहदीया ॥ उपनिषत्कातात्पर्यरूप जेआगेकेतीनप्रकरणहैं तिनमेंभीकेवलसिद्धांतकाहीनिरूपणहै ॥ परंतुग्रंथविस्तारकेभयसे हमतिनसर्वकीभाषानहीं करेहैं ॥ औरअत्यंतसंक्षेपसे तिनकाभावअर्थकहेहैं ॥ द्वितीयवैतथ्यप्रकरणकासंक्षिप्तअर्थयहहै ॥ प्रथमॐकारप्रकरणमें अद्वैतकाश्रुतिके बलसेनिरूपणकरा ॥ याद्वितीयप्रकरणमें युक्तिकेबलसे प्रपंचमेंमिथ्यात्वनिरूपणकराहै ॥ यहसंपूर्णप्रपंचमिथ्याप्रतीतहोवेहै ॥ जैसेस्वप्नमें मिथ्याहीपदार्थ सत्यरूपसेप्रतीतहोवेहैं जाग्रतकालमेंतिनसर्वकाबाधहोइजावेहै ॥ तैसेयहजगत् अज्ञानकालमें सत्यरूपसेप्रतीतहोवेहैं ॥ ब्रह्मज्ञानरूपजागरणकरि यासर्वप्रपंचकाबाधहोवेहै ॥ अबस्वप्नअवस्थामें सर्वपदार्थजेप्रतीतहोवेहैं तिनमेंमिथ्यात्वप्रतिपादनकरेहैं ॥ काहेतें ॥ विनादृष्टांतसेदार्ष्टांतिकसिद्धहोवेनहीं यातें प्रथमदृष्टांतरूप स्वप्नकेजगत्कूंही मिथ्याकह्याचाहिये ॥ शंका ॥ स्वप्नकेपदार्थमिथ्यानहींहैं किंतु

सत्यहै यातेस्वप्नकूंदृष्टांत धरकरिजाग्रतकेपदार्थोंकूं मिथ्याकैसेकहोहो ॥ समाधान ॥ स्वप्नकेपदार्थअंतरप्रतीतहोवेहैं यातेंमिथ्याहैं ॥ शंका ॥ अंतरतौगृहमेंघटादिकभीप्रतीतहोवेहैं औरप्रतीतिमात्रनहीं हैं ॥ यदिशरीरकेअंतरप्रतीतहोनेसे मिथ्याकहोतौ सुखादि शरीरकेअंतर अंतःकरणमेंस्थितहैं औरमिथ्यानहींहैं यातेअंतरप्रतीतहोनेसे स्वप्नपदार्थोंकूं मिथ्याकहनाबनेनहीं ॥ उत्तर ॥ स्वप्नकेपदार्थमिथ्याहीहैं ॥ शरीरके अंतरजोअतिसूक्ष्मनाडीदेशहै तामेंपर्वतनदीयांसमुद्रादिप्रतीतहोवेहैं ॥ जबी देहमेंभी पर्वतादिकनहींरहिसकते तबअतिसूक्ष्मनाडीमेंकैसेरहेंगे ॥ औरप्रतीतहोवेहैं ॥ यहहीतिनमेंमिथ्यारूपताहै जोयुक्तिकूंनसहना औरप्रतीतहोना ॥ शंका ॥ स्वप्नकेपदार्थ नाडीदेशमेंअनिर्वचनीयउत्पन्ननहींहोवेहैं ॥ किंतुशयनकर्त्तापुरुषपूर्वदिशामें शयनकरताहुआ पश्चिमदेशमेंजाइकरि बाह्यपदार्थोंकूंदेखेहै यातेंस्वप्नकेपदार्थमिथ्यानहीं हैं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यदिबाह्यदेशमेंजीवकागमनमानेतौ हरिद्वारमेंशयनकर्तापुरुष रामनाथकूं स्वप्नमेंदेखेहै ॥ एकमुहूर्तमात्रमेंप्राप्तभयाजोस्वप्नदर्शन तामेंमासोंकरिप्राप्तहोनेयोग्य रामनाथकाअनुभवकरणा विरुद्धहै ॥ दीर्घकालकेअभावसे स्वप्नमेंरामनाथकादर्शनगमनकरिहोवेनहीं ॥ किंतुअंतरअनिर्वचनीयउत्पन्नभयेरामनाथकूं अनुभवकरेहै ॥ औरयदिगमनकरिही स्वप्नमेंरामनाथकादर्शनमाने तौजाग्रतकूंप्राप्तभयापुरुष रामनाथमेंहीरहेगा ॥ ता रामनाथसेचलकरि दोघटिकामें हरिद्वारकीप्राप्तिहोनीकठिनहै ॥ औरयदिस्वप्नमेंप्रतीतभयेपदार्थोंकूं सत्य अंगीकारकरे तौभद्रसेननामवालेकिसीपुरुषने स्वस्वप्नमें चित्रसेननामकपुरुषकेसाथमिलकरि अनेकतीर्थोंकीयात्राकरी ॥ जबीभद्रसेनकास्वप्ननिवृत्तभया औरजाग्रतमेंचित्रसेनमिला ॥ तौचित्रसेनने भद्रसेनकूंकह्याचाहिये जोहेभद्रसेन तुमनेहमारेसाथमिलकरि आजरात्रिमेंअनेकतीर्थोंकीयात्राकरी ॥ चित्रसेनतौ भद्रसेनकूं जाग्रतमेंदेखेनहीं वार्त्ताआ-

लापतौक्याकरनाथा ॥ यातेंभद्रसेनने अनिर्वचनीयउत्पन्नकराजोचित्र-
सेन तासेंमिलकरि अनिर्वचनीयहीयात्रांकरीहै ॥ अनिर्वचनीयताकूंक-
हेहैं जोसत्‌रूपसेतथाअसत्‌रूपसेकह्यानजावे औरप्रतीतहोवे ॥ ऐसे
स्वप्नकेपदार्थहैं ॥ स्वप्नकेपदार्थयदिसत्यहोवे तौजाग्रतकालमेंरहेचाहिये
यदितुच्छरूपअसत्‌होवैं तौ वंध्यापुत्रकीन्यांई कदाचित्‌प्रतीतनहोने
चाहिये ॥ स्वप्नमेंप्रतीतहोवेहैं यातेंहीस्वप्नपदार्थअनिर्वचनीयहैं ॥ और
स्वप्नअवस्थामें सत्यपदार्थौंकाअभावश्रुतिकहेहै ॥ ऐसेहीस्वप्नकेतुल्यही
जाग्रतकेपदार्थहैं ॥ ब्रह्मज्ञानरूपजागरणकरि सत्यरूपसे प्रतीतहोवेनहीं॥
औरअज्ञानरूपस्वप्नअवस्थामें सत्यरूपसेप्रतीतहोवेहैं ॥ यातेंअनिर्वच-
नीयहैं ॥ और जैसेस्वप्नअवस्थासेप्रथम स्वप्नकेपदार्थप्रतीतहोवेनहीं ॥
तथा स्वप्नअवस्थाकेनिवृत्तभये जाग्रतमेंवासुषुप्तिमें रहेंनहीं केवलस्वप्न-
मेंहीप्रतीतहोवेहैं ॥ तैसेभ्रांतिविना यहजाग्रतकेपदार्थभीप्रतीतहोवेनहीं
केवलभ्रांतिकालमेंही प्रतीतहोवेहैं यातेंमिथ्याहैं याअर्थकूंही याका-
रिकासेकहेहैं ॥ आदावंतेचयन्नास्ति वर्तमानेऽपितत्तथा ॥ वित-
थैःसदृशाःसंतोऽवितथा इव लक्षिताः ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ जोवस्तु
आदिमेंनहींहै जोवस्तुअंतमेंनहीं है सोवस्तुवर्तमानमेंकहीये मध्य-
मेंभीनहींहै ॥ वितथनाममिथ्याभूत मृगतृष्णाआदिकपदार्थौंके
सदृशहुएभी मूढोंनेतौ अवितथनामसत्यरूपसेहीलखेहैं कहीयेजा-
नेहैं ॥ २ ॥ औरजैसेरज्जु यथार्थरूपसेनजानीहुई सर्पदंडजल-
धारादिअनेकरूपसेप्रतीतहोवेहै ॥ जबीरज्जुकायथार्थबोधहोइ-
जावे तब सर्पादिनिवृत्तहोइजावेहैं ॥ तैसेआपनेपरमार्थरूपकरि नजा-
नाहुआआत्मा अनेकस्थावरजंगमरूपसेप्रतीतहोवेहै ॥ आत्माकेय-
थार्थरूपकेजाननेसे सर्वद्वैतभ्रमनिवृत्तहोइजावेहै ॥ इंद्रजालकीमाया-
रचितपदार्थ तथागंधर्वनगरमिथ्यारूपहुएभी अज्ञानकरिसत्यरूपसे
प्रतीतहोवेहैं ॥ औरबुद्धिमान् तिनकूंमिथ्यारूपहीजानेहैं ॥ तैसे अवि-

वेकीमूढोंकूं यहप्रपंच दृष्टविनष्टस्वभावहुआभी सत्यरूपसेप्रतीतहोवे है ॥ परंतुविवेकीतौ जैसाप्रपंचकोंदृष्टविनष्टस्वभाव तथास्वतःसत्ताशून्य स्वभावहै ताकूंजानेहैं ॥ सर्वलौकिकवैदिकव्यवहार आरोपमेंही है वास्तवसेतौ यहसिद्धांतहै ॥ नप्रलयहै नउत्पत्तिहै नसंसारीजीवहै न मोक्षकेसाधनवालाहै नकोईसाधनसंपन्न मुमुक्षुहै नकोईमुक्तहै ॥ यहतौ परमार्थनिरूपणकरा यातेंभिन्न प्राणकाल आकाशपरमाणु प्रधानादि-कोंकूंनित्यमानना यहमहान्भयकेउत्पन्न करनेहाराहै ॥ जेमहात्मा प्रपंचकूं अनेकश्रुतियुक्तिकरि मिथ्याजानतेहुए अद्वैतब्रह्मकूंजानेहैं ॥ तथारागद्वेषभयादिकोंसेशून्यहुएहैं तेमहात्मासदाब्रह्ममेंवर्त्ते हैं ॥ ऐसे मुमुक्षुपुरुषभी अद्वैतब्रह्ममें सजातीय प्रत्ययकरताहुआ तथासंसारमें जडकीन्यांईविचरताहुआ किसीपुरुषकीस्वव्यवहारवासते स्तुतिकूं करेनहीं ॥ तथास्वशरीरादिकोंकेरक्षावासते किसीकेआगेनमस्कारकूं करेनहीं ॥ स्वभावसेही जेकौपीनआच्छादनादिकप्राप्तहोवैं तिनसेशरी-रकीरक्षाकरे ॥ अंतरबाह्यआत्माकूंहींदेखे ॥ आत्मारूपहुआ कदा-चित्आत्मासे चलायमानहोवेनहीं सदाहीआत्मपरायणरहे ॥ इतिसं-क्षिप्तवैतथ्यप्रकरणार्थबोधनम्॥ जैसेद्वैतप्रपंचकूंयुक्तियोंसे मिथ्यानिरू-पणकरा तैसेब्रह्मअद्वैतहै यामें युक्तिनिरूपणकरेहैं ॥ शंका ॥ तुमारा अद्वैतनहींबनता काहेते देवदत्तउत्पन्नभयाहै यज्ञदत्तनष्टभयाहै याप्रती-तिसेउत्पत्तिनाशवाले भिन्नभिन्नआत्मामानेचाहिये जबीभिन्नभिन्नमाने तबअद्वैतकथनमनोराज्यमात्रहै अद्वैतहैनहीं ॥ समाधान ॥ जैसेघटा-दिउपाधियोंकीउत्पत्तिसे घटाकाशादिकोंकी उत्पत्तिव्यवहार होवेहै तथाघटादिकोंकेनाशहोनेसे घटाकाशादिकोंमें नाशव्यवहारहोवेहै ॥ तैसेशरीरोंकी उत्पत्तिसे आत्मामेंउत्पत्तिव्यवहार तथाशरीरादिकोंके नाशहोनेसे आत्मामें नाशव्यवहारहोवेहै ॥ वास्तवसेउपाधिदृष्टिविना आत्मामें घटाकाशकीन्यांई उत्पत्तिआदिहैनहीं ॥ शंका ॥ उत्पत्ति

तथाप्रलयश्रुतिसे विरोधनहीं है यहतुमनेसत्यकहा परंतुएकआत्मामाने चैत्रपुरुषकेसुखदुःखादि मैत्रकूंहुएचाहिये मैत्रकेसुखादि विष्णुदत्तनामकपुरुषकूं हुएचाहिये होवेंतौनहीं ॥ यासंसारकीप्राप्तिसे अद्वैतबने नहीं ॥ समाधान ॥ आत्माकेसुखादिधर्मनहीं किंतु साभासअंतःकरणकेधर्म हैं ॥ आत्मामेंतौ तिनकीभ्रांतिहै अंतःकरणकूंभिन्नभिन्नहोनेसे परस्परसुखदुःखकासंकरहोवेनहीं ॥ जैसेएकघटाकाशमें धूमका वा धूलीका आरोपितसंबंधहुएभी द्वितीयतृतीयादिघटाकाश धूमधूलीसे रहितहीहोवेहैं ॥ तैसेएकआत्मामें भ्रांतिसिद्धसुखादिप्रतीतहुएभी शरीरभेदकरिभिन्न जेद्वितीयादिआत्माहैं तिनमेंसुखादिप्रतीतहोवेनहीं ॥ जैसे एकआकाशमें घटाकाशमठाकाशादिकोंके अल्पता वृद्धता भिन्नभिन्न उपाधिकरिप्रतीतहोवेहैं ॥ औरजलआनयनशयनादिकार्य तथाघटाकाशमठाकाशयहनामभी उपाधिकरि भिन्नभिन्नप्रतीतहोवेहैं ॥ तैसे एकहीआत्मा उपाधिकरि देवमनुष्यादिरूपसे भिन्नस्वरूपवाला भिन्नकार्यवाला भिन्ननामवालाप्रतीतहोवेहै वास्तवसेभेदकागंधमात्रनहीं ॥ जिनशरीरोंकरि आत्माभिन्नभिन्नप्रतीतहोवेहै तेशरीरस्वप्नकीन्यांईकल्पितहैं तहांकारिकाकहेहैं ॥ "संघाताःस्वप्नवत्सर्वेआत्ममायाविसर्जिताः ॥ आधिक्येसर्वसाम्येवानोपपत्तिर्हिविद्यते॥ ३ ॥"अर्थयह सर्वशरीर आत्माकीमायाकरिरचितहैं यातेंस्वप्नकेशरीरोंकीन्यांईमिथ्याहैं॥ अविवेकीकीदृष्टिसे देवादिकोंमें अधिकताकेहुए वा विवेकीकीदृष्टिसे पांचभौतिकतारूपसे सर्वकीसमताकेहुएभी इनसंघातोंकीसत्यताका साधक हेतुनहीं है ॥ ३ ॥ जैसेस्वप्नकेशरीरोंमें जेदेवतादिकश्रेष्ठप्रतीतहोवेहैं मनुष्यादिमध्यम तथासर्पादिअधमप्रतीतहोवेहैं ॥ परंतुतेसर्वही जागरित अवस्थामेंरहेनहीं ॥ तैसेअधिकन्यूनसर्वशरीर अविद्यादशामेंप्रतीतहोवेहैं ब्रह्मज्ञानरूपजागरणकरि तिनकाबाधहोइजावेहै ॥ जीवोंकीएकतामेंही वेदकातात्पर्यहै औरभेदकेद्रष्टाकूंपशुरूपसे वेदने निंदनकराहै तथाभेद-

द्रष्टाकूं वारंवारजन्ममरणरूपअनर्थकीप्राप्ति वेद वर्णनकरेहै॥ यदिअद्वैतमें वेदकातात्पर्य न होता तौभेदद्रष्टाकूंपशुवत्कथन औरअनर्थप्राप्तिकिसवासते वेदकथनकरता ।। यातेंअद्वैतमेंही वेदकातात्पर्यहै ॥शंका॥ यदि सर्वथाअद्वैतहै तौश्रुतिमेंप्रपंचकीउत्पत्ति ब्रह्मसेंकैसे निरूपणकरीहै उत्पत्तिवालाप्रपंचतौ ब्रह्मसेभिन्नही अंगीकारकरणाहोगा जबीभिन्नमाना तबअद्वैत कैसे ।। समाधान ।। प्रपंचकीउत्पत्तिमेंवेदकातात्पर्यनहीं है ।। यातेंकिंचित्भीविरोधनहीं ।। औरयावत्कालपर्यंतकार्यस्थितहै तावत्कालपर्यंत आपनेउपादानसेभिन्ननहीं ।। जैसेमृत्तिकासे उत्पन्नहुआघट तथाअग्निसेउत्पन्नभयाविस्फुलिंग आपनेकारणमृत्तिका तथाअग्निसेभिन्ननहीं ।। तैसेअद्वैतसेउत्पन्नभयाजगत् तासेभिन्ननहीं ऐसेअद्वैतब्रह्मकेज्ञानकीउत्पत्तिवासतेही जगत्कीउत्पत्तिआदिकोंका कथनहै ।। कोईजगत्कीउत्पत्तिआदिकेंमेंवेदकातात्पर्यनहीं ॥ और उपासनाकांड तथाकर्मकांडकेसाथभी अद्वैतकेविरोधकीशंकाबनेनहीं ।। मंद मध्यम उत्तम भेदसे मुमुक्षुतीनप्रकारकेहैं ।। मंदोंके अंतःकरणकी पापनिवृत्तिपूर्वक जाशुद्धि ताशुद्धिवासते कर्मोंकाउपदेश वेदनेकराहै ॥ मध्यमपुरुषोंकेअंतःकरणमें मलतौहैनहीं परंतुएकाग्रतातौ उपासना विनाहोवेनहीं।।यातेंमध्यमोंके अंतःकरणकी एकाग्रतावासते उपासनावेदनेकहीहै ॥ औरउत्तमअधिकारीयोंकेवासते तौ वेदांतश्रवणहीनिरूपणकराहै ।। ऐसे परंपरासेउपासनाकांड तथाकर्मकांड अद्वैतमेंतात्पर्यवालेहैं ।। शुद्धएकाग्रमनवालाहीवेदांतकूंश्रवणकरि अद्वैतनिष्ठाकूं संपादनकरेहै ।। यातेंचित्तके पापरूपदोषकीनिवृत्तिवासते कथनकरा जोकर्मकांड ताकाचित्तशुद्धिद्वारा अद्वैतब्रह्ममेंतात्पर्यहै ।। तथाउपासनाकांडभी चित्तकीएकाग्रताद्वारा अद्वैतब्रह्ममेंहीतात्पर्यवालाहै ।। ऐसे अद्वैतवादमें किंचित्विरोधनहीं ॥ प्रत्युतद्वैतवादीजे नैयायिक सांख्यआचार्य आदिकहैं तेआपसमेंरागद्वेषकरतेहुए विवादकूंकरेहैं ।। यातें

तिनभेदवादीयोंकेमत रागद्वेषादिदोषकरिदूषितहोनेसे अप्रमाणहै ॥ यहअद्वैतवादतौ आपनेअद्वैतकूंसिद्धकरेहै भेदबुद्धिकेअभावसे रागद्वेषादिदोषरहितहै ॥ औरवेदमेंकारणमायाका तथाकार्यहिरण्यगर्भादिकोंका अभावप्रतिपादनकराहै ॥ यातेंअद्वैतहै औरकार्यकारणसे ताअद्वैतकाबाधहोवेनहीं ॥ जीवचेतनकूंब्रह्मरूपतावेदमेंकहीहै यातेंजीवकरिभी अद्वैतकाबाधहोवेनहीं ॥ जेअविवेकी याघटादिप्रपंचकरि अद्वैतकाबाधकहेहैं ॥ तेअतिमूढहैं ॥ काहेते जाप्रपंचकरिद्वैतापत्तिकहेहैं ॥ सोप्रपंचतौमनोमात्रहै ॥ जाग्रतस्वप्नमेंमनरहेहै प्रपंचभीप्रतीतहोवेहै ॥ सुषुप्तिमें तथानिर्विकल्पसमाधिमेंमनरहेनहीं औरप्रपंचभीरहेनहीं ॥ ऐसेअन्वयव्यतिरेकसे प्रपंचमनोमात्रहै ॥ अन्वयकहिये जिसकेहुएजो होवे जैसे मृत्तिकाहुएघटहोवेहै ॥ व्यतिरेककहिये जिसकेनहोनेसेजो नहोवे जैसेमृत्तिकाकेनहोते घटहोवेनहीं ॥ ऐसेमनजाग्रतस्वप्नमें है प्रपंचभीप्रतीतहोवेहै ॥ समाधिसुषुप्तिमेंमनहैनहीं प्रपंचभीप्रतीतहोवेनहीं ॥ ऐसेअन्वयव्यतिरेकसेप्रपंचकूं मनोमात्रताकहि ॥ जबीपुरुषनिर्विकल्पसमाधिकूं सर्वप्रतिबंधसेरहितहोइकरिसंपादनकरे तबीमननिरोधकूंप्राप्त होवेहै ॥ अभ्यासवैराग्यसेमनकानिरोधहोवेहै ॥ मनकेजीतनेसेहीसर्वकाजयहै ॥ मनरूपीशत्रुजबतकजीवताहै तबतकशत्रुजीवेहैं ॥ जैसेटिट्टिभनामपक्षीने समुद्रसे आपने अंडेग्रहणकरे ॥ तैसेखेदमानेविनामनकानिरोधहोवेहै ॥ टिट्टिभकीकथासंक्षेपसेयहहै ॥ किसीकालमेंकोई टिट्टिभनामकपक्षी समुद्रकेतटउपरि आपनेअंडेराखताभया ॥ उसकी स्त्री टिट्टिभीनें बहुतवारणभीकरा जोहमारेअंडे यहसमुद्रअपनीलहरोंसे बहायलेजावेगा ॥ परंतु अभिमानकूंप्राप्तहुआ टिट्टिभ समुद्रकूंतुच्छ मानताभया ॥ औरगर्वकूं प्राप्तभयाटिट्टिभ आपनीस्त्रीकूं यहकहताभया ॥ अरी भामिनी तूं किसवासतेभयकूंप्राप्तहोतीहै ॥ यदिसमुद्रहमारे अंडेयोंकूं लेजावेगा तौ इसअभिमानीसमुद्रकूं हमजलविनाशुष्क

करेग ॥ टिट्टिभी तौ यहहीकहतीभयी जोकहांयहसमुद्र कहांहमतुच्छपक्षी ॥ परंतुपतिकीआज्ञामानकरि अंडयोंकूंतातटऊपरिराखकरि दोनोंआहारवासतेकहींजातेभये ॥ समुद्रनेभीटिट्टिभी टिट्टिभके सर्व वाक्यश्रवणकरे औरहसताहसता अंडेयोंकूं उठाइलेजाताभया ॥ औरसमुद्रनेंमनमें यहविचारकरा जोस्थावरजंगमसर्वपरमेश्वरकाविभूतियांहैं ॥ इसवासतेकिसीदेशमें किसीकालमें किसीनिमित्तसे किसीमेंकैसीशक्तिहोजातीहै यहनहींकहसकते ॥ क्याजानेइसपक्षीकेकितनेमित्रसहायकहैं ॥ यातेंइसपक्षीकेअंडे किसीदेशमें धरदेने चाहिये ॥ ऐसेअंडयोंकूं किसीदेशमें धरकरि पूर्वकीन्यांईगर्जनकरताहुआ स्थितभया ॥ जबीटिट्टिभ आपनीभार्यासहितगृहमेंआया तौअंडेयोंकूंनदेखकरिरक्तनेत्रहुआ महान्क्रोधकूंप्राप्तभया ॥ औरसमुद्रकेशुष्ककरनेकासंकल्पकरताभया ॥ ऐसेपतिकूंदेखकरि टिट्टिभीबहुतसुंदरयुक्तवचनकहतीभयी ॥ हेपते मैंतौतुमकूंप्रथमभीवारणकराथा परंतुतुमनेमेराकह्यानमाना इसीसेमेरेअंडेदूरभये ॥ अबभीतुमसमझो जोइसमहान्समुद्रसेवैरकात्यागकरो ॥ मैत्री औरवैर तुल्योंसेकरणाचाहिये ॥ तुमछोटेसेपक्षी ऐसेबडेसमुद्रसेवैरकरणेयोग्यनहींहो ॥ जिसशरीरसे तुमकुछकराचाहतेहैं ॥ सोशरीर बहुतछोटानिर्बलहै ॥ और कालकंभीबल तुमारेविषेनहींहै ॥ कालभीबडेदेवादिदेहोंमेंहीकार्यकरणेहाराहै तुमारेअल्पशरीरमें कुछकरेगानहीं ॥ औरतुमारामित्रभी सहायताकरणेहाराकोईदीखतानहीं ॥ धनसेशत्रुभीमित्रहोजातेहैं सोधनबलभीतुमारेमें मैं देखतीनहीं ॥ जन्मसेपक्षीमेंजातिबलभीनहीं ॥ और लक्षयोजनविस्तारवालासमुद्र तथा प्रलयकालमेंत्रिलोकीकूंलयकरणेवाला तथाअनेकदेवतामुनिजनोंकीसहायतावाला कैसेशुष्कहोवेगा ॥ इंद्रसेभयभीतहुए मैनाकआदिकपर्वतोंकी इससमुद्रनेरक्षाकरीहैं ऐसेसमुद्रसेवैरकरणाव्यर्थहै ॥ यातेंतुमारीमूढतासे मैंनेआपनेअंडे गवायदीये

अबकिसवासतेतुमशांतनहींहोते ॥ ऐसेअनेकप्रकारके टिट्टिभीके वचनोंकूंश्रवणकरि क्रोधसेसंरक्तनेत्रहुआ टिट्टिभ आपनीस्त्रीकूंयहक-हताभया ॥ अरीमूढ तुममेरेसमीपसे अबीचलीजा ॥ संपत्कालमें अनंतकोटिमित्रहोजातेहैं ॥ आपत्कालमें जोमित्ररहेसोमित्रकहलाता-है ॥ जोविपत्तिमेंत्यागकर्त्ताहै ॥ सोशत्रुहै मित्रनहीं ॥ पुण्यपापमें तथासुखदुःखमें साथहोवेसोईमित्रहै ॥ क्लेशकेप्राप्तहोनेसे जोपुरुष अभिमानपूर्वक बहुतवचनकहनेलगजाताहै सोशत्रुहै मित्रनहीं ॥ जो आपनाकल्याणचाहताहै सोप्रथममित्रकीन्यांई प्रतीत होनेहारे शत्रु-कानाशकरे पश्चात् दूसरेशत्रुकूंमारे ॥ यातेंप्रथमतूंमित्ररूपभीथी परंतु अबविपत्तिकालमें शत्रुरूपभयीहैं ॥ तूंस्त्रीहैं इसवासते तेरावधमैंनहीं करता ॥ तूंचलीजा ॥ मैंएकलाहीसमुद्रकूंशुष्ककरताहूं ॥ ऐसेवचन सुनकरि पतिव्रता टिट्टिभीने पतिका दृढनिश्चयदेखा ॥ पतिसेक्षमा-कराइकै अनुसारहोजातीभयी ॥ अनेकवारआपनी चुंचसे तथापक्षोंसे जलकूंबाहिरगेरनेंलगे ॥ औरअनेकपक्षीइनकूं वारणकरतेभये ॥ जबी दोनोंवारणनहींभये तबीसर्वपक्षीमिलकरि समुद्रकेशोषणकरणेवासते उद्यमकरतेभये ॥ तबीतीनलोकोंमेंविचरणेहारानारद तहांप्राप्तभया ॥ नारदनेबहुतवारणभीकरा जबपक्षीदुःखीहोतेभीनिवृत्तनभये तबनारद मुनिगरुडके आनेकाउपायकहतेभये ॥ जबीगरुडआया ताकूंदेखकरि समुद्रभयभीतहुआटिट्टिभकेअंडेयोंकूं देदेताभया ॥ ऐसेजोपुरुष खेद-रहितहोइकरि मनकेजयवासतेनिश्चयकरताहै ॥ उसकी गरुडकी न्याईदेवताभीसहायकरतेहैं ॥ मनकेनिरोधमें उपाय वैराग्यतथाअ-भ्यासहै ॥ जोपुरुषदुःखरूपसंसारकूंजानकरि त्यागकरताहै ॥ तिस-पुरुषका मन संसारमेंगमनकरेनहीं ॥ और आत्माकार वारंवारवृत्ति-करणेसे संकल्पविकल्पकूंत्यागकरि निरुद्धहुआमनस्थितहोवैहै ॥ मनकेनिरोधहोनेसे प्रपंचरूप त्रिपुटीकाभानहोवेनहीं ॥ केवलशुद्ध

स्वप्रकाशब्रह्मभूमाही तासमाधिमेंप्रतीतहोवेहै ॥ तानिर्विकल्पसमाधिसे मनका निरोधहोवेहै ॥ तामनकेनिरोधहोनेसे सर्वभयकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ इतिअद्वैतप्रकरणसंक्षिप्तार्थबोधनम्।। चतुर्थअलातशांतिनामप्रकरणके अर्थकूं किंचित्दिखावेहैं ॥ प्रथमॐकारप्रकरणमें तौॐकाररूपकरि श्रुतिप्रमाणसे अद्वैतनिरूपणकरा ॥ द्वितीयप्रकरणमें अद्वैतविरोधीद्वैतकूंस्वप्नादिदृष्टांतोंकरि मिथ्यारूपतावर्णनकरी ॥ तृतीयप्रकरणमें अद्वैतब्रह्मकूं युक्तियोंसेवर्णनकरा ॥ चतुर्थप्रकरणमें भेदवादी जैसेआपसमेंविवादकरतेहैं ताविवादकूंदिखाइकरि . अर्थसेसिद्धजोअद्वैतहै ताअद्वैतकूंनिरूपणकरेहैं ॥ यहअद्वैतवाद मुमुक्षुजनोंकेमोक्षकेकरणेहाराहै ॥ औरविवादसेरहितहै ॥ औरमतोंमेंतौविवादहै ताकूंकिंचित् दिखावेहैं ॥ नैयायिकसांख्याचार्यकूंकहेहै हेसांख्याचार्य तुमसत्कार्यकीउत्पत्तिमानतेहो तथाकार्यकूंकारणसे अभिन्नमानतेहो ॥ सोअसंगतहै ॥ काहेते ॥ उत्पत्तिसेप्रथमकार्यकूंसत्यमानेतौ तासत्यकीउत्पत्तिकैसेहोवेगी यामें कारणकुलालदंडादिकोंकी निष्फलतारूपदोषहै॥ तथाकार्यकूंकारणसे अभिन्नमाने तौघटकाकार्यजलआनयनादि मृत्तिकासेभी हुआचाहिये ॥ तथातुमजगत्काकारण प्रधानकूंमानतेहो ॥ जबीप्रपंचरूपकार्यकूं प्रधानरूपकारणसेअभिन्नमाना तौ प्रधानकीउत्पत्तिभयी यहव्यवहारहुआचाहिये ॥ प्रधानकूं तुम नित्यमानतेहैं ताकीउत्पत्तिकहनीविरुद्धहै ॥ अबसांख्याचार्य नैयायिककूंकहेहै ॥ अरेनैयायिक तुमआपनेमतमेंदूषणनहीं देखता ॥ आपनेमेंदूषण नदेखना तथादूसरेके दूषणोंकूंदेखना यहहीतेरेमेंमूढोंकेलक्षण हैं ॥ अबतूंआपनेमतमेंदूषणकूंश्रवणकर ॥ कारणमेंउत्पत्तिसे प्रथम तेरेमतमेंकार्यअसत्है ॥ ताअसत्कीकारणसेउत्पत्तिमानेतौवंध्यापुत्रकीभी ताकारणसेउत्पत्तिहुई चाहियें ॥ उत्पत्तिसेप्रथम असत्जैसे प्रपंचरूपकार्यहै तैसेअसत्वंध्यापुत्रहै ॥ असत्प्रपंचकीउत्पत्तिहोवेहै

वंध्यापुत्रकीनहींहोवेहैं यामेंनियामककेनमिलनेसे तेरामतदुष्टहै ॥ तथावालुसेतैलकी तंतुवोंसेघटकी कपालोंसेपटकी उत्पत्तिहुईचाहिये तथाअनेकपरमाणुवोंकूंकारणमानना अतिगौरवग्रस्तहै ॥ तथाआत्मा जोअपनास्वरूपहै ताकूंज्ञानभिन्नजडमाननेसे तूंभीजडहै ॥ जडहोनेसेही तेरेकूं आपनेमतमेंदूषणनहींभानहोते ॥ चेतनहोतातौजानता ॥ ऐसे आपसमेंविवादकरतेहुए यहसूचनकरेहैं ॥ जोकिंचित्कार्यउत्पन्न भयानहीं ॥ तिनेवादीयोंनेसूचनकरी जाअनुत्पत्ति सोईअजातवादहै ॥ इसप्रकारताअजातवादकूं हमअंगीकारकरेहैं ॥ और जैसेतेवादी द्वेषपूर्वक आपसमेंविवादकरेहैं ॥ तैसेहम विवादकूंकरेनहीं ॥ यातें किंचित्कार्यउत्पन्नभयानहीं इसीसेअद्वैतब्रह्महै ॥ जोवास्तवप्रपंचकीउत्पत्तिमाने ताकूंहमपूछेहैं ॥ जोकारणसेअभिन्नकार्यउत्पन्नहोवेहै ॥ वाभिन्नउत्पन्नहोवेहै ॥ वाकारणसे अभिन्नऔरभिन्नउभयरूपउत्पन्न होवेहै ॥ तथाकार्यसत्रूपउत्पन्नहोवेहै ॥ वाअसत्रूपउत्पन्नहोवेहै ॥ वासत्असत्उभयस्वरूपउत्पन्नहोवेहै ॥ ऐसेषट्विकल्पकरि एकएकका खंडनकरेहैं ॥ कारणसेअभिन्नकार्यउत्पन्नहोवेहै यहप्रथमविकल्पबने नहीं ॥ काहेते जैसे घटसेअभिन्नमृत्तिकासे घटकीउत्पत्तिमानतेहो तैसेमृत्तिकासे अभिन्नमृत्तिकाकी तथाघटसेअभिन्नघटकीउत्पत्तिहुई चाहिये ॥ और होवेतौनहीं यातेंघटकीअभिन्नरूपमृत्तिकासे उत्पत्तिकथनअसंगतहै ॥ तथाकारणसेभिन्नकार्यउत्पन्नहोवेहै यहद्वितीयविकल्पबनेनहीं ॥ काहेते घटसेभिन्नमृत्तिकासे जैसेघटउत्पन्नहोवेहै ॥ तैसे घटसेभिन्नपटभीहै तापटसेभी घटउत्पन्नहुआचाहिये ॥ यदिवादीकहे केवलभिन्नमात्रसे कार्यकीउत्पत्तिनहींमानेहैं ॥ किंतुकारणतायोग्यजो भिन्नकारण तासेकार्यउत्पन्नहोवेहै ऐसेमानतेहैं ॥ पटघटसेभिन्नतौहै परंतु कारणताकेयोग्यनहीं यातेंपटसे घटनहींउत्पन्नहोवेहै ॥ औरमृत्तिकातौ घटकीकारणताकेयोग्यहै यातेंमृत्तिकासे घटउत्पन्नहोवेहै यामें

दोषनहीं ॥ ऐसेजबीवादीनेकहा तबसिद्धांतीऐसेकहेहैं ॥ हेवादिन् जबीमृत्तिकासेघटउत्पन्नहोवेहै ऐसेसिद्धहोइजावे तबतौ ऐसाकह्याजावे जो घटकीकारणताकेयोग्यमृत्तिकाहै पटनहीं ॥ जैसेदेवदत्तकेपुत्रहुए विना देवदत्तकूंपिताकहनाअसंगतहै ॥ तैसेमृत्तिकासे घटउत्पत्तिकातौ हमविचारहीकरतेहैं ॥ घटउत्पत्तिहुएविना मृत्तिकाकूंघटकेउत्पन्नकरणेके योग्यमाननाअसंगतहै ॥ ऐसेदोनोंविकल्पोंकूं निराकरणकरिके अबतृतीयविकल्पकाखंडनकरेहैं ॥ अभिन्नभीघटमृत्तिकासेहै तथा भिन्नभीहै ॥ ऐसेअभिन्नभिन्नरूपघटकीउत्पत्तिहोवेहै यहतीसराविकल्पभीबनेनहीं ॥ काहेते एककालमें अभिन्नभिन्नउभयरूपकहना तमप्रकाशकीन्यांईविरुद्धहै ॥ भिन्नपक्षकादोष तथाअभिन्नपक्षकादोष उभयपक्षकेमाननेसेप्राप्तहोवेहैं तेदोषऐसेपूर्वकहआयेहैं ॥ यदिघटअभिन्न उत्पन्नहोवे तौ मृत्तिकासे मृत्तिकाकी तथाघटसेघटकी उत्पत्तिहुई चाहिये ॥ मृत्तिकासे मृत्तिकाअभिन्नहै ॥ तथाघटसेघटअभिन्नहै ॥ यातेंमृत्तिकासेमृत्तिकाकी जैसेउत्पत्तिहोवेनहीं तथाघटसेघटकीउत्पत्ति होवेनहीं ॥ तैसेमृत्तिकासेघटअभिन्नउत्पन्नहोवेनहीं ॥ औरभिन्नपक्षमें यहदोषकहाहै जैसेभिन्नपटसे घटकीउत्पत्तिहोवेनहीं तैसे भिन्नमृत्तिकासे घटउत्पन्नहोवेंनहीं ॥ जैसेएकपुरुषकूं ज्वररोगहै द्वितीयकूं कफवृद्धिरोगहै ॥ जबीतेदोनोंरोग तृतीयपुरुषमेंहोवैं तबतृतीयपुरुषरोगीकैसे न कहावेगा॥ तैसेअभिन्नपक्षमें तथाभिन्नपक्षमें पृथक्पृथक्दोषकहे ॥ अभिन्नभिन्नरूपउभयपक्षमें तेदोषकैसेनहोवैंगे ॥ ऐसेतीनविकल्पतौखंडनभये ॥ सत्रूपकार्यउत्पन्नहोवेहै याचतुर्थविकल्पकानिराकरणकरेहैं ॥ यदि सत्कार्यकीउत्पत्तिमानेतौ सत्रूपउत्पत्तिसे प्रथम मृत्तिकाहै तामृत्तिकाकी उत्पत्तिकहीजावेगी घटकीउत्पत्तिबनेनहीं ॥ असत्रूपकार्यकीउत्पत्तिहोवेहै यहपंचमविकल्पमानेतौ असत्रूपवंध्यापुत्रकीउत्पत्तिहुईचाहिये ॥ सत्असत्उभयस्वरूपकार्यउत्पन्नहोवेहै यहषष्ठविकल्पभीबनेन-

हीं ॥ काहेते उभयस्वरूपतौकहनाविरुद्धहै ॥ तथाउभयस्वरूपमाननेमें मृत्तिकाकीउत्पत्तिसत्मानेदोष वंध्यापुत्रउत्पत्ति असत्मानेदोषयादोनूं दोषोंकीप्राप्तिहोवेहै ॥ यातेंकिसीरीतिसेभी कार्यप्रपंचसिद्धहोवेनहीं ऐसेचेतनअद्वैतहीवास्तवहै ताअद्वैतसेभिन्नकिंचित्भीनहीं ॥ जैसेअलातसे ऋजुवक्रादिभिन्नकहेजावेनहीं भिन्नहुएसर्वथाअसत्हैं ॥ तैसेचेतनअद्वैतसेभिन्न द्वैतसर्वथाअसत्है केवलअद्वैतहीसर्वरूपकरिप्रतीतहोवेहै ॥ विवेकीपुरुषकूं यहच्यारिपदार्थजानेचाहियें ॥ हेय ज्ञेय आप्य पाक्य ॥ हेयकहिये अनात्मस्वरूपजानकरि त्यागकरणेयोग्य ॥ ऐसे तीन अवस्था तीनशरीर तीनप्रकारकेज्ञानरूपभोग तीनप्रकारके विश्व तैजस प्राज्ञरूपभोक्ता तथातीनप्रकारकेविषयतीनअवस्थामेंहोनेहारेहैं ॥ यहसर्वत्रिपुटी त्यागकरणेवासतेहीजानीचाहिये ॥ जिससेजानकरिही त्यागहोवेहै ॥ यातेंइनसर्वकूंअनात्मरूपजानकरि तिनकात्यागकरना ॥ अबद्वितीयज्ञेयरूपपदार्थकूंकहेहैं ॥ याभारतखंडमें दुर्लभमानुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकरितथामानुष्योंमेंभी शूद्रादिकोंसेविना याअधिकारीदेहकूंप्राप्तहोइकरि तथाबुद्धिमें सामर्थ्यरूप जाधारणशक्तिहै ताकरिअद्वैततत्त्वहीमुमुक्षुकूंज्ञेयहै॥ज्ञेयकूंनिरूपणकरि तृतीयआप्यपदार्थकूंवर्णनकरेहैं ॥ आप्यकहियेप्राप्तहोनेयोग्य ॥ मुमुक्षुनिष्कामकूंतौ प्राप्तहोनेयोग्य आत्माके श्रवण मनन निदिध्यासन यहतीनहैं ॥ स्त्रीपुत्रधनादि मुमुक्षुकूंप्राप्तहोनेयोग्यनहीं ॥ अबचतुर्थपाक्यपदार्थकूंकहेहैं ॥ पाक्यकहियेपकानेयोग्य ॥ अर्थयह निवृत्तकरणेयोग्य सोऐसेमुमुक्षुजनोंकूं रागद्वेष मानापमान हर्षशोकादिदोषहैं ॥ पूर्वकह्याजोपरमार्थतत्त्वब्रह्महै ताकूं अज्ञानीपुरुष जानसकेनहीं ज्ञानीहीप्राप्तहोवेहैं याअर्थकूंकारिकासेकहे हैं ॥ अजेसाम्येतुयेकेचिद्भविष्यंतिसुनिश्चिताः ॥ तेहिलोकेमहाज्ञानास्तच्चलोकोनगाहते ॥ ४ ॥ अर्थयह ॥ अजन्मतथासमरूपपरमार्थतत्त्वविषे जेकोई यथार्थनिश्चयवालेहोवेंगे ॥ तेपुरुषही यासंसारमेंमहा_

ज्ञानीहैं ॥ ताज्ञानीकेमार्गकूं सामान्यबुद्धिवालेलोक विषयकरसके-
नहीं ॥ ४ ॥ अबअंतमें आपनेस्वरूपकूंनमस्कारकरेहैं ॥ जाआत्माकूं
अविवेकीजानेनहीं ऐसाशुद्धसच्चिदानंदपद तथाभेदरहितपद तथानिर्वि-
शेषपदहै ॥ ताकूंआपनास्वरूपजानकरि हमवारंवारनमस्कारकरतेहैं ॥
इत्यलातशांतिनामकंचतुर्थप्रकरणम् ॥ ॥ ॐशांतिः शांतिः
शांतिः ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकरभगवत्पू-
ज्यपादशिष्यसंप्रदायप्रविष्टपरमहंसपरिव्राजकस्वामिअच्युतानंदगिरिवि
रचिते प्राकृतोपनिषत्सारेमांडूक्योपनिषदर्थनिर्णयः ॥ ६ ॥

इति मांडूक्योपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ॥

श्रीः ।

अथ

तैत्तिरीयोपनिषद्भाषांतरम् ।

ॐनमः श्रीशंकराय॥अबयजुर्वेदकीतैत्तिरीयउपनिषत्काअर्थदिखावेहैं ॥ तित्तिरिनामवालेऋषिनेस्वशिष्योंकूंकहीहै यातेंयाउपनिषत्कानामतैत्तिरीयऐसेकहेहैं ॥ उपनिषत्केआरंभमें शांतिमंत्रपठनकराहै ॥ ताशांतिमंत्रकेअर्थकूंदिखावेहैं ॥ प्राणवृत्तिका तथादिनकाअभिमानीजोमित्रनामादेवताहै सोमित्रदेवताहमारेकूंकल्याणकरे ॥ तैसेही रात्रिका तथाअपानवृत्तिकाअभिमानीजोवरुणहै सोवरुणहमारेकूं सुखकेकरणेवालाहोवे ॥ चक्षुमें तथाआदित्यमंडलमेंस्थित अर्यमानामादेवता हमारेकूंसुखकरे ॥ तथाहस्तकाअभिमानी इंद्रदेवताहमारेकूंकल्याणकरे॥ वाणीमें तथाबुद्धिमेंस्थितबृहस्पतिदेवता हमारेसुखकूंकरे ॥ पादोंकाअभिमानी अधिकबलवान्जोविष्णुहै सोविष्णुदेव हमारेकल्याणकूंकरे ऐसेअध्यात्मकरणोंकेअभिमानी सर्वदेवताहमारेकल्याणकूंकरें ॥ ब्रह्मविद्याकाअर्थीमुमुक्षु समष्टिवायुरूपब्रह्मकूंनमस्कार करेहैं ॥ हेब्रह्मन् तेरेतांईमेरानमस्कारहै ॥ हेवायोतेरेतांईमेरानमस्कारहै॥ हेवायो तुमब्रह्मरूपहुएही प्राणरूपसेचक्षुआदिकोंसेभी अव्यवहितहो ॥ नेत्रादिकतौरूपादिकोंकेज्ञानद्वाराअनुमेयहै ॥ नेत्रादिकोंसेयहप्राण भोक्ताकेअत्यंतसमीपहै ॥ यातेंनेत्रादिकोंकी अपेक्षासेश्रुतिमें प्राणकूंप्रत्यक्षरूपताकहीहै ॥ हेवायो प्रत्यक्षब्रह्मरूपतेरेतांई मेरानमस्कारहै ॥ जैसेराजाकेद्वारपालकूं राजाकेदर्शनकीइच्छावालापुरुष कहेहै तुमहीराजाहो ॥ तैसेहृदयमेंसाक्षीरूपसेस्थितजोब्रह्महै ताब्रह्मकेप्राप्तिकीइच्छा-

वालामुमुक्षु प्राणकूंकहेहै ॥ तुमारेप्राणस्वरूपकूंब्रह्मरूपसे मैंअधिकारी कथनकरताहूं ॥ हेप्राण बुद्धिमेंजाअर्थकानिश्चयहोवेहै ॥ तथावाक्-कायकरिके जोअर्थसिद्धहोवेहै तिनसर्वरूपसे आपहीस्थितहो ॥ सर्व-रूपसे आपकूंकथनकरणेहाराजोमैंअधिकारीहूं तिसमेरेतांई विद्याकी प्राप्तिकरो ॥ तथावक्ताजोआचार्यहै तावक्ताकूंवक्तृत्वशक्तिकेदानसेर-क्षाकरो ॥तथाब्रह्मविद्याकेदानसे मैं अधिकारीकीरक्षाकरो ॥ ऐसेब्रह्म-विद्यामें विघ्ननिवृत्तिवासते अधिकारी वारंवारदेवतावोंकेतांई नमस्कार-करे ॥ औरआध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविक यातीनप्रकारकेवि-द्याप्राप्तिमेंजेविघ्नहैं ॥ तिनविघ्नोंकीनिवृत्तिवासते तीनवार ॐशांतिः शांतिःशांतिः यहमंत्रअधिकारीपठनकरे॥स्वरके तथाअक्षरोंके तथामा-त्रावोंके इत्यादिकोंकेउच्चारणमें पुरुषकूंप्रमादनप्राप्तहोवे इसप्रयोजनवा-सते शिक्षाअध्यायवर्णनकराहै ॥ ताशिक्षाअध्यायमें अनेकप्रकारके कर्मादिकोंकाविचारकराहै ॥ यातेंमुमुक्षुकूंविशेषअनुपयोगीजानकरि ताशिक्षाअध्यायमेंसे किसीकिसीस्पष्टमंत्रकाअर्थदिखावेहैं ॥ अधि-कारी ॐकाररूपपरमेश्वरके आगेप्रार्थनाकरेहै ॥ हेसर्ववेदोंमेंश्रेष्ठॐकार आपसर्वरूपहो ॥ प्रथमआपप्रजापतिकेतांईस्पष्टप्रतीतभयेहो ॥ हेपरमे-श्वररूपॐकार मैं अधिकारीकूं ब्रह्मविद्याकादानकरो ॥ हेभगवन् आ-पकीकृपाकरि मैं बहुतअर्थके धारणशक्तिवालाहोवों ॥ मेराशरीर ब्रह्मविद्याकेयोग्यहोवे ॥ मेरीजिव्हामधुरभाषणेवालीहोवै ॥ औरकर्णों-करि मैं बहुतअर्थकूंश्रवणकरूं ॥ हेॐकारतुमब्रह्मकेकोशहो ॥ जैसेकोशमेंखड्गरहेहै ॥ ताखड्गकीप्रतीतिकोशमेंहोवेहै ॥ तैसेब्रह्मकी प्राप्ति ॐकारकेचिंतनसेहोवेहै ॥ यातेंॐकारकूंब्रह्मकाकोशरूपसेनिरू-पणकरा ॥ बाह्यघटादिकोंकेज्ञानसे तुमप्रतीतहोतेनहीं ॥ अर्थयह ॥ बाह्यवृत्तिवालेतुमकूंजानेनहीं ॥ हेभगवन् जोआत्मज्ञान मैंश्रवणकरताहूं तिनकीआपरक्षाकरो ॥ अर्थयह ॥ मेरेकूंआत्मज्ञानकीविस्मृतिनहोवे ॥

मुमुक्षुवोंकेजपवासते यहमंत्रनिरूपणकरेहैं ॥ वेदकूंजबीशिष्यनेपठनक-रिलीया तबआचार्यशिष्यकूंउपदेशकरेहैं ॥ हेशिष्य सर्वकालमेंसत्य-संभाषणकरणामिथ्यासंभाषणकबीनहींकरणा ॥ वेदकानित्यपाठकरो तावेदकेविचारसे कबीप्रमादमतिकरो ॥ जैसेवामदेवऋषिने लोकोंके उद्धारवासते आपनाअनुभववर्णनकराहै ॥ तैसेब्रह्मभूतब्रह्मवेत्तात्रिशं-कुनामकऋषिनेभीलोकोंकेब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिवासते आपनेअनुभवका निरूपणकराहै ॥ वामदेवऋषिकाअनुभवतौआगेकहेंगे ॥ अबत्रिशंकु-ऋषिकाअनुभवकहेहैं ॥ मैंसंसाररूपवृक्षकाअंतर्यामीरूपप्रेरकहूं ॥ मेरी पर्वतकेपृष्ठकीन्यांई कीर्तिउठीहै सर्वसेउपरिपवित्रब्रह्महीमेराआत्माहै ॥ औरजैसेसूर्यउपाधिकब्रह्मअमृतस्वरूपहै ॥ तैसेमैंअमृतरूपहूं ॥ और मैंप्रकाशमानही धनकीन्यांई अत्यंतप्रियहूं ॥ औरमैंशुद्धआत्माका रबुद्धिकूं प्राप्तभयाहूं ॥ तथाजरामरणसेरहितहूं ॥ तथासांसारिक-सर्वउपद्रवसेरहितहूं ॥ ऐसात्रिशंकुऋषिकाअनुभव ब्रह्मविद्याकी प्राप्तिवासते वारंवारविचारणा ॥ वेदकूंआचार्यसेग्रहणकरिसर्वत्या-गीहोवेनहीं ॥ यातेंब्रह्मचर्यसेपश्चात् गृहस्थआश्रमकूं धारणकरणेकी इच्छावालाजोपुरुषहै ताकूंआचार्यअबकहेहैं ॥ हेशिष्यजोवेदकाउपदे-ष्टाआचार्यहै ताकूं वेदपठनकरिके प्रिय धनरूपदक्षिणाकादानकरो ॥ तादक्षिणादानकेपीछे आपनेगृहस्थाश्रममें स्थितहोइकरि पुत्रउत्पत्ति-वासतेयत्नकरो ॥ प्रजारूपतंतुकाउच्छेदमतिकरो ॥ औरगृहस्थाश्रम-मेंस्थितहोइकरि नित्यवेदकापाठकरो ॥ सत्यसंभाषणकरो ॥ धर्म करो ॥ आपनीरक्षाअर्थअनेकप्रकारकेकर्मकरो ॥ औरमंगलकरणे-हारेकर्मसे कदाचित्प्रमादनहींकरणा ॥ औरसंध्याकालमें भस्मकेत्रिपुं-ड्रकेलगानेसेकबीप्रमादनहींकरणा ॥ वेदकेपठनेपठानेसेप्रमादमतिकरो ॥ देवतापित्रोंकेवासते अग्निहोत्रश्राद्धादिकर्मोंकूंकरो तिनसेप्रमादमतिक-रो ॥ माता पिता आचार्य तथाअतिथि इनच्यारिकूंदेवताजैसामानो॥

संसारमें जे निंदितकर्महैं तिनकूंकबीमतिकरो सर्वकालमेंशुभकर्मकूं करो ॥ जेहमारेसेश्रेष्ठमहात्मापुरुषहैं तिनकीअनेकप्रकारसेसेवाकरो ॥ जोमहात्माकहैं तिसकूंधारणकरो ॥ औरतिनमहात्मावोंकेसाथ विवादकरनेसे महान्क्लेशप्राप्तहोवेहै ।। यातेंतिनमहात्मावोंसे कदाचित्विवादमतिकरो ।। जोकिंचित्भीकिसीकेतांईदानकरो तौश्रद्धाकरिदानकरो ।। श्रद्धाविनादानमतिकरो ।। विभूतिकरिकेदानकरो ॥ लज्जाकरिकेदानकरो ॥ भयकरिकेदानकरो ॥ मित्रादिकोंकेकार्यकरिदानकरो॥ ऐसेअनेकप्रकारकेकर्मकरणेवालेतुमकूं किसीकर्ममेंयदिसंशयउत्पन्नहोइजावे तौतादेशमेंजेमहात्माकर्मकरणेहारेहैं तेविचारयुक्त तथा कठोरतारहित तथानिष्कामस्वधर्मकेअनुष्ठानकरणेहारे जैसेकर्मकूंकरेहैं तिनकूंदेखकरि तुमभीतैसेकर्मकरो ॥ तथातिनसेपूछकरि संशयकीनिवृत्तिकरो ॥ हेअधिकारिजना यहउपदेश पुत्रादिकोंकूंवारंवारहै ।। औरवेदकारहस्यभीयहहीहै तथाईश्वरकीयहहीआज्ञाहै ।। अधिकारीपुरुष चित्तशुद्धिवासतेअवश्यकर्मकरे यहसर्वअध्यायकाअर्थहै ॥ अबद्वितीयअध्यायकेआरंभमें ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषेजेविघ्नहैं तिनकी निवृत्तिवासते औरशांतिमंत्रहै ।। ताशांतिमंत्रकेअर्थकूंदिखावेंहैं ।। सो परमात्मा हमगुरुशिष्यदोनोंकी ज्ञानप्रकाशकरनेसेरक्षाकरे ।। तथा हमदोनोंकी ज्ञानकेफलप्रगटकरनेसेरक्षाकरे ।। हमगुरुशिष्यका पठानापठना सर्वविघ्नोंकेनाशकरनेमेंसमर्थहोवे ॥ प्रमादकरिपठानेपठनेसे प्राप्तभयाजोद्वेष सोद्वेषनिवृत्तहोवे आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविकयातीनप्रकारकेविघ्नोंकीनिवृत्तिवासते ॐशांतिः शांतिः शांतिः यहमंत्रतीनवारपठनकरणा ॥ तैत्तिरीयउपनिषत्कीदोवल्लीहैं ॥ एक तौ आनंदवल्लीहै ॥ द्वितीयभृगुवल्लीहै ॥ प्रथमआनंदवल्लीकेअर्थकूं दिखावेहैं ॥ आनंदवल्लीकेप्रथम यहसूत्ररूपवचनकथनकराहै ॥ ब्रह्मविदाप्नोतिपरम् ॥ अर्थयह ब्रह्मवेत्तापरब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यासूत्रमें

समग्रब्रह्मीविद्यास्थितहै ॥ जाकेअल्पअक्षरहोवें बहुतअर्थकूंसूचन-
करे ताकूंसूत्रकहेहैं ॥ सर्वग्रंथोंकेच्यारिअनुबंधहोवेहैं ॥ वेदांतके
च्यारिअनुबंधोंकूंभीसूचनकरणेहारायहसूत्रहै ॥ च्यारिअनुबंधोंकूं
जैसेसूचनकरेहैं तैसेजनावेहैं ॥ ब्रह्मविदाप्नोतिपरं ॥ यासूत्रमें ब्रह्म-
कहनेसे प्रथमअज्ञातहुआ ब्रह्मात्माविषयकह्याहै ॥ अज्ञातहीविषय
होवेहै ॥ औरयावाक्यकेश्रवणकरनेसे सामान्यरूपसेब्रह्मकाज्ञानहुए-
भी विशेषआत्मरूपकरि ब्रह्मज्ञानकेनहोनेसें सूत्रमेंस्थितब्रह्मपद विषय-
काबोधकहै ॥ आगेप्रयोजनदोप्रकारकाहोवेहै एकतौगौणप्रयोजनहै ॥
दूसरामुख्यप्रयोजनहै ॥ अंतःकरणकीवृत्तिरूप अहंब्रह्मास्मि याप्रका-
रका यथार्थनिश्चयतौ गौणप्रयोजनहै ॥ अविद्यानिवृत्तिपूर्वक ब्रह्म-
प्राप्ति यहमुख्यप्रयोजनहै ॥ दोनोंप्रकारकेप्रयोजनकीकामनावाला
अधिकारीहै ॥ संबंधरूपचतुर्थअनुबंधयहहै जोग्रंथका औरअधिका-
रीका बोधकबोध्यसंबंधहै ॥ अधिकारीबोध्यहै वेदांतबोधकहै ॥
ज्ञानका औरवेदांतका जन्यजनकभावसंबंधहै ॥ ब्रह्मका औरवेदांत-
शास्त्रका अभिव्यंग्य अभिव्यंजकभावसंबंधहै ॥ जैसेहरीतकीऔरआ-
मलादिकोंकेभक्षणसे पूर्वसिद्धजलकेमधुररसकी अभिव्यक्तिहोवेहै ॥
तैसेवेदांतशास्त्रकेश्रवणसे पूर्वसिद्धब्रह्मकीप्रगटताहोवेहै यातेंब्रह्मअभि-
व्यंग्यहै ॥ तासिद्धब्रह्मकूंही आमलादिकोंकीन्यांई वेदांतशास्त्रप्रगट
करावेहै यातेंवेदांतशास्त्रअभिव्यंजकहै ॥ तथावेदांतशास्त्र ज्ञानद्वारा
अज्ञानकानिवर्त्तकहै ॥ अज्ञाननिवर्त्त्यहै ॥ यातेंवेदांतशास्त्रका औ-
रअज्ञानका निवर्त्तकनिवर्त्त्यभावसंबंधहै ॥ इसतैत्तिरीयउपनिषत्की
समाप्तिपर्यंत पूर्वउक्तसूत्रकाहीअर्थनिरूपणकराहै केवलअनुबंधकूंसू-
चनकरिकेही सूत्रसमाप्तनहींभया ॥ यातेंसूत्रकेअर्थकूंही समग्रउपनि-
षत् वर्णनकरेहै ॥ सूत्रमेंस्थित जोप्रथमब्रह्मपदहै ताब्रह्मपदकाअर्थपर-
मात्माहै ॥ अबताब्रह्मकेलक्षणकूंकहेहैं ॥ ब्रह्मकालक्षणदोप्रकारकाहै

एकस्वरूपलक्षणहै दूसरातटस्थलक्षणहै ॥ जोअसाधारणधर्म आपनेआश्रयकास्वरूपभूतहोइकरिआपनेआश्रयकूं इतरोंसेभिन्नकरे ताकूं स्वरूपलक्षणकहेहैं ॥ जैसेपृथिवीमेंरहनेहारा पृथिवीत्वधर्म पृथिवीकास्वरूपभूतहुआ पृथिवीरूपआश्रयकूं इतरजलादिकोंसेभिन्नकरेहै ॥ यातेंपृथिवीत्व पृथिवीकास्वरूपलक्षणहै ॥ यद्यपि नैयायिक पृथिवीत्वकाऔरपृथिवीकाभेदमानेहै यातेंस्वरूपलक्षणकैसेवर्णनकरा ॥ तथापि वेदांतमतमें जातिव्यक्तिकातादात्म्यहै ॥ यातेंपृथिवीत्वजातिकूं स्वरूपलक्षणताबनेहै ॥ तैसेब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकूं श्रुतिभगवती निरूपणकरेहै ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ सत्यरूप ज्ञानरूप अनंतरूप ब्रह्महै ॥ शास्त्रकीदृष्टिकूंअंगीकारकरिकेतौ यावाक्यमेंतीनलक्षणहैं लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिके सत्यज्ञानअनंतयहएकहीब्रह्मकालक्षण है ॥ यालक्षणसे असत् जड देशकालवस्तुकरि परिच्छिन्नवस्तुकी निवृत्तिहोवेहै ॥ ऐसे सत्यचित्अनंतस्वरूपब्रह्मकूं जोबुद्धिरूपीगुहामें साक्षीरूपसेस्थितजानताहै सोपुरुषब्रह्मरूपहुआ एककालमेंसर्वकामनावोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अबब्रह्मकेद्वितीयतटस्थलक्षणकूं निरूपणकरेहैं ॥ जोअसाधारणधर्मआपनेआश्रयसेभिन्नहोवे और आपकादाचित्कहुआ आपनेआश्रयसेभिन्नोंकीव्यावृत्तिकरे ताकूंतटस्थलक्षणकहेहैं ॥ जैसे न्यायमतकीरीतिसेगंध पृथिवीकीउत्पत्तिकालमेंहोवेनहीं किंतुपृथिवीकीउत्पत्तिसेपश्चात् उत्पन्नहोवेहै ॥ और महाप्रलयकालमें पृथिवीमें गंधरहेनहीं औरजलादिकोंसे पृथिवीकूं भिन्नकरेहै ॥ यातेंगंधपृथिवीकातटस्थलक्षणकहीयेहै ॥ तैसेजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणा यहब्रह्मकातटस्थलक्षणहै ॥ काहेते प्रलयकालमें तथामोक्षकालमें जगत्कीउत्पत्तिआदिककरणा ब्रह्ममेंहेनहीं ॥ औरब्रह्मसेभिन्नहुआ ब्रह्मकूं प्रधानपरमाणुआदिकोंसेभिन्नकरेहै ॥ यातेंजगत्उत्पत्तिआदिकारणता ब्रह्मकातटस्थलक्षणहै ॥ पूर्वमंत्रमें अनंतब्रह्मकह्याथा ताअनंतपदका

अर्थयहहै जावस्तुकाकिसीदेशमें तथाकिसीकालमें अभावनहोवे ॥ औरजावस्तुसेभिन्नकिंचित्‌मात्रनहोवे किंतुसर्वरूपहीहोवे ताकूंअनंतकहेहैं ॥ ब्रह्मसर्वव्यापकहै तथानित्यहै औरसर्वरूपहै ॥ यातें अनंतहै ऐसेश्रुतिभगवतीकहेहै ॥ आकाशादिसर्वजगत्‌ ब्रह्मसे भिन्न प्रतीतहोवेहै यातेंब्रह्मकूंसर्वरूपताकहनाअसंगतहै याप्रकारकीशंकाकी निवृत्तिवासतेही आकाशादिकोंकी ब्रह्मसेउत्पत्तिवर्णनकरीहै ॥ जैसे घटादिककार्य मृत्तिकासेउत्पन्नहुआ मृत्तिकासेभिन्ननहींहै ॥ तैसे ब्रह्मसे उत्पन्नहुआजगत्‌ ब्रह्मसेभिन्ननहींहै ॥ याअर्थके बोधनअर्थही आकाशादिकोंकीउत्पत्ति ब्रह्मसेकथनकरीहै ॥ ताउत्पत्तिके प्रकारकूं वर्णनकरेहैं ॥ सूत्रभागमें तथा सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म यामंत्रमेंकथनकराजो ब्रह्महै ताब्रह्मसे आकाशउत्पन्नभया ॥ औरशुद्धकूंयदिकारणमानेतौ मोक्षअवस्थामेंभी जगत्‌उत्पन्नहुआचाहिये इत्यादिअनंतदोषहैं ॥ यातेंमायाविशिष्टपरमात्मासे जगत्‌उत्पन्नहोवेहै ॥ तामायाविशिष्टपरमात्मासेही आकाशउत्पन्नभया ॥ आकाशरूपउपाधिउपहितपरमेश्वरसे वायुउत्पन्नभया ॥ वायुउपहितपरमेश्वरसे अग्निउत्पन्नभया ॥ अग्निउपहितपरमेश्वरसे जलउत्पन्नभया तथाजलउपहितपरमात्मासेपृथिवीउत्पन्नभयी ॥ सोपरमात्मा इनसूक्ष्मपंचभूतोंका पंचीकरणकरताभया ॥ पंचीकरणकाप्रकारसंक्षेपकरिप्रसंगसेकहेहैं ॥ प्रथमपंचभूतोंकेदोदोवृद्ध भागकरे ॥ पंचवृद्धभागोंकूं तौ पृथक्‌राखा ॥ द्वितीयपंचभागोंकेच्यारिच्यारिभागकरे औरआपनेआपनैभागोंकूंत्यागकरि दूसरेभूतोंकेभागोंमेंमेलनेसे पंचीकरणहोवेहै ॥ परंतुपृथिवीआदिकभूतोंके जेतामसभाग हैं तिनकापंचीकरणभया ॥ औरतिनभूतोंकेमिलेहुए राजसभागसेप्राणकीउत्पत्तिहोवेहै ॥ औरभिन्नभिन्नराजसभागोंसेतौ पंचकर्मइंद्रियोंकी उत्पत्तिहोवेहै ॥ आकाशकेराजसभागसे वाक्‌इंद्रियकीउत्पत्तिहोवेहै ॥ वायुकेराजसअंशसेहस्त तथाअग्निकेराजसअंशसेपाद तथाजलोंकेराज-

सअंशसेगुदा तथापृथिवीकेराजसअंशसेउपस्थ इंद्रियउत्पन्नहोवेंहैं ॥ ऐसेअपंचीकृतभूतोंकेराजसभागकाकार्यनिरूपणकरा ॥ सात्विकभागके कार्यकूंकहेहैं ॥ भूतोंकेमिलेसात्विकभागसे अंतःकरणउत्पन्नभया ॥ वृत्तिभेदसेअंतःकरणच्यारिप्रकारकाहै ॥ संकल्पविकल्परूपवृत्तिसेमन तथानिश्चयवृत्तिसेबुद्धि तथास्मरणवृत्तिसेचित्त तथाअहंकारवृत्तिसे अहंकारकहावेहै ॥ भूतोंकेपृथक्पृथक्सात्विक भागोंकेकार्यकहेहैं ॥ आकाशकेसात्विकभागसे श्रोत्र वायुकेसात्विकभागसेत्वक् अग्निके सात्विकभागसेचक्षु जलोंकेसात्विकभागसेरसना पृथिवीकेसात्विकभागसे घ्राणइंद्रियउत्पन्नहोवेहै ॥ ऐसेसूक्ष्मभूतोंकेसात्विकभोगोंसेतौ समष्टिव्यष्टिरूपसूक्ष्मशरीरकीउत्पत्तिभयी ॥ और सूक्ष्मभूतोंकेतामस भागोंका पंचीकरणपरमात्मानेकरा ॥ पंचीकरणसेपंचभूतस्थूलहोवेहैं॥ इनस्थूलभूतोंसे ब्रह्मांडउत्पन्नभया ब्रह्मांडमें चतुर्दशभुवनउत्पन्नभये ॥ औरस्थूलपृथिवीसे फलपाकपर्यंतजे औषधियांहै तेऔषधियांउत्पन्न भयी ॥ तिनऔषधियोंसे व्रीहियवादिअन्नउत्पन्नभया ॥ मातापिताने भक्षणकराजोअन्नहै ताअन्नसेवीर्यउत्पन्नभया ॥ तावीर्यसेशिरहस्तपादादिकोंवालाशरीरउत्पन्नभया ॥ ऐसेआकाशादिकसर्वजगत् ब्रह्मात्मासे उत्पन्नहोनेसे ताब्रह्मात्मासेभिन्ननहीं ॥ यातेंब्रह्मअनंतहैं यहनिरूपण करा ॥ अबताब्रह्मकेज्ञानवासते पंचकोशोंकूं श्रुतिभगवतीमुमुक्षुजनोंपर कृपालुहुईकथनकरेहै ॥ पूर्वनिरूपणकराजोब्रह्महै सोब्रह्महीसाक्षीरूप सेस्थितहै ॥ ताअंतरसाक्षीकेबोधवासते प्रथमश्रुति अन्नमयकोशका निरूपणकरेहै ॥ अन्नकेभक्षणसेशुक्रशोणितद्वारा उत्पन्नभयाजो पुरुष शरीरहै यहशरीरहीअन्नमयकोशहै ॥ और याशरीसेहीपुरुषकूंब्रह्मज्ञान तथाधर्माधर्मकाज्ञान लोकपरलोककाज्ञानहोवेहैं ॥ पशुआदिकशरीरोंमें ब्रह्मज्ञानआदिकहोवेनहीं ॥ यातेंपशुआदिकशरीरोंकूंत्यागकरि पुरुषशरीरकूंही अन्नमयकोशरूपसे वर्णनकराहै ॥ इनपंचकोशोंकूं जो

आत्मरूपताकाकथनहै सोशाखाकेअग्रचंद्रमाहै याकीन्यांई आत्मासा-क्षीकेबोधनवासतेहै ॥ कोईअन्नमयादिकहीआत्माहै यानिरूपणवासते नहीं ॥ अबअन्नमयकोशकूं ध्यानवासते पक्षीरूपसेवर्णनकरेहैं ॥ जैसे पक्षीके शिरवामपक्ष दक्षिणपक्ष उदर पुच्छ यहपंचअवयवहोवेहैं ॥ तैसे याअन्नमयकोशके पंचअवयवकल्पनाकारिकेहेहैं॥ तेपंचअवयवयहहैं॥ अन्नमयकोशरूप पक्षीका यहप्रसिद्धशिरहीशिरहै ॥ दक्षिणभुजादक्षिण पक्षहै ॥ वामभुजाउत्तरपक्षहै ॥ यहप्रसिद्धउदरहीउदरहै ॥औरनाभिके नीचेपादपर्यंतदेश पुच्छहै॥ यापुच्छकूंस्थितिकाआधारहोनेसे तापुच्छ-कूंही प्रतिष्ठायानामकरिकेकथनकराहै ॥ यद्यपि प्रसिद्धपक्षीतौ आप नीपुच्छउपरिस्थितहोवेनहीं॥ तथापिवानरभल्लूक आदिजीवोंकीस्थि-ति पुच्छउपरिभीहोवेहै यास्थितिकाआधार प्रतिष्ठापदकाअर्थकह्या ॥ ताअन्नमयकोशविषे यहमंत्रहै ॥ रसवीजरूपसेपरिणामकूंप्राप्तभयाजो अन्नहै ताअन्नसेही यापृथिवीमेंस्थितजेप्रजाहैं तेसर्वप्रजाउत्पन्नहोवेहैं ॥ ताअन्नकरिकेही जीवनकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ औरपृथिवीरूपअन्नमेंही लयकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ जोजीवजाकूंभक्षणकरेहै ताभक्षणकरणेयोग्यपदार्थकूंही अन्नकहेहैं ॥ जलकरिवृक्षादिकोंकाजीवनहोवेहै यातेंतिनकाजलही अन्नहै ॥ सिंहादिकमांसकूं भक्षणकरेहैं यातेंतिनकामांसहीअन्नहै ॥ मनुष्य शाकादिकोंकूंभक्षणकरेहैं तिनमनुष्योंका शाकादिरूपजीवही भोजनहै ॥ यहअर्थअन्यग्रंथमेंभीलिखाहै ॥ जीवोजीवस्यभोजनम् ॥ अर्थयह ॥ जीवहीजीवकाभोजनहै ॥ सर्वजीवोंकेउत्पत्तिस्थितिलय अन्नमेंहीहोवेहैं इसीसेयहअन्नज्येष्ठहै कहीये सर्वभूतोंकावडाहै और सर्व-रोगरूपक्षुधाका निवर्तकहोनेसे सर्वौषधभीअन्नकूंकहेहैं ॥ जेपुरुष अन्नकूंही भूतोंकेउत्पतिस्थितिलयकाकारणरूपजानकरि उपासनाकर-तेहैं ॥ और सर्वभूतोंकाज्येष्ठ तथासर्वौषधरूपसे अन्नकीउपासनाकर-तेहैं तथाअन्नकीही ब्रह्मरूपसेउपासनाकरतेहैं ॥ ऐसेउपासक मनवां-

छितअन्नकीप्राप्तिरूपफलकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ उपनिषत्केआदिमें तथासमाप्तिमें ब्रह्मकाप्रतिपादनकराहै॥ यातेंअन्नआदिकोंकाब्रह्मरूपसे जोध्यानकाफलकथनकरा सोअर्थवादहै ॥ पूर्वपूर्वकोशमें आत्मत्वबुद्धिकूंत्याग कराइके साक्षीआत्माकेबोधनमेंवेदकातात्पर्यहै॥ औरअन्नमयआदिकपंचकोशोंका पक्षीरूपसेजोवर्णनहै ॥ सोभी केवलआत्माकेबोधनमें प्रकारहै ॥ पक्षीरूपसे उपासनामें वेदकातात्पर्यनहीं ॥ जैसेकन्याकूं अरुंधतीकादर्शनकरानेवासते अनेकतारावोंकूं अरुंधतीरूपताकाकथनहै ॥ तैसेप्रत्यगात्माकेबोधवासते अन्नमयादिकोंकूं आत्मरूपताकाकथनहै ॥ अन्नमयादिकोंकेआत्मरूपताकेबोधनवासते वाअन्नमयादिकोंकीआत्मरूपसे उपासनाकेवासते अन्नमयादिकोंकूंआत्मरूपताकाकथननहीं ॥ याअभिप्रायकेबोधनवासतेही कोशोंकीपरंपराकूंदिखावेहैं ॥ पूर्वकहेअन्नमयकोशसे अंतरतथाभिन्न आत्माप्राणमयहै ॥ जैसेवायुकरिमशकपूर्णहोवेहै ॥ तैसेअंतरप्राणमयकोशरूपआत्माकरिके यहअन्नमयकोशपूर्णहै ॥ जैसेमूषाविषेप्राप्त जेद्रवीभूतताम्रादिधातुहैं तिनताम्रादिकोंकरिके मूषापूर्णहोवेहै ॥ तैसेप्राणमयकरिकै यहअन्नमयकोश पूर्णहै ॥ औरप्राणमयकोश पंचअवयववालाहोनेसे अन्नमयकोशकेसदृशहै ॥ जैसेपंचअवयववालाहोनेसे अन्नमयकेसदृशहै तैसेनिरूपणकरेहैं ॥ मुखनासिकाकरिचलनहाराजोप्राण सोप्राणही याप्राणमयकोशरूपपक्षीकाशिरहै ॥ सर्वशरीरमेंगमनकरणेहाराव्यान दक्षिणपक्षहै ॥ औरनीचेगमनकरणेहाराअपानवायु उत्तरपक्षहै ॥ आकाशहैदेवताजाकाऐसासमान सर्वअंतरअन्नजलकूंसमकरणेहारा उदरहै ॥ पृथिवीहै देवताजाका ऐसाऊर्ध्वगमनकरणेहारा उदानपुच्छहै ॥ औरउदानवायुके शरीरसेवाह्यनिकसनेसे सर्ववाह्यनिकसेहैं ॥ यातें सोउदानप्रतिष्ठा है ॥ ताप्राणमयकोशमें मंत्रकूंकहेहैं ॥ प्राणरूपदेवकरिकेही सर्वदेवतामनुष्यपशुआदिकचेष्टाकरेहैं ॥ प्राणहीसर्वजीवोंकाआयुरूपहै ॥

यातेंहीवेदभगवान्प्राणकूं सर्वायुषयानामकरिकै कथनकरैहै ॥ पूर्वअन्नमयकोशकीन्यांई याप्राणमयकोशकेब्रह्मरूपसे उपासनाकरनेसे श्रुतिफलप्रतिपादनकरैहै ॥ जेपुरुष प्राणमयकूंब्रह्मरूपसे उपासनाकरतेहैं ॥ तेपुरुष सर्वआयुकूंयालोकमेंप्राप्तहोवेहैं ॥ तिनका अपमृत्युकदाचित् होवेनहीं ॥ प्राणहीसर्वभूतोंकाआयुहै यातेंहीप्राणकूं आयुरूपश्रुतिमेंकहाहै ॥ ऐसेप्राणकूं सर्वायुषरूपसे तथाब्रह्मरूपसे उपासनाकरनेवालेकूं आयुप्राप्तिकही ॥ पूर्वअन्नमयकोशका यहप्राणमयआत्माहै ॥ तात्पर्ययहहै जोअन्नमयमेंआत्मत्वबुद्धित्यागकरि प्राणमयआत्माहै यहजाननां ॥ अबतृतीयमनोमयकोशकानिरूपणकरैहैं ॥ जैसेअन्नमयकोशसेभिन्न अंतरप्राणमयकह्या तैसेताप्राणमयकोशसे अंतर तथाप्राणमयकोशसेभिन्न मनोमयकोशहै ॥ तामनोमयकरिके प्राणमयपूर्णहै ॥ प्राणमयकेसदृशहीमनोमयहै ॥ जैसेपंचअवयववालाहोनेसे प्राणमयकेसदृशमनोमयकोशहै तैसेनिरूपणकरैहैं ॥ तामनोमयकोशरूपी पक्षीका यजुर्वेदशिरहै ॥ ऋग्वेददक्षिणपक्षहै ॥ सामवेदउत्तरपक्षहै ॥ वेदमेंजोव्याख्यानरूपब्राह्मणभागहै ॥ सोब्राह्मणभागमनोमयकोशरूपीपक्षीकाउदरहै ॥ अथर्ववेदपुच्छहै ॥ शांतिपुष्टिआदिगुणोंकाकारणहोनेसेसो अथर्ववेदस्थितिकाहेतुहै यातेंप्रतिष्ठाहै ॥ यद्यपि बाह्यऋगादिवेदोंकूं शब्दरूपहोनेसे मनोमयकोशकेअवयवरूपकहनाविरुद्धहै ॥ तथापि वेदोंकेस्वरवर्णआदिस्वरूप तथातिनवेदोंकीप्रमाणताकूं सिद्धकरणेहारी जेमनकीवृत्तियां हैं ॥ तेमनमेंहीरहेहैं ॥ यातेंमनोमयकोशकातेवृत्तियां अवयवरूपबनेहैं ॥ यामनोमयकोशमेंही यहमंत्रकहेहैं ॥ जैसेब्रह्मस्वप्रकाशमें मनवाणीप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ तैसेयामनोमयकोशरूपब्रह्ममें मनवाणीप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ आपनेस्वरूपमें आपनीप्रवृत्तिकहींदेखीनहीं ॥ जैसेअग्निआपनेसेभिन्नकाष्ठादिकोंकादाहकरैहै आपनादाहकरेनहीं तैसे मनवाणी आपनेसेभिन्नमेंप्रवृत्तहोवेहैं मनवाणीविशिष्टआत्मरूपस्वस्व

रूपमें मनवाणीप्रवृत्तहोवेंनहीं ॥ ऐसेआनंदरूपतथाब्रह्मरूपजानकरि मनोमयकोशकाजोध्यानकरताहै सोध्यातापुरुष जन्ममरणआदिसंसार-से भयकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ तिसपूर्वकहेप्राणमयका यहमनोमयकोशआ-त्माहै ॥ यातेंप्राणमयमेंआत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरि मनोमयकूं आपना स्वरूपजाने ॥ अबचतुर्थविज्ञानमयकोशकानिरूपणकरेहैं ॥ तामनो-मयकोशसेभिन्न तथातासे अंतर विज्ञानमयआत्माहै ॥ याविज्ञानम-यकरिकेही सोमनोमयपूर्णहै ॥ पंचअवयववालाहोनेसे मनोमयकेयह विज्ञानमयसदृशहै ॥ पंचअवयवनिरूपणकरेहैं ॥ गुरुशास्त्रकेवचनों-विषे विश्वासरूपश्रद्धा याविज्ञानमयकोशरूपपक्षीकाशिरहै ॥ शास्त्र-विषेकहेकर्मोंके मीमांसाशास्त्रके विचारसे उत्पन्नभयी जामानसीबुद्धि-है ॥ ताकूंऋतकहेहैं ॥ सोऋतदक्षिणपक्षहै ॥ करेहुए शुभकर्मकूं विषयकरणेहारीबुद्धिकूं सत्यकहेहैं ॥ सोसत्यउत्तरपक्षहै ॥ वेदांतशा-स्त्रकानिश्चयरूपयोगउदरहै ॥ हिरण्यगर्भरूपसमष्टिबुद्धिकूं महकहाहै ॥ सोमहपुच्छहै ॥ औरसर्वस्थूलप्रपंचकाकारणहोनेसे सासूक्ष्मसमष्टिबु-द्धिप्रतिष्ठाहै ॥ याविज्ञानमयकोशमेंभीयहमंत्रहै ॥ जोपुरुष विज्ञानम-यका यावक्ष्यमाणरीतिसेउपासनाकरेहै ताकूंफलकहेहैं ॥ यहविज्ञान यज्ञादिकवैदिककर्मोंकूं तथागमनआगमनादिकलौकिककर्मोंकूं करणे-हाराहै ॥ सर्वदेवताइंद्रआदिकभी याविज्ञानमयकूंबडाजानकरि उ-पासनाकरेहैं ॥ ऐसेविज्ञानमयकूं जोपुरुषब्रह्मरूपजानताहै ॥ तथादेहा-दिकोंमें आत्मत्वबुद्धिरूपप्रमादकूं नहींकरता सदाहीविज्ञानमयकूं आ-त्मरूपजानेहै ॥ सोपुरुषदेहअभिमानकेअभावसे देहकृतसर्वपापोंसेर-हितहुआ सर्वकामनावोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ पूर्वमनोमयका यहविज्ञानमय आत्माहै ॥ अबआनंदमयरूपपंचमकोशकानिरूपणकरेहैं ॥ ताविज्ञा-नमयसेभिन्न तथाअंतर आनंदमयकोशहै ॥ ताआनंदमयकरिके यह विज्ञानमयपूर्णहै ॥ जैसेविज्ञानमयकेपंचअवयवकहे ॥ तैसेया आनं-

दमयकेपंचअवयवहैं ॥ यातेंविज्ञानमयकेसदृशहै ॥ अबपंचअवयव निरूपणकरेहैं ॥ अनुकूलपुत्रादिपदार्थकेदर्शनजन्यजोसुखहै ताकूंप्रिय कहेहैं ॥ सोप्रियआनंदमयकोशरूपपक्षीकाशिरहै ॥ तथाइष्टपदार्थ-कीप्राप्तिजन्यसुखकूं मोदकहेहैं ॥ सोमोददक्षिणपक्षहै ॥ इष्टपदार्थ-केभोगसे उत्पन्नभयाआनंदप्रमोदहै ॥ सोप्रमोदउत्तरपक्षहै और प्रिय मोद प्रमोद इनसर्वमेंसामान्यरूपसेव्यापकजोआनंदहै सोआनंदउदरहै॥ सर्वजगत्काकारणरूपब्रह्म तथाअधिष्ठानरूपब्रह्म आनंदमयपक्षीकापुच्छहै ॥ तथाप्रतिष्ठाहै ॥ याआनंदमयकरिकेही विज्ञानमयपूर्णहै ॥ यातेंविज्ञानमयकायहआनंदमयआत्माहै ॥ विवेकीपुरुष याविज्ञानमयकोशमें आत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरिके आनंदमयकोशकूं आत्मरूपसे निश्चयकरे ॥ ऐसेश्रुतिमेंपंचकोशकानिरूपणकराहै सोकेवलअधिष्ठान ब्रह्मकेबोधवासतेहैं ॥ अन्नमयादिकपंचकेनिरूपणवासतेनहीं ॥ काहे-ते ॥ अधिष्ठानब्रह्मात्माकेज्ञानसे मोक्षरूपफलकीप्राप्तिहोवेहै ॥ अन्न-मयादिकोंकेज्ञानसे मोक्षरूपफलहोवेनहीं ॥ ऐसेविवेकी पुरुष अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय इनच्यारिकोशोंकूं अनात्माजानकरि आनंदमयकोशकाअधिष्ठानरूप तथापुच्छकीन्यांई पुच्छजोब्रह्म ताकूं निश्चयकरे ॥ आनंदमयहीआत्माहै ताकाब्रह्मपुच्छहै ऐसेजानेनहीं ॥ ब्रह्मकेज्ञानवासतेपंचकोशकहेहैं ॥ तथाएकएककोशकेपंचपंच अव-यवश्रुतिनेकहे पंचमआनंदमयकोशके च्यारिअवयवनिरूपणकरिके श्रुतिनेविचारकराजो पुच्छरूपअवयव आनंदमयपक्षीका किसपदार्थ-कूंकहूं औरकोईपदार्थप्रतीतहोवेनहीं ऐसेविचारकरिपुच्छरूप-ब्रह्मनहींभी तौभी अधिष्ठानब्रह्मकूं पुच्छरूपश्रुतिनेकहाहै ॥ यातेंअधिष्ठानब्रह्मकेज्ञानवासतेही पंचकोशनिरूपणकरे ॥ ता-ब्रह्मकेस्वरूपमेंयहमंत्रहै ॥ जोपुरुषब्रह्मकूंअसत्जानेहै सोपुरुष आपहीअसत्होवेहै ॥ औरजोपुरुष ब्रह्मकूंसत्रूपजानेहैं ॥ तापुरुषकूं

ब्रह्मवेत्तासत्रूपजानेहैं ॥ ऐसेआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं श्रवणरीतिसे कहा अबमननरीतिसे प्रश्नउत्तरद्वारा ताआत्माकानिरूपणकरेहैं ॥ प्रथमयहप्रश्नहै सत्यज्ञानअनंतरूपब्रह्मजोवेदांतीमानेहैं सोमाननामिथ्या है ॥ काहेते जोब्रह्मसत्यादिरूपहोता तोपृथिवीजलादिकोंकीन्यांई हमसर्वकूंप्रतीतहोता प्रतीतहोवेनहीं ॥ यातेंसोब्रह्महैनहीं ॥ १ ॥ द्वितीयप्रश्नयहहै ॥ ब्रह्मसर्वकाआत्माहै औरब्रह्मकाकिसीविषे पक्षपाततौहैनहीं ॥ यातेंजैसेज्ञानीब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहैं तैसेअज्ञानी ब्रह्मकूंकिसवासतेनहींप्राप्तहोता ॥ २ ॥ अबतृतीयप्रश्नकूंनिरूपणकरेहैं ॥ जैसे व्यापकजोआकाशहै सोआकाश ज्ञानीअज्ञानीसर्वकूंप्राप्तहै ॥ ताआकाशकीज्ञानीकूंप्राप्ति अज्ञानीकूंअप्राप्ति कहनीविरुद्धहै ॥ तैसेसर्वत्र आत्मरूपकरिव्यापकब्रह्मकी ज्ञानीकूंप्राप्तिअज्ञानीकूंअप्राप्ति कहनी विरुद्धहै ॥ यदिअज्ञानीब्रह्मकूंप्राप्तनहींहोता तौविद्वान्भीब्रह्मकूंप्राप्तनहींहुआचाहिये ॥ ३ ॥ इनतीनप्रश्नोंकाउत्तर विस्तारसेनिरूपणकरेहैं ॥ प्रथमअंतकेदोनोंप्रश्नोंका समाधानयहहै ॥ यद्यपि ब्रह्मसर्वका आत्माहै यातेंअज्ञानीकूंभीप्राप्तहै ॥ तथापि ब्रह्मज्ञानकरि अज्ञाननिवृत्तिसे ज्ञानी ब्रह्मकूंनिरावरणआत्मरूपसे जानताहुआ ब्रह्मकूंप्राप्तभया ऐसेकह्याजावेहै ॥ अज्ञानीकाआवरणनिवृत्तभयानहीं यातेंअज्ञानी ब्रह्मकूंप्राप्तनहींभया ऐसेकह्याजावेहैं ॥ जैसेकिसीदोपुरुषोंकेगृहमें स्वर्णरूपनिधि पृथिवीमेंदाबीहोवे ॥ एकपुरुषकूंतौ किसीदयालुनेकहदिया जोंतेरेगृहमेंअनंतस्वर्णरूपनिधिहै तूंदरिद्रीकिसवासतेभयाहै ॥ ऐसेवाक्यकूंश्रवणकरिसोपुरुष प्राप्तहुईनिधिकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरद्वितीयपुरुषकूं दयालुपुरुषकीप्राप्तिभयीनहीं ॥ यातेंसोपुरुष प्राप्तहुईनिधिकूंभी प्राप्तहोवेनहीं ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषकूं शुभकर्मोंसे ब्रह्मनिष्ठगुरुकीप्राप्तिहोवेहै ॥ गुरुकहेहैं भोमुमुक्षो तूं शुद्धसच्चिदानंदनिर्विकार परिपूर्णरूपब्रह्महै ॥ ऐसेआपनेशुद्धरूपकूंत्यागकरि आपकूं सुखीदुःखीज-

न्ममरणवाला किसवासतेमानताहै ॥ ऐसेवाक्यकूंश्रवणकरि सोशुद्ध अधिकारी प्राप्तब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ औरद्वितीयपुरुषकूं निष्कामकर्मकेअभावसे अंतःकरणशुद्धि तथाज्ञानीगुरुकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ सामग्रीकेअभावसेज्ञानहोवेनहीं ॥ यातेंसोपुरुष प्राप्तब्रह्मकूंभीप्राप्तहोवेनहीं ॥ अबब्रह्मकीअसत्ताकहनेहारे प्रथमप्रश्नके उत्तरकूं विस्तारसेकहेहैं ॥ सोपरमात्मा जगत्उत्पत्तिवासतेकामनाकरताभया ॥ मैआपही प्रजारूपकरिकैबहुतरूपहोवों ॥ ऐसेइच्छाकरिकै जगत्केविशेषनामरूपकी उत्पत्तिवासते विचारकरताभया ॥ ताविचारकूंकरिके यासर्वनामरूपजगत्कूं सोपरमात्माउत्पन्नकरताभया ॥ तासर्वप्रपंचकूंउत्पन्नकरिके आपहीपरमात्मा याशरीरमेंप्रवेशकरताभया ॥ परमात्माकाप्रवेशमुख्य तौबनेनहीं ॥ परिच्छिन्नपदार्थकाहीमुख्यप्रवेशहोवेहै ॥ यातेंप्रवेशकथन जीवकूंब्रह्मरूपताबोधनवासतेहैं ॥ जैसे कोईदेवदत्तनामकपुरुष आपनेगृहमेंप्रवेशकरेहै ॥ सोदेवदत्तप्रवेशकर्ता बाह्यस्थितआपनेस्वरूपसेभिन्ननहीं किंतुजोबाह्यस्थितदेवदत्तथा सोईदेवदत्तआपनेगृहमेंविराजमानहै ॥ तैसेपरिपूर्णब्रह्मनेही जीवरूपसेयासंघातमें प्रवेशकराहै यातें यहजीव परिपूर्णब्रह्मसेभिन्ननहीं किंतु परिपूर्णब्रह्मरूपहीजीवहै ॥ यातात्पर्यकेबोधनअर्थहीप्रवेशश्रुतिअर्थवादरूपहै ॥ ऐसेपरमात्माही अंतःकरणमेंस्थितहुआ द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञातारूपसेप्रतीतहोवेहै ॥ सोपरमात्माही पृथिवीजल अग्निरूप मूर्तरूपहोताभया ॥ और आकाशवायुरूप अमूर्त्तरूपहोताभया ॥ जिनकानामरूपक्रियाकरिके मनुष्यादिकथनकरेहैं ॥ ताकूंनिरुक्तकहेहैं ॥ जाकानामरूपक्रियासे व्यवहारनहींकरेहैं ताकूंअनिरुक्तकहेहैं ॥ ऐसेकहेनिरुक्त अनिरुक्त मूर्त्त अमूर्त्तरूपहीहैं ॥ गृहआदिआश्रयरूपमूर्त्तकूंही निलयनकहेहैं ॥ तासे विपरीत अमूर्त्त अनिलयनहै ॥ औरचेतनरूपसे प्रतीतहोनेहारेनेत्रादिक तथाअंतःकरण तिनकूंविज्ञानकहेहैं ॥ तिनसेभिन्नपाषाणादि अवि-

ज्ञानहैं तथाव्यवहारिकसत्यजेघटादिहैं तथास्वप्नपदार्थ गंधर्वनगरआदिजेप्रातिभासिकहैं ॥ सत्यरूपपरमात्मा इनपूर्वकहेसर्वपदार्थरूपसे आपहीउत्पन्नहोवेहैं ॥ ऐसेकामनाकरणेवाला तथाविचारकरणेवाला तथाजगत्उत्पत्तिकरणेवाला तथाप्रवेशकरणेवाला तथामूर्त्तअमूर्तादिरूपताकूं आपधारणेवालाब्रह्म असत्‌रूपकैसेहोवेगा॥ किंतुसत्‌रूपही है ॥ तामेंयहमंत्रहै यहसंपूर्णजगत् उत्पत्तिसेप्रथमस्थूलरूपसे रहितब्रह्मरूपहीहोताभया ॥ ताअविकृतब्रह्मसेही ॥ यहस्थूलजगत्उत्पन्नभया ॥ औरब्रह्मआपनेआपकूं जगत्‌रूपसेउत्पन्नकरताभया ॥ यातें ब्रह्मकूं श्रुतिमें सुकृतयानामकरिकथनकराहै ॥ यानामरूपजगत्कूं उत्पन्नकरणेहाराब्रह्महीसुकृतहै ॥ ऐसे सुकृतब्रह्मसत्यहै असत्यनहीं ॥ इतनेग्रंथकरिसत्यरूपसे ब्रह्मकानिरूपणकरा ॥ अबआनंदरूपसेब्रह्मका निरूपणकरेहैं ॥ पूर्वकह्यासत्यरूपब्रह्मात्माही आपनेस्वरूपभूतआनंदसे सर्वजगत्कूंआनंदकरेहै ॥ यातेंरसरूपहै कहीयेसाररूपहै ॥ ब्रह्मकी आनंदरूपताविषेप्रमाण विद्वान्‌काअनुभवहै ॥ स्त्रीपुत्रादिकविषयोंकूं नप्राप्तहुएभीविद्वान् ताआनंदरूपब्रह्मात्माकूं प्राप्तहोइकरि परमआनंदीहीप्रतीतहोवेहैं ॥ यहस्थूलशरीर इंद्रियादिकसहितहुआजीवताहै या शरीरकाजीवनभी आनंदरूपआत्मा विनाहोवेनहीं ॥ यहसत्‌रूप तथाआनंदरूपआत्मा याशरीरमें प्राणअपानादिकोंकी चेष्टाकरानेवाला यदिनहोवेतौ याजडसंघातकीप्रवृत्ति ताचिद्‌आनंदरूपआत्माविनाकैसे होवेगी किंतुनहींहोवेगी ॥ यातेंयहआत्माही सर्वकूंआनंदकरेहैं तथा याब्रह्मात्माकरिकेही सर्वचेष्टासिद्धहोवेहै ॥ यहआत्मा बाह्यस्थूलप्रपंचसेरहितहै तथास्थूल सूक्ष्म कारण यात्रितयशरीरसेरहितहै ॥ अद्वैत ब्रह्ममैंहूं यहजानताहुआविद्वान् तथाभयसेरहितनिष्ठाकूंप्राप्तहुआ अभयब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ भेदद्रष्टाकूंतौ महान्‌भयकीप्राप्तिहोवेहै यहनिरूपणकरेहैं ॥ जोपुरुष याअद्वैतब्रह्ममें किंचित्‌भीभेददेखताहै सोभेद-

द्रष्टा भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसेएकचंद्रमामें दोचंद्रमाजाननेवालाविद्वान् भी अज्ञानीकहीयेहै ॥ तैसेअद्वितीयब्रह्ममें भेदबुद्धिकरणेहाराविद्वान् भीअज्ञानीकहीयेहै ॥ ईश्वरअन्यहै मैंअन्यहूं याभेदबुद्धिकरिके ताविद्वान्कूंभी ब्रह्मभयकाहेतुहै ॥ ब्रह्मज्ञानविना मायाविशिष्टपरमेश्वरसे सर्वकूंभयप्राप्तहोवैहै ॥ यामेंयहमंत्रहै ॥ यापरमात्माकेभयकरिकेवायु चलताहै ॥ तथायापरमात्माके भयकरिकेही सूर्यउदयहोवैहै ॥ या परमात्माकेभयकरिके अग्निप्रज्वलितहोवैहै ॥ यापरमात्माके भयकरिकेही इंद्रवर्षाकरेहै ॥ और वायु अग्नि सूर्य इंद्र याच्यारिदेवतावोंकी अपेक्षासे पंचममृत्युयमश्रुतिमेंकह्याहै ॥ सोमृत्यु यापरमेश्वरके भयकरिही धावताहुआ सर्वजीवोंकेप्राणोंकूंनिकासेहै ॥ जबी यहबडेबडेदेवताभी तापरमेश्वरसे भयकूंप्राप्तहोइरहेहैं ॥ तबी अन्यजीवकी क्या कथाहै ॥ सूर्यादिकसर्वदेवतावोंने पूर्वजन्ममेंकरेजे कर्मउपासनाहैं ॥ तिनकाफलतिनदेवतावोंकूं देवभावकीप्राप्तिभयीहै ॥ औरभेदबुद्धिसे कर्मउपासनाकरेहैं ताभेदबुद्धिकाफल भयकीप्राप्तिभयीहै ॥ यातेंकदाचित्भीमुमुक्षुनेभेदबुद्धिकरणीनहीं ॥ ब्रह्मकेआनंदकरिकैही ब्रह्माआदिकसर्वआनंदीहोरहेहैं याअर्थकेनिरूपणवासते विषयजन्यआनंदकी न्यूनता अधिकताकूंकहेहैं ॥ तथाब्रह्मस्वरूपआनंदही सर्वमेंजैसेंव्यापकहै ताविचारकूंकरेहैं ॥ यामानुष्यलोकविषे जोपुरुषयुवान्होवे तथा सुंदररूपशीलादिगुणोंकरि सहितंहोवे तथावेदपठितहोवे ॥ तथामाता पिता आचार्यइनोंकरिके शिक्षितहोवे ॥ वज्रकेतुल्यजाकेअंगहोवें ॥ इंद्रकेतुल्यबलीहोवे ॥ तथास्वर्णादिधनकरिकेपूर्ण तथाव्रीहीआदिअन्नोंसे पूर्ण जापृथिवीहै तासंपूर्णपृथिवीकापतिहोवे ॥ औरदीर्घजाका आयुहोवे ॥ ऐसेसर्वगुणकरियुक्त चक्रवर्तीराजाकूं संपूर्णमानुष्यविषयानंद प्राप्तहोवैहैं ॥ औरईहां याकल्पमेंही जिनमनुष्योंने कर्मउपासना करेहैं ॥ तिनकर्मउपासनाके बलसे गंधर्वभावकूंप्राप्तभयेहैं ॥ तिनम-

नुष्यगंधर्वोंकूं ताचक्रवर्तीराजासे शत १०० गुणअधिकआनंदप्राप्तहोवे है ॥ सोसर्वआनंद निष्कामहोनेसे ज्ञानीकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा चक्रवर्तीराजागंधर्वआदिरूपसे ज्ञानीआपकूंहीभोक्तामानेहै ॥ यातेंराजाआदिकोंके सर्वआनंद ज्ञानीकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यामेंसंशयनहीं ॥ पूर्वकल्पमेंकरेकर्म उपासनाकेबलसे याकल्पकेआदिमें जेपुरुष गंधर्वभावकूंप्राप्त भयेहैं ताकूंदेवगंधर्वकहेहैं ॥ तिनगंधर्वोंकूं मनुष्यगंधर्वोंसे शतगुणअधिकआनंदप्राप्तहोवैहै ॥ सोसर्वआनंद निष्कामज्ञानीकूंप्राप्तहोवैहै ॥ औरवहुतकालपर्यंत स्थाईहैलोकजिनोंका ऐसेचिरलोकवासीपित्रोंकूं तिनदेवगंधर्वोंसे शतगुणअधिकआनंदप्राप्तहोवैहै ॥ सोआनंदभी निष्कामज्ञानीकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकल्पकेआदिमें स्मार्त्तकर्म वापीकूपतडागादिकोंकेकरणेसे जेदेवभावकूंप्राप्तभयेहैं तिनकूं आजानदेवताकहेहैं ॥ तिन आजानदेवतावोंकूंपित्रोंसे शतगुणअधिकआनंद प्राप्तहोवैहै ॥ सोआनंद निष्कामज्ञानीकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जेयाकल्पमें श्रौतअग्निहोत्रअश्वमेधादिककर्मोंकूंकरिके देवभावकूंप्राप्तभयेहैं तिनकूं कर्मदेवताकहेहैं तिनकर्मदेवतावोंकूं आजानदेवतावोंसे शतगुणअधिकआनंदप्राप्तहै॥ सोआनंदभीनिष्कामज्ञानीकूंप्राप्तहै ॥ और अष्टवसु एकादशरुद्र द्वादश आदित्य इंद्र प्रजापति यह ३३ तेतीसमुख्यदेवताहैं ॥ कर्मदेवतावोंसे तिनमुख्यदेवतावोंका शतगुणअधिकआनंदहै ॥ सोआनंदनिष्कामज्ञानीकाहै ॥ देवराजइंद्रकूं तिनमुख्यदेवतावोंसे शतगुणअधिकआनंदप्राप्त है ॥ सोआनंदभीनिष्कामज्ञानीकाहै ॥ ताइंद्रसे बृहस्पतिदेवगुरुकूं शतगुणअधिकआनंदप्राप्तहोवैहै ॥ सोआनंदभीनिष्कामज्ञानीकूंप्राप्तहै॥ तादेवगुरुबृहस्पतिसे प्रजापतिविराट्कूं शतगुणअधिकआनंदप्राप्तहै ॥ सोआनंदभीनिष्कामज्ञानीकाहै ॥ ताप्रजापतिसे ब्रह्माजोहिरण्यगर्भहै ताकूंशतगुणअधिकआनंदप्राप्तहोवैहै सोआनंदभी ज्ञानीनिष्कामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ आगेआत्मानंदरूपसमुद्रका यहहिरण्यगर्भकाआनंद किंचित्

लेशमात्रहै ॥ यातेंहीश्रुतिभगवतीने आत्मानंदकूं हिरण्यगर्भकेआनंदसे शतगुणवासहस्रगुण अधिकनहींकह्या ॥ ताआत्मानंदसमुद्रकूं ज्ञानी निष्कामप्राप्तहै ॥ यहआनंदरूपब्रह्महीं आदित्यमंडलमें तथानेत्रोंमेंस्थितहै ॥ औरयाअध्यात्मरूपनेत्रोंमें तथाअधिदैवरूपआदित्यमंडलमेंस्थित ब्रह्मात्माकाभेदनहीं ॥ ऐसेआत्माकूं अभेदरूपसे जानताहुआविद्वान् अन्नमयप्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय इनपंचकोशोंमें आत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरि ब्रह्मानंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ याअर्थमेंयहमंत्रहै ॥ शब्दसेरहितब्रह्ममेंवाणीप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ तथानामरूपसेरहितब्रह्ममें मनप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ ऐसेमनवाणीकेअविषय आनंदरूपब्रह्मकूं जानताहुआ विद्वान् भेदबुद्धिकेअभावसे किसीसेभी भयकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ औरअज्ञानीपुरुषकूं पुण्यकर्म नकरेहुए यारीतिसे तपावेहैं यदिमैंपुण्यकर्मकरता तौमैंभी अन्यसुखीपुरुषोंकीन्यांई सुखकूंप्राप्तहोता ॥ औरपापकर्मकरेहुए यारीतिसे अज्ञानीपुरुषकूंतपावेहैं धिक्कारहै मैंपापीहूं मैंनेपापकर्म बहुतकरेहैं यातेंहीसर्वदादुःखकूं अनुभवकरताहूं मैंपापीकूं ऐसाहीदंडयोग्यहै ॥ ऐसेमूढअज्ञानीकूं पुण्यकर्मनकरेहुए तथापापकर्मकरेहुए दुःखकूंदेवेहैं ॥ विद्वान्पुरुषतौ मैंनेपुण्यकिसवासतेनकरे औरपापकिसवासतेकरे ऐसेतपायमानहोवेनहीं ॥ तामें हेतुयहहै ॥ जोज्ञानी तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकूं आपनास्वरूपजानेहै ॥ यातें जैसे अग्नि आपनेस्वरूपकूंदाहकरेनहीं ॥ तैसेसर्वकर्मोंकाआपनाआत्माजोविद्वान् ताविद्वान्कूं पुण्यकर्मनकरेपापकर्मकरेहुए तपायमानकरेनहीं ॥अवआनंदवल्लीकी समाप्तिमें शांतिमंत्रकेअर्थकूंदिखावेहैं॥सोपरमात्मा हमगुरुशिष्यदोनोंकी ज्ञानकेप्रकाशकरनेसेरक्षाकरे॥तथाब्रह्मविद्याकेफलप्रगटकरनेसेपालनकरे ॥ हमगुरुशिष्यकापठानापठनासर्वविघ्नोंकेनाशकरणेविषेसमर्थहोवे ॥ हमारेप्रमादकरिपठनेपठानेसे प्राप्तभयाजोदोष तादोषसे उत्पन्नभयाजो हमदोनोंमेंद्वेष सोद्वेषनिवृत्तहोवे हमारेकूंसोद्वेषकदाचित्नप्राप्तहोवे ॥

ॐशांतिः शांतिः शांतिः याकापूर्वउक्तअर्थजानलेना ॥ ऐसेआनंदवल्ली-कूंसमाप्तकरिके अबभृगुवल्लीकूंदिखावेहैं ॥ जाशांतिमंत्रकाअर्थ पूर्व-अबीकह्याहै ताशांतिमंत्रकेअर्थकूं याभृगुवल्लीकेआरंभमेंभी जानलेना॥ पूर्वकालविषे भृगुनामवाला वरुणऋषिकापुत्रहोताभया॥सोभृगुऋषिपि-तावरुणऋषिकेपासजाइके याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ हेभगवन् आप जाब्रह्मकूंजानतेहैं ताब्रह्मकाही मेरेतांईउपदेशकरो॥याप्रश्नकूंश्रवणकरिके सोवरुणपिता यहविचारकरताभया ॥ जबी यहभृगुबुद्धिमान्होवेगा तौआत्माकीप्राप्तिविषे साधनजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंद्वारा तावास्तवआ-त्माकूं निश्चयकरिलेवेगा॥यातेंआत्माकीप्राप्तिमेंजेसाधनपदार्थहैं तिनका-हीमैंनिरूपणकरूं॥ यहअन्नमयस्थूलशरीर तथापंचप्राण पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय च्यारिअंतःकरण जीवसाक्षीकीप्राप्तिमें द्वाररूपइनपदा-र्थोंकूंनिरूपणकरिके ब्रह्मकीप्राप्तिमेंद्वारभूत ब्रह्मकेलक्षणकूंनिरूपणकरे-है ॥ हेभृगो जाउपादानकारणसे यहसर्वभूत उत्पन्नहोवेहैं ॥ तथाजा-कारणकरिके प्राणोंकूंधारणकरेहैं ॥ तथाजामेंमरेहुए प्रवेशकरेहैं ॥ अर्थयह ॥ जामेंलयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसेकारणकूं तुमब्रह्मरूपजानो सोईकारणब्रह्महै ॥ ऐसेब्रह्मका यहजगत्उत्पत्तिआदिकोंकीकारणता तटस्थलक्षणनिरूपणकरा ॥ जैसेकाकवालादेवदत्तकागृहहै ईहांकाक गृहकातटस्थलक्षणहै ॥ काहेते गृहमेंकाकसर्वदारहेनहीं तथाइतरपुरुषों-केगृहोंसे देवदत्तकेगृहकूंभिन्नकरेहैं ॥ तैसेजगत्कारणतादि ब्रह्ममेंसर्वदा रहेनहीं तथाब्रह्मभिन्नपरमाणुप्रधानादिकोंसे ब्रह्मकूंभिन्नकरेहै ॥ यातेंज-गत्कारणतादिक ब्रह्मकातटस्थलक्षणहै ॥ ऐसे भृगुपुत्रश्रवणकरि यहनि-श्चयकरताभया॥जोपिताजीनेतौ मेरेकूंब्रह्मउपदेशकराहै॥परंतु ताब्रह्मा-त्माकाप्रत्यक्ष विनाइंद्रियसंयमरूपतपसे तथाविचाररूपतपसेविनाहोवे गानहीं यातेंमैंतपकूंकरूं ॥ ऐसेभृगुऋषिने प्रथम इंद्रियसंयमरूपतपकूं करा ॥ ताअनंतर मननहैनामजाकाऐसाजोविचाररूपतपहै ताकूंसोभृगु

करताभया ॥ ताविचारसे भृगुनेयहनिश्चय करा ॥ अन्नहीब्रह्महै॥ काहेते समष्टिविराट्रूपअन्नसे तथाव्यष्टिस्थूलशरीररूपअन्नसे यहप्राणी उत्पन्नहोवेहैं ॥ तथातासमष्टिव्यष्टि स्थूलशरीरसे उत्पन्नहुएतामेंहीस्थितहोवेहैं ॥ तथातामेंहीलयहोवेहैं ॥ ईहांपंचभूतरूपविराट्में तथाव्यष्टिस्थूलशरीरमें अन्नशब्दकीप्रवृत्ति भोगसाधनहोनेसेजाननी ॥ इनपंचभूतोंमें स्थूलजगत्केकारणतादिकभीबनेहैं ॥ ऐसेअन्नमयकूंब्रह्मरूपजानकरि सोभृगुपुनःविचारकरि ताअन्नमयकोशमें याप्रकारकेदोषोंकूंदेखता भया ॥ समष्टिस्थूलशरीर विराट्कादेहतौ उत्पत्तिनाशवान्है तथाजड औरपरिच्छिन्नहै ॥ यातेंब्रह्मनहीं ॥ तथाव्यष्टिस्थूलशरीरमें याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ यहस्थूलदेहभी जड परिच्छिन्न उत्पत्तिनाशवान् प्रत्यक्षप्रतीतहोवेहै ॥ औरयादेहकूंही आत्मामानेतौजबीयास्थूलशरीरकानाशहोवेहै तबसुखदुःखकाज्ञानकिसवासतेनहींहोता ॥ औरमै बालकनवीनउत्पन्नभयेकी स्तनपानमें प्रवृत्तिदेखताहूं ताबालककीप्रवृत्तिक्षुधाकीनिवृत्तिवासते यादेहकूंआत्मामाने बनेनहीं ॥ काहेते ताबालककूं अनुकूलपदार्थका ज्ञान याजन्ममेंतोभयानहीं जाज्ञानसे संस्कारद्वारा स्मृतिहोइकरि स्तनपानमेंप्रवृत्तिसंभवे ॥ यातेंयादेहसेभिन्न अनुकूलस्मृति आदिकोंकाआश्रयआत्माहै ॥ और जायते अस्ति वर्धते विपरिणमते अपक्षीयते विनश्यति यहषट्विकारवान्देहहै ॥ तथा माताकेरक्तसे औरपिताकेशुक्रसे याकीउत्पत्तिहै ॥ तथा त्वचा अस्थि मांस नाडी मज्जादिकअपवित्रपदार्थोंकरिपूर्णहै ॥ अनंतरोगोंका यह स्थूलशरीरआश्रयहै ॥ तथाप्राणकेनिकसनेसे अग्निकरिकै भस्मकूंप्राप्त होवेहै ॥ यदिसिंहादिकयाकूंभक्षणकरें तौयहदेहमलभावकूंप्राप्तहोवेहै॥ औरकोईदिन प्राणविनायहदेहपडारहे तौकीटरूपहोइजावेहै ॥ औरअन्नविना याकीस्थितिहोवेनहीं ॥ ऐसाअनेकदोषग्रस्त परमअशुद्धयहदेह कदाचित्आत्माबनेनहीं यहविचारकरिपिताकूंकहेहै ॥ हेभगवन् यह

देहतौआत्मानहीं ॥ मेरेकूंब्रह्मकाउपदेशकरो ॥ पितावरुण भृगुकूंकहे हैं ॥ हेपुत्र विचारविनाआत्माका प्रत्यक्षहोवेगानहीं ॥ यातेंविचारसे-हीब्रह्मकूंनिश्चयकरो ॥ ऐसेश्रवणकरिकेभृगु पुनःविचारकरिकै प्राणमय-विषेहीब्रह्मके लक्षणकूं जोडताभया ॥ सर्व जीव प्राणविशिष्टदेहसेही उत्पन्नहोवेहैं ॥ याप्राणकरिकेहीजीवेंहैं ॥ प्राणकेनिकसनेसे नाशकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ यातेंउत्पत्तिआदिकोंका कारणहोनेसे प्राणहीब्रह्महै ॥ ऐसे प्राणकूंब्रह्मरूपसे जानताहुआ सोभृगुऋषि विचारकरि याप्रकारकेप्राण-मयविषेभी दोषोंकूंदेखताभया ॥ समष्टिव्यष्टिप्राणतौजडहै स्थूलशरीर-कीन्यांई उत्पत्तिनाशवान्है ॥ तथाजलविना याप्राणकीस्थितिहोवेन-हीं ॥ ऐसेप्राणमयविषे अनंतदोषोंकूंदेखकरि तेसर्वदोषप्राणमयविषे पिताकूंकहे औरयहकहा मेरेकूंब्रह्मउपदेशकरो पिताविचारकरिकेब्रह्मकूं जानोऐसेकहतेभये॥पुनःभृगु मनोमयविषेब्रह्मकेलक्षणकूं जोडताभया॥ यहमनहीचेतनप्रतीतहोवेहै ॥ यातेंमनही जगत्कीउत्पत्तिआदिकोंका कारणहोनेसेब्रह्महै ॥ मनसावधानहोवेतौ ज्ञानादिकहोवेहैं ॥ साव-धाननहींहोवेतौ ज्ञानादिकहोवेनहीं ॥ यातेंमनसेभिन्नब्रह्मनहीं ॥ ऐसे मनकूंब्रह्मरूपजानकरि तामेंभीदोषोंकूंदेखताभया ॥ यहमनभीब्रह्मरूप नहींहै ॥ काहेते यहसमष्टिव्यष्टिरूपमन उत्पत्तिवालाहै ॥ तथापरि-च्छिन्नहै तथाअन्नकीशुद्धिसे शुद्धिकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अन्नकीमलिनतासे यहमनमलिनताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसाशुद्धिअशुद्धिवालामन जलवस्त्रकी न्यांईब्रह्मनहीं ॥तथा सुषुप्तिमें मन इंद्रियोंसहित लयभावकूंप्राप्तहोवेहै॥ अन्नविना नाशजैसाहोइजावेहै यातेंमनभीब्रह्मनहीं ॥ ऐसेमनविषेसर्व दोषोंकूं पिताकेतांईश्रवणकराइकरि यहकहेहै ॥ हेभगवन् मेरेकूंब्रह्म-उपदेशकरो ॥ पिताभी पुनःविचारकरिब्रह्मकूंजानो यहकहतेभये ॥भृगु पुनःविचारकरि विज्ञानसे सर्वभूतोंकीउत्पत्तिआदिकोंकूं जानकरि नि-श्चयरूपबुद्धि मनकाभीकारणहोनेसेब्रह्महै यहजानताभया ॥ पुनःतावि-

ज्ञानमयविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ यहसमष्टिव्यष्टिरूप विज्ञान उत्पत्तिनाशवालाहै ॥ तथापरिच्छिन्नहै तथासुषुप्तिमेंलयकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ममताकीविषयतातौ यामें स्थूलशरीरादिकोंकेसमान है ॥ यातेविज्ञानमयभीब्रह्मनहीं ॥ याप्रकारकेदोष विज्ञानमयविषे पिताकेआगे भृगुनेजबीश्रवणकराये ॥ तबीपिता विचारकरिब्रह्मकूं जानो यहहीकहतेभये ॥ पुनःभृगुविचारकरि आनंदमयविषे ब्रह्मका लक्षणजानकरि ताआनंदमयकूंही ब्रह्मरूपजानताभया ॥ द्वेष्यसर्पादिकोंमें तथाउपेक्ष्यतृणादिकोंमें किसीपुरुषकी प्रवृत्तिसुखवासतेहोवेनहीं ॥ किंतु अनुकूलअन्नादिकोंमें सुखवासते पुरुषकीप्रवृत्तिहोवेहै ॥ स्त्रीआदिकोंकेआनंदकरिही जगत्केउत्पत्तिआदिकदेखतेहैं ॥ यातें आनंदमयहीब्रह्महै ॥ पुनःआनंदमयविषेभी उपाधिरूपअज्ञानकूंजडहोनेसे ब्रह्मरूपताबनेनहीं ॥ शेषजोपुच्छरूपअधिष्ठानब्रह्महै तथाउत्पत्तिआदिकोंसेरहितहै ॥ सर्वमेंव्यापकहै सर्वकाआत्माहै ॥ ताआनंदरूपब्रह्मकूं आपनास्वरूपनिश्चयकरिकै सोभृगु मोक्षकूंप्राप्तभया सावरुणपितानेउपदेशकरी भृगुनेनिश्चयकरी ब्रह्मविद्या हृदयविषेस्थितब्रह्मकूं आत्मरूपसेबोधनकरेहै ॥ यातेंजोअधिकारी याविद्याकूंप्राप्तहोवेगा सोअधिकारी भृगुकीन्यांई मोक्षकूंप्राप्तहोवेगा ॥ समष्टिअन्नमयादिककोशोंकी जोपुरुषउपासनाकरताहैसोपुरुष सर्वअन्नकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथा यालोकमेंमहान्होवेहै ॥ पुत्र पशु ब्राह्मणत्वजाति कीर्ति इत्यादिकफलोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेश्रुतिभगवती भृगुवरुणकेसंवादद्वारा विचाररूपतपकूंही ज्ञानप्राप्तिमेंसाधनकहेहै ॥ यातें इदानींतनमुमुक्षुजनोंनेभी वारंवार संशयादिकोंकीनिवृत्तिवासते विचाररूपतपकूंकरणा ॥ ऐसे जोपुरुष समष्टिआदित्यमंडलमें तथास्वशरीरमेंस्थितब्रह्मकूं अभेदरूपसेजानताहै ॥ सोइनपंचकोशोंमें आत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरि जीवन्मुक्त हुआ संसारमेंयाप्रकारकागायनकरताहुआ विचरताहै ॥ बहुतआश्च

यैहै मैंहीअन्नरूपहूं तथाअन्नभोग्यकाभोक्ताजोपुरुषादिकहै सोभीमैंहू मैंहीअन्नका तथापुरुषोंकाजनकहूं ॥ मैंहीहिरण्यगर्भरूपहूं तथाविराट्रूपहूं ॥ औरदेवताअतिथिआदिकोंकेतांई अन्नकूंनदेकरि जेपुरुष दरिद्रीभोजनकरेहैं ॥ तिनकूपणोंकूं मैंमृत्युरूपहोइकरि भक्षणकरताहूं॥ मैंईश्वरसर्ववेदोंकाकर्त्ताहूं ॥ मैंऋषिरूपसे वेदोंकास्मरणकरताहूं ॥ मैंईश्वरहीसर्वपुरुषोंकरि भजनकरणेयोग्यहूं ॥ मैंसंसाररूपीचक्रमें नाभीकीन्यांईस्थितहूं ॥ औरमैंहीधर्म अर्थकाम मोक्षरूपहूं ॥ मैंहीअन्नादिरूपहूं ॥ तथा अन्नादिकोंकादातारूपहूं ॥ जोपुरुष देवताअतिथिआदिकोंकेतांई अन्नादिकपदार्थोंकादानकरिकै भोजनकरेहै ॥ सोपुरुष आपनेआत्माकाजोरक्षणकरेहै सोमैंआत्माकाहीरक्षणकरेहै ॥ औरब्रह्माआदिभूत जामेंउत्पन्नहोवें ताकूंभुवनकहेहैं ॥ ताभुवनकामैं ईश्वररूपही संहारकरणेहाराहूं॥अहमन्नं ॥ अर्थयह मैंअन्नरूपभोग्यहूं॥ अहमन्नादः ॥ मैंअन्नकाभोक्ता अनुभवरूपचेतनहूं ॥ इत्यादिमंत्रोंका उपनिषद्में जोवारंवारकथनहैं सोआश्चर्यकेबोधनअर्थहै ॥ मैंस्वर्णकीन्यांई प्रकाशमान तथाआदित्यमंडलमें स्थितहूं॥ मैंही सर्वजगत्काप्रकाशक तथासर्वजगत्सेउत्कृष्टहूं ॥ ऐसेआपने अनुभवके प्रगटकरणेहारेगायनकूं करताहुआविद्वान् यासंसारमेंविचरताहै ॥ जैसे श्रुतिभगवती केवलमुमुक्षुजनोंके बोधवासते नानाप्रकारसे आत्माका उपदेशकरेहै ॥ तैसेविद्वान्भी मुमुक्षुजनोंकेबोधवासते आपनेअनुभवकूंगायनंसे प्रगटकरताहुआ यासंसारमेंविचरेहै॥शांतिमंत्रपूर्व आरंभकी न्यांईसमाप्तिमेंभीपठनकरिलेना॥ ॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य–भगवत्पूज्यपाद–श्रीमच्छंकराचार्यशिष्यसंप्रदाय–प्रविष्टपरमहंसपरिव्राजकस्वामिअच्युतानन्दगिरिविरचिते प्राकृतोपनिषत्सारे तैत्तिरीयार्थनिर्णयः ॥ ७ ॥

इतितैत्तिरीयोपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ७

श्रीः ।

अथ

ऐतरेयोपनिषद्भाषांतरम् ।

ॐनमः श्रीगुरुचरणकमलेभ्यः ॥ अबऋग्वेदीय ऐतरेयउपनिषत्केअर्थकूंदिखावेहैं ॥ सनकादिक ब्रह्माजीकेपुत्र सकलमुमुक्षुजनोंके उद्धारवासते ब्रह्मासेप्रगटभये ॥ कैसेसनकादिकहैं ॥ सर्ववेदोंकेअर्थकूं जाननेहारेहैं ॥ तथापरमविरक्त निवृत्तिमार्गकेपालनेहारेहैं ॥ ऐसेपरमविद्वान् सनकादिक वामदेवादिक मुमुक्षुजनोंकेतांई ब्रह्मउपदेशकूं कथनकरतेभये ॥ सोउपदेश ऐतरेयउपनिषत्रूपहै ॥ सनकादयऊचुः ॥ भोमुमुक्षवः यहसंपूर्णनामरूपजगत् उत्पत्तिसेप्रथम त्रिविधपरिच्छेदसेरहित आत्मरूपहीहोताभया ॥ आत्मासेभिन्नसजातीयविजातीय कोईपदार्थनहोताभया ॥ स्वगतभेदतौ निरवयवआत्मामें कदाचित्संभवेनहीं ॥ आत्मासेभिन्न कोईपदार्थव्यापारयुक्तनहोताभया ॥ प्राणीकर्मोंकेअनुसार सोपरमात्मा याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ मायाविशिष्टमुझपरमात्माविषेही यहभूतभौतिकप्रपंच सूक्ष्मरूपसे स्थितहोइरहाहै ॥ प्राणीयोंकेभोगवासते अबस्थूलरूपसेमैंप्रगट करूं ॥ ऐसेविचारकरि पंचभूतोंसेब्रह्मांडकूं उत्पन्नकरिके लोकोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तेलोकयहहै ॥ सप्तलोकस्वर्गादिउपरिके तथासप्तलोकनीचेके यहचतुर्दशलोक तापरमेश्वरसे उत्पन्नभये ॥ ऐसेलोकोंकूंरचिकरि सोपरमेश्वरपुनःविचारकरताभया ॥ यहचतुर्दशलोकरूप सर्वविराट्काशरीरहै ॥ यहसर्वलोक लोकपालोंसेविनानाशकूंप्राप्त होवेंगे यातें लोकपालोंकीउत्पत्तिकूंकरूं ॥ जैसे गृहकेस्वामीविना गृ-

हनाशकूंप्राप्तहोइजावेहै ॥ तैसे चेतनलोकपालोंविना याअंडकी स्थि-
तिहोवेगीनहीं ॥ यातें अवश्यहीलोकपालोंकूं उत्पन्नकरणायोग्यहै ॥
ऐसेविचारकरिपंचभूतोंसे उत्पन्नभयाजोविराट् ताविराट्के अवयवोंसे
लोकपालोंकीउत्पत्तिकहेहैं ॥ यद्यपि भूतोंके सात्विकराजसभागसे
इंद्रियतथादेवतावोंकीउत्पत्तिभयीहै ॥ तथापि विराट्केअवयवोंसे ति-
नकीप्रगटताहोवेहै ॥ विराट्केशरीरमें सोपरमेश्वरनानाप्रकारकेछिद्रों-
कूंकरिके तिनछिद्रोंसे इंद्रियोंकीप्रगटतायाप्रकारसे करताभया ॥
परमेश्वरकेसंकल्पकेवशसे पक्षीकेअंडेकीन्यांई मुखच्छिद्रभया ॥
तामुखच्छिद्रसें वाक्इंद्रिय प्रगटभया ॥ तावाक्सें अग्निदेवता
प्रगटभया ॥ नासिकाछिद्रभया तानासिकासे घ्राणइंद्रिय
भया ताघ्राणसेंगंधउपाधिवालावायुप्रगटभया ॥ यागंधवालेवायुकूं-
रिके पृथिवीदेवतालेना ॥ नेत्रच्छिद्रभया तानेत्रच्छिद्रसे चक्षुइंद्रिय
भया ताचक्षुसेसूर्यभगवान् प्रगटभया॥ कर्णच्छिद्रभया ताकर्णच्छिद्र-
सेश्रोत्रइंद्रियभया ताश्रोत्रसेदिशारूपदेवता प्रगटभयी ॥ देहमेंजेअनंत
छिद्रहैं तेछिद्रप्रगटभये तिनछिद्रोंसे त्वचाइंद्रियभया तात्वचासेविराट्-
केरोम केशरूपवृक्षादिकोंकाअधिष्ठाता वायुप्रगटभया ॥ हृदयच्छिद्र
भया ताहृदयसेमनप्रगटभया तामनसे चंद्रमाप्रगटभया ॥ नाभिच्छिद्र
भया तानाभिच्छिद्रसे अपानवायुकाआश्रय गुदइंद्रियभया तागुदासे
सर्वकेनाशकरणेहारा मृत्युप्रगटभया ॥ उपस्थइंद्रियकाछिद्रभया ता
छिद्रसे उपस्थइंद्रियभया ताउपस्थइंद्रियसे प्रजापतिप्रगटभया ॥ वाक्
इंद्रियकीउत्पत्तिसे रसनाइंद्रिय तथाताकावरुणदेवता उपरिसे जान-
लेना ॥ उपनिषत्मेंतो पूर्वकहेछिद्र इंद्रियदेवताही लिखेहैं ॥ शेषदेव-
ताकी तथाइंद्रियोंकीप्रगटता उपरिसेहीजाननीयोग्यहै ॥ श्रुतिमें केवल
मनकीताकेचंद्रमादेवताकीप्रगटताकहीहै ताकरिके बुद्धिकी तथाबुद्धि-
के देवताब्रह्माकी अहंकारकी औरअहंकारकेदेवतारुद्रकी चित्तकी

औरचित्तकेदेवताविष्णुकी प्रगटताजानलेनी ॥ औरअपानवायुकरिके प्राण समान उदान व्यान याक्रियाशक्तिवालेसर्वप्राणोंका ग्रहणकरणा ॥ औरदोहस्त दोपाद विराट्के शरीरमें प्रगटभये ॥ हस्तोंसेइंद्रदेवता औरपादोंसेवामनूभगवानप्रगटभये ॥ जबीकर्मउपासनासे प्राप्तभये देवतावोंकेशरीरोंमेंभी दुःखप्राप्तहोवेहै तब अन्यमानुष्य आदिशरीरोंमें दुःखकैसेनप्राप्तहोवेगा ॥ यातात्पर्यकेबोधनअर्थ श्रुतिमेंविराट्केशरीरकूं समुद्ररूपसे वर्णनकराहै ॥ विराट्केशरीररूपसमुद्रमें अविद्याकामकर्मरचित जन्मजरामरणदुःखही जलहै ॥ ज्ञानविना संसाररूपयाविराट् शरीरका नाशहोवेनहीं यातेंअनंतहै ॥ यहविराट्शरीररूपसंसारसमुद्र प्रवाहरूपसेअनादिहै ॥ संचितआदिकर्मजामेंचक्रहैं ॥ कामक्रोधादिक जामेंमहाग्राहहैं ॥ अज्ञानीपुरुषकापारउतरणाहोवेनहीं यातेंअपारहै ॥ विषयइंद्रियेंकिसंबंधसे उत्पन्नहोनेहारा जोआनंदहै ताआनंदमेंहीविश्रामकूं प्राप्तहोइरहाहै ॥ विषयोंमें तृष्णारूपवायुसे उत्पन्नभयींहैं अनंत. सहस्रक्लेशरूपीलहरीजाविषे ॥ रौरवादिकनरकोंकेदुःखोंकरि उत्पन्न. भयाहै हाहाइत्यादिमहान्शब्दजामें ॥ तथाबाल्यादिअवस्थामें होनेहारे दुःखोंकरि जासमुद्रमें हाहामुंचमुंचइत्यादि अनंतशब्दउत्पन्नहोवे हैं ॥ ज्ञानरूपजहाजकरि जासमुद्रसेपारउतरणाहोवेहै ॥ ज्ञानरूपजहाजमेंभी रसतेकेवासते ऐसेअन्नआदिचाहिये ॥ सत्यसंभाषण कोमल स्वभाव दान दया उदारता अहिंसा शम दम धैर्य क्षमा इत्यादि ज्ञानरूपीजहाजमें यहसर्व मार्गवासते अन्नादिकहैं ॥ सत्संग सर्वस्त्रीआदिकविषयोंका त्याग यहजामेंमार्गहै ॥ मोक्षरूपीजाकापरतीरहै ॥ ऐसे समुद्ररूपीविराट्शरीरमें प्राप्तभयेदेवतावोंकूं क्षुधा तृषानेव्याकुलकरा ॥ ताविराट्शरीरमेंतृप्तियोग्य अन्न जलकूं नदेखकरि आपनेपितापरमेश्वरकूं याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेभगवन् ! आपनेउत्पन्नकराजो विराट्शरीरहै तासेभिन्नतौ किंचित्भी अन्नजलादिक प्रतीतहोवेंनहीं ॥

यातेंअल्पकोईशरीरउत्पन्नकरो जाशरीरमेंहम स्थितहुए अन्नजलकूं ग्रहणकरें ॥ याशरीरकीप्रार्थनाकूं श्रवणकरि देवतावोंके अन्नआदिकोंके भोगवासते सोपितागौकेशरीरकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तागौकेशरीरकूंदेखकरि तेंदेवता प्रसन्न नभये और कहतेभये यहशरीरतौयोग्य नहीं ॥ पुनःसोपिता अश्वकेशरीरकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ताअश्वकेशरीरकूं देखकरिकेभी तेंदेवता प्रसन्नताकूं नप्राप्तभये औरकहते भये यहशरीरभीयोग्यनहीं ॥ ऐसेतापरमेश्वरने मनुष्यदेहविना चौरासीलक्षदेह तिनदेवतावोंकी प्रसन्नतावासते उत्पन्नकरे परंतुकिसीदेहमेंभी देवताप्रसन्ननभये ॥ ताअनंतरपरमेश्वरने मनुष्यदेहकूं उत्पन्न करा तादेहकूंदेखकरि प्रसन्नहुएतेदेवतायाप्रकारकेवचनकूं कहतेभये ॥ हेभगवन्! यहतौबहुतसुंदरहै धर्मअधर्मकाज्ञान तथाब्रह्मकाज्ञान तथालोकपरलोककाज्ञान यामनुष्यदेहमेंहोवेहै ॥ जैसेबुद्धिमान्तक्ष आपनेहस्तोंसेजोवस्तुरचेहै सोअतिसुंदरहोवहै तैसेहे भगवन्!यह मनुष्यदेह तुमनेआपरचाहै यातेंही यहशोभनीयहै ॥ ऐसेप्रसन्नहुए देवतावोंकूं परमेश्वररूपपिताकहेहैं ॥ भोदेवा याशरीरमें नेत्रादिइंद्रियरूपसे तुमप्रवेशकरो ॥ यद्यपिवाक्आदिकइंद्रियोंसेभिन्नहीदेवताहैं ॥ तथापि तिनवाक्आदिकइंद्रियोंविषे अग्निआदिकदेवतावोंसेविना शब्दउच्चारणादिकार्यप्रतीतहोवेनहीं ॥ तथावाक्आदिविना ताअग्निआदिदेवतावोंकीभी प्रत्यक्षप्रतीतहोवेनहीं ॥ यातें अध्यात्मइंद्रियोंसे अधिदैवरूपदेवतावोंका अभेदरूपसेही श्रुतिमेंप्रवेशकहाहै ॥ अग्नि वाक्रूपहुआ मुख गोलकमें प्रवेशकरताभया ॥ वरुणदेवता रसनारूपसे जिह्वाकेअग्रभागमेंस्थितभया ॥ गंधविशिष्टवायुदेवता घ्राणइंद्रियरूपहुआ नासिका छिद्रमें प्रवेशकरताभया ॥ सूर्यभगवान् चक्षुरूपसे नेत्रगोलकमेंप्रवेश करताभया ॥ दिक्देवता श्रोत्ररूपहुआ कर्णगोलकमें स्थितभया ॥ स्थावररूपउपाधिवाला वायुदेवता रोमोंकेसहितहुआ त्वक्इंद्रियरूपसे त्वचारूपगोलकमेंस्थितभया॥चंद्रमा मनरूपहुआ हृदयगोलकमें प्रवेश-

करताभया ॥ मृत्युदेवता पायुइंद्रियरूपसे गुदाछिद्ररूप गोलकमेंस्थित भया ॥ प्रजापति उपस्थइंद्रियरूपसे शिश्नच्छिद्ररूपगोलकविषे स्थित भया ॥ इतनेंदेवतावोंकाप्रवेश उपनिषद्में कह्याहै शेषरहेजेदेवता तेभीऐसेही प्रवेशकरतेभये ॥ क्षुधातृषाके अभिमानी देवता अपना कोई स्थान न देखकरि परमेश्वरकूं कहतेभये ॥ हेजनक हमारेकूंभी कोई स्थान कृपाकरिदेवो ॥ परमेश्वर तिनकूं अध्यात्म अधिदैवरूप देवतावोंविषेहीस्थानदेकरि कहताभया ॥ इनदेवतावोंकी तृप्तिकरिकेही तुमारीतृप्तिहोवेगी ॥ सोअबभीऐसेहीदेखीताहै ॥ सूर्यादिकदेवतावोंकूं घृतादिरूपहविकादानकरे तिनकी क्षुधा तृषा शांतहोवेहै ॥ रूपादिविषयरूपहविकादानकरे नेत्रआदिकोंकी क्षुधातृषाकीशांतिहोवेहै ॥ यद्यपि व्यष्टिस्थूलशरीरवाले भोक्ताजीवमेंही क्षुधातृषाहोवेहैं॥ तथापि जीवभीवास्तवसे शुद्धब्रह्मरूपहै तामेंक्षुधाआदिकभी इंद्रियदेवतादिउपाधिकरिहींहैं ॥ यातेंश्रुतिमें तिनइंद्रिय तथादेवतावोंविषेही क्षुधातृषाआदिकोंकाकथनहै ॥ जैसेपितापुत्रपौत्रादिकोंकरिकेनकह्याहुआभी तिनकीरक्षावासते अन्नआदिकोंकरि तिनपुत्रादिकोंकापालनकरेहै ॥ तैसेपरमेश्वर देवतारूपपुत्रोंकेरक्षार्थ अन्नकीउत्पत्तिवासते विचारकूंकरताभया ॥ ऐसेविचारकरि सोजनकपरमेश्वर पंचभूतोंसे नानाप्रकारकेअन्नकूं उत्पन्नकरताभया ॥ सिंहादिकोंका मांसभोजनहै मनुष्योंकाव्रीहियवादिभोजनहै ॥ सर्पादिकोंका मूषकआदिरूप अन्नहै ॥ ऐसेअनंतप्रकारका अन्नउत्पन्नभया ॥ परमेश्वरने देवतावोंकूंकहा हेदेवा यहअन्न उत्पन्नभयाहै तुम याअन्नकूं ग्रहणकरो ॥ अब आत्मामें वास्तवसे अन्नादिकोंकाभोक्तृत्वनहीं किंतु अपानवृत्तिमान् प्राणउपाधिकरिकेहै ॥ याअभिप्रायसे आत्मामें भोक्तृत्वअभावबोधनकरणेकूं लोकपालोंकी अन्नआदिकोंकेग्रहणमें असामर्थ्य कहेहैं ॥ जबीतापरमात्माने अन्नकूंउत्पन्नकरिके देवतावोंकूं भक्षण

करणेकी आज्ञाकरी तबदेवता भक्षणकरणेवासते प्रवृत्तभये ॥ जैसेमूषकआदि बिड़ालआदिकोंकेआगे छोड़ेहुए भागजावेहैं ॥ तैसेअन्नकूं जबीलोकपालोंकेआगे स्थापनकरा तबीसोअन्न भागनेकासंकल्पकरताभया ॥ यद्यपि व्रीहिआदिरूपअन्नमेंतो ऐसीइच्छाबनेनहीं ॥ तथापि सोव्रीहिआदिरूपअन्न शरीरमेंप्राप्तनभया किंतुबाह्यहीस्थितभया यामेंतात्पर्यहै ॥ यहइंद्रियोंसहितस्थूलशरीर वाणीकरिके अन्नके ग्रहणकीइच्छाकरताभया ॥ परंतु अपानवायुविनाग्रहणकरणेमेंसमर्थ नभया ॥ औरवाणीकरिउच्चारणकरिकेही तृप्तिकूं प्राप्तभया ॥ अर्थयह जोअन्नकेग्रहणकरणेकूं समर्थनभया ॥ ऐसेही घ्राण चक्षु श्रोत्र त्वक् मन उपस्थ इत्यादि इंद्रियोंकरि अन्नकेग्रहणकरणेकूं सोपिंड नसमर्थभया ॥ पश्चात् अपानवायुकरिकेमुखच्छिद्रद्वारा सोपिंड अन्नकूंग्रहणकरताभया ॥ यातेंअपानवायुकूं अन्नकाग्राहककहेहैं ॥ ऐसेपरमेश्वरनेलोकोंकी तथाशरीरोंकी और भोगसाधनवागादिकइंद्रियोंकी उत्पत्तिकरी ॥ विराट्केसमष्टिशरीरमें देवतावोंकी लोकपालरूपतासेस्थितिकरी ॥ औरव्यष्टिस्थूलशरीरविषे सूर्यादिदेवतावोंकी करणोंकेअधिष्ठातारूपसेस्थितिकरी ॥ तिनदेवतावोंविषेही क्षुधातृषाकूंस्थानकादानकरा ॥ पुनःअन्नकूं उत्पन्नकरि अपानवृत्तिमान्प्राणकरिकेही अन्नकाग्रहणबोधनकरा ॥ पुनःसोजनकप्रवेशवासते विचारकरताभया ॥ अपानादिसहितयहसंघात मेरेविना किंचित्भी कार्य करणेकूं समर्थनहींहै ॥ जैसेपुरस्वामीराजासेविना पुरकीशोभाहोवेनहीं ॥ तैसेमैं चेतनविना यास्थूलसूक्ष्म संघातकीसिद्धिहोवेनहीं ॥ यातै मैं यासंघातविषे शब्दादिकोंकेभोगवासते तथाआपनेस्वरूपकेज्ञानवासते अवश्यप्रवेशकरूं ॥ ऐसेप्रवेशकासंकल्पकरिके प्रवेशके मार्गकाविचार करताभया॥क्रियाशक्तिवाले प्राणनेतौ पादकेअग्रमार्गकरिप्रवेशकराहै ॥ ज्ञानशक्तिकेअभावसे जडजोयहप्राणहै ताप्राणकूं गुणदोष-

काविवेकनहींहै यातेंहीताप्राणने पादाग्ररूपनिकृष्ट मार्गकरिकेंही याशरीरमेंप्रवेशकराहै ॥ और चेतनरूपमेरेकूंभी यासंघातमेंअबअवश्यप्रवेश करणायोग्यहै ॥ परंतुजिनमार्गोंकरिके मेरेभृत्यप्राणादिकोंनेप्रवेशकराहै ॥ तिनमार्गोंकरिके मैंस्वामिकूंप्रवेशकरणायोग्यनहीं ॥ ऐसेप्रवेशमार्गचिंतनकरताहुआपरमात्मा यहविचारताभया ॥ यहवागादिकजडसंघातका प्रकाशकजो मैंचेतनहूं तिसमेरेविनातौ वागादिककदाचित् आपनेकार्यकरणेकूं समर्थहोवेंगेनहीं ॥ यातेंमेरेकूं अवश्यप्रवेशकराचाहिये ॥ ऐसेविचारकरि सोपरमेश्वरपिता आपनीसमीपतामात्रसे मूर्द्धसीमाकूंभेदनकरताहुआ तामूर्द्धसीमामार्गकरिकेही याशरीरमेंप्रवेशकरताभया ॥ यद्यपि यहमूर्द्धसीमारूप शिरकेकपालत्रयकामध्यभाग द्वाररूपसेलोकमेंप्रसिद्धनहीं है ॥ तथापि जबीशिरमेंघृततैलादिकोंका धारणकरे तबीताद्वारसेसर्वपुरुष तावृतादिकोंकेरसकाअनुभवकरेहैं यातें प्रत्यक्षसिद्धहै ॥ औरविदृतियानामकरिकेश्रुतिविषेप्रसिद्धहै ॥ परमेश्वरने आपनेप्रवेशवासते भेदनकरिके जाकूंउत्पन्नकराहो ताकूंविदृति कहेहैं ॥ औरउपासकका बाह्यउत्क्रमण यामार्गसेहोवेहै ॥ याद्वारकानाम नांदन भीहै ॥ जामार्गद्वारानिकसनेसे पुरुषआनंदकूंप्राप्तहोवे ताकूं नांदनकहेहैं ॥ यास्थानकूं आपनेप्रवेशकरणेयोग्यजानकरि तापरमात्माने यामार्गद्वाराही प्रवेशकरा ॥ औरतापरमात्माकाप्रवेशभी मुख्य प्रवेशनहीं है ॥ किंतुश्रोत्रकरिके मैंश्रवणकरूं नेत्रोंकरिके मैंरूपादिकोंकूंदेखूं ॥ ऐसे श्रोत्रनेत्रादिकइंद्रियोंकेसाथतादात्म्य अध्यासकरनाही प्रवेशहै ॥ इसप्रकारपरमात्माके जीवरूपसे प्रवेशकूंकहिकरि अबदेहइंद्रियादिउपाधिकरिके ताआत्मामेंसंसारप्राप्तिकावर्णनकरेहैं ॥ जीवरूपसेप्रवेशकराहै याशरीरमें जाआत्माने ताआत्माकेही तीनस्थाननिरूपणकरेहैं ॥ जागरितअवस्थामें नेत्रइंद्रियकेदक्षिणगोलकविषेआत्मा रहेहै ॥ स्वप्नअवस्थाविषेकंठस्थानमेंरहेहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्मा

हृदयदेशमेंरहेहै ॥ यद्यपि आत्माअद्वितीयरूपसे याउपनिषत्‌केआदिमें निरूपणकराहै ॥ ताअसंगअद्वितीय आत्माके स्थानबनेनहीं॥ तथापि स्थानसर्वसत्यहोवें तबतौआत्माअसंग अद्वितीयसिद्धनहोवे स्थानादि सर्वमिथ्याहैं यातें वास्तवसे असंगअद्वितीयआत्माहै ॥ याअभिप्रायके बोधनवासते तीनस्थानोंकूं तथातीनस्थानोंमेंहोनेहारी तीनअवस्था- वोंकूं तथावक्ष्यमाण पितृगर्भ मातागर्भ औरअपनास्थूलशरीररूप तीनदेशोंकूंस्वप्नदृष्टांतसे मिथ्यारूपतावर्णनकरेहैं ॥ उक्तजागरितआदिक सर्वपदार्थस्वप्नरूपहैं ॥ यद्यपि स्वप्नभिन्न जागरितआदिकोंकूं स्वप्नरूप- ताबनेनहीं ॥ तथापि जैसेनिद्राकरिके स्वप्नमें मिथ्यापदार्थोंकूंभीसत्य- रूपसेदेखेहै ॥ तैसे अज्ञानरूपनिद्राकरिके सर्वमिथ्यापदार्थोंकूं सत्य- रूपसेव्यवहारकरणारूप स्वप्नकूं अनुभवकरेहै ॥ औरजैसेस्वप्नकेपदार्थ जागरितअवस्थामेंबाधहोवेहै ॥ तैसे ब्रह्मज्ञानरूप जागरणकरिके सर्व पदार्थबाधहोवेहैं ॥ यातेंसर्वपदार्थस्वप्नकीन्यांई मिथ्याभीहैं परंतु अज्ञा- नरूपनिद्राकरि सत्यरूपसेमानेहैं ॥ जैसेगाढनिद्राकरिशयनकरतेहुए पुरुषकूं ताकेश्रोत्रदेशकेसमीप भेरीकेबजानेकरिजगावेहैं तैसेअज्ञानरू- पीघोरनिद्राकरि शयनकरताजोयहजीवात्माहै ॥ ताकूंपरमकृपालु ब्रह्मज्ञानीगुरु महावाक्यरूपमहाभेरीके उपदेशरूपीबजानेसे जगावेहैं ॥ तबी यहजीव ब्रह्मज्ञानरूपीजागरणकूं प्राप्तहुआ आपनेशुद्धसच्चिदानंद ब्रह्मरूपकूं निश्चयकरेहै॥ यहआत्माआपही अपरोक्षरूपसे आपनेस्वरूपकूं निश्चयकरताभया इसीसेताआत्माकानामइंद्रभया ॥ यद्यपि इंद्रनामसे आत्मा बृहदारण्यक आदिकउपनिषदोंमें प्रसिद्धहै ॥ तथापि ब्रह्म- वेत्तापरमात्माका परोक्षरूपसेही नामकहेहैं ॥ दकारअक्षरकूं दूरकरि इदंद्रकेस्थानमें इंद्रकहेहैं ॥ तामेंहेतुयहहै ॥ जेयासंसारमेंपूज्यहैं तिन- कापरोक्षरूपसेही नामकहनायोग्यहै ॥ इसीसे आचार्यआदिकभी गुरुजी दीक्षितजी शास्त्रीजी स्वामिजी इत्यादिपरोक्षरूपसे बुलानेक-

रिही प्रसन्नहोवेहैं ॥ साक्षात् देवदत्त विष्णुदत्तादिस्वनामसेबुलायेहुए प्रसन्नहोवेनहीं ॥ और स्त्रीआदिकभी स्वपतिआदिकोंके नामकूं साक्षात्नहींकहेहैं ॥ किंतु हेस्वामिन्इत्यादिपरोक्षरूपसे उच्चारणकरेहैं ॥ यातेंजेसात्विकदेवताहैं तेपरमेश्वरकापरोक्षरूपसे नामकहेहैं ॥ ऐसे वामदेवादिकमुमुक्षुरूप सात्विकीप्रजाकूं सनकादिकऋषि अध्यारोप और अपवादरीतिकरिके आत्माकाउपदेशकरतेभये ॥ ऐसेउपदेशकूं करिकेकहतेभये हेसात्विकीप्रजा हमताआत्माकेसाक्षात् उपदेशकरणेविषेसमर्थनहीं ॥ इसीसेहमनेअध्यारोपअपवादरीतिकरिकेही ताआत्माकाउपदेश तुमअधिकारीजनोंकूंकराहै॥ स्वप्रकाशआत्माके साक्षात् उपदेशकरणेविषेतौ कोईसमर्थनहीं है ॥ और आचार्यभी केवल रीतिमात्रसे आत्माकाउपदेशकरेहैं ज्ञानकाकारणतौ अधिकारीकी आपनीयुक्तिआदिकोंविषेचातुर्यहै ॥ जैसेउपदेष्टापुरुषनेतौ कहदिया जोबदारिकाश्रम उत्तरदिशामेंहै ॥ ताबदारिकाश्रमकीप्राप्तितापुरुषकेउद्यमसे तथाऊहापोहरूपचातुर्यसे होवेहै ॥ तैसेआत्माकाउपदेश आचार्य करेहैं ताआत्माकीप्राप्तितौ शिष्यकेमननादिरूपविचारसेहोवेहै ॥ यातें हेऋषयः ज्ञानविना मोक्षप्राप्तिहोवेनहीं ॥ ताज्ञानकीप्राप्ति वैराग्यविना होवेनहीं ॥ वैराग्यकीप्राप्ति संसारमेंदोषदृष्टिसे विनाहोवेनहीं ॥ ऐसे उपदेशकूंकरिके सनकादिकऋषितौ अंतर्धानहोतेभये ॥ सात्विकीप्रजारूपऋषि मिलकरि विचारकरतेभये ॥ ऋषिआपसमेंकहेहैं ॥ हेऋषयः हमारेबडेउत्तमभाग्यहैं जिनभाग्यकरिहमारेसनकादिकगुरु भये ॥ परंतुहमारेमें वैराग्यकेअभावसे तिनसनकादिकोंकाउपदेश अपरोक्षब्रह्मज्ञानकूं नउत्पन्नकरताभया ॥ किंतुपरोक्षज्ञानकूंही उत्पन्नकरताभया ॥ यामेंहमाराहीदोषहै ॥ कोईमहात्मावोंके उपदेशविषे दोषनहीं ॥ यातें हेसज्जना हमवैराग्यकीउत्पत्तिवासते संसारमेंदोषोंकूं विचारें ॥ प्रथमतौ याशरीरमें दोषविचारकरणे योग्यहै ॥ यहजीव

जबी अनंतयत्नोंकरि अग्निहोत्रादिकोंकूंकरेहै ॥ ताकर्मोंकरि स्वर्गमें प्राप्तहुआ भोगोंकूं भोगकरि वृष्टिआदिद्वारा अन्नमेंप्राप्तहोवेहै ॥ ताअन्नकूं जबीपुरुषभक्षणकरे तबीयाजीवका पुरुषकेशरीरमें वीर्यरूपसेप्रवेशहोवेहै ॥ अन्नादिद्वारा वीर्यरूपसे पिताकेउदरमेंस्थितहोनाही ताजीवकाप्रवेशजानना ॥ तावीर्यरूपजीवकूं पिताआपनास्वरूपसेही धारणकरेहै ॥ ऐसेपिताकेशरीरमें जीवकीप्राप्तिकूंवर्णनकरिके अबमाताके उदरमें प्राप्तिकूंकहेहैं ॥ ऐसेपुरुषकेउदरमेंवीर्यरूपसे प्राप्तभयायह जीवजबीपिता ऋतुमतीस्त्रीकेसाथ रमणकरेहै तबीमाताके उदरमेंप्राप्तहोवेहै ॥ माताकेउदरमें प्राप्तहोना यहजीवकाप्रथमजन्महै ॥ तामाताके उदरमें प्राप्तहुआयहजीव स्त्रीकेआपनेअंगरूप होइकर रहेहै ॥ यातेंही तामाताका यहजीवनाशकरेनहीं ॥ इसपितारूपमनुष्यकूंक्लेशदेनेहारा जोयहवीर्यरूपपुत्रहै ॥ ताकूंयास्त्रीनेधारणकराहै ॥ यातेंउपकारकेकरणेहारीस्त्रीका अन्नवस्त्रादिकोंकरिके पुरुषकूं अवश्यपालनकरणाउचितहै ॥ यापुरुषकेआत्मारूपपुत्रकूं यहस्त्री आपनेउदरमें अनेकअनुकूलभोजनादिकोंकेकरणेसे रक्षाकरेहै ॥ और पिताभी पुत्रकीउत्पत्तिसे प्रथम नानाप्रकारकेमंत्रउच्चारणादिरूप कर्मकूंकरेहै ॥ जन्महुएसेपश्चात् जातकर्मादिकोंकूंकरेहै ॥ अबजाप्रयोजनवासते पिताने पुत्रकूं उत्पन्नकराहै ॥ ताप्रयोजनकूं निरूपणकरेहैं ॥ पुत्रविना पुरुषकी यालोकमेंशोभाहोवेनहीं तथापौत्रादिरूपसंतानवृद्धिभी पुत्रविना होवे नहीं ॥ और श्रेष्ठ धर्मात्मापुत्रकरिके पिताकूं स्वर्गलोककीप्राप्तिहोवेहै ॥ यातेंयालोककीन्यांई स्वर्गकीप्राप्तिकाकारणभीपुत्रहै ॥ और मोक्षप्राप्तितौ ज्ञानविनाहोवेनहीं ॥ यातेंशुभपुत्र लोकोंकाहीकारणहै ॥ मोक्षप्राप्तिकाकारणनहीं ॥ और यामनुष्यदेहकूं कर्मउपासनाज्ञानद्वारासर्वफलकाहेतुहोनेसे देवादिकभी यामनुष्यदेहकी इच्छाकरेहैं ॥ यातेंयाभारतखंडविषे द्विजजन्मकूं प्राप्तहोइकरि ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवा-

सते यत्नअवश्यकरणा ॥ ऐसे द्वितीयजन्मकूं प्राप्तभयाजोपुत्रहै ताकूं पिता शास्त्रीयपुण्यकर्मोंकेकरणेवासते प्रतिनिधिरूपसे आपनेस्थानमें स्थापनकरेहै ॥ पितातौ देवऋण पितृऋण ऋषिऋणइनतीनऋणोंसे रहितहोइकरि वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहुआ शरीरकूंत्यागकरेहै ॥ याजीर्णदेहकूंत्यागकरि तृणजलौकाकीन्यांई द्वितीयनवीनदेहकूंप्राप्तहोवेहै ॥ याजीर्णदेहकूंत्यागकरि द्वितीयनवीनदेहकूंप्राप्तहोना यहहीपुत्रकातृतीयजन्महै ॥ यद्यपि पिताकेगर्भसे माताकेगर्भमेंआना यहएकजन्म ॥ औरद्वितीयजन्म माताकेगर्भसे बाह्यनिकसनाभीपुत्रकाबनेहै ॥ तृतीयजन्मतौ पिताकाहोवेहै एकहीपुत्रआत्माका तृतीयजन्मबनेनहीं ॥ तथापि पुत्रआत्मा तथा पिताआत्मा वास्तवसे एकहीविवक्षितहै यातें किंचित्‌विरोधनहीं ॥ औरं जैसेपिताजीर्णहुआ कर्मकरणादिक पुत्रकूं अर्पणकरिके मृतहुआ स्वकर्मकेअनुसार द्वितीयजन्मकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तैसेपुत्रभी स्वपुत्रके शिरपरसर्वभारअर्पणकरिके मृतहोवेहै ॥ तैसेपौत्रप्रपौत्रादिकभीआपनेकर्मकेफलकूं भोगकरिनाशकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसे पुण्यात्माकी स्वर्गसेगिरकरि यामनुष्यदेहमें प्राप्तिहोवेहै॥ पुनःमनुष्यदेहसे स्वकर्मअनुसार शुभअशुभयोनिकीप्राप्तिहोवेहै ॥ भोऋषयः जेपुरुषपापात्माहैं तिनकातौस्वर्गमेंगमनहोवेनहीं ॥ किंतु नरकप्राप्ति वास्वपापकर्मके अनुसार सर्पादितिर्यग्योनियोंकीप्राप्तिहोवेहै॥ मिश्रितकर्मवालेभी पापकी अधिकतासे म्लेच्छादिक जेजातिसे अधम तथाधनरहित औरपापात्माहैं तिनकेगृहमेंउत्पन्नहोवेहैं ॥ पुण्योंकी अधिकतासे उत्तमजातिवाले सत्संगीधनीयोंके गृहमेंउत्पन्नहोवेहैं ॥ ऐसेयहजीव ब्रह्मबोधविना स्ववासनाकर्मअनुसार संसारमेंघटीयंत्रकीन्यांईफिरेहैं ॥ यासंसारकी ब्रह्मबोधसेविना कदाचित्‌भीनिवृत्तिहोवेनहीं ॥ हेसज्जना हमनेभीदुःखरूपयासंसारमें अनित्यता तथास्वर्गआदिकोंसे कर्मफलभोगकेपश्चात् पतनआदिकोंकरि महान्‌क्लेशहीअनुभवकरेहैं ॥ ऐसेदुः-

स्वरूपसंसारसे हमाराचित्त विरक्तभयाहै ॥ यातेंअबहमब्रह्मविचारकूं करें ॥ ताविचारकरणेकालमें वामदेवमहात्मा मृत्युकूंप्राप्तभया ॥ भावीप्रतिबंधकेवशसे पूर्वजन्ममें सनकादिकोंके उपदेशसेभीवामदेवमहात्माकूं ज्ञानभयानहीं ॥ माताकेगर्भमें नवमासकेअनंतर प्रारब्धकर्मके भोगसेनिवृत्तभये ॥ ताकर्मरूपभावीप्रतिबंधके अभावसे सोवामदेवऋषि ज्ञानकूंप्राप्तभया ॥ और जिनऋषियोंकेसाथमिलकरि विचारकराथा तिनमित्ररूपऋषियोंकूं याप्रकारकेवचनोंकूं माताकेगर्भमेंस्थितहुआ वामदेवकहताभया ॥ अबवामदेवकेअनुभवकूं वर्णनकरेंहैं ॥ वामदेवउवाच ॥ हेऋषयः मैंही पूर्वादिदशदिशावोंमें व्यापकहूं ॥ मैंही सूर्यभगवान्‌रूपहूं ॥ इंद्र यम कुबेर वरुण इत्यादि जेलोकपाल अनंतशक्तिसंपन्नहैं तेसर्वमेराहीस्वरूपहैं मेरेसे भिन्ननहींहैं ॥ ब्रह्मासे आदिजेप्राणी अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्जरूपहैं तेसर्वरूपमैंहूं ॥ महान्‌आश्चर्यहै मैंसर्वअग्निवायुआदिदेवतावोंके जन्मोंकूंजानताहूं ॥ जन्म अस्तितता वृद्धि परिणाम क्षीणता नाश यहषट्‌विकार स्थूलदेहकाधर्महैं मैंतो सूक्ष्म तथा कारणशरीरकाभी अधिष्ठानहूं ॥ कल्पितके धर्मोंकरि मैंअधिष्ठानकी किंचित्‌हानिहोवेनहीं ॥ जैसे मृगतृष्णाकी नदीकेजलकरि पृथिवीगीलीहोवेनहीं ॥ तैसे मैंअधिष्ठानविषे स्थूलसूक्ष्मकारण इनतीनशरीरोंके धर्मोंका संबंधनहीं ॥ औरजैसे श्येनपक्षी बलवालाहोवेहै ॥ ताकूं लोहकेपिंजरेकरि निरोधकरेंहैं ॥ परंतु कोईबलवान्‌जोश्येनहै सो आपनेवज्रसमानतुंडकरिके पिंजरेकेनीचेदेशकूं भेदनकरिबाहरिनिकसनेसे आनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे अज्ञानरूपलोहकरिरचित जेचौराशीलक्षयोनीरूपपुरीयांहैं ॥ यहयोनीहीपिंजरहैं रागद्वेषादिरूप जापिंजरेमेंकीलहैं ॥ ब्रह्मज्ञानरूपीतुंडकरि पंचकोशोंमें आत्मत्वअध्यासरूपपाशकूं मैंनेनिवृत्तकराहै ॥ ब्रह्मज्ञानकरि अज्ञान निवृत्तहोनेसे देहादिकोंमेंअध्यासरूप पाशनिवृत्तिस्पष्टहीहै ॥ हेऋष-

यः महात्मासनकादिकोंने जोउपदेशकराथा ताउपदेशकरिही मेरेकूं ब्रह्मबोधभयाहै ॥ ताबोधकेप्रतापकरिमैं मृत्युसेभी भयकूंप्राप्तहोता नहीं ॥ काहेते जोजन्मवालाहै ताकामृत्युअवश्यनाशकरेहै ॥ मैंअजन्माहूं यातें मेरेमारणेकूं मृत्युसमर्थनहीं ॥ और मृत्युकाभीमैं आत्माहूं॥ आपनेनाशकरणेमें मृत्युकैसेप्रवृत्तहोवेगा ॥ जैसे अग्नि स्वभिन्नकाष्ठादिकोंकादाहकरेहै आपनेनाशकरणेमें समर्थनहीं ॥ तैसेमृत्यु आपनेसे भिन्नकेमारणेविषेतौसमर्थहै मृत्युकाभीआत्माजोमैंहूं मेरेमारणेमेंमृत्यु समर्थनहीं ॥ जैसे अन्यकेदुःखकरि अन्यद्वितीयपुरुषकूंदुःखहोवे नहीं ॥ तैसे जन्म जरा मृत्यु आदि देहकेधर्मोंकरिके देहसेभिन्नजो मैंहूं मेरा जन्म जरा मरणआदि कदाचित्होवेनहीं ॥ हेऋषयः आत्मबोधशून्यपुरुषोंकूं यहअष्टदोष अचिकित्स्यहैं ॥ अर्थयह ॥ ज्ञानविनाजिनकीऔषधिद्वितीयनहींहै ॥ प्रसंगसे तिनदोषोंका अबनिरूपणकरेहैं ॥ इच्छा द्वेष भय मोह क्षुधा तृषा निद्रा मलमूत्रकीपीडायह अष्टदोषहैं ॥ इनअष्टदोषोंकीसंसारमेंव्यापकताकहेहैं ॥ संसारमें सात्विक राजस तामस भेदसे तीनप्रकारकेपुरुषहैं ॥ सात्विकजेमुमुक्षुहैं तेमोक्षकीइच्छाकरेहैं ॥ राजसपुरुष मोक्ष औरविषय दोनोंकीइच्छाकरेहैं ॥ तामसतौ केवलविषयोंकीइच्छाकरेहैं ॥ इच्छाविनाकोईजीवनहीं है ॥ सात्विकका विषयोंसेंद्वेषहै ॥ राजसका शत्रुवोंसेद्वेषहै ॥ तामस शत्रुवोंसे तथामित्रोंसे तथासंतजनोंसे द्वेष करेहै ॥ ऐसे द्वेषभी देहधारीजीवोंमेंरहेहै ॥ सात्विककूंप्रमादसेभयहै ॥ राजसपुरुषोंकूं यमराजासेभयहोवेहै ॥ तामसकूं राजासेतथा राजाकेभट्टादिकोंसे भयप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेसर्वप्राणीयोंविषेभयव्याप्तहै ॥ सात्विकपुरुषकूं आत्माकाअज्ञानरूपमोहहै ॥ राजसकूं शास्त्रविद्याका तथाआत्माका अज्ञानहै ॥ तामस सर्वविषेअज्ञानवालाहै ॥ ऐसेसर्वप्राणीयोंमें मोह व्याप्तहै ॥ क्षुधा तृषा निद्रा यह

तीनों सात्विकराजसतामसमें समानहैं ॥ मलमूत्रकीपीडा वृक्षादिकों-
विना सर्वमेंसमानहै ॥ अथवा वृक्षादिकभी गूंद राल आदिकोंकूं
त्यागकरेहैं॥ ऐसे ब्रह्मज्ञानविना यहअष्टदोष कदाचित्‌निवृत्तहोवेंनहीं॥
मैंतौ महात्माकृपालुसनकादिकोंके उपदेशसे ब्रह्मज्ञानकूं प्राप्तहुआ अष्ट-
दोषोंसेरहितभयाहूं ॥ भोऋषयः ॥ यहअष्टदोषमनआदिकोंकेधर्महैं ॥
मैं शुद्धसच्चिदानंद परिपूर्णआत्माकूं स्पर्शकरेनहीं ॥ इच्छा द्वेष भय
मोह यहच्यारितौमनमेंरहेहैं यातेंमनकाधर्महै ॥ क्षुधा तृषा यहदोनों
प्राणकाधर्महैं ॥ निद्रा इंद्रियोंकातथामनकाधर्महै ॥ मलमूत्रकीपीडा
यास्थूलदेहकाधर्महै ॥ मैंतौमनआदिकोंका साक्षीहूं तासाक्षीआत्मा-
विषे मनआदिसाक्ष्यका तथासाक्ष्यमनआदिकोंकेधर्मोंकासंबंधबनेनहीं॥
हेऋषयः ॥ माताकेगर्भरूपअग्निकुंडविषे मैंवामदेव स्थितहुआभी
ब्रह्मज्ञानरूप पौर्णमासीकेचंद्रमाकीशीतलताकरिके गर्भकेदुःखरूपतापकूं
प्राप्तहोतानहीं ॥ यातें ज्ञानकेफलमोक्षप्राप्तिमें तुमने कदाचित् संशय
करणानहीं ॥ ऐसे आत्मज्ञानकाउपदेशकरताहुआ वामदेवऋषि माता-
केगर्भसेबाहरिनिकसकरि सनकादिकोंकेसमान यासंसारमें आपनीइ-
च्छानुसार विचरताभया ॥ जैंसेसनकादिक आपनीइच्छानुसार ब्रह्म-
लोकपर्यंतविचरेहैं ॥ तैसे परमजीवन्मुक्त वामदेवभी ब्रह्मलोकपर्यंत
किसीकरिकेभी निरोधकूंनप्राप्तहुआ विचरताभया ॥ औरयालोकमें
होनेहारे विषयानंदकी तथापरलोकमेंहोनेहारे विषयानंदकी इच्छाकूं
जावामदेवने प्रथमजन्मविषेही निवृत्तकराहै ॥ ऐसे आपनेप्रारब्धकूं
भोगकरिकेक्षयकरताहुआ वामदेवऋषिविदेहकैवल्यकूंप्राप्तभया ॥ ऐसे
वामदेवकेवचनोंकूं श्रवणकरिके अधिकारीमुमुक्षु परमआश्चर्यकूंप्राप्तहुए
आपसमेंयहकहतेभये ॥ महान्‌आश्चर्यहै यहवामदेव किसीपुण्यकेप्र-
भावसे परममोक्षकूंप्राप्तभया ॥ हमखालीरहगये जैंसेगवांकासमूह पंक
विषेनिमग्नहोइजावे तिनमेंसे कोईएकगौआपनेभुजाकेबलसे तथापुण्यके

प्रभावसे निकसजावे ॥ औरजैसेजालकरि बांधेपक्षीयोंकेमध्यसे कोई एकपक्षी पुण्यकेप्रतापसेनिकसजावे ॥ तैसेमोहरूपपंकविषे निमग्नजेहम हैं तथाकामक्रोधादिपाशोंकरि बांधेजेहमहैं ॥ तिनसर्वसेवामदेवमुक्तभ- याहै ॥ जैसेदुर्भिक्षआदिउपद्रवके प्राप्तहुएभी मोहकेवशभये पुरुष गृह- विषेही क्लेशकूंअनुभवकरेहैं ॥ कोईपुरुष मोहरहितहुआ तादेशका परि- त्यागकरिके सुखकूंप्राप्तहोवे ॥ तैसेहमसर्वसे निकसकरि मोहरहितहु- आ वामदेवऋषिआनंदकूं प्राप्तभयाहै ॥ जैसेमार्गविषेमिलकरि सर्वगमन करेहैं तिनमेंसे कोईपुरुष स्वर्णनिधिकूंप्राप्तहोवे ॥ तैसेवामदेव ब्रह्मज्ञान- रूपनिधिकूं प्राप्तभयाहै ॥ जैसेबहुतविद्यार्थी गुरुकीसेवाकरि वेदकाप- ठनकरेहैं ॥ परंतु कोईपुण्यात्मा निपुणमति समग्रविद्याकूं प्राप्तहोइकरि आनंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसेवामदेव ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तभयाहै ॥ जैसेअ- णिमादिसिद्धियोंकी प्राप्तिवासते तप मंत्र जपादिकोंकूं अनेकपुरुषकरे हैं ॥ तिनमेंसेकोईएकपुरुष आपने पुण्यप्रभावसे महानूसिद्धिकूं प्राप्त होइजावे तैसेहमसर्वमेंसे एक वामदेव ज्ञानरूपसिद्धिकूंप्राप्तभया हमसर्व खालीरहगये ॥ जैसे बहुतव्याधमिलकरि मृगोंकूं पकडलेवे ॥ तिनमेंसे कोईएकमृग आपनेपुण्यकेप्रभावसे निकसजावे ॥ तैसेहमसर्वकेमध्यसे यहवामदेव निकसकरिआनंदकूंप्राप्तहुआहै ॥ यावामदेवकूं गर्भविषेभी ज्ञान उत्पन्नभयाहै ॥ हमारेकूं पृथिवीमें गुरुशास्त्रादिउपायसहस्रकेप्राप्त होतेभी ज्ञानभयानहीं ॥ औरवामदेवमहात्माने माताकेगर्भविषेस्थित होइकरि जोहमारेकूं उपदेशकराहै ॥ सोकेवलतामहात्माकीकृपाहै को- ईस्नेहनहीं ॥ यदिस्नेहकहे तौ मातापिताकूं तावामदेवने किसवासते उ- पदेश नकरा ॥ गर्भसेबाहिरनिकसताही वनमेंगमनकरताभयाहै॥किसी प्राणीविषे तावामदेवका मोहनहींहै ॥ यातें जैसे सनकादिकोंने केवल कृपासे हमारेताई उपदेशकराथा तैसेकृपापरवशवामदेव माताकेगर्भविषे स्थितहुआभी हमारेताई उपदेशकरताभयाहै हमारेबडे मंदभाग्यहैं॥जो

हम किसीपुण्यकेप्रभावसे याभरतखंडविषे अधिकारीदेहकूंप्राप्तभयेभी॥ सनकादिकोंने तथावामदेवमहात्माने हमारे तांईउपदेशकराभी ॥ परंतु हममंद ब्रह्मबोधकूंनप्राप्तभये ॥ औरकालकूं हमनेव्यर्थहीव्यतीतकरा ॥ ब्रह्मबोधसे रहितहुए हमअबपर्यंत दुःखकूंही अनुभवकरेहैं॥ यालोकविषे जैसेविषयसुखदुःखमिश्रितहैं ॥ तैसेस्वर्गलोकविषेभी हमनेदुःखकूंही अनुभवकराहै ॥ काहेते स्वर्गलोकमेंयहतीनदोषतौस्पष्टहैं॥ एकयह जो न्यूनपुण्यकर्मसे जेन्यूनभोगवालेपुरुषहैं ॥ तेअधिकभोगवालेपुरुषोंकेसाथ ईर्षाकरेहैं ॥ याकूंसातिशयदोषकहेहै॥ द्वितीय पराधीनतादोषहै ॥ इंद्रादिकोंके अधीनही देवतारहेहैं ॥ तीसरा यह जेस्वर्गमें स्थितदेवताहैं ॥ तिनकूंयहज्ञानहोवेहै जोहमने एतेपुण्यकाफलभोगलियाहै ॥ एताअबी शेषरहताहै ॥ याकर्मकेफलकूं भोगकरि हमपृथिवीविषे अवश्यगिरेंगे॥ तागिरनेकाभयदेवतावोंकूं सर्वदातपावेहै ॥ यहभयरूपही तीसरादोषहै॥ हेअधिकारीजना हमस्वकर्मोंकेअनुसार यासंसारमें कबीस्वर्गकूं कबी नरककूं कबीयापृथिवीलोकविषे मनुष्यदेहकूं कबीतिर्यग् देहकूं प्राप्त भये ॥ ऐसेसंसारमेंदोषदर्शनसेहमारेकूं वैराग्यतौभयाहै ॥ अबहममिलकरि ब्रह्मबोधवासते आत्माकाविचारकरें ॥ जाआत्माका हमारेकूं सनकादिकोंनें उपदेशकराहै ॥ सोआत्माकौनहै ॥ स्थूलदेहतौ प्रत्यक्ष जड भौतिक परिच्छिन्नहोनेसेअनात्माहै ॥ यदिइंद्रियोंकूंआत्मामाने तामेंभी यहविचारणीयहै ॥ एकएकइंद्रिय आत्माहै वासर्वमिलकरि तिनकासमुदायहीआत्माहै ॥ एकएकमेंभी यदिनेत्रकूंआत्मामाने तौ अंधकाजीवननहींहोवेगा ॥ यदिश्रोत्रकूं आत्मामाने तौबधिरकाजीवननहींहोवेगा ॥ अन्यइंद्रियआत्मामाननेविषेभी यहदोषसमानहै ॥ यातेंएकएकइंद्रियआत्माबनेनहीं ॥ यदि तिनइंद्रियोंका समुदायही आत्मामाने ॥ तौ एकनेत्र इंद्रियरहित जोअंधपुरुषहै तामें नेत्रघटितसमुदायका अभावहोनेसे ॥ ताअंधकाजीवननहींहुआचाहिये ॥ औरजबीसर्वइंद्रियोंकूंआत्मामाने तौसर्वका एकजैसा संकल्पहोनादुर्घटहै ॥

एककहेगामैं बाहिरजाताहूं द्वितीयका अंतररहनेकासंकल्पहै॥ ऐसेजबी विरुद्धसंकल्पकरेंगे॥तौशीघ्रही यादेहकानाशहोवेगा॥यातेंइंद्रियआत्मा नहीं॥औरप्राणमन विज्ञान चित्त अहंकार इनसर्वमेंदृश्यत्व परिच्छिन्नत्व भौतिकत्वममताविषयत्वादिकोंके अनुभवहोनेसे अनात्मताजाननी योग्यहै॥ग्रंथविस्तारकेभयसे हमने औरयुक्तिविशेषलिखीनहीं॥यहआत्माही याशरीरमें साक्षीरूपसे प्रवेशकरताभयाहै॥और याआत्मासाक्षीकरिकेही पुरुषनेत्रसेरूपकूंदेखेहै ॥ तथायाआत्माकरिके श्रोत्रसे शब्दकूं श्रवणकरेहै ॥ औरयाआत्माकरिके घ्राणइंद्रियद्वारा पुरुषगंधकूंजानेहै॥ याआत्माकरिकेही यहवाकूइंद्रिय नानाप्रकारकेसंस्कृतभाषादिशब्दोंकूं उच्चारणकरेहै ॥ याआत्माकरिकेहीरसनाइंद्रियद्वारा नानाप्रकारकेमधुरादि स्वादु अस्वादुरसकूंजानेहै ॥ ऐसेयासाक्षीआत्माकूं त्रिविधपरिच्छेदशून्यरूपसे हमनेनिश्चयकराहै॥आत्माकूं नित्यहोनेसे कालपरिच्छेदका ताआत्मामेंअभावहै ॥ सर्वत्रव्यापकहोनेसे ताआत्मामें देशपरिच्छेदनहीं ॥ आत्माकूंहीसर्वरूपहोनेसे आत्मामें वस्तुपरिच्छेदभी नहीं ॥ इसीआत्माका हमारेतांई सनकादिकऋषियोंने उपदेशकराथा॥ औरपरमकृपालुवामदेवनेभी याअद्वितीयआत्माका उपदेशकराहै ॥ तिनगुरुवोंकीकृपासे तथा वारंवार आपसमेंमिलकरिविचारकरणेसे अबीयाआत्माकाहमारेकूं निश्चयभयाहै ॥ हेसज्जनो हमने वृत्तियोंसहितजोसाक्षी आत्मानिश्चयकराहै ॥ यहआत्माही वास्तवसे अंतःकरण औरवृत्तिउपाधिसेशून्यशुद्धस्वरूपहै ॥ यातें आगेहोनेहारे अधिकारीजनोंकूं आत्मबोधप्राप्तहोवे इसीप्रयोजनवासते आत्माकेनामोंकूं हम अर्पणकरें ॥ तात्पर्ययहजैसेहमनेहृदयादिपदोंकरिके याशुद्धआत्माका उपाधिकूंत्यागकरिनिश्चयकराहै ॥ तैसेअधिकारीभी हृदयादिनामोंकरिके उपाधिकूंत्यागकरि शुद्धआत्माकूंनिश्चयकरेंगे ॥ अबआत्माके नामोंकूंकहेहैं ॥ प्रथमआत्माकानामहृदयहै ॥ हृदयविषेहीआत्माप्रत्यक्षहोवेहै ॥ उपासनाभीआत्माकी सगुणरूपसे वानिर्गुणरूपसे हृदयविषे

होवेहै ॥ यातेंयाआत्माकूं हृदयनामसेनिरूपणकराहै ॥ आत्मासर्वकूं मननकरेहै ॥ तथामनकरिकेही ताआत्माकानिश्चयहोवेहै॥ यादोनिमित्तोंसे आत्माकूं मनकहेहैं ॥ औरआत्माही आपनेविषेकल्पितजगत्कूं प्रकाशेहै यातेंयाचेतनकूं संज्ञानकहेहैं ॥ सूर्य इंद्र चंद्र वायु अग्नि वरुण यम कुबेरादिसर्वप्राणीया आत्माकीआज्ञाविषेरहेहैं॥यातें ताआत्माका अज्ञान यहनामहै ॥ यहआत्माही गीत वाद्य आदिचौसठकलाकेज्ञानवालाहै ॥ यातेंयाआत्माकूं विज्ञानकहेहैं ॥ वर्तमानपदार्थकूं यहआत्माजानेहै ॥ यातें याआत्माकूं प्रज्ञानकहेहै ॥ यहआत्माही ग्रंथकेअर्थकूं धारणकरेहै ॥ यातेंयाआत्माकूं मेधाकहेहैं ॥ यहआनंदरूपआत्माही इंद्रियोंकरिकेघटादिकोंकूंप्रकाशेहै यातेंदृष्टिकहेहैं ॥ जाअंतःकरणकीवृत्तिसे दुःखितहुआभीपुरुष इंद्रियोंकूंधारणकरेहै ॥ तावृत्तिविशिष्टआत्माकानाम धृतिहै ॥ यहआत्माही सर्वप्राणीयोंके हृदयदेशविषे स्थितहुआ शुभअशुभकूंजानेहै ॥ यातेंयाआत्माकूं मति यानामसे कहेहैं ॥ संकल्पविकल्परूपमनकूं आधीनकरणेहारी बुद्धिकीजावृत्तिहैतावृत्तिविशिष्टहुए याआत्माकूंमनीषाकहेहैं ॥ अध्यात्मादित्रिविधदुःखकरि उत्पन्नभयीजाअंतःकरणकीवृत्ति तावृत्तिका प्रकाशकहोनेसे याआत्माकूं जूति कहेहैं भूतपदार्थकूं स्मरणकरणहारी जावृत्तिकेसाथमिलनेसे आत्माकूंस्मृतिकहेहैं ॥ शुक्लपीतरक्तादिअनेकरूपसे आत्माही सम्यक्कल्पनाकरेहै ॥ यातेंआत्माकूं संकल्पकहेहैं ॥ यहआत्माही घटादिकोंकेनिश्चयकरणेसे क्रतु कहावेहै ॥ यहआत्मा आपनीसमीपताकरिके प्राणोंकीचेष्टाकूं करावेहै ॥ यातेंआत्माकूं असुकहेहैं ॥ दूरप्राप्तविषयकी तथादुःखनिवृत्तिकी इच्छाकूंकरेहै ॥ यातेंयाआत्माकूंही कामकहेहैं ॥ स्त्रीसुखकीपुरुषकूं जाअभिलाषाहै ताअभिलाषारूपवृत्तिकूं यहआत्माप्रकाशकरेहै ॥ यातेंयाआत्माकूं वशकहेहैं ॥ यह अष्टादशनाम १८ आत्माके हमनेनिरूपणकरे ॥ अंतःकरण औरअंतःकरणकीवृत्तियोंकूं आत्माप्र-

काशकरेहै ॥ यातेंहृदयआदि ताआत्माकेनामहैं ॥ अंतःकरणअंतः-
करणकी वृत्तियोंके त्यागकरणेसे यहप्रकाशरूप आत्माहीशुद्धात्माहै ॥
औरवास्तवसेतौ आत्मासेभिन्नभूतभौतिकप्रपंच किंचित्मात्रभीनहीं-
है ॥ यातें देवदत्त यज्ञदत्त घट पट कुड्य वृक्षादियहसर्वनाम आत्मा-
केहैं ॥ हमनेजेहृदयादि पूर्वनाम निरूपणकरेहैं ॥ सोहमने आत्माकूं
अंतःकरणविषे साक्षीरूपसे प्रथमनिश्चयकराहै ॥ यातेंही अष्टादश
नामनिरूपणकरेहैं ॥ वास्तवसे सर्वनाम आत्मदेवकेहैं ॥ यहआत्मा-
देवही सूक्ष्मसमष्टिशरीरका अभिमानीब्रह्मारूपहै ॥ तथा स्थूलसम-
ष्टिशरीरका अभिमानीविराट्रूपहै ॥ तथायहआत्मादेवही आपनेस्व-
रूपकूं प्रत्यक्षकरताभया ॥ यातेंइंद्रकहेहैं ॥ अथवा प्रसिद्धदेवराजइं-
द्रहीआत्माहै ॥ यहआत्माही प्रजापति अग्नि वायु वरुण यमादिसर्वदे-
वरूपहै ॥ पृथिवी जल अग्नि वायु आकाश यहपंचभूतआत्मासेभिन्न
नहीं ॥ सर्पादिकजेतुच्छजीवहैं तथासर्पादिकही द्वितीय सर्पादिकोंके
कारणहै ॥ तेसर्पादिक तथाअंडजपक्षीआदिक तथाजरायुजमनुष्या-
दिक स्वेदजयूकादिक उद्भिज्जवृक्षादिक अश्व गौ पुरुष हस्ति जेप्राणी
पादोंकरिके गमनकरणेहारेहैं ॥ जेप्राणी आकाशमें गमनकरणेहारेहैं ॥
तथाजेवृक्षादि स्थावरप्राणीहैं ॥ तेसर्वही आत्मरूपहैं ॥ आत्मासेभिन्न
कोईप्राणीनहींहै ॥ ऐसेशरीरोंकूं यहआत्माहीउत्पन्नकरेहै ॥ ताआत्म-
देवने उत्पन्नकरणाभीमिथ्याहीहै औरविनाप्रयोजनसेहै ॥ जैसेमायावी
राक्षसोंकाबालक विनाप्रयोजनसे नानाप्रकारकेपदार्थोंकूं आपनी
मायाकरि उत्पन्नकरेहै ॥ और आपनेविषेलयकरेहै ॥ तैसेयहआ-
त्माभी आपनीमायाकेबलकरि अनंतपदार्थोंकूं विनाप्रयोजनसे उत्पन्न
करेहै ॥ आपनेविषेहीलयकरेहै ॥ जैसेराक्षसोंके बालककीमायाकरि
रचितपदार्थमिथ्याहैं ॥ तैसेआत्माकीमायाकरि रचितपदार्थमिथ्याहैं ॥
यहआत्मादेव सजातीय विजातीय स्वगतभेदसेरहितहै ॥ तथाज्ञानरूपहै
यातेंप्रज्ञाकह्याजावैहै तथा प्रज्ञानकह्याजावैहै ॥ जैसे वृक्षके सजातीय

द्वितीयवृक्षहै ॥ पाषाणादि वृक्षसे विजातीयहैं ॥ पत्रपुष्पादिक स्वगत कहींयेहैं ॥ याब्रह्मात्माकेसदृश द्वितीयब्रह्मात्मानहीं यातेंसजातीयभेद नहीं अज्ञानतत्कार्य ब्रह्मात्माविषे कल्पितहै ॥ यातेंयाब्रह्मात्माविषे विजातीयभेदनहीं ॥ निरवयवहोनेसे आत्माविषेस्वगतभेदभीनहीं ॥ प्रज्ञानरूपब्रह्महीसर्वविषेव्यापकहै ॥ यहसंपूर्णनामरूपजगत् प्रज्ञानरूप ब्रह्मविषेस्थितहै ॥ यासर्वलोकका प्रज्ञानरूपब्रह्महीनेत्रहै ॥ अर्थयह जैसेचर्ममयनेत्र तथाइननेत्रोंविषेस्थित जोनेत्रइंद्रियताकरिके हमारा बाह्यव्यवहारसिद्धहोवेहै ॥ तैसेप्रज्ञानरूपब्रह्मकरिकेही हमारासर्वव्यवहारसिद्धहोवेहै ॥ मांसमयनेत्रगोलक तथाइनकेभीतर जोनेत्रइंद्रियहै ॥ सोजगत्काआश्रयनहीं ॥ और यहप्रज्ञानब्रह्मरूपनेत्रतौ सर्वजगत्का आश्रयहै ॥ प्रज्ञानरूप नेत्रही साक्षीरूपसे मनुष्य देव गंधर्व पशु वृक्षादिकोंविषेस्थितहै ॥ ऐसे प्रज्ञानरूपआत्माकी साक्षीरूपसे स्थितिकूं कथनकरिके महावाक्यकूंकहेहैं ॥ प्रज्ञानंब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ जासाक्षी आत्माके अष्टादशनामप्रतिपादनकरेहैं ॥ यहसाक्षी चेतनरूपसे सर्वमें स्थितहै ॥ यातें यहसाक्षीहीब्रह्महै ॥ याप्रज्ञानकूं जोविद्वान् ब्रह्मरूप जानताहै ॥ सोविद्वान् वामदेवकीन्यांई देहादिकोंविषे आत्माभिमानकूं त्यागकरि सुखस्वरूपब्रह्मकूं प्राप्तहुआ सर्वकामनावोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तथाअमृतत्वभावकूं प्राप्तहोवेहै ॥ जैसेसनकादिकोंकेउपदेशसे तथा वामदेवके उपदेशसे अधिकारी वैराग्यादिसाधनसंपन्नऋषि ज्ञानद्वारा मोक्षकूंप्राप्तभये ॥ तैसेजोकोई और अधिकारीभी वैराग्यादिसाधनोंकीरेक ज्ञानकूंप्राप्तहोवेहै॥ सोपुरुषजीवन्मुक्तिकूं तथाविदेहमोक्षकूं प्राप्तहावेहै॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरि व्राजकाचार्यश्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादशिष्यसंप्रदायप्रविष्ट-परमहंसपरिव्राजकस्वामि—अच्युतानन्दगिरिविरचिते प्राकृतोपनिषत्सारे ऐतरेयार्थनिणर्यः॥८

ऐतरेयोपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ॥ ८ ॥

श्रीः।

अथ छांदोग्योपनिषद्भाषांतरम्।

ॐ नमस्तस्मै गणेशाय ब्रह्मविद्याप्रदायिने ॥ यस्यागस्त्यायते नाम विघ्नसागरशोषणे ॥ १ ॥ यामंगलश्लोककाअर्थयहहै ॥ तिसगणपतिके तांई हमारावारंवारनमस्कारहै ॥ जोगणपति ध्यानकरणेसेब्रह्मविद्याका प्रदाताहै ॥ औरजिसगणपतिकानाम विघ्नरूपसमुद्रकेशोषणकरणेमें अगस्त्यऋषिकीन्यांईवर्त्तेहैं॥ अबसामवेदकीछांदोग्यउपनिषत्के सार-अर्थकूंदिखावेहैं ॥ प्रथमॐकारकी उपासना ऐसेलिखीहै ॥ ॐ याअक्षरकूं उद्गीथरूपसेध्यानकरे जैसेपटकेएकदेशकेदाहहोनेसे पटकादाह भया यहकह्याजावेहै ॥ तैसेसामवेदकेभागकानामउद्गीथहै ॥ ताउद्गीथकेअवयवरूपॐकारकूं उद्गीथरूपजानकरि उपासनाकरे ॥ ऐसेउद्गीथरूपसे ॐकारकीउपासनाकूंनिरूपणकरिके ताॐकारमें पृथिवीजलादिकोंसे अत्यंतसारतारूप रसतमत्वगुणकाविधानकरा पश्चात्सर्वकामोंकी प्राप्तिकीकारणतारूप आप्तिगुणकाविधानकरा ॥ पश्चात् प्राप्तकामोंकीवृद्धिरूपसमृद्धिगुणकाविधानकरा ॥ ऐसेॐकारकीउद्गीथरूपसे रसतमत्वआप्तिसमृद्धिरूपगुणोंविशिष्ट उपासनानिरूपणकरीहै ॥ पश्चात् ताॐकारकीप्राणदृष्टिसे उपासनाकहीहै ॥ औरइंद्रियजन्यसात्विकी वृत्तिरूपदेवता तथाइंद्रियजन्यतामसीवृत्तिरूपअसुर ऐसेदेवताऔरअसुरोंके युद्धकूंकथनकरि प्राणकीहीश्रेष्ठतावर्णनकरीहै ॥ ऐसेश्रेष्ठअध्यात्मप्राणरूपसे उद्गीथरूपॐकारकी उपासनानिरूपणकरिके अधिदैवआदित्यरूपसे ताउद्गीथकी उपासनावर्णनकरी ॥ पश्चात्सर्वसे श्रेष्ठतादि

गुणविशिष्टपरमात्महष्टिसे ताउद्गीथकी उपासनाकेविधानवासते शिलक दाल्भ्य जैवलि इनतीनोंकासंवादवर्णनकरा ॥ ऐसेउद्गीथकी उपासनाकूं निरूपणकरिके सामभागरूपप्रस्तावकी उपासनाके विधानकरणेवासते आख्यायिकाकथनकरेहैं ॥ एककालमें कुरुदेशाविषे सूक्ष्मपाषाणोंकी वृष्टिसे दुर्भिक्षहोई जाताभया ॥ ताकालमें चक्रऋषिका पुत्रहोनेसे चाक्रायणनामवाला उषस्तिनामा ऋषि अन्नकेनप्राप्तहोनेसे आपनी जायासहित देशांतरविषे गमन करताभया ॥ हस्तिपालकके ग्राममें सोउषस्तिऋषिप्राप्तभया ॥ अन्नकेवासतेअटनकरताहुआ सोउषस्ति यहदेखताभया ॥ जोहस्तिपालक निंदितमाषनामउडदरूपअन्नकूं हस्तिकेतांईभक्षकराताहै ॥ मरणपर्यंतविपत्तिकूं प्राप्तहुआसोउषस्ति तिसहस्तिपालकसे तिनमाषोंकूं मांगताभया ॥ सोहस्तिपालक यहकहताभया ॥ हेऋषेयहउच्छिष्टमाषही मेरेसमीपहैं तेरेयोग्यपवित्रमाष मेरेसमीपहैंनहीं ॥ उषास्तितिनउच्छिंष्टमाषोंकूंही मांगताभया ॥ सोहस्तिपालक उषस्तिकेतांई तिनमाषोंकूंदेताभया ॥ पुनःहस्तिपालक जलकूंग्रहणकरो यहकहताभया॥ तबउषस्तियहकहताभया ॥ यहतेराउच्छिष्टजल मैं कैसेपानकरूं ॥ तबहस्तिपालक यहकहताभया क्यायहमाष उच्छिष्टनहीं हैं ॥ तब उषस्ति यहकहताभया जबीमैंइनमाषोंकूं नहींभक्षणकरता तबमृत्युकूं प्राप्तहोइजाता ॥ औरजलतौ कूपतडागादिकोंसे इच्छापूर्वकप्राप्तहोइजावेगा ताउच्छिष्टजलकेपानसे मैं नरककूंप्राप्तहोवूंगा॥ ऐसेकथनकरिके तिनउच्छिष्टमाषोंकूं भक्षणकरिकै शेषरहेमाषोंकूं आपनी जायाकेतांई देताभया ॥ ताभार्याने पूर्वहीभिक्षाकरीथी तिनमाषोंकूं पतिकेहाथसे ग्रहणकरिके धरदेतीभयी ॥ सोउषस्ति प्रातःकालमें निद्राकूंत्यागकरिके खेदकूंप्राप्तहुआ यहकहताभया ॥ यहांसे समीपही राजायज्ञकरताहै ॥ जबीकिंचित्भीअन्न प्राप्तहोइजावे तौताअन्नकूंभक्षणकरिके

ताराजासे मैंधनकूंप्राप्तहोवूं ॥ तिनउच्छिष्टमाषोंकूं साजायादेतीभयी ॥ तिनउच्छिष्टमाषोंकूंभक्षणकरिके ताराजाकेयज्ञविषेप्राप्तहुआ सोउषस्ति तिनयज्ञकरणेहारे ब्राह्मणोंके समीपस्थितभया ॥ तबप्रस्तावनामसामके कथनकरणेवाले प्रस्तोतानामाब्राह्मणकेतांई सोउषस्ति यहकहताभया॥ हेप्रस्तोतः जिसप्रस्तावका तूंउच्चारणकरताहै तिसप्रस्तावकेदेवताकूं न जानकरि यदिमैंविद्वान्केसमीप उच्चारणकरेगा तबतेरेमस्तककाअधः-पतनहोवेगा ॥ ऐसेउद्गाताआदिनामवाले ब्राह्मणोंकेतांईकह्या॥ तब सर्वहीभयभीतहुए उपरामहोइजातेभये ॥ तिनब्राह्मणोंकेतूष्णींभावके अनंतर ताउषस्तिकूं राजायहकहताभया ॥ भगवन् मैंआपकूंजाना चाहताहूं आपकौनहैं ॥ उषस्तिरुवाच ॥ हेराजन्मैंचक्रऋषिकापुत्र उषस्तिनामाहूं ॥ राजोवाच ॥ हेभगवन् मैंनेआपकाबहुतअन्वेष-णकरा परंतुआपप्राप्तभयेनहीं ॥ आपकूंनप्राप्तहोइकरि औरहीयज्ञकरा-नेवालेऋत्विक् मैंनेग्रहणकरे ॥ अबभीआपकृपाकरि यज्ञकरवावो ॥ उषस्तिअंगीकारकरतेभये ॥ औरयहकहतेभये जोयहब्राह्मण मेरी आज्ञासे यायज्ञमें आपनाआपनाकार्यकरें ॥ औरजितनीदक्षिणा तुम इनब्राह्मणोंकेतांईदेवोंगे तितनीदक्षिणाहीमेरेतांईदेनी ॥ राजानेअंगी-कारकरा ॥ तबप्रस्तोताब्राह्मण ताउषस्तिकेसमीपआइकरि यहकहता भया ॥ हेभगवन् आपनेयहकहाथा जोप्रस्तावकेदेवताकूंजानेविना जबीतूंप्रस्तावभागका उच्चारणकरेगा तबतेरामस्तक गिरजावेगा ॥ भगवन् सोप्रस्तावकादेवता कौनहै आपकृपाकरिकहो ॥ ऐसेपूछाहुआ उषस्ति यहकहताभया ॥ हेप्रस्तोतः जापरमात्मामें सर्वभूतोंकेउत्पत्ति-आदिकहोवेहैं ऐसाप्राणशब्दकाअर्थपरमात्माही प्रस्तावकादेवताहै ऐसे उद्गातानामऋत्विक्कूं उद्गीथकादेवता आदित्यकथनकरा ॥ और प्रतिहर्तानामऋत्विक्कूं प्रतिहारनामभागका अन्नदेवताकथनकरा ॥ अभिप्राययह जोप्रस्तावभागमें प्राणपदवाच्य परमात्मदृष्टिकरणी ॥

उद्गीथभागमें आदित्यदृष्टिकरणी ॥ प्रतीहारनामकभागमें अन्नदृष्टि करणी ॥ इत्यादिउपासनाप्रथमाध्यायमें हैं ॥ ॥ इतिछांदोग्येप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ॐनमःपरमात्मने ॥ प्रथमाध्यायमेंसामके एकदेशरूपॐकारकाध्यानकह्या ॥ अबद्वितीयाध्यायमें लोकादिअनेकपदार्थरूपसे समस्तसामउपासनाकथनकरिकै पश्चात् यहनिरूपण कराहै ॥ तीनधर्मकेस्कंधनामविभागहैं ॥ अग्निहोत्रतथानियमपूर्वक वेदोंकाअध्ययन तथावेदिसेबाह्यदान यहगृहस्थोंकाप्रथमधर्मस्कंधहै ॥ वानप्रस्थोंका कृच्छ्रचांद्रायणादिरूपतपही द्वितीयधर्मस्कंधहै ॥ आचार्यगृहमें विधिपूर्वकवेदकाअध्ययनकरणेहारा तथा जबतक प्राणहै तबतकगुरुसेवामेंआसक्त तथाभिक्षाटनादिकोंसे शरीरकानिर्वाहकरणेहारा जोनैष्ठिकब्रह्मचारीहै सोनैष्ठिकब्रह्मचारीही धर्मकातृतीय स्कंधहै ॥ यहतीनोंआश्रमी पुण्यकर्मकरतेहुए पुण्यलोकोंकूंही प्राप्त होवेहैं ॥ ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेति ॥ अर्थयह ॥ सर्वकर्मोंकेत्यागकरणेसे ब्रह्मविषे व्यभिचाररहित जाकीस्थितिभयीहै ऐसासंन्यासीही कर्मभिन्नअमृतरूप मोक्षफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अथवाॐकारकीउपासनाप्रकरणसे पूर्वकहीश्रुतिका यहअर्थजानना ॥ प्रणवहैप्रतीकजाका ऐसाजोब्रह्म ताब्रह्मकी ॐकाररूपसे उपासनाकरणेवालासंन्यासी क्रमकरिके मोक्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ॐकारहीसर्वसेश्रेष्ठहै याअर्थकूं उपपादनकरेहैं ॥ प्रजापति सर्वलोकोंसे सारकेग्रहणकरणेकी इच्छावासते ध्यानकरता भया ॥ ध्यानकरते ताप्रजापतिकेमनमें ऋग् यजुष् साम यहतीनही साररूपसे प्रतीतभये ॥ तिनवेदोंसेभी सारग्रहणकीइच्छाकरताहुआ प्रजापतिपुनःध्यानकरताभया ॥ ध्यानकरते भूर्भुवःस्वर् यहव्याहृतिरूपअक्षरही साररूपसे प्रतीतहोतेभये ॥ तिनअक्षरोंसेभी सारजाननेकीइच्छावाला प्रजापति पुनःध्यानकरताभया ॥ तबॐकारहीसाररूपसे प्रतीतभया ॥ जैसेपर्णोंकेनालरूपशंकुकरिकै पत्रोंकेअवयवव्या-

प्तहैं ॥ अर्थयह ॥ सोपर्णरूपनालही पत्रोंकेअवयवोंमें व्याप्तहोइर-
हाहै ॥ तैसेॐकारही सर्वशब्दोंविषेव्यापकहै ॥ ऐसे ॐकारकेध्यानकूं
विधानकरिके पुनःसामविज्ञानकेनिरूपणकरते अध्यायसमाप्तभया ॥
॥ इतिछांदोग्येद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ ॐनमोऽस्तुसूर्यादिवि-
विधरूपिणे ॥ पूर्वद्वितीयाध्यायमें कर्मोंकेअंगभूत सामादिकोंकीउपास-
नाकही यातृतीयाध्यायमें स्वतंत्रउपासनावोंका विचारकराहै ॥ प्रथ-
मआदित्यादिकोंविषे मधुदृष्टिकाविधानकराहै ॥ पश्चात्गायत्रीका
ब्रह्मरूपसेध्यानकथनकराहै ॥ गायत्रीवाइदंसर्वं ॥ अर्थयह ॥ यहसं-
पूर्ण स्थावरजंगमप्राणिमात्रगायत्रीस्वरूपहै ॥ इत्यादिवचनोंसे गायत्रीकूं
सर्वरूपताकाकथन गायत्रीउपाधिकब्रह्महीसर्वरूपहैं ॥ याअभिप्रायसे
जानना ॥ केवलगायत्रीछंदमात्रकूंतौ चरअचरसर्वरूपताबनेनहीं ॥
यातेंगायत्रीउपाधिकब्रह्मकी गायत्रीविषेउपासना जाननी ॥ ऐसेगाय-
त्रीउपाधिकब्रह्मकी उपासनाकूंकथनकरिके पश्चात्शांडिल्यनामाऋ-
षिने कहीविद्याकूं कथनकरेहैं ॥ सर्वंखल्विदंब्रह्मतज्जलानितिशांतउपा-
सीत॥अर्थयह॥नामरूपक्रियात्मक यहसर्वजगत् खलुनामनिश्चयकरिके
ब्रह्मस्वरूपहै ॥ जिसहेतुसे ताब्रह्मसेही यहसर्वजगत् उत्पन्नभयाहै ॥
ताब्रह्ममेंही लीनहोवेहै ॥ और स्थितिकालमेंभी ताब्रह्ममेंही स्थितहो-
इकरि चेष्टाकरिरहाहै ॥ यातेंसर्वकूंब्रह्मस्वरूपजानकरि रागद्वेषादिवि-
घ्नोंसेरहितहुआ ब्रह्मकाध्यानकरे ॥ ऐसेरागद्वेषसेराहित्यरूप शमगुणका
विधानकरिकै अबउपासनाकाविधानकरेहैं ॥ शांतहोइकरि अधिकारी
ऐसादृढसंकल्पकरे ॥ जैसापुरुषसंकल्पकरताहै यास्थूलशरीरकात्याग-
करि आपनेसंकल्पकेअनुसार ताफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यातेंअधिकारी-
पुरुषने ऐसासंकल्पकरणायोग्यहै तासंकल्पकेविषयकूंदिखावेहैं ॥ यह
आत्मामनोमयहै ॥ अर्थयह ॥ मनकेप्रवृत्तहोनेसे आत्माभीप्रवृत्तहो-
ताप्रतीतहोवेहै ॥ औरमनकेनिवृत्तहोते आत्माभी निवृत्तहोताप्रतीतहो-

वेहै ॥ यातेंआत्माकूंमनोमयरूपसेध्यानकरे ॥ औरयहआत्मा प्राणशरीरहै ऐसेध्यानकरे ॥ प्राणशब्दकरि प्राणप्रधानलिंगशरीरलेना ॥ तालिंगशरीरउपाधिकआत्माकूं प्राणशरीरयानामकरिकेकथनकराहै ॥ आत्माके मनोमयः औरप्राणशरीरः यहदोनोंविशेषण जीवकाब्रह्मसेवास्तवअभेदहै यातात्पर्यसे कथनकरेहैं ॥ पुनःयह आत्मा भारूपहै ॥ चैतन्यरूपहोनेसे याआत्माकूं भारूपकथनकराहै ॥ तथासफलसंकल्पहोनेसे सत्यसंकल्पकह्याहै ॥ आकाशकीन्यांई व्यापक तथासूक्ष्म औररूपरहितहैयातेंयाआत्माकूं आकाशात्माऐसेकह्याहै ॥ सर्वजगत्के उत्पन्नकरणेहाराहै यातेंसर्वकर्माआत्माहै ॥ व्यभिचारादिदोषरहितजोकामहै सोकाम परमेश्वररूपहै यातेंयाआत्माकूं सर्वकामः ऐसेकह्याहै ॥ सर्वसुगंधआत्मरूपहैं यातें आत्मा सर्वगंधः ऐसेकह्याहै ॥ सुखकरणेहारेरस आत्मरूपहैं यातें याआत्माकूं सर्वरसः यहकह्याहै ॥ औरसर्वजगत्में व्यापकहै ॥ औरवागादिकसर्वइंद्रियोंसेरहितहै ॥ अप्राप्तपदार्थकी इच्छाकरिके पुरुषकूंसंभ्रमहोवेहै नित्यतृप्तआत्माहै तासंभ्रमकाअभावहै ॥ यहआत्माही अधिकारीका वास्तवआपनास्वरूपहै ॥ यहआत्मा व्रीहि यव सर्षप श्यामाकादिकोंकीन्यांई सूक्ष्महुआभीपरमार्थसेपृथिवीआकाशस्वर्गादिलोकोंसे महान्व्यापकहै ॥ ऐसेआत्माकूं अधिकारीपुरुष संदेहरहित आपनेरूपसे जानताहूआ याशरीरकूंत्यागकरि मोक्षकूंप्राप्त होवेहै ॥ ऐसे शांडिल्यनामाऋषि कहताभया ॥ ऐसी शांडिल्यविद्याके पश्चात् विराट्कोशउपासना और आत्मयज्ञउपासनाका निरूपण कराहै ॥ आत्मयज्ञउपासनामें पुरुषकूंही यज्ञरूपसे वर्णनकराहै ॥ ऐसीआत्मयज्ञउपासनाकूं देवकीपुत्रश्रीकृष्णरूपआपने शिष्यकेतांई आंगिरस्नामकऋषि कथनकरताभया ॥ पश्चात्मनऔरआकाशकी ब्रह्मरूपसे प्रतीकउपासनाकथनकरीहै ॥ मनकूंब्रह्मरूपजानकरि अधि-

कारी उपासनाकरे ॥ तथासूर्यकूंब्रह्मरूपसे उपासनाकरे ॥ मनरूपब्रह्मकेचारिपादहैं वाक् प्राण चक्षुः श्रोत्र ॥ ऐसेमनरूपब्रह्मके चारिपादोंकूंकथनकरि अबआदित्यरूपब्रह्मके चारिपादोंकूं दिखावेहैं॥अग्नि वायु आदित्य दिशा ॥ ऐसेचारिचारि पादोंकूं निरूपणकरि ताउपासनाकेफलकूंकथनकरा ॥ ऐसीउपासनाकरणेवालापुरुष यशकूंतथावेदोंकेपठनसे उत्पन्नहोनेहारे ब्रह्मतेजकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ॥ इतिछांदोग्येतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ॐनमःशिवाय ॥ पूर्वतृतीयाध्यायमें आदित्यकीउपासनावर्णनकरी ॥ याचतुर्थाध्यायमें आदित्यमंडलउपाधिवालेहिरण्यगर्भकी उपासनाकहनेकूं प्रथमदानआदिकोंकी उपासनामेंसाधनताकूं कथाद्वारावर्णनकरेहैं ॥ जानश्रुतिनामकराजा श्रद्धापूर्वक बहुतपदार्थकादानकरताभया ॥ तथाअतिथिआदिकोंकेताई बहुतभोजनका दानकरताभया ॥ सर्वदिशावोंमें बहुतस्थानोंकूं बनवाताभया॥ताराजाकेमनमें यहअभिप्रायथा जोसर्वलोकइनस्थानोंमें मेरेभोजनकूं करेंगे ॥ देवतातथाऋषि राजाकेदानादिगुणोंकरिप्रसन्नहुए हंसोंकेरूपोंकूंधारणकरि रात्रिमेंराजाकेदृष्टिकाविषय हुए गमनकरतेभये ॥ सर्वके पीछेचलनेवालाजोहंसथा सोअग्रगामीहंसकूं यहकहताभया ॥ अरेभद्राक्षनामसुंदरनेत्रवाले याजानश्रुतिराजाकातेज स्वर्गलोकपर्यंतव्याप्त भयाहै ॥ ताराजाकेतेजकेसाथ संबंधकूं मतिकरो ॥ संबंधकरणेंसे याराजाकातेजतेरादाहकरेगा ॥ अबअग्रगामीहंस पृष्ठगामीहंसकूंकहे है ॥ अरेभद्राक्ष क्यातूं इसप्राणिमात्र जानश्रुतिराजाकूं रैक्ककेसदृशकहताहै ॥ जोमहात्मारैक्क आपनेशकटकूंसाथराखताहै ॥ तिसरैक्ककेसदृश यहराजा कैसेहोइसकताहै ॥ अग्रगामीहंसउवाच ॥ अरेभद्राक्ष सोमहात्मारैक्कऋषि कैसेवर्त्तताहै ॥ पृष्ठगामीहंसउवाच ॥ जैसेचारिअंकोंमें एकदोतीनअंकअंतर्गतहोवेहैं ॥ न्यूनसंख्या अधिकसंख्याके अंतर्गतहोवेहै ॥ यातेंचारिअंककेअंतर्गत एक दो तीन अंकहैं ॥ तैसे

जेशुभकर्म सर्वपुरुषकरतेहैं तेसर्वधर्म रैक्ककेधर्मकेअंतर्भूतहैं ॥ तथासर्व-पुरुषोंकेधर्मकाफलभी रैक्कऋषिकेधर्मकेफलविषे अंतर्भूतहै ॥ औरकेव-लरैक्ककाही यहमाहात्म्यनहींहै ॥ किंतुजोपुरुष रैक्ककीउपासनाजैसी उपासनावालाहै ॥ तिससर्वउपासकपुरुषका यहमाहात्म्यजानना ॥ ऐसेहंसोंकेमुखसे आपनी निंदाकूं औररैक्ककीप्रशंसाकूं जानश्रुतिराजा श्रवणकरताभया ॥ रात्रिमेंनिद्रासेविनाही वर्त्तमानहुआराजा प्रातःका-लमें स्तुतिकरनेवाले आपनेसार्थीकूं यहकहताभया हेप्रिय अबमेरीतूं क्यास्तुतिकरताहै ॥ स्तुतिकेयोग्यरैक्कऋषिहै मैंस्तुतिकेयोग्यनहीं ॥ शकटसहितजोरैक्कऋषिहै सोसर्वसेअधिकधर्मात्माहै ॥ राजाकेअभि-प्रायअनुसार सोसारथी अनेकग्रामोंमें तारैक्कऋषिका अन्वेषणकरताभ-या ॥ परंतुताऋषिकूंप्राप्तभयानहीं ॥ तासारथीकूंराजाकहेहै ॥ अरेसू-त जहांएकांतदेशमें ऋषिलोकस्थितहोवें तादेशमेंजाइकरि अन्वेषण करो ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि एकांतदेशमें आपने शरीरविषेकंडूकर-तेरैक्ककूं सोसूतदेखताभया ॥ समीपजाइकेरैक्कऋषिकेपासस्थितभया ॥ औरयहकहताभया ॥ भगवन् आपहीरैक्कऋषिहैं ॥ रैक्ककहतेभये हमहीरैक्कहैं ॥ सोसूत जानश्रुतिराजाकूं सर्वनिवेदनकरताभया ॥ सूतकेवचनकूंश्रवणकरि जानश्रुतिराजा षट्शत ६०० गौतथाकंठपह-रणेयोग्यहार औररथ ऐसेधनकूंग्रहणकरि रैक्कऋषिकूंप्राप्तभया नमस्का-रकरताहुआ॥राजाकहेहै ॥ हेभगवन् यहषट्शतगौहार रथ इनकूंग्रह-णकरो ॥ और जिसदेवताकी आपउपासनाकरतेहो तादेवताकामेरे-तांईउपदेशकरो ॥ रैक्कउवाच ॥ अरेशूद्र गौहार रथ इनकूंतुमलेजावो मैंइनकूंक्याकरूंगा ॥ क्षत्रियराजाकूं शूद्रकहनेसे रैक्कऋषिआपनीसर्व-ज्ञतासूचनकरतेभये ॥ रात्रिमेंतूंशोककरताहुआ मेरेपासप्राप्तभयाहै ॥ ऐसेशोककरणेसे क्षत्रियराजाकूं रैक्कऋषिने शूद्रकहा ॥ रैक्ककेवचनकूं श्रवणकरि राजानेसूतकेवचनसे यहनिश्चयकरा ॥ यारैक्ककीगृहस्थहो-

नेकीइच्छाहै औरधनभीअल्पहै ॥ पुनःराजाएकसहस्र १००० गौ औरहार रथ और आपनीकन्याकूं लेकरि रैक्कऋषिकेपासप्राप्तहुआ यहकहताभया ॥ हेभगवन् यासर्वधनकूंग्रहणकरो ॥ और यहमेरी कन्या आपकीजायाहोवे ॥ और जिनग्रामोंमें आपस्थितभयेहो यहग्रामभी आपकेहोवें ॥ जादेवताकीआपउपासनाकरतेहो तादेवताकामेरेतांई आपकृपाकरिउपदेशकरो ॥ रैक्कउवाच ॥ हेशूद्र शास्त्रउक्तप्रकारसे धनादिकोंकेदानपूर्वकतूंपूछताहै ॥ ऐसेकथनकरिके सर्वधनकूं तथाकन्याकूं सोरैक्कग्रहणकरताभया ॥ औरजिनग्रामोंकूंराजा रैक्ककेतांईदेताभया ॥ तिनमहावृषनामकदेशमेंहोनेहारे ग्रामोंकूं रैक्कपर्णनामसेकहेहैं ॥ अबरैक्कऋषि राजाकूंउपदेशकरेहै ॥ वायुहीसंवर्गहै ॥ संवर्गनाम सर्वकेग्रसनेहाराहै ॥ जबअग्निशांतहोवेहै तबसोअग्नि वायुमेंहीलीनहोवेहै ॥ ऐसेसूर्यअस्तहुआ वायुमेंलीन होवेहै ॥ चंद्रमाअस्तहुआ वायुमेंलीनहोवेहै ॥ जलशुष्कहुए वायुमेंलीनहोवेहै ॥ वायुही इनसर्वकूं ग्रसनकरेहै ॥ यहअधिदैवउपदेशकरा ॥ अबअध्यात्मउपदेशकूं श्रवणकरो ॥ हेराजन्! यहप्राणहीसंवर्गहै ॥ जबपुरुषशयनकरे है तबप्राणमेंही वाग्लीनहोवेहै ॥ तथाप्राणमेंही चक्षुश्रोत्रमनलीनहोवे हैं ॥ इनसर्ववागादिकोंकूं प्राणआपनेविषेलीनकरेहै ॥ देवतावोंविषे बाह्यवायु तथाअंतरइंद्रियरूप सर्वप्राणोंविषे मुख्यप्राण यहदोनोंसंवर्ग हैं ॥ अबइनदोनोंसंवर्गोंकीस्तुतिवासते आख्यायिकाकहेहैं ॥ शौनक पुरोहितसहित अभिप्रतारीनामकराजा भोजनस्थलविषे भोजनवासते दोनों स्थितभये ॥ ताकालमें कोईब्रह्मचारी भिक्षाकूंमांगताभया ॥ ब्रह्मचारीकेज्ञानकी परीक्षावासते पुरोहिततथाराजा ताब्रह्मचारीकूं भिक्षानदेतेभये॥ तबब्रह्मचारी यहकहताभया॥जोदेव भूरादिसर्वलोकोंकारक्षकहै॥ तथाचारिअग्निआदिकोंकूं तथाचारिवागादिकोंकूं आपनेविषेलीनकरे है सोदेवकौनहै॥ जादेवकूं अविवेकीपुरुषजानेनहीं॥जोदेव

अध्यात्मअधिदैव अधिभूतरूपसे बहुतप्रकारसे स्थितहोइरहाहै॥ अन्नकेभोक्ताप्राणकूं एकरूपसेजानताहुआ ब्रह्मचारीकहेहै ॥ हेअभिप्रतारिन् जादेवकेवासते अनेकप्रकारकेअन्नहैं तादेवकूंतुमनेंअन्ननहींदिया॥ ब्रह्मचारीकेवचनकूंश्रवणकरिके मनमेंविचारकरताहुआशौनक ब्रह्मचारीके पासआइकारि यहकहताभया ॥ हेब्रह्मचारिन् तादेवकूंअविवेकीनहींजानते परंतुहमतौजानतेहैं ॥ अग्निआदिदेवोंकासोदेवआत्माहै स्थावरजंगमकाजनकहै ॥ सोदेव अभग्नदंष्ट्रहै तथामेधावीहै ॥ जादेवकी अपरिमितविभूतिहैं ऐसेध्याअनिष्ठपुरुषकहतेहैं ॥ सोदेव अग्निआदिकोंकूं भक्षणकरेहै ॥ तादेवकाभक्षणकरणेहाराकोईनहीं ॥ हेब्रह्मचारिन् ऐसेप्रजापतिकेरूपका हमध्यानकरतेहैं ॥ शौनकपुरोहितब्रह्मचारिसे ऐसेसंवादकरिके आपनेसूपकारभृत्योंकूं यहकहताभया ॥ भो भृत्या तुम इसब्रह्मचारीकेतांई भिक्षादेवो ॥ भृत्य भिक्षाकूंदेतेभये ॥ जोकोईपुरुष पूर्वकहेप्रकारसे प्राणकेस्वरूपकाउपासनकरेहै सोउपासक सर्वपदार्थोंकाज्ञाता तथातेजस्वी होवेहै ॥ अबश्रद्धागुरुसेवादिसाधनउपासनाकेअंगहैं याअर्थकेकहनेकूं औरआख्यायिकाकहेहैं ॥ जबालामाताकापुत्रहोनेसे जाबालनामक सत्यकामनामाबालक आपनी जबालानामामाताकूं यहकहताभया ॥ हेमातः गुरुकुलमें मेराब्रह्मचर्य करणेकासंकल्पहै ॥ हमाराक्यागोत्रहै ॥ यहकृपाकारिकहो ॥ मातोवाच ॥ हेपुत्र यौवनअवस्थामें आपनेपतिकीसेवाविषे मैंतत्पररही ॥ तथापतिकेगृहमेंप्राप्त भये जेअतिथिआदिकहैं तिनकीसेवामें तत्पररही औरतायौवनावस्थामें पतिसे लज्जाकरि मैंनेगोत्रनहींपूछा ॥ तायौवनकालमेंही तुमप्राप्तभये ॥ तेरेपिताभी मेरेयौवनकालमेंहीमृतभये ॥ यातेंमैं गोत्रकूंतौनहींजानती ॥ मेरानामजबालाहै ॥ हेपुत्र तेरानाम सत्यकामहै ॥ एतावन्मात्रमैंजानतीहूं ॥ तुमगुरुकेसमीपजावो और गुरुजीपूछेंतौतिनकूं यहकहदेना ॥ जोमेरीमाताकानामजबालाहै तथा

मेरानामसत्यकामहै ॥ ऐसेमाताकेवचनकूंश्रवणकरि गौतमऋषिकेशरणकूंप्राप्तहुआसत्यकाम यहकहताभया ॥ भोभगवन् ! आपके समीप मैंब्रह्मचर्यकराचाहताहूं मैंशिष्यपरकृपाकरो ॥ ॥ गौतमउवाच ॥ ॥ भोसौम्य तेराकौनगोत्रहै ॥ ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन् ! मैं आपनेगोत्रकूं नहींजानता ॥ मैने आपनीमातासेपूछाथा तामातानेमेरेकूंयहकहा ॥ हेपुत्र यौवनावस्थामेंलज्जाकरि पतिसे आपनागोत्र मैंनेपूछानहीं पश्चात्पतिमृतहोइगये ॥ यातेंमैंगोत्रकूंजानतीनहीं ॥ जबतुमकूंगुरुजीपूछें तबयहकहना जोमेरीमाताकानामजबालाहै मेरानामसत्यकामहै ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि गुरुकहेहैं यदि यहब्राह्मणनहोता तौसत्यकैसेकहता ब्राह्मणहीस्वभावसे ऋजु सत्यवक्ता होवेहैं ॥ हेसौम्य तूंसत्यसेचलायमाननहींभया यातें प्रसन्नहुआ मैंतेराउपनयरूपसंस्कार करूंगा तूंसमिधलेआ ॥ ऐसेसत्यकामके उपनयनादि करिके अध्ययनकरावतेभये ॥ तागौतमऋषिकेगृहमें गौबहुतथी तिनगौवोंमेंसे चारिशत ४०० गौ कृशबलहीनथी तिन चारिशतगौवोंकूं पृथक्करिके सत्यकामशिष्यकूंदेताभया ॥ और गुरुयहकहताभया ॥ हेसौम्य यहगौबहुतनिर्बलहैं इनकूंबनविषेलेजावो ॥ तिनगौवोंकूं बनविषेलेजाताहुआ सत्यकामयहकहताभया॥ जबपर्यंतयहचारिशतगौवां एकसहस्र १००० नहींहोवेंगी तबपर्यंत मैंने बनसेआनानहीं ॥ ऐसेकहकरि तिनचारिशतगौवोंकूं बनविषे सत्यकामलेजाताभया ॥ ता बनमें बहुतवर्षरहताभया ॥ तेचारिशतगौ जबएकसहस्रपूर्णहोइगयी ॥ तागौवोंकूं चरानेवालेसत्यकामकूं वृषभशरीरविषेप्रविष्टहुई दिशाअभिमानीवायुदेवता गुरुकीसेवाकरिप्रसन्न हुई कहतीभयी ॥ हेसत्यकाम ॥ सत्यकामकहताभया हेभगवन् ॥ वृषभउवाच ॥ हेसौम्य हमगौवांसहस्रपूर्णहोइ गयीहैं ॥ तेरीप्रतिज्ञापूर्णभयीअबहमारेकूं आचार्यकेगृहविषेलेचलो ॥ औरब्रह्मकेपादकूंमैं

तेरेतांईकहताहूं ॥ सत्यकामउवाच ॥ कहोभगवन् ॥ वृषभउवाच ॥ हेसत्यकाम पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण यहचारिदिशाब्रह्मकाचारिकलावालापादहै ॥ यादिशारूपब्रह्मके पादकानामप्रकाशवान्है ॥ जोउपासक याप्रकाशवान्नामक ब्रह्मकेपादकूं जानताहै सोआपप्रकाशवान्हूआ प्रकाशवान्लोकोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ हेसत्यकाम ब्रह्मकादूसरापाद तेरेकूं अग्निउपदेशकरेगा ॥ ऐसेकथनकरिके वृषभतौउपरामभया ॥ तबसत्यकामं प्रातःकालविषेगौवोंकूंआचार्यकेगृहमेलेआनेवासते तिनगौवोंकूंचलाताभया ॥ जबसायंकालभया तबसर्वगौवां एकठीस्थित भयी ॥ सत्यकाम काष्ठोंसें अग्निकूंप्रज्वलितकारिके अग्निकेसन्मुख औरगौवोंकेसमीपहीस्थितभया ॥ वृषभनेजो कहाथा तेरेकूं अग्निदूसरेपादकाउपदेशकरेगा तावृषभकेवचनकूं स्मरणकरताभया ॥ तबअग्निनेसंभाषणकरा ॥ हेसत्यकाम ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन् ॥ अग्निरुवाच ॥ हेसत्यकाम मैंब्रह्मकेपादका उपदेशकरताहूं ॥ सत्यकामउवाच ॥ कहोभगवन् ॥ अग्निरुवाच ॥ पृथिवी अंतरिक्ष स्वर्ग समुद्र यहब्रह्मकापादहै ॥ यापादकानामअनंतवान्है ॥ जोध्यातापुरुष याचारिकलावालेब्रह्मके पादकाध्यानकरेहै सोध्यातापुरुष अनंतलोकोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरब्रह्मकेपादकूं तेरेतांई हंसरूपसूर्यउपदेशकरेंगे ॥ गौवोंकूंआचार्यकेगृहमें लेआनेवासते प्रातःकालमें सत्यकाम गौवोंकूंचलाताभया ॥ रात्रिमें अग्निकेसन्मुखस्थितभया ॥ ताकालमें हंसरूपसूर्यकहतेभये॥ हेसत्यकाम ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन् ॥ हंसउवाच ॥ ब्रह्मकेपादकूंमैं कहताहूं ॥ सत्यकामउवाच ॥ कहोभगवन् ॥ हंसउवाच ॥ अग्नि सूर्य चंद्र विद्युत् यहचारिकलावालाब्रह्मकापादहै ॥ यापादकानामज्योतिष्मान्है ॥ जोपुरुषयाचारिकलावाले ज्योतिष्मान्नामकपादका ध्यानकरताहै ॥ सोध्यातापुरुष ज्योतिष्मान्लोकोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेसत्यकाम मद्गुनामकजलचरपक्षी तेरे-

कूंब्रह्मकापादकहेगा ॥ मद्गुकरिकेयहांप्राणलेना सोप्राणरूपमद्गु सायंकालमेंकहेहै ॥ हेसत्यकाम ॥ सत्यकामउवाच ॥ भगवन् ॥ मद्गुरुवाच ॥ हेसत्यकाम तेरेतांई मैंब्रह्मकेपादकाउपदेशकरताहूं ॥ सत्यकामउवाच ॥ कहोभगवन् ॥ मद्गुरुवाच ॥ प्राण चक्षु श्रोत्र मन यह चारिकलावालाब्रह्मकापादहै ॥ यापादकानामआयतनवान्है ॥ जोपुरुषयाआयतनवान्नामकब्रह्मकेपादकाध्यानकरताहै सोपुरुष सावकाशलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ पश्चात्सोसत्यकाम आपनेआचार्यकेगृहविषे प्राप्तहुआ आचार्यकूंदंडवत्करताभया ॥ आचार्यकहेहैं हे सत्यकामजैसेब्रह्मवेत्ता प्रसन्नवदन तथाचिंतारहित कृतार्थहोवैहै ॥ तैसे तूंभी प्रसन्नवदनत्वादिलिंगोंसे ब्रह्मवित्कीन्यांईप्रतीतहोताहै ॥ तुमकूं किसने उपदेशकराहै ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन् मनुष्योंसें विनाहीदेवतावोंने मेरेतांई उपदेशकराहै ॥ भगवन् तेरेविनाकिसका सामर्थ्यहै जो आपकेमैंशिष्यकूं उपदेशकरिसके ॥ तेरेशापसे सर्वमनुष्यभयभीतहैं ॥ हेभगवन् मेरेतांईदेवतावोंने उपदेशकराभीहै ॥ परंतु मैनेआपसदृश ऋषियोंसे यहश्रवणकराहै जो आपनेगुरुसेप्राप्तभयी विद्या श्रेष्ठफलकूंप्राप्तकरैहै ॥ यातेंभगवन् मेरीयहइच्छाहै जोआप कृपाकरि ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरिआचार्यउपदेशकरतेभये ॥ हेसत्यकाम देवतावोंने जोतुमारेतांई पृथक्पृथक्ब्रह्मकेपादनिरूपणकरे तिनकेध्यानसें पुरुषकृतार्थहोवेनहीं ॥ किंतुसो षोड़शकलब्रह्मचतुष्पाद्है ॥ ऐसीसमस्तउपासनासेही फलप्राप्तहोवैहै ॥ अबपुनःश्रद्धातपआदिकोंकूं उपासनाकाअंगरूपकहनेवासते औरआख्यायिकाकहेहैं ॥ कमलनामककिसीऋषिकापुत्रहोनेसें कामलायननामकूंप्राप्तहुआ उपकोसलनामकऋषि पूर्वकहेसत्यकामऋषिके शरणकूंप्राप्तभया ॥ तासत्यकामऋषिकेसमीप ब्रह्मचर्यकूंधारणकरताहुआ द्वादश १२ वर्षगुरुकेअग्नियोंकीसेवाकर-

ताभया ॥ और सत्यकामऋषि अन्यबहुतशिष्योंकेतांई वेदपठाइकरि आपने आपनेगृहोंमें भेजदेताभया ॥ उपकोसलनामशिष्यकेतांई वेद-काउपदेशनहींकरताभया ॥ तासत्यकामऋषिकीजाया सत्यकामकूं यहकहतीभयी ॥ हेपते यहउपकोसलनामकब्रह्मचारी बहुतकालसे अग्नियोंकीसेवाकरताहै ॥ याअग्नियोंकेभक्तउपकोसलकूं विद्यादेकरि आपनेगृहविषे आपनहींभेजते ॥ यहसत्यकामहमारे भक्तउपकोसलकूं विद्याकाउपदेशनहींकरता याअभिप्रायसे यहअग्नि तुमारीनिंदामति-करें ॥ यातेंयाउपकोसलकेतांई विद्याकाउपदेशकरो ॥ सत्यकामश्र-वणकरताभया ॥ औरविद्याकेउपदेशकरेविनाही जायाकूंभीकुछउत्तर नदेताहुआ किसीविदेशमेंचलाजाताभया ॥ ताआचार्यकेअभिप्रायकूं नजानकरि उपकोसल मानसदुःखकरिपीड़ितहुआ अन्नकेत्यागकरणे-कासंकल्पकरताभया ॥ तूष्णींहोइकरिअग्नियोंकेगृहमेंस्थितभया ॥ ताउपकोसलकूं दुःखीदेखकरि आचार्यकीजायायहकहतीभयी ॥ हे उपकोसल तूंभोजनकरिले तुमनेभोजनकाकिसवासतेत्यागकराहै ॥ उपकोसलउवाच ॥ हेमातः याप्राकृतपुरुषमें अनेकप्रकारकीइच्छा होवेहैं ॥ अनेकमानसदुःखोंकरि मैंपरिपूर्णहूं ॥ यातेंमैंभोजननहींकर-ता ॥ अग्नियोंने जबउपकोसलकाअन्नकेत्यागकाहीसंकल्पदेखा तब सेवाकरिप्रसन्नहुए तीनोंअग्निमिलकरिआपसमेंयहकहतेभये ॥ याउप-कोसलनामकब्रह्मचारीने हमारीबहुतसेवाकरीहै औरआचार्यनेइसकी उपेक्षाकरीहै ॥ यातेंऐसेश्रद्धालुकेतांई हमहीविद्याकाउपदेशकरें ॥ ऐसेकृपायुक्तअग्नि आपसमेंविचारकरि तपस्वीब्रह्मचारीकेतांई यहक-हतेभये ॥ हेउपकोसल प्राणोब्रह्म कंब्रह्म खंब्रह्म ॥ उपकोसलउवाच॥ हेभगवंतः जीवनकेहेतुप्रसिद्ध प्राणकूंतौ मैंब्रह्मरूपजानताहूं कं खं केअ-र्थकूंमैंनहींजानता ॥ अग्नयऊचुः ॥ हेउपकोसल जोयहकंनामसुखरू-पब्रह्महै सोई खं नामआकाशकीन्यांई व्यापक ब्रह्महै ॥ जोखंहैनाम

व्यापकब्रह्महै ॥ सोईकंनामसुखस्वरूपब्रह्महैभिन्ननहीं ॥ कं ब्रह्म एताहीकहते तौसुखस्वरूपब्रह्महै ॥ यहअर्थहोनेसे जन्यविषयसुखहीब्रह्मसिद्धहोता यातें खं ब्रह्मनामआकाशकीन्यांई व्यापकब्रह्मकहा ॥ विषयसुखपरिच्छिन्नहै व्यापकब्रह्मरूपनहीं ॥ खंब्रह्म एताहीकहते व्यापक ब्रह्महै यहअर्थहोनेसे आकाशहीब्रह्महै यहअर्थसिद्धहोता ॥ यातेंकं ब्रह्मनाम सुखरूपब्रह्महै यहकहा ॥ सुख भिन्नहोनेसे दुःखरूपआकाश सुखरूपनहीं ॥ यातें कं खं यहदोनोंस्वरूपब्रह्महै ॥ ऐसेअग्निमिलकरि प्राणरूपकार्यब्रह्मका तथाआकाशनामक सुखविशिष्टकारणब्रह्मका उपदेशकरतेभये ॥ पश्चात् गार्हपत्यनामकअग्नि आपनीविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ हेब्रह्मचारिन् पृथिवी अग्नि अन्न आदित्य यहचारिमेरेशरीरहैं ॥ जोयह आदित्यमंडलमें स्थितपुरुषहै सोमैंगार्हपत्यनामअग्निहूं मैंगार्हपत्यअग्निही आदित्यमंडलमें स्थितपुरुषहूं ॥ जोपुरुषऐसे ध्यानकरताहै सोपुरुषमेरेलोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरयालोकमेंभीप्रसिद्धहुआ शतवर्षपर्यंतजीवताहै ॥ याउपासकपुरुषकीसंततिकाउच्छेदनहीं होवेहै ॥ ताउपासकका यालोकविषे तथापरलोकविषे हमपालनकरेहैं ॥ पश्चात् अन्वाहार्यपचननामकअग्निने आपनीविद्याका उपदेशकरा ॥ हेसौम्य जल दिशा नक्षत्र चंद्रमा यहमेरेचारिशरीरहैं ॥ चंद्रमामेंस्थित पुरुषमैंहूं मैंहीचंद्रमामेंस्थितपुरुषहूं ॥ उपासककूं फलप्राप्तिपूर्वकीन्यांईजानलेनी ॥ पश्चात्आहवनीयनामकअग्निने आपनीविद्याका उपदेशकरा ॥ हेउपकोसल प्राण आकाश स्वर्ग विद्युत् यहचारिमेराशरीरहैं ॥ उपासककूंफलप्राप्ति गार्हपत्यअग्निप्रकरणमेंकहीरीतिसे जानलेनी ॥ तीनोंअग्निमिलकरि उपकोसलकूंकहेहैं ॥ हेउपकोसल यहहमने पृथक्पृथक्आपनीविद्याकही आत्मविद्यातौहमने कं ब्रह्म खं ब्रह्म इसवाक्यसेकहीहै ॥ औरआचार्यविना विद्याफलीभूतहोवेनहीं ॥ यातें आचार्यस्तुतेगतिंवक्ता ॥ अर्थयह ॥ तेरेतांईआचार्य आत्माके स्थाना_

दिकोंकाकथनकरेंगे ॥ ऐसेकथनकरि अग्निउपरामहोतेभये ॥ पश्चात् आचार्यभी आइप्राप्तभये ॥ आचार्यउवाच ॥ भोउपकोसल उपकोसलदंडवत्करताहुआ कहताभया भगवन् ॥ आचार्यउवाच ॥ हेसौम्य ब्रह्मवेत्ताकेमुखकीन्यांई तेराप्रसन्नमुख मैंदेखताहूं ॥ तेरेकूंकिसने उपदेशकराहै उपकोसलउवाच ॥ भगवन् आपकेशिष्यमेरेकूं आपसेविना औरकौनउपदेशकरणेहाराहौ ॥ यहअग्निआपकेआनेसेप्रथम औरप्रकारकेप्रतीतहोतेथे ॥ अबआपकेआनेसे जैसेपुरुष कांपताहै वैसेहीप्रतीतहोतेहैं ॥ याकहनेसे यहसूचनकराया जो अग्नियोंनेही मेरेतांईउपदेशकराहै ॥ आचार्यउवाच ॥ हेसौम्य तेरेतांई इनअग्नियोंनेक्याउपदेशकराहै ॥ उपकोसलने अग्नियोंका उपदेशसर्वश्रवणकराइदीया ॥ आचार्यकहेहैं हेसौम्य अग्नियोंने तेरेतांई लोकोंकाही उपदेशकराहै ॥ ब्रह्मका संपूर्णउपदेशकरानहीं ॥ तेरेतांई प्रथमसविशेष ब्रह्मज्ञानकेमाहात्म्यकूं मैं कथनकरताहूं ॥ जैसे कमलपत्रमें जलोंकासंबंधहोवेनहीं तैसेब्रह्मज्ञानीमें पापकर्मकासंबंधहोवेनहीं ॥ उपकोसलउवाच ॥ हेभगवन् आपकृपाकरि ब्रह्मकाउपदेशकरो ॥ आचार्यउवाच ॥ हेसौम्य निवृत्ततृष्णावाले तथा जितइंद्रिय शांतात्मा जापुरुषकूं द्रष्टारूपसे नेत्रमेंस्थितजानतेहैं यहद्रष्टापुरुषही सर्वप्राणियोंका आत्माहै ॥ यहआत्माही अविनाशी अभय व्यापकब्रह्मस्वरूपहै ॥ याउपकोसलकेतांई जाआत्माकाउपदेश अग्नियोंने कं खं रूपसेकराथा, ताआत्माकाहीउपदेश द्रष्टारूपसे अबआचार्यनेकरा कोईभिन्ननहीं जानना ॥ औरयहद्रष्टाआत्माअसंगहै ॥ जैसेकोईनेत्रोंमें जलकावाघृतका प्रक्षेपकरेहै ॥ सोजलवाघृत नेत्रोंकेपक्षरूपपलकोंमेंही स्थितहोवेहै नेत्रोंमेंसंबंधवालाहोवेनहीं ॥ जबीनेत्रभी जलघृतादिकोंसे संबंधवाले होवेंनहीं तबनेत्रोंमें स्थितद्रष्टापुरुष असंगहैयामेंक्याकहनाहै ॥ अबनेत्रस्थद्रष्टाआत्माकेध्यानवासते ताद्रष्टाआत्माकेगुणोंकूं कथनकरेहैं ॥

यानेत्रस्थआत्माकूं संयद्वाम ऐसेकहेहैं ॥ संयद्वामइसपदकाअर्थयहहै ॥ सर्वप्राणिमात्रकेकर्मोंकेफल याद्रष्टापुरुषकूंआश्रयकरिकेही उत्पन्नहोवेहैं ॥ यातें यानेत्रस्थपुरुषकूं संयद्वामकहेहैं ॥ और याआत्माकूं वामनीकहेहैं ॥ सर्वप्राणियोंके आपनेकर्मोंकेफलोंकूं यहआत्माहीप्राप्तकरेहै ॥ यातेंयाआत्माकूं वामनीकहाहै ॥ औरयाद्रष्टाआत्माकूं भामनी कहेहैं ॥ यहनेत्रस्थआत्माही सूर्यचंद्रादिरूपहुआ सर्वकाप्रकाशकरेहै॥ यातेंयाद्रष्टाआत्माकूं भामनीकहाहै ॥ औरजोउपासक यानेत्रस्थपुरुषका ब्रह्मरूपसेध्यानकरताहै ॥ सोध्यातापुरुषभी सबकर्मफलोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरप्राणियोंकेकर्मोंकेफलोंका प्राणियोंकेतांई प्राप्तकरणेहारा होवेहै तथासर्वलोकोंमें प्रकाशकरेहै ॥ औरयाउपासककेशरीरसेप्राणकेवियोगरूपमरणहुए ताउपासककेमृतशरीरका पश्चात् पुत्रशिष्यादि दाहादिरूपसंस्कारकरें अथवानहींकरें सोउपासकतौब्रह्मलोकमें अवश्यप्राप्तहोवेगा ॥ अबउपासकपुरुषोंकी ब्रह्मलोकमेंप्राप्तिकेवासते देवयानमार्गकूंकहेहैं ॥ यहउपासकपुरुष यास्थूलशरीरकात्यागकरतेहुए प्रकाशअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात् दिनअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात् शुक्लपक्षके अभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात् षट्मासउत्तरायणअभिमानी देवताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात् वर्षअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात् आदित्यकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात् चंद्रमाकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात् विद्युत्नामबिजलीकूंप्राप्तहोवेहैं॥ ब्रह्मलोकसे यामनुस्रष्टिमेंनहोनेहारा अमानवपुरुष ताविद्युत्लोकमेंआइकरि तिनउपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकमेंप्राप्तकरेहै ॥ ताब्रह्मलोकमें हिरण्यगर्भरूपकार्यब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ यामार्गमेंदेवताहीउपासककूं प्राप्तकरणेहारेहैं ॥ यातेंयामार्गकानाम देवपथश्रुतिमेंकहाहै ॥ यामार्गकरि हिरण्यगर्भरूपब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै यातेंयामार्गकानाम ब्रह्मपथभीकहाहै ॥ यामार्गकरि हिरण्यगर्भरूपब्रह्मकूं प्राप्तहुएउपासक यामनुभगवा-

नूकीसृष्टिरूपसंसारचक्रमें घटीयंत्रकीन्यांई प्राप्तहोवेनहीं ॥ यामार्गक-रि हिरण्यगर्भरूपब्रह्मकीप्राप्ति कार्यब्रह्मकीउपासनाकेसहित सोपाधि-ककारणब्रह्मकीउपासनाकाफलहै ॥ ऐसे सत्यकामऋषि आपनेउपको-सलनामकशिष्यकूं सोपाधिकब्रह्मकाही उपदेशकरताभया ॥ निर्गुण-ब्रह्मवेत्ताकेतौ प्राणादिकगमनकरेनहीं किंतु ब्रह्ममें लयभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ अबकिंचित् शेषरहे चतुर्थाध्यायकातात्पर्ययहहै ॥ जबपुरुष यज्ञकरेहै तायज्ञमेंकोईअंगभंगरूपक्षतउत्पन्नहोवे तबताक्षतरूप प्रतिबं-धकी निवृत्तिअर्थ व्याहृतियोंकाविधानहै ॥ ॥ इतिछांदोग्येचतुर्थोऽ ध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ॐनमोनारायणाय ॥ अबपंचमाध्यायका पुन-रावृत्तिवाले पितृयाणमार्गकेनिरूपणवासतेआरंभहै ॥ तथाकष्टरूपसं-सारगतिकावर्णन वैराग्यउत्पत्तिवासतेकराहै ॥ प्रथमप्राणकीज्येष्ठता श्रेष्ठताकूंकहेहैं ॥ माताकेगर्भमें यहप्राणही प्रथमवृत्तिकूंलभताहै यातें अवस्थाकरि यहप्राणहीज्येष्ठहै ॥ प्राणही सर्ववागादिकोंसे गुणोंक-रिभीश्रेष्ठहै ॥ जोपुरुष श्रेष्ठ तथाज्येष्ठरूपसे प्राणकीउपासनाकरताहै ॥ सोउपासकभी आपनेज्ञातियोंमें ज्येष्ठश्रेष्ठहोवेहै ॥ ऐसेहीवागादिकोंमें-भी जोजोगुणकह्याहै तिसतिसगुणकीप्राप्ति उपासकपुरुषकूं जानलेनी ॥ वाग्हीवसिष्ठगुणवालाहै वाग्मिनाम यथार्थकहनेहारेपुरुष अन्यधनीपुरु-षोंकूंभीदबायलेवेहै ॥ चक्षुहीप्रतिष्ठाहै चक्षुवालापुरुषही नेत्रोंकरि सम-विषमस्थानकूं देखताहुआ स्थितहोवेहै ॥ श्रोत्रहीसंपत्है पुरुष श्रोत्रों-करिवेदोंकाश्रवणकरेहै ॥ श्रवणकरिकर्मकेज्ञानवालाहुआ तिनकर्मोंके करणेसे इच्छापूर्वकसंपत्कूंप्राप्तहोवेहै ॥ यातेंसंपत्काहेतुहोनेसे या श्रोत्रमेंसंपत्गुण श्रुतिमेंकहाहै ॥ नेत्रादिइंद्रियोंसे उत्पन्नभये जेसर्ववि-षयोंकेज्ञानहैं तेसर्वज्ञान मनविषेरहेहैं यातेंयामनकूं आयतन श्रुतिमें क-हाहै ॥ यहवागादि तथामुख्यप्राण आपसमें विरोधकरतेभये ॥ वाक् केहेमैंश्रेष्ठहूं नेत्रकहेमैंश्रेष्ठहूं ऐसेसर्वही आपसमें विवादकरतेहुए निर्णय-

वासते आपनेपिताप्रजापतिकेपासआतेभये ॥ प्रजापतिकूंकहतेभये ॥ हे भगवन्! हमारेसर्वमें कौनश्रेष्ठहै यहआपकृपाकरिकहो ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ तुमारेमध्यमें जिसकेनिकसनेसे यहशरीरगिरजावे सोईतुमारेमेंश्रेष्ठहै ॥ तबवागुइंद्रिय याशरीरसे निकसजाताभया ॥ एकवर्षके पश्चात् वागुइंद्रियप्राप्तभया ॥ औरश्रोत्रादिकोंकूं यहकहताभया ॥ तुम मेरेविना कैसेजीवतेभये ॥ श्रोत्रादिकयहकहतेभये ॥ जैसेमूकपुरुष औरसर्वइंद्रियोंका व्यापारकरतेहुए वागुइंद्रियसेविनाभीजीवतेहैं ॥ ऐसे हमभी तेरेविनाजीवतेरहेहैं ॥ तबवागुइंद्रिय आपकूंअश्रेष्ठमानताहुआ याशरीरमेंप्रवेश करताभया ॥ तबचक्षुइंद्रिय बाह्य निकसिकरि वर्षभरबाहिररहा पश्चात्आइकरि जबश्रोत्रादिकोंसे यहपूछा मेरेविना तुमकैसे जीवतेभये ॥ तबश्रोत्रादिकोंनेयहकहा जैसेअंधे औरइंद्रियोंसे व्यापारकरतेहुए स्थितहोवेहैं तैसेतेरेविनाभीहमजीवतेभये ॥ तबचक्षुभी आपकूंअश्रेष्ठमानकरि याशरीरमें प्रवेशकरताभया ॥ श्रोत्रभी या शरीरसे बाह्य निकसकरि कहींचलागया ॥ वर्षके पश्चात् आइकरि नेत्रादिकोंसेपूछा जोतुममेरेविना कैसेजीवतेरहे ॥ नेत्रादिकोंनेकहा जैसे बधिरपुरुष औरइंद्रियोंसे व्यापारकरतेहुएश्रोत्रविनाभीजीवतेहैं ऐसेहमभी तेरेविनाजीवतेरहे॥ तबश्रोत्रनेभी आपकूंअश्रेष्ठमानकरिप्रवेशकरा॥ मनभीशरीरसे बाह्यनिकसिकरि वर्षभरबाहिररहा पश्चात्नेत्रादिकोंसे आइकरिपूछा तुममेरेविना कैसेजीवतेरहे ॥ नेत्रादिकोंनेकहा ॥ जैसेबालक मनकीप्ररूढावस्थासेविनाही जीवतेहैं ॥ तैसेहमभी तेरेविना जीवतेरहे ॥ मनभी आपकूंअश्रेष्ठमानकरि शरीरमें प्रवेशकरताभया ॥ तबमुख्यप्राण याशरीरसे बाहिरनिकसनेका संकल्प करताभया ॥ जैसे कोईबलवान्अश्व आपनेपादकेबंधनकेहेतुकीलोंकूं उत्पाटनकरेहै ॥ तैसेनेत्रश्रोत्रादिइंद्रियोंकूं मुख्यप्राण आपनेस्थानोंसे चलायमानकरता भया ॥ नेत्रश्रोत्रादिइंद्रिय आपनेस्थानोंसें चलायमानहुए प्राणोंविना

तिनआपनेस्थानोंविषे स्थितहोनेकूं समर्थनहोतेभये ॥ औरमुख्यप्राणकूं यहकहतेभये हेभगवन् आपहमारेस्वामीहोवो आपहीश्रेष्ठहो याशरीरसे मतिनिकसे ॥ जैसेवैश्यलोक बलियोंकूंलेकरि राजाकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तैसेवागादिकआपनेआपनेगुणोंकूं ताप्राणकेतांई अर्पणकरतेभये ॥ वागुवाच ॥ हेभगवन् जो मैं वसिष्ठगुणसहितहूं सोवसिष्ठगुणआपकाहै॥ ऐसेनेत्रने प्रतिष्ठागुणअर्पणकरा ॥ श्रोत्रने संपत्गुणअर्पणकरा ॥ मनने आयतनगुणअर्पणकरा ॥ औरयहकहतेभये हेभगवन् यहगुणतौ आपकेहीथे परंतुअज्ञानकरि हमने आपनेमानलीयेथे ॥ जिसहेतुसे वागादिकोंकीचेष्टा प्राणोंसेविनाहोवेनहीं इसीवासते इनवागादिकोंकूंभी वेदवेत्तापुरुष प्राणनामसेहीकथनकरेहैं ॥ वागादिकोंकास्वामी श्रेष्ठतादिगुणोंवालाप्राणमैंहूं यहप्रधानउपासनाकही ॥ अबप्राणके अन्नवस्त्रदृष्टिरूपअंगका विधानकरेहैं ॥ मुख्यप्राणउवाच ॥ हेवागादिका मेरा अन्नक्याहै॥ वागादिकहेहैं॥ हे भगवन् देवता मनुष्य पशु पक्षि आदिप्राणिमात्रका अन्नही आपका अन्नहै ॥ प्राणकेउपासकपुरुषने सर्पके अन्नविषे मैंप्राणकाहीयहअन्नहै ऐसीदृष्टिकरणी ऐसेध्यानकरणेहारेपुरुषकेसमष्टिप्राणकाही यहसर्वअन्नहैं ॥ अबवस्त्रदृष्टिकाविधानकरेहैं ॥ मुख्यप्राणउवाच ॥ हेवागादिका मेरावस्त्रक्याहे ॥ वागादिकहेहैं ॥ हेभगवन् जलहीतेरावस्त्रहै ॥ इसीवासते श्रेष्ठपुरुष भोजनकेआदिमें तथाअंतमें जलसेआचमनलेतेहैं ॥ सोआचमनलेनाही प्राणकाजलरूपवस्त्रसे आच्छादनकरणाहै॥ऐसेध्यानकरणेवालापुरुष वस्त्रोंकूंप्राप्तहोवेहै॥ यहसत्यकामजाबालने गोश्रुतिनामआपनेशिष्यकूं उपदेशकराहै ॥ ऐसे औरभी प्राणउपासनाकी स्तुतिलिखीहै ॥ संक्षेपसेहमनेकुछकहीहै ॥ प्राणउपासनाका निरूपणकरिके अबपंचअग्निविद्याका निरूपणकरेहैं ॥ अरुणऋषिकापौत्र श्वेतकेतुनामाकुमार प्रवाहणनामाराजाकीसभामें प्राप्तहोताभया॥ प्रवाहणराजाताश्वेतकेतुकूं यहपूछताभया॥ हेकुमार तेरेकूं

पिताने उपदेशकराहै ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ हांभगवन् मेरेकूंपितानेउपदे-
शकराहै ॥ राजोवाच ॥ हेश्वेतकेतो यालोककूंत्यागकरि प्रजा ज-
हांउपरिजातीहैं सोतुमजानताहै ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ भगवन्यह
मैनहींजानता ॥ राजोवाच ॥ हेश्वेतकेतो परलोकमेंप्राप्तहूई प्रजाजि-
सप्रकारसेंपुनः यालोकमेंप्राप्तहोवेहैं सोतूंजानताहै ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥
भगवन् यहभीमैंनहींजानता ॥ राजोवाच ॥ हेश्वेतकेतो देवयानमा-
र्गके तथापितृयाणमार्गके परस्परवियोगकूं तूं जानताहै ॥ श्वेतकेतुरु-
वाच ॥ भगवन् मैंनहींजानता ॥ राजोवाच ॥ स्वर्गलोकमें अनेक
पुरुषप्राप्तहोवेहैं सोस्वर्गलोक जानिमित्तसें पूर्णनहींहोता तानिमित्तकूं
तूंजानताहै ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ भगवन् मैंनहींजानता ॥ राजोवा-
च ॥ हेश्वेतकेतो जिसप्रकारसें अग्निहोत्रकेसाधन दुग्धघृतादिरूपजलं
अपूर्वरूपहूए वीर्यरूपपंचमीआहुतिसें पुरुषशब्दवाच्यहोवेहैं सोतुमजा-
नतेहो ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ भगवन् मैनहींजानता ॥ राजोवाच ॥
हेश्वेतकेतो तुमनेप्रथमयहकिसवासतेकहा जोमेरेकूं पिताने उपदेशक-
राहै ॥ जोमैंतेरेसेंपूछताहूं तिसकेउत्तरकूं तूंकहतानहीं औरयहभीकह-
ताहै जोमेरेकूंपिताने उपदेशकराहै ॥ जोतेरेकूंउपदेशकराहै ॥ तो
किसवासतेनहींकहता ॥ ऐसेश्वेतकेतुउत्तरकेनहीं आनेसें दुःखीहूआ
पिताकेस्थानमेंआइकरि पिताकूं यहकहताभया ॥ हेभगवन् मेरेकूं
उपदेशकरे विनाही तुमनेयहकहा जोहेपुत्र तुमारेतांईहमनेउपदेशकर-
दीयाहै ॥ प्रवाहणनामकराजाने मेरेसें पंचप्रश्नपूछे मेरेकूं एककाउत्तर
नहींआया ॥ पितोवाच ॥ हेपुत्र जिनपंचप्रश्नोंकाउत्तर राजाने ते-
रेसेंपूछा तिनपंचप्रश्नोंकेउत्तरकूं मैंभीनहींजानता ॥ यदिमैंजानता
तौतुमप्रियपुत्रकूं मैंकिसवासतेनकहता यातेंमैनहींजानता ॥ ऐसे
कथनकरि श्वेतकेतुकापिता गोत्रसेंजो गौतमसंज्ञाकूंप्राप्तथा सोप्र-
वाहणराजाके स्थानमेंप्राप्तभया ॥ ताप्राप्तभयेश्वेतकेतुके पिता

गौतमऋषिकी सोप्रवाहणराजा पूजाकरताभया ॥ दूसरेदिनमें प्रातःकालविषे सोगौतमऋषि प्रवाहणराजाकेसमीप प्राप्तभया ॥ सो प्रवाहणराजा गौतमऋषिका पूजनकरताहूआ यहकहताभया ॥ हे गौतम जोयहमेराधनहै तथाग्रामादिकहैं तिनमेंसें आपनीइच्छाअनुसार तुममांगो जोमांगोगे सोईमैंआपकेतांईदेवूंगा ॥ गोतमउवाच ॥ हे राजन् यहमानुष वित्ततेरे पासहीरहे मैंइसधनकूं नहींचाहता ॥ मैंतौ यहचाहताहूंजेपंचप्रश्न मेरेपुत्रश्वेतकेतुसें आपनेपूछेथे तिनपंचप्रश्नोंकेहीउत्तर मेरेकूंकहो ॥ तबयहश्रवणकरि राजादुःखीभया दुःखीहोनेमें कारणयह जो विद्याभीगोप्यहै औरब्राह्मणमांगताहै नदेनाभीउचितनहीं ॥ तब राजागौतमकूं यहकहताभया ॥ हेगौतम तुमयहांचिरकालरहो ॥ चिरकालकेपश्चात् राजायहकहताभया ॥ हेगौतम तुमसर्वविद्यासंपन्नहूएभी जोमेरेसें पंचप्रश्नोंका उत्तरपूछतेहो तुमारेअज्ञानसें मैंयह जानताहूं जोयहविद्या हमक्षत्रियराजालोकोंमेंहीथी ॥ अब मेरेसेंतुमारेद्वारा ब्राह्मणोंमेंभी प्रवृत्तहोवेगी ॥ औरजोहमनेचिरकाल रहणेवासते आपकूंकहा ॥ सोविद्यान्यायसेहीकहनीचाहिये याशास्त्रकीआज्ञाकूंमानकरि हमनेकहा ॥ हमाराअपराध आपक्षमाकरणेयोग्यहो ॥ ऐसेकथनकरि अर्थक्रमकेअनुसार प्रथमपंचमप्रश्नकेउत्तरकूं राजाकहताभया ॥ राजोवाच ॥ हेगौतम यहस्वर्गलोकही आहवनीयअग्निहै ॥ यास्वर्गलोकअग्निका आदित्यहीप्रज्वलितकरणेहारा समिधनाम इंधनरूपहै ॥ सूर्यकीकिरणाहीधूमहैं ॥ दिनहीस्वर्गलोकरूप अग्निका अर्चिःनामप्रकाशहै ॥ चंद्रमाहीअंगारहैं ॥ नक्षत्रहीविस्फुलिंगहैं ऐसेध्यानकरणा ॥ यजमानकेवागादिइंद्रिय अधिदेवअग्निआदिरूपकूंप्राप्तहूए श्रद्धाकर्गिसंपादनकरी जोजलादिरूपआहुतिहै ताआहुतिकूं स्वर्गलोकरूपअग्निमें हवनकरेहैं ॥ ताआहुतिसें चंद्रमंडलमेंजलरूपयजमानकाशरीर उत्पन्नहोवेहै ॥ पर्जन्यनामवृष्टिकेकरणेहारे दे-

वताविशेषमें अग्निध्यानकरणा ॥ वायुहीताकाइंधनहै ॥ बादलही धूमहै ॥ विद्युत्प्रकाशहै मेघसेंउत्पन्नभये उल्काविशेष तथाइंद्रखड्गादिकहीअंगारहैं ॥ मेघोंकेशब्दहीविस्फुलिंगहैं ॥ यापर्जन्यरूपअग्निमें पूर्वकहेदेवही सोमरूपआहुतिका हवनकरेहैं ॥ श्रद्धापूर्वक हवनकराजोजलरूपसोम तासेंवृष्टिउत्पन्नहोवेहै ॥ हेगौतम पृथिवीहीअग्निहै ॥ ताकावर्षहीइंधनहै ॥ तथाआकाशहीधूमहै ॥ अवांतरदिशाहीविस्फुलिंगहैं ॥ यापृथिवीरूपअग्निमें देवतावर्षारूपआहुतिकाहवनकरेहैं ॥ तबअन्नउत्पन्नहोवेहै ॥ ऐसेध्यानकरणा ॥ यह पुरुषहीअग्निहै ॥ यापुरुषरूपअग्निका वाग्हीइंधनहै ॥ प्राणहीधूमहै ॥ जिव्हाप्रकाशहै ॥ चक्षुअंगारहैं ॥ श्रोत्रविस्फुलिंगहैं ॥ यापुरुषरूपअग्निमें अन्नरूपआहुतिकेहवनकरणेसे रेतनामवीर्यउत्पन्नहोवेहै ॥ पंचमस्त्रीहीअग्निहै ॥ याकाउपस्थहीइंधनहै ॥ यास्त्रीसेअवाच्यकर्मवासते पुरुषसंकेतकरेहै सोईधूमहै ॥ योनिप्रकाशहै ॥ अवाच्यकर्महीअंगारहैं॥ रेतरूपआहुतिकेहवनकरणेसे गर्भउत्पन्नहोवेहै ॥ हे गौतम ऐसेपंचमीरेतरूपआहुतिके हवनकरणेसे दुग्धादिरूपजलही परंपरासे पुरुषशब्दवाच्यहोवेहैं ॥ ऐसेसो माताकेउदरमेंस्थित तथाजरायुकरिआच्छादितहुआगर्भ नववादशमासकेपश्चात् बाहिरआवेहै ॥ जबपर्यंतकर्महै तबपर्यंतयालोकमें स्थितहोवेहै ॥ भोगकरिकर्मकेक्षीणहुए परलोकमें आपनेकर्मकेअनुसारप्राप्तहोवेहै ॥ तापुरुषकेपुत्रादियाकूंमृतहुआदेखकरि दाहकरणेवासते ग्रामसेबाह्यलेजावेहैं ॥ यहपुरुषशरीर श्रद्धापूर्वक अग्निमेंहवनकरणेसे अग्निकेसकाशसेहीआयाथा पश्चात्अग्निमेंही प्राप्त होवेहै ॥ ऐसेपंचमप्रश्नकेउत्तरकूंकथनकरिके अबयादेहकूंत्यागकरि प्रजाउपरिकहांजातीहैं याप्रथमप्रश्नके तथादेवयानऔरपितृयाणकेपरस्परवियोगरूप यातृतीयप्रश्नके उत्तरकूंकहेहैं ॥ हेगौतम जेगृहस्थ पूर्वकहीरीतिसे पंचअग्नियोंकी उपासनाकरतेहैं तथाजेवानप्रस्थ तथा

संन्यासी श्रद्धापूर्वकतपकूंकरतेहैं ॥ तेसर्व पूर्वकहेदेवयानमार्गकरि ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवेहैं ॥ औरजेपुरुषगृहस्थाश्रममें अग्निहोत्रादिरूपइष्ट- कर्मकूं तथावापीकूपादिरूप आपूर्त्तकर्मकूं तथावेदीसेबहिरदानकूंकरते हैं ॥ तेकेवलकर्मीगृहस्थ पितृयाणमार्गसें स्वर्गकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पितृया- णमार्गकाक्रम याश्रुतिमेंऐसेलिखाहै ॥ तेकर्मीयाशरीरकूंत्यागकरि प्रथ- मधूमअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात्रात्रिअभिमानीदेवताकूंप्राप्त होवेहैं ॥ तासेकृष्णपक्षअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तासेषट्मासदक्षि- णायनअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवेहैं॥ पश्चात्वर्षअभिमानीदेवताकूं प्राप्त होवेनहीं किंतु षट्मासअभिमानीदेवतासे पितृलोककूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पितृलोकसे आकाशकूं आकाशसे चंद्रमंडलकूंप्रातहोवेहैं ॥ तेकर्मी चंद्रमंडलरूपहुए देवतावोंकेभोगकासाधनहोवेहैं ॥ जब- पर्यंतकर्महैं तबपर्यंतचंद्रमंडलमें स्थितहोवेहैं ॥ भोगकरिकर्मकेक्षी- णहुए जामार्गकूंप्राप्तहोवेहैं तामार्गकूंकहे हैं ॥ कर्मीपुरुषचं- द्रमंडलसे आकाशकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ आकाशसेवायुकूं वायुसेधूमकूं धूमसेअभ्रकूं अभ्रसे वर्षाकरणेयोग्यमेघकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ मेघसेवर्षा- द्वारा यापृथिवीमें व्रीहि यव औषधि तिल माषादिरूपसे उत्पन्न होवेहैं ॥ आकाशादिकोंसेतथाव्रीहियवादिकोंसे कर्मीपुरुषसंबंध- कूंप्राप्तहोवेहैं व्रीहियवादिरूपही नहींहोवेहैं ॥ यहवार्त्ता याउपनिषत्- केभाष्यमें तथाश्रीमच्छारीरकभाष्यविषे विस्तारसेकहीहै ॥ औरया- अन्नकेसकाशसे कर्मीपुरुषोंका निकसना अतिकष्टसेहोवेहै ॥ जबीता- अन्नकूं पुरुषभक्षणकरेहै सोअन्नरेतरूपहोइकरि पुरुषकेशरीरमेंरहेहै ॥ ऋतुकालमें जबपुरुष स्त्रीकेसाथगमनकरेहै तबस्त्रीकेउदरमें कलल बुद्बुदादिरूपअवस्थाकूं प्राप्तहोइकरि बालकहुआ पश्चात्बाहिरआवे- है ॥ तयइहरमणीयचरणाअभ्याशोहयत्तेरमणीयां योनिमापद्येरन् ब्राह्मणयोनिंवाक्षत्रिययोनिं वावैश्ययोनिंवा ॥ अर्थयह ॥ तिनकर्मी-

योंकेमध्यमें यालोकविषे पूर्वजेपुण्यकर्मवालेहैं अभ्याशनामशीघ्रही तेपुण्यात्मा रमणीयनामपुण्ययोनिकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ तापवित्रयोनि-कूंही कथनकरें हैं जैसेब्राह्मणयोनि वाक्षत्रिययोनि वावैश्ययोनि ऐसेप-वित्रयोनियोंकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ अथयइहकपूयचरणाअभ्याशोहयत्तेकपू-यांयोनिमापद्येरन्श्वयोनिंवासूकरयोनिंवाचंडालयोनिंवा ॥ अर्थयह ॥ पुनःयालोकमें पूर्वजेपापकर्मवालेहैं तेपापात्मा शीघ्रही निंदितपापयो-निकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ जैसेकूकरयोनि वासूकरयोनि वाचंडालयोनि ऐसीनीचयोनियोंकूं पापीपुरुषप्राप्तहोवेहैं ॥ इसरीतिसे प्रवाहणराजाने यालोकसे उपरिप्रजाकहांजातीहैं याप्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं ऐसेकह्या ॥ जेपुरुष पंचाग्निउपासनामें तथाश्रद्धासहिततपमें आरूढहैं तेउपासकपुरु-षदेवयानमार्गकरि ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवेहैं ॥ केवलकर्मीपितृयाणमार्ग-करि स्वर्गकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पितृयाणमार्गका तथादेवयानमार्गका परस्प-रवियोगकैसेहै ॥ यातृतीयप्रश्नकाउत्तरयहकह्या पितृयाणमार्गवालेकर्मी वर्षअभिमानी देवताकूं प्राप्तहोवेनहीं तथापुनः यासंसारमेंप्राप्तहोवेहैं ॥ परलोकमेंप्राप्तभयीप्रजा पुनःयालोकमें कैसेप्राप्तहोवेहैं याद्वितीयप्रश्नका उत्तरभीऐसेजानलेना मेघादिद्वारायालोकमेप्राप्तहोवेहैं ॥ अबस्वर्गलोक अनेककर्मीपुरुषोंके प्राप्तहोनेसें पूर्णकिसवासतेनहींहोता याचतुर्थप्रश्नके उत्तरकूं कथनकरेहैं ॥ हेगौतम जेपुरुषाधम पितृयाणमार्गके साधनशुभ-कर्मसें रहितहैं ॥ तथादेवयानमार्गकेसाधन उपासना श्रद्धातप ब्रह्मचर्य सत्य क्षमा अकौटिल्य आदिकोंसेंरहितहैं ॥ तेक्षुद्रपुरुष वारंवारया-संसारमें घटीयंत्रकीन्यांई जन्ममरणकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ यातेंही स्व-र्गलोक पूर्णहोवेनहीं ॥ अभिप्राययह प्रथमतो यासंसारमें स्वर्गकेसा-धनधर्मका अनुष्ठानही केचित्पुरुषकरेहैं ॥ बहुतपुरुष धर्मकेअनुष्ठा-नसेंरहित रसनाऔरउपस्थइंद्रियकेअधीनहूए कीटपतंगादियोनीयों-कूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ स्वर्गकेसाधन धर्मके अनुष्ठानकरणेसेंभी आपनेक-

र्मफलकूंभोगकरि पूर्वकहीरीतिसें यासंसारमैंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसे पापीपुरुषोंकी तथासकामपुण्यवालेपुरुषोंकी याकष्टरूपसंसारमैं प्राप्तिकूं देखकरि उत्तमअधिकारीपुरुष वैराग्यकूंप्राप्तहोवे ॥ वैराग्यउत्पत्तिवासतेही यासंसारगतिकाकथनहै ॥ अबमंत्रकेअर्थसें पंचाग्निविद्याकी स्तुतिकूंदिखावेहैं ॥ जोपुरुषपंचाग्नियोंकीउपासनाकरेहै सोपुरुष स्वर्णचोरी सुरापान गुरुस्त्रीगमन ब्रह्महत्या इनपापकरणेहारोंकासंसर्ग इनपंचमहापातकोंसेंरहितहोवेहै ॥ औरयापंचप्रश्नोंकूं तथातिनपंचप्रश्नोंकेउत्तरोंकूं यथार्थजानताहै सोपुरुषउत्तमलोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ पूर्व यहकह्याजोकर्मीचंद्रमंडलमैं परतंत्रहूए देवतावोंके भोगकासाधनहोवेहैं ॥ यादोषकीनिवृत्तिवासते अबवैश्वानरकीउपासनाकहनेकूं प्रथम आख्यायिकाकहेहैं ॥ एकप्राचीनशालनामकऋषि दूसरासत्ययज्ञनामकऋषितिसराइंद्रद्युम्न चतुर्थजन पंचमबुडिल यहपंचहीमहागृहस्थ तथामहाश्रोत्रिय मिलकरि यहविचारकरतेभये ॥ हमाराआत्माकौनहै औरब्रह्मकौनहै प्रत्यगूसेंअभिन्नब्रह्मके निश्चयकूंनप्राप्तहूए उद्दालकऋषि वैश्वानरब्रह्मकूंजानताहै ताउद्दालककूंप्राप्तहोवें ॥ ऐसे निश्चयकरि उद्दालकऋषिकेसमीपप्राप्तभये ॥ तबतिनप्राचीनशालादिकऋषियोंकूं देखकरि सोउद्दालकऋषि आपनेमनमैं यहविचारकरताभया॥ यहपंचही महाश्रोत्रियहैं औरवैश्वानरकेस्वरूपकूं अनेकप्रश्नोंसेंपूछेंगे तिनसर्वप्रश्नोंकेउत्तरदेनेकूं मेरेमनमैं उत्साहनहींहै ॥ यातेंकिसीऔरवक्ताकूंही मैंकथनकरूं यहविचारकरि तिनऋषियोंकूं सोउद्दालकऋषि यहकहताभया ॥ हेभगवंतः इसकालमें अश्वपतिनामकराजा वैश्वानरकेस्वरूपकूं यथार्थजानताहै ॥ ताअश्वपतिकेपासजाइकरि तिससें वैश्वानरविद्याकूंग्रहणकरें ॥ ॥ ऐसेसंकल्पकरि अश्वपतिराजाकेपास प्राप्तभये ॥ तबअश्वपतिराजा आपनेपुरोहितादिकोंसें तिनऋषियोंका भिन्नभिन्नपूजनकरावताभया ॥ दूसरेदिनमेंप्रातःकालविषे तिनऋषि-

योंकूं राजायहकहताभया ॥ भोभगवंतः आपइसमेरेधनकूंग्रहणकरो॥ जबऋषियोंनेधनग्रहणनकरा तबराजानेआपनेमनमैं यहजाना जोयहधन अल्पहै यातेंहीयहऋषि याअल्पधनकूंग्रहणकरतेनहीं ॥ तबराजायह कहताभया ॥ हे भगवंतः मेरेराजमैंचोरनहीं ॥ तथाधनहोतेअदाता नहीं ॥ तथामद्यकेपीनेवालानहीं ॥ अधिकारीहूआआपनेअग्निसें तथाविद्यासेंरहितनहीं ॥ व्यभिचारीपुरुष वा व्यभिचारिणीस्त्रीनहीं ॥ इनचौरादिकोंकेदंडसें हमारेकूं धनप्राप्तनहींहोता ॥ न्यायसेंही हमधनकाग्रहणकरतेहैं अन्यायसेंग्रहणकरतेनहीं ॥ यातेंआप इसअल्पधनकूंभीग्रहणकरो ॥ औरहेभगवंतः अबमैंयागकरणेवालाहूं तायज्ञमें एकएकयज्ञकरानेवालेऋत्विग्कूं जितनाजितनामैंधनदेवूंगा तितनाहीधन पुनःतुमारेतांईभीमैंदेवूंगा आपमेरेगृहमैंहीनिवासकरो ॥ ऐसेश्रद्धाभक्तिसहितवचनोंकूं श्रवणकरेहूएतेऋषि यहकहतेभये ॥ हेराजन् जिसपुरुषकी जापदार्थमैंइच्छाहोवे तिसपुरुषकूं सोअभिलषित अर्थ दीयाजावे सोपुरुष तबहीप्रसन्नहोवेहै ॥ हमारेकूं इसधनकीइच्छानहीं ॥ आप वैश्वानरकेस्वरूपकूंयथार्थजानतेहो तावैश्वानरकेस्वरूपकाही हमारेतांईउपदेशकरो ॥ हमवैश्वानरकीविद्यावासतेही आपकेसमीपआयेहैं धनवासतेनहींआये ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि राजायहकहताभया ॥ आपऋषि प्रातःकालविषे मेरेकूंप्राप्तहोवो मैंप्रातःकालविषे उत्तरकहूंगा ॥ राजाकेमनविषे अभिप्राययह ॥ जो शिष्यरीतिविना उपदेशकरणाउचितनहीं ॥ ताराजाकेअभिप्रायकूं जानकरि दूसरेदिनमैं प्रातःकालमैं समित्पाणिहूए राजाकूंप्राप्तहोते भये ॥ जातिकरिब्राह्मणोंकूंश्रेष्ठहोनेसे दंडवत्प्रणामकरायेविनाही उपदेशकरणेवासते प्रथमएकएककूं राजा यहपूछताभया ॥ प्रथम प्राचीन शालसे यहपूछताभया ॥ हेप्राचीनशाल तूंकिसकूं वैश्वानररूपजानकरि उपासनाकरताहै ॥ प्राचीनशालउवाच ॥ हेभगवन्! स्वर्गलोक-

कूंही वैश्वानररूपजानकरि मैंध्यानकरताहूं ॥ राजाप्रथमतौ तास्वर्गा-
दिएकएकअवयवमें वैश्वानरकेध्यानकी स्तुतिकरता भया ॥ पश्चात्
समस्तउपासनाकेविधानवासते एकएकअवयवमें वैश्वानरकेध्यानकी
निंदाकरताभया ॥ सोदिखावेहैं ॥ हेप्राचीनशाल जास्वर्गकूं तूं वैश्वा-
नररूपजानकरि उपासनाकरताहै सोस्वर्ग वैश्वानरकामस्तकहै ॥ यह
स्वर्गहीवैश्वानरनहीं जबीतूंमेरेसमीप समस्तउपासनावासते नहींआवता
तबमिथ्याज्ञानकरि तेरेमस्तकका अधःपतनहोता ॥ पश्चात्सत्ययज्ञसे
राजायहपूछताभया ॥ हेसत्ययज्ञ! तूं किसकूंवैश्वानररूपसे ध्यानक-
रताहै ॥ सत्ययज्ञउवाच ॥ भगवन्! आदित्यकूं वैश्वानररूपजानकरि
मैंध्यानकरताहूं ॥ राजोवाच ॥ हेसत्ययज्ञ! जिसअनेकरूपवाले आ-
दित्यका तूंवैश्वानररूपसे ध्यानकरताहै सोआदित्य वैश्वानरकाचक्षुहै
आदित्यहीवैश्वानररूपनहीं ॥ जबतूंमेरेपासनआवता तबतूंविपरीत
ज्ञानसे अंधहोइजाता ॥ इंद्रद्युम्नसे राजायहपूछताभया ॥ हेइंद्रद्युम्न!
तूंकिसकूं वैश्वानररूपसे ध्यानकरताहै ॥ इंद्रद्युम्नउवाच ॥ हेभगवन्!
मैंवायुकावैश्वानररूपसे ध्यानकरताहूं ॥ राजोवाच ॥ हेइंद्रद्युम्न! यह
वायुवैश्वानरभगवान्काप्राणहै ॥ याप्राणरूपवायुकूं वैश्वानररूपजानता
हुआ जबीतूं मेरेपासनआवता तबयाविपरीतज्ञानसे तेरेप्राणनिकसजाते॥
पश्चात्जनऋषिकूं राजायहकहताभया ॥ हेजन! तूंकिसकूंवैश्वानररू-
पजानकरि ध्यानकरताहै ॥ जनउवाच ॥ हेभगवन्! मैंआकाशकूं
वैश्वानररूपजानकरि ध्यानकरताहूं ॥ राजोवाच ॥ हेजन! यहआ-
काश वैश्वानरकेदेहका मध्यभागहै याआकाशकूं वैश्वानररूपजानता
हुआ जबतूंमेरेपास नआवता तबतेरादेहनष्टहोइजाता ॥ पश्चात्बुडि-
लकूं राजायहपूछताभया ॥ हेबुडिल! तूंकिसकूंवैश्वानररूपजानकरि
ध्यानकरताहै ॥ बुडिलउवाच ॥ भगवन्! मैंसमुद्रादिरूपजलकूं वैश्वा-
नररूपसे ध्यानकरताहूं ॥ राजोवाच ॥ हेबुडिल!. यहसंपूर्णजल वै-

श्वानरकेमूत्रस्थितिकास्थलहै ॥ जबतूं याजलकूंही वैश्वानररूपजानता हुआ मेरेसमीपनहींआवता तबताविपरीतज्ञानसे तेरेमूत्रस्थलका भेदन होइजाता ॥ पश्चात् राजा उद्दालकसे यहपूछताभया ॥ राजोवाच ॥ हेउद्दालक ! तूंकिसका वैश्वानररूपसेध्यानकरताहै ॥उद्दालकउवाच ॥ हेभगवन् ! मैं पृथिवीकूं वैश्वानररूपसे ध्यानकरताहूं ॥ राजोवाच ॥ हेउद्दालक ! यहपृथिवी वैश्वानरभगवान्कापादहै ॥ जबतूं यापादरूप पृथिवीकूंही वैश्वानररूपसेजानताहुआ मेरेसमीपनहींआवता तबताविपरीतज्ञानसे तेरेपादशिथिलहोइजाते ॥ पश्चात् समस्तवैश्वानरकी उपासनाके विधानकरणेकूं राजायहकहताभया ॥ राजोवाच ॥ भोऋषयः तुमने पृथक्पृथक्वैश्वानरकूंजानकरि व्यर्थहीअन्नकूंभक्षणकरते दिनव्यतीतकरे ॥ अबयथार्थवैश्वानरकेस्वरूपकूं तुमश्रवणकरो ॥ तिस वैश्वानरका स्वर्गहीमस्तकहै ॥ सूर्यचक्षुहै ॥ वायुप्राणहै ॥ देहकामध्य धडआकाशहै ॥ समुद्रमूत्रस्थलहै ॥ पृथिवीपादहैं ॥ यज्ञमेंजावेदिभूमिहै साभूमिउरहै ॥ दर्भरोमहैं ॥ गार्हपत्यनामकअग्निहृदयहै ॥ अन्वाहार्यपचननामकअग्निमनहै ॥ आहवनीयनामकअग्नि वैश्वानरका मुखहै ॥ जोपुरुष यावैश्वानरका आपनाआत्मारूपजानताहुआ ध्यान करेहै॥सोपुरुषसर्वलोकोंविषे तथासर्वभूतोंविषे सर्वअन्नकूंभक्षणकरेहै॥ भोजनकालमें प्रथमग्रासकूं आहुतिरूपध्यानकरि ताआहुतिकूं प्राणायस्वाहा यामंत्रकूं सूक्ष्मउच्चारणकरिके आपनेमुखमें हवनकरे ॥ ताहोमसेप्राणतृप्तहोवेहै ॥ प्राणकीतृप्तिहोनेसे चक्षुतृप्तहोवेहै ॥ चक्षु तृप्तहोनेसे आदित्यतृप्तहोवेहै ॥ आदित्यकेतृप्तहोनेसे स्वर्गतृप्तहोवेहै॥ स्वर्गकेतृप्तहोनेसे स्वर्गतथाआदित्यकूं आश्रयकरिजेप्राणिहैं तेसर्व तृप्तहोवेहैं ॥ ऐसेदूसरीग्रासरूपआहुतिका व्यानायस्वाहा यामंत्रकूं उच्चारणकरि हवनकरणेसे व्यानतृप्तहोवेहै ॥ व्यानकीतृप्तिसे श्रोत्र चंद्रमादिशा दिशाचंद्रमाके मध्यवर्ती सर्वप्राणि यह सर्वही पूर्व

कहेक्रमसे तृप्तहोवेहैं ॥ तीसरीग्रासरूपआहुतिकूं अपानायस्वाहा यामंत्रकरिहवनकरणेसे अपानतृप्तहोवेहै ॥ पश्चात्क्रमसे वाक् अग्नि पृथिवी पृथिवीतथाअग्निके आश्रितप्राणिमात्र यहसर्वतृप्तहोवेहैं ॥ चतुर्थीग्रासरूपआहुतिकूं समानायस्वाहा इसमंत्रकरि हवनकरणेसे समानतृप्तहोवेहै ॥ समानकीतृप्तिकेपश्चात्क्रमसे मन पर्जन्य विद्युत् विद्युतपर्जन्यकेआश्रितप्राणिमात्र यहसर्वतृप्तहोवेहैं ॥ पंचमीग्रासरूप-आहुतिकूं उदानायस्वाहा यामंत्रकेउच्चारणपूर्वक हवनकरणेसेउदान तृप्तहोवे ॥ ताउदानकीतृप्तिकेपश्चात् वायु आकाश वायुआकाशके आश्रितप्राणिमात्र यहसर्वपूर्वकहेक्रमसेतृप्तहोवेहैं ॥ ऐसेवैश्वानरकेउपा-सकपुरुषकूं पुत्रपौत्रादिरूपप्रजाप्राप्तहोवेहै ॥ गौ अश्व हस्ती आदिपशु प्राप्तहोवेहैं ॥ अनेकप्रकारकेभक्षणकरणेयोग्यअन्नप्राप्तहोवेहैं ॥ वेदके पठनसे उत्पन्नहोनेहारे ब्रह्मतेजकूं प्राप्तहोवेहै ॥ जोपुरुष पूर्वकहेअग्नि-होत्रकूं नजानकरि बाह्यअग्निहोत्रकूं करताहै सोपुरुष अंगारोंकूंत्याग-करि भस्मविषे हवनकरणेवालेपुरुषजैसाहै ॥ वैश्वानरकेउपासकपुरुषके सर्वकर्मक्षीणहोवेहैं याअर्थमेंश्रुतिदिखावेहै ॥ तद्यथेषीकातूलमग्नौप्रोतं प्रदूयतैवंहास्यसर्वेपाप्मानःप्रदूयंते ॥ अर्थयह ॥ तद्नाम तिसवैश्वानर-कीविद्यामाहात्म्यविषेयथानाम दृष्टांतहै ॥ इषीकातूलंनाम मुंजकेम-ध्यवर्तीनालकाजोतूलहै ॥ अग्नौप्रोतंप्रदूयतनाम अग्निमेंगेरासोतूल दग्धहोवेहै ॥ एवंहास्यसर्वेपाप्मानःप्रदूयंते नाम इसवैश्वानरउपासकके सर्वधर्माधर्मरूपकर्म दग्धहोवेहैं ॥ औरजैसेबालक क्षुधाकरिपीडितहुए माताकाहीध्यानकरेहैं जोयहमाताहमकूं कबभोजनदेवेगी ॥ तैसेतावै-श्वानरउपासकके पूर्वकहेअग्निहोत्रका सर्वप्राणिध्यानकरेहैं जोयहकब-भोजनकरेगा याकेभोजनकरणेसेहमतृप्तहोवेंगे ॥ वैश्वानरकाउपासक आपकूं वैश्वानररूपमानेहै वैश्वानरसेकोईप्राणिभिन्ननहीं वैश्वानरनामसे-हीयाअर्थकालाभहोवेहै ॥ विश्वनामसर्वकाहै विश्वरूपहोवेपुनःसर्वका

कारणहोनेसेनररूपहोवे सो कहीयेवैश्वानर ॥ औरविश्वहोवेनियम्यजाके ऐसेनियामकपरमात्माका नामवैश्वानरहै॥औरआपही विश्वनामसर्व नर-नामपुरुषसर्वपुरुषरूपहोवेसोकहीयेवैश्वानर॥ यातें वैश्वानरसर्वरूपहै ताकूं आपनास्वरूपमाननेवालाजोउपासकहै तावैश्वानरउपासकके तृप्तहोनेसे सर्वजगत्तृप्तहोवेहै ॥ ॥ इतिछांदोग्येपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

ॐनमोगिरिजायै ॥ पूर्वपंचमअध्यायकेअंतमेंयहकह्याहै ॥ वैश्वानर-भगवान्कीउपासनाकाफलयहहै ॥ जोवैश्वानरकेउपासकके भोजनकर-णेसे सर्वजगत्तृप्तहोवेहै ॥ जबीआत्माकाभेदमानेतौएकपुरषकेतृप्तहो-नेसे द्वितीयपुरुषतृप्तहोवेनहीं॥ और श्रुतिमेंएकउपासककेतृप्तहोनेसे सर्व-जगत्कीतृप्तिलिखीहै ॥ यातेंआत्माकेअभेदमेंही श्रुतिभगवतीकाता-त्पर्यहै ॥ ताआत्माकीएकताकेबोधनवासते याषष्ठअध्यायकाआरं-भहै ॥ अरुणऋषिकापुत्रजोउद्दालक ताउद्दालकऋषिकापुत्र श्वेतके-तुनामकहोताभया॥ ताश्वेतकेतुविषे मातापिताकीबहुतप्रीतहोती भयी॥ इसीसेसोश्वेतकेतु क्रीडाविषेही बहुत आसक्तहोताभया ॥ औरउपनय-नसंस्कारसेभीरहितहुआ सोश्वेतकेतु स्त्रीबालकोंकूंमहान्दुःखदेताभया॥ किसीब्राह्मणका कठोरवचनसेतिरस्कारकरताभया ॥ तथाकिसीबा-लकऔरस्त्रीआदिकोंकूं दंडकाप्रहारकरिके आपनेगृहविषेभागजाता-भया ॥ ऐसेपुत्रकूंदेखकरि पिताउद्दालकमुनि किंचित्क्लेशकूं प्राप्तहो-ताभया ॥ किसीकालविषे विनयसहितहुआश्वेतकेतु पिताकेसमीप स्थितभया ॥ ताकूंदेखकरिपिताकहेहैं ॥ हेपुत्र नीतिशास्त्रविषे यह लिखाहै ॥ जेमातापितापुत्रकूंताडनकरिके शास्त्रपठनादिशुभमार्गमें लगांतेनहीं ॥ तेमातापिता तापुत्रकेशत्रुहैं ॥ शिक्षाकेनकरनेसे पुत्र उन्मत्तहुआ यालोकमें तथापरलोकमें दुःखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यातेंती-नवर्षपर्यंत मातानेपुत्रकूंशिक्षाकरणी ॥ अष्टवर्षपर्यंत पितानेशिक्षा करणी ॥ पश्चात्अष्टवर्षसेलेकरि षोडशवर्षपर्यंत आचार्यनेशिक्षा

करणीयोग्यहै ॥ जबीपुत्रषोडशवर्षकाहोइजावे तबीपुत्रकेताईकरणेयोग्यकामकूं पितामित्रकीन्यांईकहे ॥ कदाचित्ताडनकरिकैकहेनहीं ॥ हेपुत्र तेरीमाताने तथामैंपिताने तुमारेकूंशिक्षाकरीनहीं ॥ यातेंही तूंद्वादशवर्षकाहुआभी ब्राह्मणोंकेकर्मोंसेरहितहोइकेब्राह्मणोंमें अधमजैसाप्रतीतहोवेहैं ॥ अबपर्यंत उपनयनादिकसंस्कारसेविना तथावेदकेअध्ययनविना तुमनेक्रीडामेंहीकालव्यतीतकराहै ॥ औरमेरातेरेमेंस्नेहहै जाकाजामेंस्नेहहोवे तापुत्रादिकोंकीतापिताआदिकोंमें श्रद्धाहोवेनहीं ॥ यातेंमैं तुमारेकूंउपदेशकरिसकतानहीं ॥ किसीगुरुआचार्यके समीपजाइकरि ब्रह्मचर्यपूर्वक वेदकेअध्ययनकूंकरो ॥ ऐसेपिताकेवचनोंकूंश्रवणकरि श्वेतकेतुविचारकूंप्राप्तभया ॥ पिताकीआज्ञाकूंमानकरि स्वगृहकात्यागकरताहुआ किसीवेदवेत्ताआचार्यकूंप्राप्तभया ॥ तागुरुसे अर्थसहितचतुर्वेद तथाषट्अंगपठन करे ॥ परंतुउपनिषद्रूप वेदांतभाग श्वेतकेतुनेनहींपठनकरा ॥ चौवीसवर्षपर्यंत वेदकूंपठनकरिकै तागुरुसेंआज्ञालेकरि आपने गृहकूंआवताभया ॥ मार्गमेंआवतहुआ सोश्वेतकेतु यहविचारकरताभया ॥ जैसेंमैंवेदोंकेपाठकूं तथाअर्थकूंजानताहूं ॥ तैसेमेरे पितानहींजानते काहेतें जोमेरेगुरुवोंने शपथोंकरिकै मेरेकूंयहकह्याहै ॥ हेश्वेतकेतो हम जेती विद्याजानतेथे सासंपूर्ण विद्यातेरेकूं हमनेउपदेशकरीहै ॥ इससें अधिकविद्या हमनहींजानते यातेंमैंआपनेपितासें अधिकविद्यावान्हूं ॥ ऐसेविचारकरि महान्गर्वकूंप्राप्तहूआश्वेतकेतु गृहविषेआइकरिपिताकेताईं नमस्कार नकरताभया ॥ ऐसेस्तब्धश्वेतकेतुकूंदेखकरि पिताक्रोध कूंनप्राप्तभया ॥ पुत्रमेंकृपायुक्तहूआ पुत्रकेहितवासते याप्रकारकेवचनकूंकहताभया॥ हेपुत्र जाअधिकताकेअभिमानकरिकै तूं स्थाणुकीन्यांई स्तब्धभया है ॥ अर्थयह नम्रतारहितभया है ॥ तथाजाअधिकताके गर्वकारिकै आपकूं सर्ववेदकाज्ञातामानताहै तथाआपकूं सर्वसेंअधिक

मानताहै ॥ साअधिकता तुमारेकूं आपनेउपाध्यायसें कौनप्राप्तभयी है ॥ तुमनेआपनेगुरुसें यहभीकभीपूछाथा जिसएकवस्तुकेश्रवणकरनेसें अश्रुत पदार्थोंकाभी श्रवणहोवेहै तथाजाएककेमननसें सर्वकामननहोवे है ॥ तथाएककेनिश्चयसें सर्वअनिश्चितपदार्थोंकाभी निश्चयहोवेहै ॥ हेपुत्र ऐसाकौनवस्तुहै जबीतुमजानतेहो तौहमारेकूंश्रवणकरावो ॥ ऐसे पिताकेवचनकूंश्रवणकरि श्वेतकेतु परमआश्चर्यकूंप्राप्तभया ॥ उत्तरके नजाननेसें गर्वरहितहोइकरि श्रद्धासेपिताकूंनमस्कारकरिकै यहकहता-भया॥हेभगवन् तावस्तुकूं मैंनहींजानता आप कृपाकरिकहो॥पिताकहे हैं हेपुत्र जैसेएककारणमृत्तिकाकेज्ञानहूइ मृत्तिकाकेकार्यघटशरावादि संपूर्णोंकाज्ञानहोवेहै ॥ काहेतें तामृत्तिकासें जबीभिन्नघटादिककार्य होवें तबतौमृत्तिकाकेज्ञानहोतेभी भिन्नघटादिकोंकाज्ञाननहोवे ॥ सो भिन्नतौ घटादिकहैंनहीं किंतु मृत्तिकामात्रहीहैं ॥ और घटादिकवि-कारकूं नाममात्रहोनेसें वाणीसेंउच्चारणही तिनघटादिकोंकाहोवेहै ॥ तावाणीकरि उच्चारणकरेनामसें भिन्न किंचित्भीघटादिपदार्थहैंनहीं ॥ किंतुनाममात्र सर्वघटादिपदार्थहैं ॥ ऐसेस्वर्णलोहकेदृष्टांतोंविषेजानना॥ जैसे एकस्वर्णपिंडके जाननेसें स्वर्णकेकार्यकटककुंडलादि ज्ञातहोवेहैं॥ और जैसेएकलोहपिंडकेज्ञानहोनेसें तालोहकाकार्यखड्गादि ज्ञातहोवे हैं॥ औरस्वर्णकार्यकुंडलादि तथालोहकार्यखड्गादिविकार केवलना-ममात्रहोनेसें वाणीकरिउच्चारणकरेजावेहैं वास्तव मृत्स्वर्णलोहसेंकिं-चित्भी भिन्ननहीं मृत्तिका स्वर्णलोह यहकारणहीसत्यहैं ॥ मृत्तिका स्वर्ण लोहरूप कारणकेज्ञानहोनेसें कार्यघटकुंडल खड्गादिकोंका ज्ञान अवश्यहोवेहै ॥ तैसेएकआत्माकेज्ञानहोनेसें ताआत्माकेकार्यरूपसर्वप-दार्थोंका ज्ञान होवेहै ॥ हेसोम्य एककेज्ञानसें सर्वकाज्ञान ऐसेंहोवेहै ॥ श्वेतकेतु आपनेमनविषे यहविचारकरताभया जोपितामेरेकूंगुरुकेपास पुनः नभेजें ॥ किंतु आपहीपितामेरेकूं उपदेशकरें यातात्पर्यसें श्वेतकेतु

कहेहै ॥ हेभगवन् अत्यंतपूज्य जेमेरेगुरुहैं तिनकीमेरेविषे महान् कृपा थी यातेंमेरेकूं तिनोंनेसमग्रविद्याकाउपदेशकराहै ॥ औरयातुमारेप्रश्न-केउत्तरकूंतौ मेरेगुरुभीनहींजानते जबीजानतेतौ मैंअत्यंतप्रियशिष्यकूं किसवास्तेनकहते ॥ कह्यातौतिनोंनहींहै यातें तुमारेप्रश्नकेउत्तरकूं नहीं जानते ॥ ऐसेश्वेतकेतुकेवचनकूंश्रवणकरिपिताकहेहैं ॥ हे सोम्यनाम प्रियदर्शनपुत्र यहसंपूर्णनामरूपजगत् उत्पत्तिसें प्रथम सत्-अद्वितीयब्रह्मरूपहोताभया ॥ याजगत्केस्थूलनामरूप नहोते भये॥ औरनास्तिकजेशून्यवादीबौद्धहैं ॥ तेबौद्धयहकहेहैं उत्पत्तिसें प्रथम शून्यरूपअसत्हीहोताभया ॥ औरसोअसत्हीएकअद्वितीयहोताभ-या ॥ ताअसत्सेंही सत्नामरूपजगत् उत्पन्न होता भया ॥ हेपुत्र ऐसेशून्यवादी असत्कूंहीकारणमानेहैं ॥ तिनकामानना केवलहठमात्रहै औरयुक्तिविरुद्धहै ॥ जबीअसत्कूंभीकारणमाने तौवंध्यापुत्रकूंभी कारणमाननाचाहिये ॥ जैसेवंध्यापुत्रसें किसी कार्यकीउत्पत्तिहोवेनहीं ॥ तैसेअसत्रूपशून्यसेंभी किसीकार्यकी उत्पत्ति होवेनहीं ॥ यातेंसजातीय विजातीय स्वगतभेदरहित अद्वितीयब्रह्महीं उत्पत्तिसें प्रथम होताभया ॥ नामरूपप्रपंचकिंचित्-भीस्थूलरूपसें नहोताभया ॥ अबतासत्यअद्वितीयब्रह्मके बोधनवास्-ते नामरूपप्रपंचकीउत्पत्तिकहनेकूं परमात्माकेविचारकूंकहेहैं ॥ सत्य-रूपपरमात्मा याप्रकारकाचिंतन करताभया ॥ मैंपरमात्माब्रह्महीबहु-तरूपकरिकैउत्पन्नभयाहोवों ॥ मेरेविनाप्रपंचबहुतरूपहोनानहीं यातेंमैं ब्रह्महीं बहुतरूपताकूंप्राप्तहोवों याप्रकारकाचिंतनकरिकैं मायाशबल-परमात्मा आकाशादिकपंचभूतोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ यद्यपिया-छांदोग्यउपनिषत्मैं पृथिवी जल तेज यातीनभूतोंकीही उत्पत्तिकही है वायुआकाशकीउत्पत्तिकहीनहीं ॥ तथापि तैत्तिरीयश्रुतिमैं आ-काशादिकपंचभूतोंकीउत्पत्तिकहीहै ॥ औरश्रीव्यासभगवान्जेवेदांतके

आचार्यहैं तथाभगवान्श्रीशंकराचार्यहैं तिनोंनेश्रीमत् शारीरकनाम-ग्रंथके द्वितीयअविरोधअध्यायके तृतीयवियत्पादमैं तैत्तिरीयउपनिषत्की अनुसारतासें पंचभूतोंकीहीउत्पत्तिकहीहै ॥ यातेंयाउपनिषत्-का तैत्तिरीयश्रुतिसेंविरोधनहींहै ॥ ऐसेपरमात्मा आकाशवायुकूंउ-त्पन्नकरिकैं तेजकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तेजउपहितहूआसोपरमात्मा याप्रकारकाचिंतनकरताभया ॥ मैंबहुतरूपकरिकेउत्पन्नहोवों ॥ त-थातेजउपहितहूआपरमात्मा जलोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ लोकमेंभीयह सर्वप्रसिद्धहै ॥ जबीतप्तबहुतपडैहै ॥ तबीवृष्टिहोवेहै ॥ यातेंअग्नि-सें जलोंकीउत्पत्तिकही ॥ पुनःजलउपहितपरमात्मायाप्रकारकेविचार-कूंकरताभया जोमैंबहुतरूपकरिकैंउत्पन्नहोवों ॥ जलउपहितपरमात्मा-सें अन्नशब्दकाअर्थजोपृथिवीहै सापृथिवीउत्पन्नभयी ॥ लोकमेंभीय-हप्रसिद्धहै जादेशमेंवर्षाहोवेहै ॥ तादेशमेंहीअन्नबहुतउत्पन्नहोवेहै ॥ यातेंजलोंसेही अन्नशब्दकाअर्थपृथिवीउत्पन्नहोवेहै ॥ हेश्वेतकेतो पृ-थिवीजलतेजइनतीनभूतोंकेअनुसारही अंडज उद्भिज्ज जरायुज यह तीनभूतोंकेबीजउत्पन्नहोवेहैं ॥ स्वेदजदोप्रकारकेहैं एकतौ मशकादि-रूपस्वेदज उद्भिज्जरूपहोवेहैं ॥ दूसरेयूकादिरूपस्वेदज अंडजरूपहो-वेहैं ॥ यातेंस्वेदजका जलकेकार्यउद्भिज्जरूपकरिकैं तथापृथिवीके कार्य अंडजरूपकरिके ग्रहणकरणा ॥ गर्भकेवेष्टनवालेचर्मकानाम जरायुहै ताजरायुकी जाठरअग्निरूपतेजसेंउत्पत्तिहोनेसे तेजकाकार्य कहीयेहै ॥ परमात्मा पृथिवीआदिकतीनभूतोंविषे प्रविष्टहूआ याप्र-कारकेविचारकूंकरताभया ॥ इनतीनभूतोंविषे मैंपरमात्माजीवरूपसें प्रवेशकरिके नामरूपकूंस्पष्टकरूं ॥ प्रथमइनतीनभूतोंके तीनतीनभा-गोंकूंकरूं ॥ इनभूतोंकेनवभागकरणेसें नामरूपस्पष्टहोवेंगे ॥ याप्रकार-काविचारकरिके सोपरमात्मा एकएकभूतकेदोदोभागोंकूंकरिकै पुनः तिनमैंसेएकएकभागकूं पृथक्राखकरि शेषरहेतीनभागोंके दोदोभागक-

रिकै आपनेआपनेभागकूंत्यागकरि तिनवृद्धभागोंविषेमेलनेसे त्रिवृतकरणकरताभया ॥ यहत्रिवृतकरण पंचीकरणकाउपलक्षणहै ॥ इसरीतिसेंउद्दालकपिताने नामरूपप्रपंचकीउत्पत्ति भूतोंसेंवर्णनकरी ॥ तिसपितानेही अग्नि सूर्य चंद्रमा विद्युत् यहच्यारिदृष्टांत जगत्के अपवादवासतेकहेहैं ॥ हेश्वेतकेतो अग्निआदिच्यारोंविषे जोरक्तरूपप्रतीतहोवेहै ॥ सोरक्तरूपतेजकाजानना ॥ इनचारोंविषेजोशुक्लरूपहै सो जलोंकाजानना ॥ इनचारोंविषेजोकृष्णरूपहै सोपृथिवीकाजानना ॥ कारणतेजआदिकोंकेरूपसेंविना कार्यभूतअग्नि सूर्य चंद्र विद्युत्आदिविकार वाणीकरिकैहीसिद्धहैं ॥ नाममात्रसेंपृथक्नहीं ॥ पृथक्करेमिथ्याहीहैं ॥ ऐसेजोजोसंसारविषे पदार्थप्रतीतहोवेहै ॥ सोसो आपनेकारणतेजजलपृथिवी इनकेरूपोंसें पृथक्नहीं ॥ तेजआदिकसर्वपदार्थोंकाकारणपरमात्माहै ॥ तापरमात्मारूपकारणसे भिन्नकरिकैं कोईतेजआदिसिद्धहोवेनहीं ॥ यासत्यपरमात्मारूपकारणकेज्ञानसें तेजआदिकार्यकाज्ञानहोवेहै ॥ ऐसेएककेज्ञानसें सर्वकाज्ञानकह्या ॥ अवयाअर्थविषे विद्वानोंका अनुभववर्णनकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतो केईकविद्वान् कारणकूं सत्यजानकरि हर्षकूंप्राप्तहूए याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हमारेविद्यारूपकूलमैं जोपुरुष उत्पन्नहोगा ॥ तिनमेंकोईपुरुषभी अज्ञातवस्तुकाकथन नकरेगा ॥ किंतुकारणरूपसत्यकूंजानकरि तथाकारणसेंभिन्नकार्यकूंमिथ्याजानकरि ज्ञातवस्तुकाहीनिरूपणकरेगा ॥ ऐसेबाह्यअग्निचंद्रादिसर्वपदार्थोंमें भूतकार्यतावर्णनकरिकैं अंतरस्थूलसूक्ष्मशरीरमैंभी भूतकार्यताकूंवर्णनकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतो भक्षणकरेअन्नके उदरमैंतीनभागहोवेहैं ॥ अन्नकाजोस्थूलभागहै सोविष्ठाहोइजावेहै॥जो मध्यमभागहै ताकामांसहोइजावेहै ॥सूक्ष्मभागकामनकार्यहोवेहै॥पानकरेजलकेभीतीनभागहोवेहैं ॥ स्थूलभागकामूत्रहोइजावैहै॥मध्यमभागकारुधिरहोवेहै ॥ सूक्ष्मभागकाकार्यप्राणहोवेहै॥तैल

घृतादिरूपतेजके भक्षणकरणेसें स्थूलभागकाकार्य अस्थिहोइजावेहै॥ मध्यमभागका मज्जाहोवेहै॥ सूक्ष्मभागकावाक्इंद्रियउत्पन्नहोवेहै ॥ यातें अन्नकाकार्यमनहै जलकाकार्यप्राणहै अग्निकाकार्यवागइंद्रियहै॥ यद्यपि अन्यउपनिषद्में भूतोंकेसात्विकभागकाकार्यमन भूतोंकेराजसभागका कार्यप्राण औरआकाशकेराजसभागकाकार्यवागइंद्रियकह्याहै ॥ तथापि तैलघृतादिरूपतेज वाग्इंद्रियकीपुष्टिकाहेतुहै ॥ तथाप्राणकीस्थितिकाहेतुजलहै ॥ मनकीपुष्टिकाहेतुअन्नहै ॥ औरमनआदिककार्यतौ भूतोंकेसात्विकभागोंकेहीहै ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ हेभगवन् ! सूक्ष्म जेमनआदिकहैं तेस्थूलअन्नआदिकोंकाकार्यकैसेहैं ॥ उद्दालकउवाच॥ हेश्वेतकेतो ! जैसेदधिकेमथनकरणेसे स्थूलदधिसेभी सूक्ष्मघृतकीउत्पत्तिहोवेहै ॥ तैसेमनआदिकसूक्ष्मभी स्थूलभूतोंसेप्रगटहोवेहैं ॥ जैसेस्थूलदधिका मध्यमभागफेनहोवेहै स्थूलभागतक्रहोवेहै ॥ तैसेस्थूलभूतोंके मध्यमस्थूलभागोंकाकार्य पूर्वनिरूपणकराहै ॥ हेश्वेतकेतो ! जबीतेरेकूं मनअन्नकाकार्यहै याअर्थकेदृढनिश्चयकरणेकासंकल्पहै तबीपंचदशदिनपर्यंत भोजनमतिकरो ॥ परंतुजलकापान आपनीइच्छाके अनुसार करणा ॥ जबीजलकापानभीनहींकरोगे तबीशरीरनेरहनानहीं ॥ हे सोम्य यहमनोमयजीव अन्नकीशक्तिकरके षोडशकलावालाकहावेहै॥ अन्नकेभक्षणसेउत्पन्नभयीजेमनकीयांवृत्तियांहैं तेवृत्तियांहीकलाकहीये हैं ॥ तिनवृत्तियोंविशिष्टपुरुषभी षोडशकलकहीयेहै ॥ ऐसेपिताकी आज्ञाकूंमानकरि पंचदशदिनपर्यंत पुत्रभोजनकूं नकरताभया ॥ पिताकूंप्राप्तहुए तापुत्रकूं पिताकहेहैं ॥ हेपुत्र ! तुमनेजेगुरुकेसमीपवेदपठन करेहैं तिनकूंमेरेतांई श्रवणकरावो ॥ पुत्रकहेहै हेभगवन् ! ऋग् यजुस् साम जे मैनेगुरुकेपाससे श्रवणकरेहैं ॥ तिनमेंसेमेरेकूं एकभी अबनहीं स्फुरणहोता ॥ पिताकहेहैं ॥ हेपुत्र ! जैसेमहान्प्रज्वलितअग्नि काष्ठादिकोंकूं दग्धकरिके केवलखद्योतसदृश अंगाररूपशेषरहिजावे तबता-

अग्निकरिके बहुतकाष्ठादिकोंकादाहहोवेनहीं तैसेपंचदशदिनपर्यंत तुमनेभोजनकरानहीं यातेंतुमारेमनकीपंचदशकलावोंकानाशभयाहै ॥ एक कलाशेषरहीहै ॥ यातेंमनकरिकेतुमकिंचित् जानतेनहीं ॥ अबीभोजनकरो ॥ जबीताश्वेतकेतुनेभोजनकरा औरपितावेदपूछनेलगे तबी श्वेतकेतुसर्वकहताभया ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र ! जैसेखद्योतसदृशअग्निकूं शुष्कतृणोंकरिवृद्धकरे तबीमहान्काष्ठोंकूंभी सोअग्निदाहकरेहै ॥ आहारकेनकरणेसे तेरेमनकीकला शेष एकरहीथी अबीभोजनकरणेसे अग्निकीन्यांई तेषोडशकलासावधानभयीहैं ॥ यातेंहीतुमवेदोंकूं जानते हो ॥ इसरितीसेपिता उद्दालक तेजआदिकोंकाकारण अद्वितीयपरमात्मा तत्पदार्थकानिरूपणकरतेभये ॥ अबसो अद्वितीयपरमात्माही त्वंपदार्थ प्रत्यक्रूपहै याअर्थकूंवर्णनकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतो ! यहजीवात्मा सुषुप्तिअवस्थाविषे सद्रूपब्रह्मकूं प्राप्तहोवेहै ॥ मनरूपउपाधिके लयहोनेसे यहजीवं आपनेवास्तवब्रह्मरूपकूं सुषुप्तिमेंप्राप्तहुआ स्वपिति यानामवालाहोवेहै ॥ स्वपितिनामकाअर्थ यह स्वजोअपनास्वरूप ताकूंप्राप्त होवेहै ॥ यातेंहीस्वपिति नामवालाजीव सुषुप्तिमें कह्याजावे है ॥ जैसेचीलनामकपक्षी सूत्रकरिबांधाहुआ अनेकदिशावोंमेंचलायमान होवेहै परंतुअन्यस्थानमें आश्रयकूंनप्राप्तहोईकरि आपनेखूटीरूप स्थानमें प्राप्तहोवेहै ॥ तैसेमनविशिष्टजीवभी जाग्रत्स्वप्नमें भ्रमणकरताहुआ स्थितिकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ सुषुप्तिअवस्थामें ब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेश्वेतकेतो ! यहआत्मा वास्तवसेक्षुधापिपासासे रहितहै ॥ प्राणोंका धर्महीक्षुधापिपासाहै ॥ प्राणोंकेसाथअध्यासकरिके जागरितस्वप्नअवस्थाविषे तिनप्राणोंकेधर्मक्षुधापिपासाकूं व्यर्थही आपनेविषे मानेहै ॥ जबीक्षुधाकरिपीडितहुआपुरुष अन्नकाभक्षणकरेहै ताअन्नकूं जल द्रवीभावकरिकेलेजावेहैं ॥ यातेंजलोंकानाम अशनायाहै ॥ अर्थयह अशनजोभोजन ताकूंजोलेजावे ताकूं अशनायाकहेहैं ॥ जैसेअश्वोंकेप्राप्त-

करणेहारेकूं अश्वनायककहेहैं ॥ गौवोंकूंलेजानेवालेकूं गोनायककहेहैं ॥ तैसेजलोंकानामअशनायाहै ॥ औरपानकरेजलकूं तेजशोषणस्वभाववाला लेजावेहै ॥ यातेंतेजकानाम उदन्या यहश्रुतिभगवतीकहेहै ॥ दृष्टांतअश्वनाय गोनायकायामेभी जानलेना ॥ हेश्वेतकेतो ! याशरीररूपकार्यकरि अन्नरूपकारणकूं जानो काहेतेकार्यद्वाराहीकारणकाज्ञानहोवेहै ॥ यातेंशरीररूपकार्यद्वारा कारण अन्नकाज्ञानहोवेहै ॥ ताअन्नरूपकार्यसे पृथिवीरूपकारणकूं निश्चयकरो ॥ तथापृथिवीरूपकार्यसे जलरूपकारणकूं निश्चयकरो ॥ जलरूपकार्यसे तेजरूपकारणकूंनिश्चय करो ॥ तेजरूपकार्यकरिके कारणजो सदात्माब्रह्महै ताकूंनिश्चयकरो॥ यहस्थावरजंगमरूपसर्वप्रजा सद्ब्रह्मकाहीकार्यहैं ॥ तथातासद्रूपब्रह्ममैंस्थितहैं ताब्रह्ममेंहीलयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ यातेंसर्वनामरूपप्रपंचआत्मरूपहै यासूक्ष्मआत्मासेभिन्ननहीं ॥ सोब्रह्महीआत्माहै ॥ ऐसेब्रह्मरूपहीतुमहो ॥ शंका ॥ हेभगवन् मैंब्रह्मरूपकैसेहूं मैंपरिच्छिन्नहूं ब्रह्मतौ व्यापकहै यातेंमैंब्रह्मरूपनहीं॥समाधानरूपप्रथमाभ्यासकूं पिताकहेहैं ॥ हेश्वेतकेतो जबीपुरुषमृत्युकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तापुरुषके प्रथमनेत्रादिइंद्रियसहितवाक्इंद्रिय मनमेंलयहोइजावेहैं ॥ मनप्राणविषेलयभावकूंप्राप्त होवेहै ॥ प्राणसूक्ष्मपंचभूतोंसहित जीवात्मामेंलयहोवेहै ॥ तिनभूतोंसहितजीवात्मा मायासहितब्रह्मविषे लयभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यातेंमरणकालविषे जाब्रह्ममेंएकताकूं जीवप्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसेब्रह्महीतुमहो ॥ औरनित्यहीसुषुप्तिअवस्थामें ताब्रह्मकेसाथअभेदभावकूंप्राप्तहोतेहो ॥ परिच्छिन्नताआदिकभी केवलशरीरादिउपाधिकरिकेहैं वास्तवसे तूंशुद्धपूर्णब्रह्मरूपहीहै ॥ यातेंपरिच्छिन्नदेहादिकोंविषे अभिमानकूंत्यागकरि आपनेशुद्धरूपकूंस्मरणकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन्जबीसर्वजीव सुषुप्तिअवस्थाविषे ब्रह्ममेंएकताकूंप्राप्तहोवें तबीसर्वपुरुषोंनेअनुभवकराचाहिये जोहमब्रह्मकेसाथअभिन्नभयेहैं ॥ अभेदभीहोवे औरज्ञाननहोवे

यामेंअनुकूलदृष्टांतकूं मेरेतांई आपनिरूपणकरो ॥ऐसेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै पिताद्वितीयअभ्यासकूंकहेहैं ॥ हेपुत्र जैसेनानावृक्षोंकेरसोकूं मक्षिका मधुमेंप्राप्तकरेहैं ॥ तिनरसोंकूं यहज्ञानहोवेनहीं हमअमुकवृक्षोंकेरसहैं ॥ औरजैसेकिसीपुरुषकेगृहमेंही स्वर्णनिधि मृत्तिकासेआवृतहुई स्थितहोवे तापुरुषकूंनिधिकाज्ञानहोवेनहीं ॥ तैसेही तुमनित्यब्रह्ममें सुषुप्तिअवस्थाविषे एकताकूंप्राप्तहोतेहो ॥ परंतुअज्ञानकेसद्भावसेतुमारेकूं हमब्रह्मसेअभिन्नभयेहैं यहज्ञानहोवेनहीं ॥ तथाज्ञानकेसाधनमनआदिकोंके अभावहोनेसेभी सुषुप्तिमेंज्ञाननहींहोवेहै ॥ औरअविद्याकर्मवासनाकेअनुसार व्याघ्र सिंह वृक वराह कीट पतंग दंश मशक इत्यादिआपने शरीरोंकूं उठकरिसर्वजीवप्राप्तहोवेहैं ॥ यातेंजाआपनेब्रह्मरूपकूं नजानकरि अनेकक्षुद्रयोनियोंकूं पुरुषप्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसाशुद्धब्रह्म तुमारास्वरूपहै ताकूंनिश्चयकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन् सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे एकताकूंतौजाना ॥ परंतु जैसेपुरुष गृहसेबाहिरआवैहै ताकूंयहस्मरणहोवेहै ॥ जोहमगृहसेबाहिरआयेहैं॥ तैसेसुषुप्तिअवस्थाविषे ब्रह्मकेसाथ हमअभिन्नभयेथे ॥ अबताब्रह्मसेही हमने आगमन कराहै ॥ ऐसाजागरितमें स्मरणहुआचाहिये होवेनहीं यातेंमैंब्रह्मनहीं हूं ॥ याशंकाकेसमाधानकरणेवासते तृतीयअभ्यासकूंपिताकहेहैं ॥ हेपुत्र जैसेप्राणीयोंकेकर्मोंकरिप्रेरेहुएमेघ समुद्रसेजलकूंग्रहणकरिकै अन्यदेशमेंगेरेहैं ॥ सोजल नदीरूपसे सागरकेसन्मुखगमनकरेहै ॥ तेनदीयां आपनेवास्तवसमुद्ररूपकूंजानेनहीं॥ तैसेतुमभीअद्वितीयब्रह्मरूपहो केवलउपाधिकरि परिच्छिन्नभावकूं तुमनेधारणकराहै ॥ यातेंदेहादिउपाधिकरिकै तुमपरिच्छिन्नताकूंप्राप्तहुएहो ॥ अबतुमदेहादिउपाधिकूं त्यागकरि आपनेशुद्धरूपकूंनिश्चयकरो ॥ तुमशुद्धनिर्विकारब्रह्मरूपहो ॥ शंका ॥ हेभगवन् नदीयोंकेदृष्टांतविषे मेरेकूंसंदेहहै ॥ जैसेनदीयां समुद्रमेंलयभावकूंप्राप्तहुई नाशकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तैसेजीवकानाशहोवेगा ॥

तानाशीजीवकीब्रह्मसेएकताबनेनहीं ॥ औरनामरूपप्रपंचभी तासद्रूप-
ब्रह्मसेउत्पन्नभयाहै सोप्रपंचसत्यहुआचाहिये ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवा-
सते पिताचतुर्थअभ्यासकूंकहेहैं ॥ हेश्वेतकेतो जैसेयावृक्षकेमूलदेशमें
कुठारआदिकोंकेप्रहारकरनेसेरसनिकसेहै ॥ मध्यमेंवृक्षकूंप्रहारकरैं तौ
भीरसनिकसेहै ॥ तथातावृक्षकेअग्रदेशमें प्रहारकरणेसे रसनिकसेहै ॥
यातेंसोवृक्षजीवसहितनिश्चयहोवेहै ॥ तथासोवृक्षशरीरवालाजीवजबी
एकशाखाकात्यागकरे तबीसाशाखाशुष्कहोइजावेहै ॥ द्वितीयशाखाके
त्यागकरणेसे द्वितीयशाखासूकजावेहै ॥ जबीसर्ववृक्षशरीरकात्यागकरे
है तबीसर्ववृक्षसूकजावेहै ॥ तैसेयहजीवात्मा मनुष्यदेहादिकोंकूंत्यागता
हुआ द्वितीयदेहोंकूंग्रहणकरेहै ॥ कबीजीवकानाशहोवेनहीं केवलकर्मों-
करिप्राप्त यास्थूलशरीरकाहीनाशहोवेहै ॥ यहनित्यजीवात्माहीब्रह्मरूप
है॥ औरब्रह्मसेउत्पन्नभयाजोनामरूपजगत्है सोरज्जुसर्पकीन्यांईमिथ्या
है सत्यनहीं ॥ जैसेरज्जुसेसर्पउत्पन्नभयामिथ्याकहीयेहै सत्यनहींकहीये
है॥ तैसेब्रह्मसेउत्पन्नभया प्रपंचमिथ्याहैसत्यनहीं ॥ यास्थानमेंयहअभि-
प्रायउपरिसेजाननेयोग्यहै॥ जैसेरज्जुकासर्पविवर्त्तहै तैसेब्रह्मकाजगत् वि-
वर्त्तहै ॥ विवर्त्तकालक्षणयहहै ॥ अतात्विकोऽन्यथाभावोविवर्त्तः॥ स-
त्यअधिष्ठाननेहीमिथ्यारूपसेप्रतीतहोना यहलक्षणकाअर्थहै॥ ब्रह्मकाज
गत्परिणामहोता तबजगत्सत्यहोता काहेतैं ॥ तात्विकोऽन्यथाभावः
परिणामः ॥ जैसेदुग्धवास्तवसेदधिरूपताकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तादुग्धसे
भिन्नहीदधिहै ॥ तैसेनिरवयवब्रह्मका यहजगत्परिणामबनेनहीं ॥
विवर्त्ततौनिरवयवआकाशमेंभी नीलरूप तथाकटाहाकाररूपसेहोवेहै॥
यातें जैसेरज्जुमें सर्पमिथ्याउत्पन्नहोवेहै औरजैसेआकाशविषे मिथ्या-
नीलरूपादिप्रतीतहोवेहैं ॥ तैसेब्रह्मसे मिथ्याहीउत्पन्नहुआजगत् ब्रह्म-
मेंहीप्रतीतहोवेहै ॥ यातें हेश्वेतकेतो तुमआपनेअद्वितीयभावकूं स्मरण-
करो ॥ शंका ॥ हेभगवन् यासूक्ष्मब्रह्मसे यहस्थूलप्रपंचकैसेउत्पन्नहो-

वेहै ॥ तथाब्रह्मयास्थूलजगत्काआधारभीकैसेहै ॥ स्थूलमृत्तिकाही घटकूंउत्पन्नकरेहै परमाणुसे घटकीउत्पत्तिदेखनेमें आवेनहीं ॥ तथा सूक्ष्म परमाणुकेआश्रितहोइकरि घटस्थितभीहोवेनहीं किंतु स्थूलमृत्तिकामेंस्थितहोवेहै॥ यहसूक्ष्मब्रह्म जगत्काकारण तथाआश्रयकदाचित् बनेनहीं ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते पितापंचमअभ्यासकूंकहेहैं ॥ हेपुत्र यावटवृक्षसे एकफलकूंलेआवो ॥ श्वेतकेतुलेआताभया ॥ पिता कहेहैं याफलकूंभेदनकरो ॥ श्वेतकेतुकहेहैहे भगवन् याफलकाभेदनकराहै ॥ पिताकहेहैं याभेदनकरेफलमें तुमक्यादेखतेहो ॥ पुत्रकहेहै हेभगवन् सूक्ष्मबीजप्रतीतहोवेहैं ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र इनबीजोंमेंसे एकसूक्ष्मबीजकूंभेदनकरो॥ पुत्रनेभेदनकरिकै कहा हेभगवन् बीजभेदनकराहै॥ पिता कहेहैं भेदनकरेबीजमें तुमक्यादेखतेहो ॥ पुत्रकहेहै हेभगवन् मेरेकूंअबकिंचित्भी प्रतीतनहींहोता ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र यहमहान् वटवृक्ष यासूक्ष्मवटबीजमेंस्थितहै ॥ जबीताबीजमें वृक्षकाअभावमानेतौ जैसे वंध्यापुत्रसे किंचित् उत्पन्नहोवेनहीं ॥ तैसेतासूक्ष्मबीजसेभी वृक्ष उत्पन्ननहींहोवेगा ॥ यातेंसूक्ष्मरूपसे यहमहान्वृक्ष उत्पत्तिसेप्रथमता बीजमेंस्थितहुआ तासेहीउत्पन्नहोवेहै ॥ तैसेयासूक्ष्मब्रह्मविषेभी यहजगत् सूक्ष्मरूपसेस्थितहुआ तासेहीउत्पन्नहोवेहै ॥ औरहेपुत्र यह हमारासमाधान तुमारीशंकाकूंमानकरिहै ॥ वास्तवसेतौ महान्आकाशादिकोंसेभी ब्रह्ममहान्है ॥ औरसत्तारूपसे घटादिरूपसर्वजगत्में व्यापकहै ॥ सूक्ष्मरूपसेजोश्रुतिमेंकथनकराहै ॥ सोकेवलदुर्लक्ष्यअभिप्रायसेकह्याहै ॥ अल्पहै याकहनेमें श्रुतिकातात्पर्यनहीं ॥ जैसेसूक्ष्मवस्तुकादर्शनसावधानहुएविनाहोवेनहीं ॥ तैसेसावधानहुएविना ब्रह्मकाप्रत्यग्रूपसे दर्शनहोवेनहीं ॥ यातेंतुमशुद्धब्रह्मरूपहो ॥ शंका ॥ हेभगवन् प्रत्यग्ब्रह्मजबीसर्वत्रव्यापकहै ॥ तौसर्वकूंआपनाआत्मारूपसे प्रतीतहुआचाहिये ॥ तथासर्वजगत्विषे व्यापकहोनेसेसर्वजगत्में-

भीप्रतीतहुआचाहिये ॥ जबीसूक्ष्महोनेसे दर्शनकेअयोग्यकहोंगे तौता ब्रह्मकासाक्षात्कार किसीपुरुषकूंभीनहोनेसे संसारभ्रमकिसीकाभी निवृत्तनहींहुआचाहिये ॥ यातेंमैंब्रह्मरूपकैसेहूं ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते पिता षष्ठअभ्यासकाउपदेशकरेहैं ॥ हेपुत्रयालवणकूंरात्रिमेंजलविषेगेरकरि प्रातःकालमें मेरेकूंतुमनेप्राप्तहोना ॥ श्वेतकेतुनेतैसेकरा प्रातःकालमेंपिताकेसमीपआइस्थितभया ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र जोलवणरात्रिविषे तुमनेजलमेंगेराथा ताकूंनिकासलेवो ॥ श्वेतकेतुने जलमेंहस्तकूंपाइकरिं निकासनेवासते बहुतपरिश्रमकरा परंतुजलसेंबाहिरनिकसानहीं ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र जलकेउपरिदेशसेआचमनकरो ॥ श्वेतकेतुनेजबी आचमनकरा तबपितापूछेहैं यामेंक्याहै ॥ पुत्रकहेहै हेभगवन् लवणहै ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र याजलकेमध्यदेशसेआचमनकरो ॥ पुत्रनेजबीमध्यदेशसे आचमनकरा तबीपितापूछेहैं यामेंक्याहै ॥ पुत्रकहेहै ॥ भगवन् लवणहै ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र अबनीचेदेशसे आचमनलेवो ॥ जबीपुत्रनेआचमनलीया तबीपितापूछेहैं यामें क्याहै ॥ पुत्रकहेहै भगवन्लवणहै ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र याजलकूंत्यागकरि हमारेपासआवो ॥ पुत्रलवणसदावर्त्तमानहै ऐसेकहताहुआ पिताकेपासप्राप्तभया ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र जैसेयाजलमें लवणहैभी परंतुतुमारेकूं इननेत्रोंकरिप्रतीतहोवेनहीं ॥ तैसेसर्वमें व्यापकब्रह्मभी बहिर्मुखइंद्रियोंकरि प्रतीतहोवेनहीं ॥ औरजैसेलवणकारसनाकरिज्ञानहोवेहै ॥ तैसेशुद्धबुद्धिकरिकै आत्माप्रत्यक्षहोवेहै ॥ यातेंश्रद्धासहितशुद्धबुद्धिकरिके आपनेशुद्धस्वरूपकूंनिश्चयकरो ब्रह्मकूंकहींदूरनहींजानो याशरीरमेंही साक्षीरूपसेब्रह्मस्थितहै ॥ जैसेजलसेंभिन्नहीलवणहै तैसेदेहादिकोंसेपृथक्हीप्रत्यग्ब्रह्महै ॥ यातेंदेहादिकोंसेभिन्न शुद्धब्रह्मरूपतुम हो ॥ शंका ॥ हेभगवन् नेत्रादिकोंकेअविषयस्वभाव आत्माकेप्रत्यक्षमें कोईउपायकथनकरो ॥ जाउपायसे मैशीघ्रहीआत्माकूं जानक

रि कृतार्थहोवों ॥ याशंकाकेप्रहारवासते पितासप्तमअभ्यासकूंकहेहैं ॥ हेपुत्रगंधारदेशविषेरहणेहारे किसीपुरुषकूं चौरपुरुषपकडकरि वनमेंले आवतेभये ॥ तापुरुषकेनेत्रोंकूंबांधके तावनमें ताकेभूषणवस्त्रोंकूंउतार-करि छोडतेभये ॥ सोगंधारदेशकापुरुष तावनविषेमहान्दुःखकूंप्राप्त हुआ रुदनकरेहै ॥ कबीपूर्वमुखकरिकेरुदनकरेहै ॥ कबीउत्तरमुख-करिकेरुदनकरेहै ॥ कबीनीचेमुखकरिकेरुदनकरेहै ॥ औरमुखसेयह शब्दकरेहै ॥ मैंगंधारदेशमेंरहणेवालेपुरुषकूं चौरोंने नेत्रादिकबांधकै तथावस्त्रभूषणउतारकरि याकठिनवनमें मेरेकूंछोडदीयाहै ॥ यावनमें मेरेकूं सिंहव्याघ्रसर्पादि दुःखदेवेहैं ॥ ऐसेऊंचेपुकारतेपुरुषकूं दुःखी देखिकरि कोईकृपालुपुरुष ताकेनेत्रोंकेबंधनकूंखोलकरि यहकहता भया ॥ हेपुरुष जागंधारदेशसे तूंआयाहै ॥ यामार्गसेतुमआपनेगंधार-देशकूंचलेजावो ॥ यादिशामेंहीगंधारहैं ॥ सोपुरुषतादयालुके उपदेश कूंश्रवणकरि आपनेगंधारदेशमेंप्राप्तभया ॥ कैसाभीसोपुरुषथा जो उपदेशकेग्रहणकरणेमेंसमर्थ ॥ तथाआपबुद्धिमान्था सोआपनेदेशकूं प्राप्तहोइके परमआनंदकूंप्राप्तभया ॥ हेश्वेतकेतो ऐसेंहीतुमारेकूं काम-क्रोधादिचोरोंने शुद्धब्रह्मस्वरूपस्वदेशसेलेआइके संसाररूपीवनमेंप्राप्त-कराहै ॥ तिनकामक्रोधादिकचोरोंने तुमारेसाक्षीरूपनेत्रनकूं बांधके महान्दुःखकूं प्राप्तकराहै ॥ यातेंहीतूंसंसाररूपीवनमें दुःखकूंप्राप्त भयाहै ॥ ब्रह्मवेत्तागुरुके महावाक्यउपदेशरूपहस्तकरिकै अज्ञानरूप-दृढबंधनकी निवृत्तिकरो ॥ यातेंतुमभी गंधारदेशकीन्यांई आपनेब्रह्म-रूपदेशकूंप्राप्तहोवो ॥ गुरुकाउपदेशहीब्रह्मप्राप्तिमेंद्वारहै ॥ ताकेसह-कारीशिष्यकीबुद्धि तथाआत्मजिज्ञासा यहदोनोंजानने ॥ गुरुउपदेशकूं श्रवणकरिकै आत्मनिश्चयवालापुरुष ब्रह्मस्वरूपकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताम-हात्माज्ञानीका तबपर्यंतशरीर प्रतीतहोवेहै जबपर्यंतप्रारब्धहै ॥ भोग करिप्रारब्धकेनिवृत्तभये सोविद्वान् विदेहकैवल्यकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जाब्रह्ममें

विद्वान्अभिन्नहोवेहै ऐसाशुद्धब्रह्महीतुमारास्वरूपहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् सुषुप्तिकीन्यांई मरणकालविषे जैसे अज्ञानी ब्रह्मसेअभिन्न होवेहै ॥ तैंसेविद्वान्भी ब्रह्मसेअभिन्नहोवेहै ॥ वाकोईऔररीतिसे ब्रह्मकेसाथअभिन्नहोवेहै ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते पिताअष्टमअभ्यासकूंकहेहैं ॥ हेपुत्र मरणकालमें अज्ञानीपुरुषकेसमीपसंवंधिआइकरिपूछेहैं ॥ तुममैंपुत्रकूंजानतेहो तुममैंपिताकूंजानतेहो ॥ सोपुरुष तबपर्यंतजानताहै जबपर्यंत ताकेवाग्आदिइंद्रिय मनमेंलयभावकूंनहीं प्राप्तभये तथामनप्राणमें प्राणजीवमें जीवपरमात्मामेंलयभावकूं प्राप्तनहींभया ॥ जबीताकेवाग्आदिसर्व लयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तबकिंचित्भी जानेनहीं ॥ ब्रह्मप्राप्तिपर्यंततौ याक्रमसे विद्वान्अज्ञानीकी समानगतिहै ॥ विलक्षणतायहहै जोअज्ञानीपुरुषहै सोमरणकालमें सुषुप्तिकीन्यांई ब्रह्ममेंलयभावकूंप्राप्ततौहोवेहै ॥ परंतु ज्ञानकेअभावसे ताकीअविद्यानिवृत्तहोवेनहीं ॥ तथाकर्मवासनाभी सुषुप्तिकीन्यांई सूक्ष्म रूपसेस्थितहोवेहैं ॥ यातें सोअज्ञानीपुरुष अविद्याकामकर्मकेआधीन हुआ पुनःजन्ममरणकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरज्ञानीपुरुषकीअविद्याका ब्रह्मज्ञानकरिनाशहोवेहै ॥ अविद्याकेनाशहोनेसे ताअविद्याकेकार्य वासना कर्मसंशय विपर्ययादिसर्वनिवृत्तहोवेहैं ॥ तथाताज्ञानीकेप्राणादिक परलोकमेंगमनकरेंनहीं ॥ किंतुब्रह्ममें लयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ यातें हेश्वेतकेतो ज्ञानीयाशरीरकूंत्यागके जाब्रह्मसेअभिन्नहोवेहै ॥ ऐसेशुद्ध ब्रह्मरूपकूंप्राप्तहोवो सोईतुमारास्वरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी अज्ञानीपुरुषकूं मृत्युपरलोकमेंप्राप्तकरेहै ॥ ज्ञानीकूंभी किसवासतेमृत्यु परलोकविषेनहींलेजाता ॥ यामें मेरेतांई कारणकूंकहो ॥ अथवाअज्ञानीभीमरणकालमें ब्रह्मकूंप्राप्तहुआ परलोकमें सुखदुःखकूं किसवासतेप्राप्तहोवेहै ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते अंत्यकानवमअभ्यासपिता कहेहैं ॥ हेश्वेतकेतो ॥ जैसेएकपुरुषचोरथा दूसरापुरुषसाधुथा तिनदो-

नोंकूं राजाकेकिंकरोंने चोरजानके बलात्कारसे पकडलिया ॥ राजाके समीपप्राप्तकरिके किंकरोंने कहा ॥ यहदोनोंचोरहैं इनोंनेधनकीचोरी करीहै ॥ चोरकहेहै मैंने चोरीनहींकरी साधुपुरुषभीकहेहै हमनेचोरीनहीं करी ॥ राजाकेमंत्रीकहेहैं ॥ जबीतुमनेचोरीनहींकरी तौयातप्तपरशुकूं हस्तसेग्रहणकरो ॥ जबीतुमचोरनहींहोवोगे ॥ तबतुमाराहस्त दग्धहोवे गानहीं ॥ प्रथमचोरनेआपनेकर्मकूंप्रगटनकरा ॥ औरमिथ्यासंभाषण करिकै तप्तपरशुकूंग्रहणकरा ॥ तबीताचोरकाहस्त दाहकूंप्राप्तभया ॥ राजाकेभृत्योंनेताकूं चोरजानकरि अनेकप्रकारकादंडदिया॥साधुपुरुषकूं तप्तपरशुग्रहणवासते जबीकहा ॥ तबीतासाधुकाहस्तदाहभयानहीं॥ ताकालमेंराजाने तथाराजाकेभृत्योंने तासाधुपुरुषकूंक्षमाकराई ॥ तथाआपनाअपराधक्षमाकराइके तासाधुकूंअन्नवस्त्रादिकभीदिये ॥ ऐसेहीअज्ञानीपुरुष आपनेशुद्धरूपकूंनजानताहूआ कहेहै मैंब्रह्मनहींहूं मैंसुखीदुःखीजन्ममरणवालाहूं यहहीचोरीरूपस्वकर्मकाछिपानाहै ॥ जैसेताचोरके प्रथमहस्तकादाहभया पश्चात् राजाकेभृत्योंने बांधके दुःखदीया ॥ तैसेयहअज्ञानीप्रथममृत्युसेपीडाकूंप्राप्तहोवेहै पश्चात् चौरासीलक्षयोनिरूप बंधनकूंप्राप्तहूआ दुःखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जैसेसा-धुपुरुषकूं किंचित्भीदुःखहोवेनहीं सर्वराजाआदिकताकापूजनहीकर-तेभये ॥ तैसेज्ञानीपुरुषभी आपनेशुद्धस्वरूपमें निश्चयवालाहूआ तथासर्वविक्षेपसेरहितहूआ ब्रह्माआदिकोंकरिकैंभीपूज्यहोवेहै ॥ या-तेंअज्ञानीपुरुषआपनेशुद्धरूपकूं नजानकरि आपनेअज्ञानकरिकैंही पुनःपुनःजन्ममृत्युकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ज्ञानीतौशुद्धसच्चिदानंदब्रह्मकूंआप-नास्वरूपजानकरि पुनःजन्ममृत्युकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ जाब्रह्मस्वरूपकूं ज्ञानीप्राप्तहोवेहै हेश्वेतकेतो तत्त्वमसि ॥ अर्थयह ॥ सोब्रह्मतुमारा आपनास्वरूपहै ॥ ताकूंजानकरि कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवो ॥ श्रुति भगवती सर्वमुमुक्षुजनोंकूंकहेहै ॥ भोमुमुक्षवःऐसेउपदेशकूंपिताउद्दा-

लकसे श्वेतकेतुने श्रवणकरा ॥ औरब्रह्मस्वरूपकूंजानकरि प्रारब्ध कूंभोगकरि क्षयकरताहूआ विदेहकैवल्यकूं प्राप्तभया ॥ ऐसीऐसीअनेककथाद्वारा श्रुतिभगवती सर्वमुमुक्षुजनोंकेमोक्षवासते ब्रह्मका आत्मरूपसे उपदेशकरेहै ॥ यातेंमुमुक्षुजनोंकूं ब्रह्मकेआत्मरूपसेनिश्चयवासते आत्माकेहीश्रवणमनननिदिध्यासनकर्त्तव्यहैं ॥ अबप्रसंगसे श्रवण आदिकोंकूंकहेहैं ॥ श्रवणदोप्रकारकाहै ॥ एकसाधारणश्रवणहै द्वितीयअसाधारणश्रवणहै ॥ साधारणकथाआदिकोंकाश्रवण तथामहात्मा संतजनोंकेवचनोंकाश्रवण याकूंसाधारणश्रवणजानना ॥ औरषड्विधलिंगोंसें वेदांतोंकाअद्वितीयब्रह्ममैं तात्पर्यनिश्चयकरणा यहद्वितीय असाधारणश्रवणहै ॥ अबवेदांतोंकेतात्पर्यकेग्राहक षड्विधलिंगोंकूंकहेहैं ॥ उपक्रमउपसंहार १ ॥ अभ्यास २ ॥ अपूर्वता ३ ॥ फल ४ ॥ अर्थवाद ५ ॥ उपपत्ति ६ ॥ तिनषट्के नामोंकूंकहिकरि अबतिनएकएककूंकहेहैं ॥ उपक्रमनामआरंभकाहै उपसंहारनामसमाप्तिकाहै आदिअंतमें अद्वितीयब्रह्मके कथनकानाम उपक्रमउपसंहार यहप्रथमलिंगहैं ॥ छांदोग्यउपनिषद्के या षष्ठप्रपाठककेआरंभमें यहश्रुतिवचनहै सदेवसोम्येदमग्र आसीत् एकमेवाऽद्वितीयम् ॥ अर्थयह ॥ हेसौम्य यहसर्वजगत् उत्पत्तिसेप्रथम सत्स्वरूप हीहोताभया ॥ सोसत्ब्रह्म सजातीय स्वगत विजातीय भेदत्रयसेरहितहै ॥ प्रसंगसमाप्तिमेंयहश्रुतिवचनहै ॥ ऐतदात्म्यमिदंसर्वं ॥ अर्थ यह ॥ इदंसर्वंनाम यहसर्वजगत् ऐतदात्म्यंनाम याआत्माकाहीस्वरूपहै ॥ आदिअंतमेंएकअर्थकाबोधकहोनेसे उपक्रमउपसंहारएकहीलिंगहै ॥ अबद्वितीयअभ्यासनामकलिंगकानिरूपणकरेहैं ॥ सत्अद्वितीयब्रह्मके वारंवारकथनकानामअभ्यासहै ॥ याछांदोग्यकेषष्ठप्रपाठकमेंही यहश्रुतिवचननववारकहाहै ॥ तत्सत्यंसआत्मातत्त्वमसिश्वेतकेतो ॥ यानववारपठितश्रुतिका अर्थयहहै ॥ तत्सत्यंनाम सोब्रह्म

सत्यहै ॥ सआत्मानामसाक्षीआत्मारूपहीब्रह्महै ॥ श्वेतकेतुकहेहैमे रेकूंक्या ॥ तबताश्वेतकेतुकूं पिताउद्दालककहेहैं ॥ हेश्वेतकेतो तत्त्वमसिसोशुद्धब्रह्मस्वरूप सजातीय स्वगतविजातीयभेदत्रयरहित तुमाराआत्माहै ॥ अबतृतीयलिंगअपूर्वताकूंकहेहैं ॥ अद्वितीयब्रह्ममें उपनिषत्प्रमाणसेविना अन्यप्रत्यक्षादिप्रमाणोंके अविषयत्वप्रतिपादनकानाम अपूर्वताहै ॥ याछांदोग्यके षष्ठप्रपाठकमैंही अपूर्वताप्रतिपादकयहश्रुतिवचनहै ॥ अत्रवावकिलसत्सोम्यननिभालयसे ॥ अर्थयह ॥ हेश्वेतकेतो ॥ अत्रवावनाम यादेहमेंही सत्सोम्यननिभालयसेनाम सत्स्वरूपब्रह्मस्थितहै ताकूंतुमनहींजानते ॥ किलपदआचार्यकेमहावाक्यउपदेशरूपउपायकूं ब्रह्मप्राप्तिमेंद्वाररूपसेकहेहै ॥ अबचतुर्थ फलरूपलिंगकूंकहेहैं ॥ अद्वितीयब्रह्मकेज्ञानसे ता अद्वितीयब्रह्मकी प्राप्तिरूपफलकेकथनकानामफललिंगहै ॥ ताफलमें याछांदोग्यउपनिषत्के षष्ठअध्यायकीश्रुतिकहेहैं॥तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये।।अर्थयह ।।तस्यतावदेवचिरंनाम ताज्ञानीकूंविदेहमें तावत्काल विलंबहै।।यावन्नविमोक्ष्ये नाम यावत्काल प्रारब्धसेरहितनहींहोता ।।अथनाम भोगकरिप्रारब्धकेनिवृत्तहूए संपत्स्येनामविदेहकैवल्यकूंप्राप्तहोवेहै अबपंचमअर्थवादरूपलिंगकूंकहेहैं।अद्वितीयब्रह्मकेज्ञानकी स्तुतिकरणेकानामअर्थवादहै।याछांदोग्यकेषष्ठअध्यायमेंही यहश्रुतिवचनहै॥येनाऽश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातंविज्ञातमिति॥अर्थयह॥ येनाऽश्रुतंश्रुतंभवतिनाम जाएकब्रह्मकेश्रवणकरणेसे नहींश्रवणकराभी पदार्थ श्रवणहोइजावैहै॥अमतंमतंनाम नहींमननकराभी मननहोइजावे॥ अविज्ञातंविज्ञातमितिनाम अनिश्चितपदार्थभी निश्चितहोइजावे ॥ऐसे अद्वितीयब्रह्मके श्रवणमनननिदिध्यासनकरणेसे अन्यअश्रुतअमतअविज्ञातपदार्थके श्रवणादिरूपसेस्तुतिकथनकरीहै ॥ अबषष्ठउपपत्तिरूप लिंगकानिरूपणकरेहैं ॥ अद्वितीयब्रह्मका दृष्टांतरूपयुक्तियोंसे वारंवार

प्रतिपादनकानाम उपपत्तिहै ॥ ताउपपत्तिकेप्रतिपादक छांदोग्यश्रुतिके याषष्ठअध्यायकेवाक्यकूंकहेहैं ॥ वाचाऽऽरंभणं विकारोनामधेयंमृत्तिकेत्येवसत्यम् ॥ अर्थयह ॥ वाचाऽऽरंभणंविकारःनाम वाणीकरि उच्चारणमात्रही घटादिविकारहैं ॥ नामधेयंनाम जिससेघटादिनाम मात्रहै यातें मिथ्याहीहै ॥ मृत्तिकेत्येवसत्यंनाम कारणरूपमृत्तिकाही सत्यहै ॥ ऐसेछांदोग्यविषे उद्दालकऋषिने मृत्तिकास्वर्णलोहादिकोंके दृष्टांतोंसे कारणब्रह्मकूं अद्वितीयताप्रतिपादनकरीहै ॥ इसप्रकारके षड्विधलिंगोंसे अद्वितीयब्रह्ममें वेदांतोंकेतात्पर्यकेनिश्चयकानामश्रवणहै ॥ वेदांतब्रह्मकेप्रतिपादकहैं वाअन्यकिसीअर्थकेप्रतिपादकहैं याप्रकारकी असंभावना याश्रवणसे निवृत्तहोवेहै॥ अबमननकूंकहेहैं ॥ भेदबाधकयुक्तियोंसे अद्वितीयब्रह्मकेचिंतनकानाममननहै ॥ युक्तियहहैं ॥ जीव ईश्वरकास्वाभाविकभेदहै वाऔपाधिकभेदहै ॥ स्वाभाविकभेदमानेसाक्षीरूपजीवचेतनसेईश्वरकूंभिन्नमाने तौईश्वरमेंजडताकीप्राप्तिहोवेगी॥ ईश्वरकूंचेतनरूपश्रुतिकहेहै ॥ श्रुतिसेविरोधहोवेगा ॥ चेतनरूपईश्वरसे जीवकूंभिन्नमाने तौएकहीचेतनहै चेतनभिन्नजड़होवेहै ॥ यातेंजीवमें जड़ताकीप्राप्तिहोवेगी ॥ ऐसेस्वाभाविकभेदनहीं ॥ उपाधिकरिकेभेद मानेतौ अंतःकरणउपाधितौ सुषुप्तिमेंरहेनहीं यातेंसुषुप्तिमेंजीवईश्वरके भेदकालोपहोवेगा ॥ जबीअज्ञानउपाधिमानेतौबनेनहीं ॥ काहेते अज्ञानशुद्धब्रह्मसे ईश्वरकेभेदकासाधकहै जीवईश्वरकेभेदकासाधकनहीं॥ जबीमानेतौभी जीवईश्वरकेभेदकूं अज्ञानउत्पन्नकरेहै वाप्रकाशकहै वा स्थितकरेहै ॥ जीवईश्वरकेभेदकूं अनादिमाननेसे प्रथमपक्षअसंगतहै ॥ अज्ञानकूं जड़होनेसे द्वितीयपक्षबनेनहीं ॥ तृतीयपक्षमेंयहदोषहै ॥ प्रयोजनविनातौ अज्ञानभेदकूं स्थितकरेनहीं औरआश्रयविषयलाभसे विना अज्ञानकाऔरप्रयोजनकह्याजावेनहीं ॥ आश्रयविषयतौनिर्विभागचेतनहीबनेहै ॥ भेदकूंअज्ञाननेस्थितकरणानिष्फलहै इत्यादियुक्ति

चिंतनरूपमननसे भेदकीनिवृत्तिहोवेहै॥तैलधारावत् ब्रह्माकारवृत्तिरूप-निदिध्यासनसे अखंडब्रह्मकेज्ञानद्वारा मोक्षप्राप्तहोवेहै ॥ॐशांतिःशांतिः शांतिः ॥ ॥ इतिछांदोग्येषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ ॐनमोभग-वतेसूर्याय ॥ पूर्वषष्ठअध्यायविषेसाक्षात्ब्रह्मकानिरूपणकराहै ॥ अब सप्तमअध्यायविषे नामादिद्वारा ब्रह्मकापरंपरासे उपदेशकरेहैं ॥ एक कालमेंनारदमुनि संसारकेतापोंकारितप्तहुआ एकांतदेशमेंस्थितसनत्कु-मारऋषिकी शरणकूंप्राप्तभया ॥ औरकहताभया ॥ हेभगवन् ! आप ब्रह्मात्माकूं भलीप्रकारजानतेहो ॥ ताब्रह्मकामेरेकूंउपदेशकरो ॥ सन-त्कुमारकहेहैं ॥ हेनारद! आपजितनीविद्या जानतेहैं सासंपूर्ण हमरेकूं श्रवणकरावो ॥ पश्चात् तुमारेतांई हमब्रह्मकाउपदेशकरेंगे ॥ नारदउ-वाच ॥ हेभगवन् ! ऋक् यजुस् साम अथर्व इनचारोंवेदोंकूं मैंपिताब्र-ह्माजीकीकृपासेजानताहूं ॥ तथाभारतरूप पंचमवेदकूं पुराणोंकूं व्या-करणकूं मैंजानताहूं ॥ श्राद्धादिकपितृकर्मकेकहनेहारे पित्र्यनामक शास्त्रकूंमैंजानताहूं ॥ तथागणितशास्त्र तथाउपद्रवकाबोधकशास्त्र तथा स्वर्णादिधनदावेहुएका जाशास्त्रसेज्ञानहोवेहै ताकूंमैंजानताहूं॥तर्कशास्त्र नाम न्यायशास्त्रकूंतथानीतिशास्त्रकूं तथानिरुक्तअंगकूं तथाशिक्षाकूं त-थाकल्पकूं मैंजानताहूं॥तथावैद्यकआयुर्वेदकूं तथाअस्त्रशस्त्रादिकोंकूंकह नेहारे धनुर्वेदकूंमैंजानताहूं ॥तथाज्योतिषनामकअंगकूं तथागारुडविद्या-कूं तथागीतविद्याकूं मैंजानताहूं॥हेभगवन्!सर्वविद्यावोंका साक्षात्और परंपरासेअद्वैतब्रह्ममेंहीतात्पर्यहै ॥ ताब्रह्मकूंमैंजानतानहीं यातेंमैंतिनवि-द्यावोंके पाठमात्रकूं जानताहूं ॥ अर्थसेनहींजानता॥हेभगवन्!आपसह-शब्रह्मवेत्तामहात्मावोंसे मैंयहश्रवणकरताभया॥ तरतिशोकमात्मवित्॥ अर्थयह जोआत्मवेत्तापुरुष शोकरूपसर्वसंसारकूं कारणसहितनिवृत्त करेहै ॥ भगवन् मैंतोमहान्शोककूंप्राप्तहूं ॥ जैसेयुवाअवस्थावाली तथाछोटेबालकोंवालीपतिव्रतास्त्रीका पतिमृतहोइजावे ॥ तबीसाप-

तिव्रताकी महान्‌शोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसेआत्मज्ञानसेरहित मैंनारद महान्‌शोककूं प्राप्तहोइरहाहूं ॥ यातें मेरेकूंशोकसमुद्रसे आपकृपाकरिपारकरो ॥ याप्रकारकेनारदकेवचनोंकूंश्रवणकरि स्थूलअरुंधतीन्यायकरिके आत्माकेबोधनवासते सनत्कुमारऋषि याप्रकारकावचनकहताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद जिनवेदादिकोंकूं तुमजानतेहो तेसर्वनाममात्रहीहैं ॥ ऋग्वेदादि तथाइतिहास पुराण व्याकरणादिषट्‌अंग तथापित्र्यशास्त्रादि तुमनेजेप्रथमनिरूपणकरेहैं ॥ तेसर्वहीनामस्वरूपहैं यातें हेनारद नामकूंब्रह्मरूपजानकरि उपासनकरो ॥ जैसे शालिग्रामविषेविष्णुकाध्यान नर्मदेश्वरमेंशिवकाध्यान शास्त्रकी आज्ञामानिकैहोवेहै ॥ तैसेनामविषे ब्रह्मकाध्यानशास्त्रकहेहै ॥ नामके ब्रह्मरूपसेउपासनाका फलकहेहैं ॥ जापदार्थकानामसेउच्चारणहोवेहै ॥ तासर्वलोकआदिकोंमें नामकूंब्रह्मरूपसेउपासनकरणेवालेका राजाकीन्यांईस्वतंत्रगमनहोवेहै ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन्‌ नामसेअधिकभी कोईपदार्थहै ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ यानामसे नामकाहेतुवाक्‌अधिक है ॥ जैसेदोविभीतकानाम बहेडे तथादोबदरीफल मुष्टिकेअंतर्गतहोवेहैं ॥ तैसेबाणीमनमेंस्थितहै ॥ वाणीसेमनव्यापकहैयहभावहै ॥ मनकीइच्छाविना वाणीसेशब्दउच्चारणहोवेनहीं ॥ ऐसेनामकीन्यांई वाग्‌आदिकोंकीउपासनावोंकेफलभी सर्वलोकोंमें स्वतंत्रगमनादिकजानलेने ॥ ऐसेहीनारदकेअधिकताप्रश्न औरसनत्कुमारकेउत्तर जाननेयोग्य हैं ॥ तावाक्‌से वाक्‌काप्रेरकइच्छारूपमनअधिकहै ॥ तामनसेकर्त्तव्यअकर्त्तव्यकूं पृथक्‌पृथक्‌जाननेहारी इच्छाकीहेतु संकल्परूपअंतःकरणकीवृत्तिअधिकहै ॥ संकल्पसेसंकल्पकाहेतुस्मरणरूपचित्तअधिक है ॥ वृत्तियोंकाप्रवाहचिंतारूपध्यान ताचित्तसेअधिकहै ॥ ध्यानभी ताकाहोवेहै जाकाविशेषज्ञानहोवे यातेंताध्यानसे विशेषज्ञानरूपविज्ञानअधिकहै ॥ विशेषज्ञानवालेबहुतपुरुषोंकूंभी एकबलवालापुरुषकं-

पायमानकरेहै यातें ताविज्ञानसेबलअधिकहै ॥ बलसेबलकाहेतुअन्न अधिकहै ॥ पृथिवीरूपअन्नकाहेतुजलहैं तेजल अन्नसेअधिकहैं ॥ जलोंसे तिनकाहेतुतेज अधिकहै॥ तेजसे आकाशअधिकहै ॥ ईहांतेज तथावायु इनदोनोंकूं जलरूपवृष्टिकाकारणहोनेसे तेजशब्दकरिके तेजका तथावायुका इनदोनोंकाग्रहणकरणा ॥ आकाशसेअध्यास-काहेतु स्मरणअधिकहै स्मरणविना आकाशकासत्वसिद्धहोवेनहीं ॥ यातेंआकाशसेस्मरणअधिकहै ॥ आशाकरिकैही पुरुष मंत्रोंकूं स्मर-णकरेहै तथापुत्रपशुआदिकोंकीइच्छाकरेहै ॥ यातेंस्मरणसेआशाअ-धिकहै ॥ प्राणविनाआशाहोवेनहीं यातेंताआशासेप्राणअधिकहै ॥ हेनारद जैसेरथकीनाभिमेंअरांस्थितहोवेहैं ॥ तैसेसमष्टिव्यष्टिरूपप्राणों-विषे यहस्थूलसर्वजगत्स्थितहै ॥ प्राणआपनीस्वतंत्रताकरिकैही गम-नकरेहै ॥ दातापुरुषरूपप्राणही गोरूपप्राणकूंदानकरेहै तथादानलेने-वाला ब्राह्मणादिभी प्राणहै ॥ प्राणही पिता माता भगिनी आचार्यब्राह्म-णादिरूपहै ॥ हेनारद प्राणादियुक्तपिताआदिकोंकूं जोपुत्रादि तूंशब्दक-रिकेउच्चारणकरेहै ॥ ताकूंबुद्धिमान् दूसरेपुरुषकहेहैं ॥ तुमने तूंशब्द-करिकैपितामातादिकोंकूं जोउच्चारणकराहै ॥ सोतुमने पितामाताआ-दिकोंकावधकराहै ॥ यातेंतुमहत्यारेकूं धिक्कारहै ॥ जबीतिनपिताआ-दिकोंके प्राण शरीरसेनिकसजावैं ॥ तबअग्निविषे तीक्ष्णकाष्ठकरि वेध-नकरतेहुएपुत्रादिकोंकूं ब्रह्महत्याराकहेनहीं ॥ यातेंजोपुरुषप्राणकूं सर्व-रूपजानताहै सोपुरुषप्राणकेस्वरूपसर्वरूपकूं जानताहुआ मुख्यअति-वादीहोवैहै ॥ जैसेकोईपुरुष किसीदूसरेपुरुषकूंकहे मैंतेरापिताहूं ताकूं बुद्धिमान्कहेहैं ॥ तूं मर्यादाकात्यागकरियहवचनकहताहै ॥ परंतुसो गौणअतिवादीकहीयेहै ॥ काहेतेंआचार्यतेरामैंहूं यहतौनहींकहा ॥ जोपुरुषप्राणकूं आपनेआत्मारूपसेजानताहै सोमुख्यअतिवादीहै ॥ प्राणही पितामातादिसर्वरूपसेवर्त्तमानहै यातें सोप्राणवेत्ताहीमुख्यअति-

वादीहै ॥ ताप्राणकेस्वरूपकूं आत्मरूपसे जाननेवाले पुरुषकूं जबी कोईपुरुष कहेतूंअतिवादीनहीं तबसोऐसेनहींकहे मैंअतिवादीनहीं ॥ मैंअतिवादीहूं यहहीवचनकहे॥ऐसेप्राणकेमाहात्म्यकूंश्रवणकरि प्राणकूं-हीपरमतत्त्वजानताहुआ याप्राणसेभीकोईअधिकहै याप्रकारकेप्रश्नकूंना-रदनेकरताभया ॥ ऐसेमिथ्याप्राणकेस्वरूपकूंआत्मरूपसे जाननेवालाजो नारदहै ताकूं कृपालुस्वभाव भगवान् सनत्कुमारकहतेभये॥ हेनारद प्राणा-त्मवादीपुरुषमुख्यअतिवादीनहीं किंतुप्राणसेअधिकसत्यब्रह्महै जोसत्यब्र-ह्मकूंआपनाआत्मरूपकरिजाननेहाराहै सोईअतिवादीहै॥ऐसेवचनकूंश्र-वणकरिकै नारदकहेहै ।हेभगवन् मैंसत्यब्रह्मकेजाननेकी इच्छाकरताहूं॥ यातेंसत्यब्रह्मकाही मेरेतांईउपदेशकरो ॥ तासत्यब्रह्मकेज्ञानकरिही मैंअतिवादीहोवोंगा ॥ याप्रकारकेवचनकूं श्रवणकरिसनत्कुमारकहेहैं ॥ हेनारद जोपुरुषसत्यब्रह्मकूंजानताहै सोईपुरुषस्पष्टरूपसे ब्रह्मकूंकथनक-रेहै ॥स्पष्टकथनब्रह्मकेप्रत्यक्षकरेविनाहोवेनहीं ॥ यातेंयथार्थप्रत्यक्षरूप विज्ञानही तेरेकूंज्ञातव्यहै ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन् मैंविज्ञानकेजा-ननेकीइच्छाकरताहूं ॥ ऐसेनारदकेप्रश्नमननादिपंचपदार्थोंविषे औरभी जानलेने ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद युक्तिचिंतनरूपमननसेविना विज्ञानहोवेनहीं ॥ यातेंमननतुमारेकूंज्ञातव्यहै ॥ तथागुरुशास्त्रकेवच-नोंविषे विश्वासरूपश्रद्धाविना मननकेनहोनेसे श्रद्धाहीतुमारेकूंज्ञातव्यहै॥ ताश्रद्धाकीहेतु गुरुसेवाआदिरूपनिष्ठासेविना श्रद्धाहोवेनहीं ॥ यातेंसा निष्ठाहीज्ञातव्यहै ॥ इंद्रियसंयम तथाचित्तकीशुद्धिपूर्वकएकाग्रतारूप-जाकृतिहै ॥ ऐसीकृतिकूं निष्ठाकाकारणहोनेसे साकृतिज्ञातव्यहै ॥ इंद्रियसंयमादिरूपकृतिभी सुखप्राप्तिकीइच्छाविनाहोवेनहीं ॥ यातेंता-कृतिकेकारणसुखकेजाननेकीइच्छाकूंकरो ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन् मैंसुखकेजाननेकीइच्छाकरताहूं तासुखकाहीमेरेतांई निरूपणकरो ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद ॥ योवैभूमातत्सुखंनाऽल्पेसुखमस्ति ॥

अर्थयह ॥ त्रिविधपरिच्छेदशून्यजोभूमपदार्थब्रह्महै सोब्रह्महीसुखरूप है ॥ अल्पनामपरिच्छिन्ननामरूपजगत्में कदाचित् सुखनहीं ॥ अज्ञानीमूढोंकूं ब्रह्मानंदप्राप्तिसेविना स्त्रीआदिकविषयोंविषे सुखभ्रांतिहोइरहीहै ॥ नारदकहेहै हेभगवन् सुखस्वरूपभूमाब्रह्मकूं मैंजान्याचाहताहूं॥ यातेंमेरेतांई आपभूमाकाउपदेशकरो ॥ भूमाकिसकूंकहेहैं ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद भूमाकालक्षणयहहै ॥ जापदार्थकेबुद्धिमें निश्चयहुए ज्ञानीपुरुष आपनेसेभिन्नकिसीपदार्थकूं नेत्रोंसेदेखेनहीं ॥ तथा आपनेसेभिन्नकिसीपदार्थकूं श्रोत्रसेश्रवणकरेनहीं ॥ तथाआपनेसेभिन्न किसीपदार्थकूं मनकरिकेजानेनहीं तापरिच्छेदरहितब्रह्मकूं भूमाकहेहैं॥ जापदार्थकूं अज्ञानकालमें आपनेसेभिन्न नेत्रोंसेदेखेहै ॥ तथाआपनेसे भिन्नपदार्थकूंश्रवणकरेहै ॥ तथाआपनेसेभिन्न पदार्थकूंमनकरिकेजाने है ॥ तापरिच्छिन्नपदार्थकूं अल्पकहेहैं ॥ हेनारद जोभूमाहै सोईअमरणधर्माहोनेसे अमृतहै ॥ जोअल्पहै सोमरणधर्माहै ॥ नारदउवाच ॥ सभगवःकस्मिन्प्रतिष्ठितः ॥ अर्थयह ॥ हेभगवन् सोभूमाकहांरहेहै ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद व्यवहारदृष्टिकरिकै तुमभूमाकाआश्रयपूछतेहो ॥ वा परमार्थदृष्टिकरिकैआधारपूछतेहो ॥ प्रथमपक्षमेंउत्तरयह है ॥ स्वेमहिम्नि ॥ अर्थयह ॥ जैसेंदेवदत्तनामकपुरुष पशुस्वर्णदासभार्यागृहक्षेत्रादिरूपआपनीविभूतिकेआश्रयहोइकरि स्थितप्रतीतहोवेहै तैसे माया औरमायाकाकार्यरूप आपने महिमाविषे भूमास्थितहै ॥ द्वितीयपरमार्थपक्षमें उत्तरयहहै यदिवानमहिम्नीति ॥ अर्थयह सोभूमा॥ वास्तवसेआपनेमहिमाविषेभीरहेनहीं ॥ काहेतें गो अश्व हस्ति स्वर्ण दास भार्या क्षेत्र गृहइत्यादिविभूतिरूपदेवदत्तकेमहिमाविषें जैसेंदेवदत्त स्थितहोवेहै ॥ तैसेभूमाब्रह्म वास्तवसे कहींस्थितहोवेनहीं ॥ घटादिकोंसेभिन्नभूतलादिकही तिनघटादिकोंकेआधारबनेहैं ॥ सर्वरूप तथा सर्वमेंव्यापक भूमाका कोईआधारबनेनहीं ॥ हेनारद ॥ सोभूमाहीनी-

चेहै ॥ सोभूमाहीउपरिहै सोभूमाही पश्चिम पूर्व उत्तर दक्षिणादिदिशावोंमें व्यापकहै ॥ तथाभूत भविष्यत् वर्तमानकालमें व्यापकहै ॥ देश कालवस्तुसर्वही ताभूमासेपृथक्नहींहैं ॥ सोभूमाही प्रत्यगात्मस्वरूपहै॥ यातेंप्रत्यगात्मरूपसे अबभूमाकूंवर्णनकरेहैं ॥ मैंहीनीचेहूं मैंहीउपरिहूं॥ मैंपूर्वआदिसर्वदिशावोंमें तथाभूतादिसर्वकालोंमें व्यापकहूं ॥ सर्वदेश सर्वकाल सर्ववस्तुरूपमैंहूं मेरेसेकिंचित्भिन्ननहींहै ॥ अहंशब्दकाअर्थ तौ यहशरीरभीहै याशरीरकूंसर्वरूपताकहनीविरुद्धहै ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते आत्माहीसर्वदेशकालादिरूपहै यहश्रुतिभगवतीकहेहै ॥ याजडपरिच्छिन्नशरीरमेंतौसर्वरूपताबनेनहीं ॥ यातेंभिन्नहीआत्माहै ॥ अबआत्मज्ञानकेफल जीवन्मुक्तिकूं तथाविदेहमुक्तिकूंकहेहैं ॥ जोपुरुष गुरुशास्त्रउपदेशसे संशयविपर्ययसेविना आपनेरूपकूं यथार्थजानताहै ॥ सोविद्वान् जीवन्मुक्त आत्मरतिहै ॥ अर्थयह ॥ जैसेकामीपुरुषविदेशमेंप्राप्तहुवाभी रतिआपनीस्त्रीमेंराखेहै ॥ तैसेजीवन्मुक्त आत्मामेंरतिवाळाहै ॥ जैसे बालक दूसरेबालकोंसेक्रीडाकरेहै ॥ तैसेविद्वान् वेदांतके चिंतनकालमें आनंदरूपआत्माविषेही क्रीडाकरेहै ॥ जीवन्मुक्तपुरुषकी दोअवस्थाहैं ॥ एकव्युत्थान दूसरीसमाधि ॥ व्युत्थानकालमें वेदांतकूं चिंतन करताविद्वान् आत्मक्रीडः यानामवालाहोवेहै ॥ स्नानभोजनादिकालविषे आत्मचिंतनकरणेवालेविद्वान्कूं आत्मरतिकहेहैं ॥ समाधि दोप्रकारकीहै एकसविकल्पसमाधिहै द्वितीयनिर्विकल्पसमाधिहै ॥ जैसेएकांतमें मिथुनभावकूंप्राप्तहुए स्त्रीपुरुषआनंदकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तैसे ध्याताध्येयकरिसहित जोसविकल्प समाधिहै तासमाधिविषेविद्वान् आनंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताविद्वान्कूं आत्ममिथुनकहेहैं ॥ हेनारद त्रिपुटीरहितनिर्विकल्पसमाधिविषे निर्विकल्पब्रह्मानंदकूंप्राप्तभया जोविद्वान् है ताकूंआत्मानंदयानामकरिकेकहेहैं ॥ अबविदेहमुक्तिकूंकहेहैं ॥ हेनारद ऐसेवर्त्तमानजोज्ञानीहै सोप्रारब्धकूं भोगकरिकेक्षयकरताहुआ

शरीरकेनाशहोनेसे ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ किसीकेवशहोवेनहीं ॥ तथापरिच्छिन्नपदार्थोंविषे इच्छाकूंकरेनहीं ॥ ऐसेभूमाविद्याकेफलकूं कहकरि आत्मज्ञानरहितपुरुषोंकूं अनर्थप्राप्तिकहेहैं ॥ जेपुरुषभूमाब्रह्मकूं आत्मरूपसेजानेनहीं तेसर्वदापरवशहुए नाशवान्लोकोंकूं प्राप्त होवेहैं ॥ तिनपुरुषोंका आपनीइच्छाअनुसार सर्वलोकोंविषेगमनहोवे नहीं ॥ हेनारद जाविद्वान्ने तत्पदार्थरूपभूमाकूं अपनास्वरूपजानाहै ॥ ताविद्वान्सेही नामादिप्राणपर्यंतपंचदशतत्त्व उत्पन्नहोवेहैं ॥ ताविद्वान्सेही स्वर्गादिफलसहितकर्म तथाऋगादिवेदउत्पन्नहोवेहैं ॥ भूमाकूं विद्वान्जानताहुआ मृत्युकूं तथारोगकूं तथारोगादिनिमित्तकदुःखोंकूं देखतानहीं ॥ सर्वभावकूंप्राप्तहुआ सर्वप्रपंचकूं आपनेविषेकल्पितदेखेहै ॥ कल्पितरूपसेजान्याहुआपदार्थ इंद्रजालकेसर्पकीन्यांई दुःखदाताहोवेनहीं ॥ हेनारद ज्ञानी तेजजलपृथिवीरूपसे त्रिधाहोवेहै ॥ आकाशादिरूपसे पंचधानामपंचप्रकारकाहोवेहै ॥ भूरादिसप्तलोकरूपसे सप्तप्रकारकाहोवेहै ॥ सूर्यादिनवग्रहरूपसेनवप्रकारकाहोवेहै ॥ मनसहितदशइंद्रियरूपसे एकादशप्रकारकाहोवेहै ॥ मनसहितदशइंद्रियोंको दशदशवृत्तियोंवालाहोनेसे सोविद्वान् दशउपरिएकशत ११० प्रकारकाहोवेहै ॥ दिनरात्रिविषे इकीसहजारषट्शत २१६०० श्वासप्रश्वासचलेहैं ॥ तिनश्वासप्रश्वासवायुकरि उच्चारणकरेजेहंसमंत्र तिनमंत्रोंकरि इकीससहस्रषट्शतप्रकारका सोविद्वान्होवेहै ॥ उपाधिभेदकरि ताविद्वान्केएतेभेदहैं ॥ वास्तवसेतौएकअद्वितीयब्रह्महै ॥ हेनारद चित्तकी शुद्धिविना आत्मज्ञानहोवेनहीं ॥ यातेंमुमुक्षुपुरुषने चित्तशुद्धि अवश्यसंपादनकरणी ॥ चित्तशुद्धि आहारकीशुद्धिविनाहोवेनहीं ॥ आपनेवर्णाश्रमकेअनुसार अन्नजलादिकोंकेग्रहणकानाम आहारहै ॥ ताकीशुद्धियहहै जोरागद्वेषसेरहितअन्नजलादिकोंकाग्रहणहै ॥ तथा पापबुद्धिसेरहित जोअन्नादिकोंकासंपादनहै ॥ याप्रकारकीआहारशु-

द्धिविना तथारागादिकोंसेरहित जोशब्दादिकोंकाग्रहणरूप आहारशुद्धि ताआहारशुद्धिविना चित्तशुद्धहोवेनहीं ॥ जबीचित्तशुद्धहोवेहै तबभूमारूपब्रह्मकी निश्चलस्मृतिहोवेहै ॥ जाकूंभूमाब्रह्मकी अचलस्मृति भयीहै ॥ सोविद्वान् ब्रह्मज्ञानकरिके काम कर्म अध्यास संशयादि सर्वग्रंथीयोंकू निवृत्तकरेहै ॥ इसरीतिसे रागद्वेषादिदोषरहित अंतःकरणवालेनारदकूं भगवान्सनत्कुमारअज्ञानसेरहित शुद्धब्रह्मकाप्रत्यक्ष करातेभये ॥ तासनत्कुमारकूं स्कंदतथास्वामिकार्तिकेयभीकहेहैं ॥ स्वामिकार्तिकेयनाममें निमित्तकूंप्रसंगसेकहेहैं ॥ एककालमें काशीविषे भवानीसहित महादेव गंगातीरमेंआतेभये ॥ तामहादेवकूं देखकरि सर्व ऋषि उठकरिनमस्कारकरतेहुए नानाप्रकारकीस्तुतिकरतेभये ॥ महादेवभी तिनकीइच्छाअनुसारवरदेतेभये ॥ परंतु सनत्कुमारऋषि ध्यानमें स्थितहुए अभ्युत्थानकर्मकूंनकरतेभये तथानमस्कारकूंनकरतेभये ॥ महादेवतौ सनत्कुमारकूं परब्रह्मवित् जानकरि आनंदकूंप्राप्तभये ॥ परंतु भवानी महादेवकातिरस्कारजानतीहुई सनत्कुमारकूं शापदेतीभयी ॥ हेसनत्कुमार जगत्केकर्त्ताहर्त्ता परमेश्वरस्वरूपमेरेपतिका तुमनेतिरस्कारकराहै ॥ यातेंदुःखकूंप्राप्तहोनेहारा जोअश्वोंकापालकहै ॥ ताके जन्मकूं तुमप्राप्तहोवो ॥ पार्वतीकूंमहादेवने वारणभीकरा परंतु क्रुद्धहुई देवी बलात्कारसेशापदेकरि तहांसेमहादेवसहितगमनकरतीभयी॥ जबी अश्वोंकापालक सनत्कुमारभये तबकालपाइकरि भवानीसहितमहादेव सनत्कुमारकूं परमआनंदकूंप्राप्तहुआदेखा॥ भवानीनेकहा हेसनत्कुमारतुमवरमांगो सनत्कुमारयहकहतेभये॥ हेदेवी मेरेमलमूत्रकात्याग विनाक्लेशसेंहोवे मैं यहहीवरमांगताहूं॥ तबदेवीपुनःक्रोधकरिके शापदेतीभयी॥ हेसनत्कुमार तुमारेकूंउष्ट्रजन्मकीप्राप्तिहोवे ॥ तबीसनत्कुमारउष्ट्रकेजन्मकूंप्राप्तभये ॥ ताउष्ट्रनेराजाकेगृहविषे जबीकिंचित्भी शिक्षानहीं ग्रहणकरी ॥ तबीतेराजपुरुष ताउष्ट्रकूंवनमें त्यागकरिआवतेभये ॥

तावनमें करीरादिकोंकूंभक्षणकरिकै तथाश्रीगंगाजलकूंपानकीरकै सो-
उष्ट्रबहुतस्थूलताकूंजबीप्राप्तभया ॥ तबभवानीसहित महादेवपरम
आनंदकूंप्राप्तहूआदेखतेभये ॥ पार्वतीकहेहै हेसनत्कुमार मैंतुमारे-
उपरिबहूतप्रसन्नभयीहूं यातेंतुमवरमांगो ॥ सनत्कुमारकहेहैं याउष्ट्र
शरीरजैसा कोईशरीरमैंनहींजानता याशरीरविषे मैंपरमानंदकूंप्राप्त
होइरहाहूं ॥ यहहीमेरेकूंवरदेवो जोयहमेराशरीरनिवृत्तनहोवे ॥
जबीपूर्णकाम सनत्कुमारनेकोईवरनहींलीया ॥ तबीपार्वतीकहेहै तुम-
मेरेगृहमें पुत्ररूपसेउत्पन्नहोवो यहमेरेकूंहीवरदेवो ॥ सनत्कुमारनेवरदी-
या ॥ तबब्रह्मचारीरूप स्वामिकार्तिकेयहोते भये॥यातेंयासनत्कुमारकूं
स्कंदनामकरिकहेहैं ॥ ॥ इति श्रीछांदोग्येसप्तमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ७॥
ॐनमोविष्णवे ॥ पूर्वषष्ठसप्तमाध्यायमें उत्तमतथामध्यमअधिकारी-
जनोंकूं श्रुतिभगवतीने ब्रह्मउपदेशकरा ॥ अबइसअष्टमाध्यायमें मंद-
बुद्धिवालेअधिकारीजनोंकूं श्रुतिउपदेशकरेहै ॥ ब्रह्मकीप्राप्तिकेयोग्य
यास्थूलशरीरकूं ब्रह्मपुर यानामसेकथनकराहै॥ याब्रह्मपुरमें एकछोटा-
सा हृदयकमलरूपीगृहहै ॥ ताहृदयकमलमेंस्थित दहरनामसूक्ष्म
आकाशरूपब्रह्मकूं गुरुशास्त्रादिउपायसे अन्वेषणकरणाचाहिये ॥
तथातासूक्ष्मब्रह्मकाही सर्वजगत्काआश्रयरूपसे साक्षात्करणायोग्य
है ॥ आपहीश्रुति शिष्यरूपसे प्रश्नकरेहै ॥ पूर्वउक्तप्रकारसे सूक्ष्महृदय-
कमलमें स्थितजोदहरआकाशहै तादहरआकाशमें क्यावर्त्तताहै जाका
अन्वेषणकरणाचाहिये तथासाक्षात्करणाचाहिये ॥ आचार्यनेऐसे
उत्तरदेनायहश्रुतिकहेहै ॥ हेशिष्य यद्यपिअंतःकरणउपाधिवशसे दह-
रनामअल्पभीब्रह्महै तथापिवास्तवसे यादहरआकाशब्रह्मकूं बाह्यभूता-
काशकीन्यांई परिपूर्णजानो ॥ औरयादहरआकाशमेंही यहस्वर्गऔर-
पृथिवीस्थितहैं ॥ तथा अग्नि वायु सूर्य चंद्रमा विद्युत् नक्षत्र तादहर-
आकाशमेंस्थितहैं ॥ औरइसजीवकी ममताकेविषय जेपदार्थवर्त्तमानहैं

तथाजेपदार्थनष्टभयेहैं तथा जेपदार्थभविष्यत्‌मेंहोनेहारेहैं ॥ तेसर्वपदार्थ यादहरआकाशमेंस्थितहैं ॥ शिष्यकहेहैं ॥ हेगुरो जाहृदयआश्रित दहरआकाशमें पृथिवीआदिसर्वस्थितहैं ॥ तथास्थावरजंगमसर्वभूत स्थितहैं तथाकामनाकेविषयसर्वपदार्थस्थितहैं ॥ जबीयहदेह वृद्धअवस्थाकूं प्राप्तहुआनष्टहोवेहै ॥ तादेहकेनाशहोनेसे ॥ हृदयकानाशहोवेहै ॥ ताआश्रयरूपहृदयकेनाशहोनेसे दहरआकाशरूपब्रह्मकीस्थिति प्रतीतहोवेनहीं॥आचार्यकहेहैं ॥ यास्थूलशरीरकेजीर्णहोनेसे यहदहरआकाशरूपब्रह्म जीर्णहोवेनहीं ॥ शस्त्रादिकोंसे याशरीरकेनाशहोनेसेभी याआत्माकाबाह्यआकाशकीन्यांई नाशहोवेनहीं ॥ ऐसेब्रह्ममेंही सर्वजगत्‌स्थितहै ॥ हेशिष्य यहब्रह्मही तुमाराआत्माहै ॥ औरयह आत्माही धर्मअधर्मसेरहितहै ॥ विजर नामजराअवस्थासेरहितहै ॥ विमृत्युनाममृत्युसेरहितहै ॥ भोजनकीइच्छासेरहितहै यातें अविजिघत्सहै ॥ पानकरनेकीइच्छासे रहितहै यातेंअपिपासहै ॥ औरजाकी इच्छानिष्फलनहीं यातें सत्यकामकहेहै ॥ और जाआत्माका इच्छाकाजनकज्ञानरूपसंकल्प निष्फलनहींहै यातेंसत्यसंकल्पहै ॥ और या आत्माके नजाननेसे पुण्यकाजोफलहै सोविनाशी तथापराधीनतासहितही उत्पन्नहोवेहै ॥ जैसेराजाकेभृत्यआदि राजाकीआज्ञाकूं मानतेहुए देशमेंक्षेत्रभागकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ औरराजसेवाआदि कर्मकरिसंपादित जोतिनोंका कृषिआदिभोगरूपलोकहै सोलोकनाशकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेहीआत्माकेनजाननेसे अग्निहोत्रादिपुण्यकर्मोंकरिसंपादित जोपरलोकमेंभोगरूपलोकहै सोभोगरूपलोकभी इंद्रादिकोंकीआ धीनताकरिग्रस्तहै ॥ औरअंतमेंनाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरतिन अज्ञानीपुरुषोंका सर्वलोकोंमें स्वतंत्रगमनभीहोवेनहीं ॥ औरजेपुरुष आत्माकूंयथार्थजानतेहैं औरआत्मामेंही स्थितसर्वपदार्थोंकूंजानतेहैं॥तेपुरुषशरीरकूंत्यागकरि राजाकीन्यांई सर्वलोकोंमें स्वतंत्रआपनीइच्छाअनुसार प्राप्तहोवेहैं॥

औरतादहरआत्माके उपासकपुरुषकीपरलोकविषे यदिमृतभयेपितरोंके प्राप्तिकीइच्छाहोवे तौताउपासककीइच्छाअनुसार पितरप्राप्तहोवेहैं॥ तापितृलोकमें समृद्धिकूंप्राप्तहूआ उपासकमहान्‌महिमाकूं अनुभवकरेहै॥ ऐसेमाता भ्राता भगिनी सखा इनकीजबीउपासककूं इच्छा होवे तब इनकीप्राप्तिहोनेसे सोउपासकपरमआनंदकूं अनुभवकरेहै ॥ जबीसुगंधवालीपुष्पमालावोंका तथाअन्नपानका तथागाना और मृदंगादिकोंका संकल्पकरेहै तबयहसर्वपदार्थप्राप्तहोवेहैं ॥ जबीस्त्रियोंका संकल्पकरे है तबस्त्रीयोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ बहुतक्याकहैं जिसजिसपदार्थकी उपासकइच्छाकरेहै ॥ तातापदार्थकूं संकल्पमात्रसे प्राप्तहोवेहै ॥ पूर्व कहे दहरआत्माके ध्यानवासते साधनोंके अनुष्ठानकरनेकूं पुरुषोंकाउत्साह उत्पन्नहोवे याअभिप्रायसे श्रुतिभगवतीपुकारतीहुई उपदेशकरेहै ॥ भोपुरुषा जिनजिनपदार्थोंकी तुमइच्छाकरतेहो तेसर्वपदार्थ आत्मामेंही स्थितहैं॥ परंतु तुमआपनेआत्मासें बहिर्मुखहूए स्त्रीआदिविषयोंमें तृष्णावालेहो इसीवासते आत्मामेंस्थितभी सर्वपदार्थोंकूंतुमप्राप्तहोतेनहीं॥ और जिनपदार्थोंकी इच्छाकरतेहूएभी तुमप्राप्तहोतेनहीं॥ तिनसर्वपदार्थोंकूंआत्माकेध्यानकरणेहारापुरुष प्राप्तहोवेहै॥ आत्माकेअज्ञानसे आत्मामेंस्थितभी सर्वपदार्थोंकूं तुमप्राप्तहोतेनहीं॥ जैसेकिसीस्थानमें स्वर्णनिधिदाबीहोवे तानिधिकूंनजाननेहारे पुरुष तास्थानकेउपरिदिनदिनमें अनुसंचरण करेहैं ॥ परंतुअज्ञानसे प्राप्तभीनिधिकूंभी प्राप्त होवेनहीं ॥ तैसेतुमदिनदिनमें सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राप्तब्रह्मानंदकूंभी प्राप्तहोतेनहीं बडाकष्टहै ॥ जोबाह्यविषयोंकी तृष्णाकूंदूरकरिकेध्यानकरिअंतरआत्माकूं प्राप्तहोना आपनेअधीनभीहै ॥ तुमनेतौताआत्माकी उपेक्षाहीकरीहै ॥ और यहआत्मा हृदयदेशमेंस्थितहै याअर्थमेंतुमने संशयकरणानहीं काहेते हृदययाशब्दकाअर्थयहहै ॥ हृदि अयम् हृदयम् ॥ अर्थयह ॥ हृदयकमलमें यहआत्मावर्त्तमानहै यातेंही याहृदयकमलकूं हृदयकहेहैं ॥

जोपुरुष याहृदयदेशमें स्थित दहरब्रह्मकूं जानताहै ॥ सोपुरुष दिनदिनमें ब्रह्मानंदकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे देहादिकोंमें आत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरि जास्वयंप्रकाशब्रह्मकूं विवेकीपुरुष आपनाआत्मरूपजानताहूआ ताब्रह्ममेंही अभेदभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ सोब्रह्मतुमाराआत्माहै ॥ औरयह ब्रह्मात्माही अमृतरूपहै तथाअभयरूपहै ॥ ताब्रह्मकाही सत्यंयहनाम है ॥ सत्यंयानाममें तीनअक्षरहैं ॥ स ती यं इनतीनोमें जोप्रथमसकार अक्षरहै सोसत्अमृतब्रह्मकावाचकहै ॥ और तनामक अक्षर मर्त्यकावाचकहै ॥ ता तकारमेंईकारउच्चारणार्थहै ॥ और यकारअक्षर करिकै सत्यनामकाउपासकपुरुष मर्त्यअमृतइनदोनोंकूं आपनेअधीन करेहै ॥ जबीसत्यब्रह्मकेनामकेध्यानकाभी ऐसामाहात्म्यहै तबसत्यनामवालेब्रह्मकेध्यानकामाहात्म्यकैसेनहोवेगा ॥ यातेंअवश्यब्रह्मका ध्यानकरणा ॥ यहआत्माहीभूरादिलोकोंकेरक्षावास्ते वर्णआश्रमादिभेदवालेजंतुमात्रका धारणकरणेहाराहै॥जैसेमृत्काष्ठमयवाह्यसेतु जलोंकाभेदकरेहै ॥ तैसेयहआत्माजंतुमात्रकेवर्णाश्रमादिभेदोंका धारणकरणेहाराहै ॥ यातेंहीसेतुकीन्यांईसेतुहै ॥ यासेतुरूपआत्माकूं दिनरात्रिपरिच्छिन्नकरिसकतेनहीं ॥ तथाजरामृत्युशोकधर्म अधर्मइत्यादिसर्वपापरूपयाआत्मासेनिवृत्तहोवेहैं ॥ जिसहेतुसे यहआत्मा अपहतपाप्मा है ॥ अर्थयह दूरभयेहैं धर्माधर्मादिरूपपापजिससे ॥ धर्मकूंपापरूपताका कथन जन्ममरणादिवालेलोकोंकाकारणहोनेसे जानना ॥ औरअंधत्वादिदोष याशरीरकाहीधर्महैं तेधर्मअध्यासकरिआत्मामेंभासतेथे देहसेभिन्नआत्माकूं प्राप्तहूआविद्वान् देहकेधर्मअंधत्वादिकोंकात्यागकरेहै ॥ शरीरआदिकोंमेंअध्यासकरणेसेही आपकूंदुःखीरोगीमानताथा अध्यासकेनिवृत्तहोनेसे आपकूंदुःखीरोगीमानेनहीं ॥ याआत्मामें दिनरात्रिहैं नहीं ॥ यातेंसर्वदाप्रकाशरूप आत्मामें रात्रिरूपतमनहीं ॥ ऐसे प्रकाशरूपआत्माकूंहीविवेकीप्राप्तहोवेहैं ॥ औरयाआत्माकीप्राप्ति ब्रह्मचर्यसे

होवेहै ॥ ब्रह्मचर्यसहितजेविद्वान्हैं तिनोंकासर्वलोकोंविषे इच्छापूर्वक विचरणाहोवेहै॥ब्रह्मचर्य करिकेहीआपनेस्वरूपकूंप्राप्तहोवेहै॥यातेंब्रह्मवेत्ता याब्रह्मचर्यकूंही यज्ञरूपकथनकरेहैं॥औरदर्शपौर्णमासादिइष्टभीयह ब्रह्मचर्यहै॥औरईश्वरकाआराधनरूपइष्टभी ब्रह्मचर्यहै ॥ जिसहेतुसेब्रह्मचर्यकरिकेही आत्माकापूजनकरताहूआविद्वान् ताआत्माकूं प्राप्तहोवे है ॥ जाकर्मकेबहुतयजमानहोवें ताकर्मकूं सत्रायणकहेहैं ॥ सोसत्रायणकर्मभीब्रह्मचर्यरूपहै ॥ काहेते ब्रह्मचर्यकरिकेही सत्यस्वरूप आपनेआत्माकी रक्षाकरेहै ॥ औरध्यानरूपमौनभी ब्रह्मचर्यहै ॥ काहेतेब्रह्मचर्यकारिकेही गुरुउपदेशसे आत्माकाश्रवणकरि पुनःमननध्यानकरेहै ॥ औरउपवासादिरूप अनाशकायनभीब्रह्मचर्यहै तिसब्रह्मचर्यकरिप्राप्तजोआत्माहै ताआत्माकानाशहोवेनहीं ॥ यातेंब्रह्मचर्यकूं अनाशकायन यानामसेकह्याहै ॥ औरवनवासकूं अरण्यायनकहेहैं ॥ अरऔरण्य इसनामवालेदोहृदोंसहित जोब्रह्मलोकहै ॥ ताब्रह्मलोककीप्राप्ति याब्रह्मचर्यसेहोवेहै यातेंहीयाब्रह्मचर्यकानामअरणायनहै ॥ ऐसेब्रह्मचर्यसहितउपासनाकरि प्राप्तहोनेयोग्य ब्रह्मलोकका निरूपणकरेहैं ॥ यालोकसेलेकरि तीसरेस्थानमेंस्थितब्रह्मलोकमें अरऔरण्ययानामवाले समुद्रकेतुल्यदोहृदहैं ॥ औरताब्रह्मलोकमें अन्नकारसरूप तथामदकेउत्पन्नकरणेहारा ऐरंमदीय यानामवालासरोवर है ॥ औरताब्रह्मलोकमें अश्वत्थवृक्षकेसदृश सोमसवन यानामवाला वृक्षहैं ॥ तासोमसवननामकवृक्षसे सर्वदाअमृतस्रवेहै ॥ औरताब्रह्मलोकमें हिरण्यगर्भकीपुरीहै ॥ सापुरी ब्रह्मचर्यादिसाधनयुक्तपुरुषोंसे भिन्नपुरुषोंकरिप्राप्तहोवेनहीं यातेंतापुरीकूं अपराजिता यानामसेकहेहैं॥ औरताब्रह्मलोकमें प्रभुहिरण्य गर्भकरिरचित स्वर्णकामंडपहै ॥ ऐसे ब्रह्मलोककूं ब्रह्मचर्यकरिही प्राप्तहोवेहैं ॥ ताब्रह्मचर्यकरिकेही इच्छापूर्वकसर्वलोकोंमें विचरणाहोवेहै ॥ अबब्रह्मचर्यसंपन्न तथाहृदयमें

स्थितब्रह्मउपासककी मूर्धन्यनाड़ीसेगतिकहनेकूं नाड़ीयोंकानिरूपण करेहैं ॥ याहृदयकमलकेसाथसंबंधवालीनाडीयां सूक्ष्मपिंगलवर्णवाले अन्नरसकरिकेपूर्णहूईस्थितहोवेहैं ॥ तथाशुक्लनीलपीतरक्तादिरूपसूक्ष्मअन्नरसकरिके नाड़ीयांभीशुक्लपीतादिरूपहूईवर्त्तेहैं ॥ औरइननाडीयोंकानीलपीतादिरूपहोनाभी नीलपीतादिरूपसूर्यके संबंधसेहैं ॥ इसअर्थकेसूचनकरणेवासते सूर्यभगवान्‌कूं पिंगल शुक्ल नील पीत लोहितरूपसे श्रुतिमेंकहाहै ॥ जैसेयालोकमें कोईमहान्‌मार्ग दोग्रामोंमें संबंधवालाहोवेहै ॥ तैसेसूर्यभगवान्‌कीरश्मीयां यापुरुषसे तथाआदित्यमंडलसेसंबंधवालीहैं याआदित्यमंडलसे रश्मीयां यासंसारमेंप्रसृतहोवेहैं ॥ औरपुरुषकीनाड़ीयोंकेसाथ संबंधवालीहोवेहैं ॥ औरयह विज्ञानमयजीव जबीसुषुप्तिअवस्थाकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ताअवस्थामें इंद्रियमनआदिकोंकेलीनहोनेसे स्वप्नादिकोंके विशेषज्ञानसेरहितहूआ ब्रह्मानंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताब्रह्मानंदकीप्राप्तिमें द्वारनाड़ीयांहैं ॥ ताब्रह्मसे अभिन्नभयेजीवकूं धर्माधर्मकासंबंधहोवेनहीं ॥ औरवृद्धअवस्थाकेप्राप्तहोनेसे निर्बलताकूं प्राप्तभयायहदेह मरणअवस्थाकेसन्मुखहोवेहै ॥ तबसंबंधीजन चारोंदिशावोंमें उसकेपासस्थितहोवेहैं ॥ औरतेसंबंधीजनयहकहेहैं ॥ तुममैं पुत्रकूंजानतेहो ॥ तुममैंपिताकूंजानतेहो ॥ जबतकतापुरुषके प्राणोंकाबहिर्गमननहींभया तबतक सोपुरुषजानेहै ॥ प्राणोंकेबहिर्निःसरणकेपश्चात् सोपुरुषजानेनहीं ॥ बाह्यपरलोकमेंभी तिननाडीयोंसेहीगमनकरेहै ॥ जोपुरुष हृदयकमलमेंस्थित दहररूपब्रह्मका ध्यानकरणेवालाहै ॥ सोउपासक प्रणवकाध्यानकरताहूआ यादेहकूं इसलोकमें त्यागकरि मनकेवेगकीन्यांईशीघ्र आदित्यमंडलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ सोआदित्यमंडल ब्रह्मलोककी प्राप्तिमेंद्वारहै ॥ ताआदित्यमंडलद्वारा सोउपासक ब्रह्मलोकमेंप्राप्तहोवेहै ॥ उपासनादिसाधनरहितपुरुषकूं आदित्यमंडलकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ इननाडीयोंकरि

बाह्यगमनकरणेमें ब्राह्मणभागरूपछांदोग्यश्रुति आपहीमंत्रभागकीसंमतिदेवेहै ॥ हृदयरूपकंदकीसंबंधी एकशतएक १०१ प्रधाननाड़ीयांहैं॥ तिननाड़ीयोंकेमध्यमें एकसुषुम्नानामवालीनाड़ी मस्तकसेनिकसीहै ॥ तासुषुम्नानामनाडीसे उपरिआदित्यमंडलकीप्राप्तिद्वारा उपासकब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरदूसरीनाडीयांतौ नानायोनियोंकाग्रहणरूप संसारप्राप्तिवासतेहीहोवेहैं ॥ ऐसेदहरविद्याकूं समाप्तकरिके अबदेवताअसुरोंकूं प्रजापतिकाउपदेशरूपवचनकथनकरेहै ॥ सोवचनयहहै ॥ यआत्माअपहतपाप्माविजरोविमृत्युर्विशोकोविजिघत्सोऽपिपासःसत्यकामःसत्यसंकल्पःसोऽन्वेष्टव्यःसविजिज्ञासितव्यः ॥ अर्थयह ॥ जो आत्मापापसेरहितहै ॥ मृत्युसेरहितहै ॥ संतापरूपशोकसेरहितहै ॥ अविजिघत्सःनामभोजनकीइच्छासेरहितहै ॥ पानकीइच्छासेरहितहै॥ सफलकामनावालाहै ॥ सफलज्ञानरूपसंकल्पवालाहै ॥ सोगुरुशास्त्रकेउपदेशसेअन्वेषणकरणेयोग्यहै ॥ औरविजिज्ञासितव्यहै कहीये अनुभवकारिअपरोक्ष जाननेयोग्यहै॥जोपुरुष याआत्माकूंअपरोक्षरूपसे निश्चयकरताहै सोज्ञातापुरुष सर्वलोकोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥औरकामनाकेविषय सर्वभोगोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ याप्रजापतिकेवचनकूं देवतातथाअसुर परंपरासे श्रवणकरतेभये॥तेदेवताऔरअसुर आपनीआपनीसभामें यह कहतेभये भोदेवा यदितुमसर्वकीसंमतिहोवे तौप्रजापतिकेउपदेशसे आत्माकूंजानकरि हमसर्वलोकोंकूं तथाउत्तमभोगोंकूंप्राप्तहोवे ॥ ऐसेहीअसुरोंने आपनीसभामेंकहा ॥ कोईबुद्धिमान्होवेसोप्रजापतिकेपाससे ब्रह्मविद्याकूं ग्रहणकरिहमसर्वकूं उपदेशकरे ॥ तबइंद्र प्रजापतिके समीपआनेकूं आपनेलोकसेनिकसताभया ॥ असुरोंकाराजाविरोचनभी आपनेलोकसेचला ॥ ताब्रह्मलोकमें दोनोंएककालमेंहीप्राप्तभये ॥ इंद्रविरोचन दोनों आपसमेंमैत्रीकूं नकरतेहुए समितपाणिहोइकारि प्रजापतिकेशरणकूंप्राप्तभये ॥ तिनदोनोंकाअंतरमेंअत्यंतवैरभीथा परंतुआपनेकार्य-

कीसिद्धिवासते तेबुद्धिमान् इंद्रविरोचन बाहिरसेप्रीतिकरतेभये ॥ प्रजापतिकेसमीपप्राप्तहुए इंद्रविरोचन बत्तीस ३२ वर्षपर्यंत स्त्रीभोगादिकोंकूं त्यागकरिस्थितभये ॥ ब्रह्माजीनेभी उनकेअभिमानादिकोंकीनिवृत्तिवासते बत्तीसवर्षपर्यंतउपेक्षाकरी ॥ अपमानकूंसहारतेहुएभी आपने कार्यकीसिद्धिवासते स्थितहोतेभये ॥ ऐसेबत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकूं धारणकरनेवालेइंद्रविरोचनकूं ब्रह्माजीपूछतेभये ॥ भोइंद्रविरोचनौ तुमआपनेस्वर्गादिलोकोंकात्यागकरि दुःखपूर्वक इहांकिसवासतेस्थित भयेहो ॥ तुमक्याचाहतेहो ॥ इंद्रविरोचनकहेहैं ॥ हेभगवन् ॥ धर्माधर्मसेरहित जरामृत्युसेरहित शोकसेरहित अशनइच्छा तथापानइच्छासेरहित अमोघकाम अमोघसंकल्प जोआत्माहै ॥ ताआत्माकूं अपरोक्षरूपसेनिश्चयवाला सर्वलोकोंकूं तथासर्वभोग्यविषयोंकू प्राप्त होवेहै ॥ यहवचनआपने सभाविषेकहाथा ॥ तावचनकूं श्रवणकरि ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते आपकेसमीप ब्रह्मचर्यधारणपूर्वक बत्तीस वर्षपर्यंतहमस्थितभयेहैं ॥ आपकृपाकरिके ताआत्मज्ञानकाउपदेशकरो ऐसेइंद्रविरोचनकेवचनकूं श्रवणकरि प्रजापतिउपदेशकरेहै ॥ यएषोऽक्षिणिपुरुषोदृश्यतएषआत्मा ॥ अर्थयह ॥ जोयहपूर्णपुरुष नेत्रोंमेंस्थितहै औरध्यातापुरुषोंने नेत्रोंमेंस्थितदिखाताहै सोईयहआत्माहै ॥ यह आत्माहीअमृतहै ॥ तथाअभयहै ॥ औरयहआत्माब्रह्मरूपहै ॥ याप्रकारकेवचनकूं श्रवणकरि इंद्रविरोचन नेत्रस्थछायाकूंही आत्माजानतेभये ॥ पांडित्यकेअभिमानकरियुक्तहुए ब्रह्माजीकूं याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेभगवन् ! नेत्रस्थछायाकीन्यांई जलोंमेंभीछाया प्रतीतहोवेहै ॥ तथादर्पणमेंछायाप्रतीतहोवेहै ॥ तथाखड्गआदिकोंमें छायाप्रतीतहोवेहैं ॥ तेसर्वछायाआत्माहैं ॥ वाइनमेंसेकोईएकहीआत्माहै ॥ ऐसेवचनकूं श्रवणकरि प्रजापति उनकीमूढताकूंजानतेभये ॥ तिनकीमूढताकी उपेक्षाकरिके आपनेअनुभवअनुसारयहकहतेभये ॥

हेइंद्रविरोचनौ यहनेत्रस्थद्रष्टा आत्माही व्यापकहोनेसे जलदर्पणादि-सर्वउपाधियोंमें प्रतीतहोवेहै ॥ तिनकीमूढताकीनिवृत्तिवासते ब्रह्माजी उपायकहेहैं ॥ भोइंद्रविरोचनौ जलकरिपूर्णशरावमें आपनेकूंदेखकरि जबीतुमआत्माकूं नहींनिश्चयकरो तबतुममेरेकूंकथनकरो ॥ इंद्रविरो-चन जलकरिपूर्णशरावमें आपकूंदेखतेभये ॥ ब्रह्माजीपूछतेभये ॥ तुम-नेक्यादेखा ॥ ऐसेपूछेहुए इंद्रविरोचनकहतेभये ॥ हेभगवन् ! नखलो-मादियुक्तयाशरीरके प्रतिबिंबरूपआत्माकूंही हमनेदेखाहै ॥ विरोचनने तौ छायामेंआत्मत्वबुद्धिकूं त्यागकरि छायावालेदेहमें आत्मत्वबुद्धि-करि ॥ छायामेंविरोचनयहदोषदेखताभया ॥ छोटेदर्पणमेंछोटीछाया होवेहै ॥ बडेदर्पणादिकोंमेंबडीछायाहोवेहै ॥ ऐसेदर्पणादिउपाधिके नीलपीतादिरूपहोते छायाभी नीलपीतादिरूपवालीहोवेहै ॥ औरजाकी छायाहैसोदेहतौ एकजैसाहै यातेंदेहहीआत्माहै ॥ इत्यादियुक्तियोंसे विरोचनने देहमेंही आत्मरूपता निश्चयकरी ॥ देहमें वा छायामें विप-रीतप्रत्यय अबइनका निवृत्तकरणाचाहिये याअभिप्रायसे भगवान् प्रजापतिकहेहैं ॥ हेइंद्रविरोचनौ ! तुममुंडनकराइके तथासुंदरवस्त्रभू-षणादिकोंकरिके अलंकृतहुए पुनःजलपूरितशरावमें आपकूंदेखकरि मेरेकूंकथनकरो ॥ ब्रह्माजीनेयहचिंतनकरि मुंडनादिकोंका उपदेशक-रा ॥ जोयहस्थूलदेह विलक्षणहोइजावेगा यातेंयापरिणामीशरीरमें त-थाछायामें इनकीआत्मत्वबुद्धिनिवृत्तहोवेगी ॥ परंतु इंद्रविरोचनतौ मुंडनादिककराइकरिभी देहमेंहीआत्मत्वबुद्धिकरतेभये ॥ प्रजापतिइं-द्रविरोचनकूंपूछताभया ॥ भोइंद्रविरोचनौ ! तुमनेमुंडनादिकराइकरि जलपात्रमें क्यादेखाहै॥ इंद्रविरोचनकहेहैं॥हेभगवन् ! सुंदरवस्त्रभूषण-सहित यहदेहही याजलमेंप्रतीतहोवेहै ॥ जबीइंद्रविरोचनने यहकहा और स्थूलदेहकूं आत्मरूपतानिश्चयकरी ॥ तबप्रजापतिआपनेमनमें यहविचारकरतेभये ॥ जैसेइंद्रविरोचनने छायाविषे दोषदेखकरि अ-

नात्मतानिश्चयकरीहै ॥ तैसे यादेहमेंभी जड़ता परिच्छिन्नता जरा-मरणादिअनेकदोषप्रत्यक्षसिद्धहैं ॥ यातें यहदेहभी आत्मा नहीं ॥ ऐसे यादेहमेंभी इंद्रविरोचन अनात्मतानिश्चयकरिलेवें याअभिप्रायसे देहमें जिनधर्मोंकासंभव नहोइसके तिनआत्माकेधर्मोंका उपदेशकरतेभये ॥ भोइंद्रविरोचनौ! यहचिद्रूपआत्मा अमृतनाममरणसेरहितहै ॥ तथा भयसेरहितहै ॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदसेरहितब्रह्मस्वरूपहै ॥ प्रजापतिने देहमें न बननेहारेधर्मोंका उपदेशकराभी परंतुतेअभिमानी इंद्रविरोचन प्रजापतिकेअभिप्रायकूं नजानतेहुए चलेआवतेभये ॥ विरोचनतौरसायनमंत्रयोगादिउपायसे यादेहमेंही आत्माके अजरअमृत-अभयत्वादिधर्मोंकूंजानताभया ॥ इंद्रनेछायामेंही आत्मरूपतानिश्चय करी ॥ जबप्रसन्नहोइकरिदोनोंगमनकरतेभये ॥ तिनकूंदेखकरि प्रजा-पतियहवचनकहतेभये ॥ जेदेवतावाअसुर अजर अमर अभयरूप-आत्माकूं गुरुशास्त्रसेनजानकरि तथाअपरोक्षनिश्चयविना इंद्रविरोचन-कीन्यांईनिश्चयवालेहोवेंगे तेदेवतावाअसुर क्लेशकूंहीअनुभवकरेंगे ॥ विरोचनतौप्रसन्नहुआ असुरोंकूंप्राप्तभया ॥ असुरोंकूंयहउपदेशकरता भया ॥ भोअसुरा प्रजापतिने यहदेहहीआत्माकह्याहै ॥ यहदेहरूप-आत्माकाही पूजनकरणाचाहिये तथायादेहरूपआत्माकीही अनेक-प्रकारकेवस्त्रभोजनभूषणभोगोंकरिके सेवाकरणीयोग्यहै ॥ ऐसेदेहरूप-आत्माकी पूजातथासेवाकरणेवाला यालोककूंतथापरलोककूं प्राप्त होवैहै ॥ ऐसाअसुरोंकासंप्रदाय अबपर्यंतसंसारविषे देखनेमेंआताहै ॥ जोपुरुष देहआत्मवादरूप असुरोंकेसंप्रदायकूंमानकरि अतिथिभि-क्षुआदिकोंकेतांई अन्नादिकोंकूं श्रद्धापूर्वकनहींदेता ऐसेश्रद्धाहीनपुरुषकूं उत्तमपुरुषअसुरकहेहैं ॥ अबइंद्रकेवृत्तांतकूंकहेहैं ॥ देवताहोनेसे सात्विकदेवताइंद्र देवतावोंकूंप्राप्तहुएविनाही अर्धमार्गविषेछायाआ-त्मामाननेमें याप्रकारके भयकूंदेखताभया ॥ याशरीरके भूषणवस्त्रादि-

करिसुंदरअलंकारकरणेसे छायात्माभीअलंकृतहोवेहै ॥ यादेहमें अंधत्वादिहोनेसे छायात्मामेंभीअंधत्वादिदोषहोवेहैं औरयादेहकेहस्तादिकोंके काटनेसे छायात्माकेभीहस्तादिकाटेहुए प्रतीतहोवेहैं ॥ और यादेहकेनाशहोनेसे छायात्माकाभी नाशहोवेहै ॥ याछायात्माकेज्ञानसे कुछफलकूंमैंनहीं देखता ॥ याप्रकारकेदोषोंकूं छायात्मामाननेमें इंद्रदेखताहुआ समित्पाणिहोइकरि प्रजापतिकेशरणकूं प्राप्तभया ॥ ताशरणमेंप्राप्तभयेइंद्रकूं प्रजापतिकहतेभये ॥ हेइंद्र! तुमविरोचनके साथप्रसन्नमनहूआचल्यागयाथा अबपुनः किसप्रयोजनवासतेआया है ॥ इंद्रउवाच ॥ हेभगवन्! यास्थूलदेहकेअंधहोनेसे छायात्माभी अंधहोवेहै ॥ यादेहकेनाशहोनेसे छायात्माकानाशहोवेहै ॥ आत्मातौ अजरअमरअभयब्रह्म आपनेनिरूपणकराथा ॥ याछायात्मामेंतौ आत्माकेधर्मघटेनहीं तथाछायात्माकेज्ञानसेभी कुछप्रयोजनकीप्राप्तिमैं देखतानहीं ॥ ऐसेइंद्रकेवचनोंकूं श्रवणकरि प्रजापतिकहेहैं ॥ हेइंद्र! जिसआत्माकाउपदेश विरोचनसहिततुमारेप्रति मैंनेकराथा ताआत्माकाहीउपदेशतुमारेप्रति मैंपुनःकरूंगा ॥ परंतुअंतःकरणकीशुद्धिवासते बतीसवर्षपर्यंत पुनःब्रह्मचर्यकूंकरो ॥ ऐसेप्रजापतिकेवचनकूंश्रवणकरि इंद्रबतीसवर्षपर्यंत पुनःब्रह्मचर्यकरताभया ॥ बतीसवर्षकेपश्चात् शरणागतइंद्रकूं प्रजापतिकहेहैं ॥ हेइंद्र! जापुरुषकातुमारेतांई मैंनेउपदेशकराथा सोईयहपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे आपनीअविद्याकरिरचितपदार्थोंकूं अनुभवकरेहै ॥ सोईयहआत्माअमृतअभयब्रह्मस्वरूपहै ॥ ऐसेउपदेशकूंश्रवणकरि सूक्ष्मशरीरविशिष्ट स्वप्नावस्थाके अभिमानी तैजसनामा जीवकूं आत्मरूपजानकरि प्रसन्नताकूंप्राप्तहुआ इंद्रचलाआवताभया ॥ अर्धमार्गविषेही स्वप्नावस्थावालेतैजसकूं आत्मतामाननेमें इंद्र ऐसेविचारकरि भयकूंदेखताभया ॥ यद्यपि छायाकीन्यांई यास्वप्नद्रष्टाविषे स्थूलशरीरकेअंधत्वकाणत्वादिधर्मोंकासंबंधनहींहै ॥ तथापि सिंहव्या-

घ्रादिकोंकरिके अनेकक्लेशोंकूं यहस्वप्नद्रष्टाजीवअनुभवकरैहै ॥ औरप्रियपुत्रादिकोंकेवियोगसे महानूरुदनकरैहै ॥ औरआत्मातौ सर्वउपद्रवोंसे शून्यहै ॥ याप्रकारकाविचारकरताहुआ इंद्र पुनःसमित्पाणिहोइकरि प्रजापतिकीशरणकूंप्राप्तभया॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र तुमप्रसन्नमनहोइकरि चल्यागयाथा ॥ अबपुनःकिसवास्तेआयाहै॥ इंद्रनेपूर्वकहेदोषोंका स्वप्नद्रष्टापुरुषविषेनिरूपणकरा ॥ तबप्रजापतियहकहतेभये ॥ हेइंद्र बतीसवर्षपर्यंत तुमपुनःब्रह्मचर्यकरो पश्चात् ताआत्माकातेरेतांई मैंउपदेशकरूंगा ॥ इंद्रबतीसवर्षपर्यंत पुनःब्रह्मचर्यकरताभया ॥ बतीसवर्षकेपश्चात् प्रजापतिइंद्रकूंकहतेभये ॥ हेइंद्र सुषुप्तिअवस्थामें यहपुरुष इंद्रियादिकोंकेअभिमानविनास्थितहूआ परमानंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा किसीस्वप्नकूंदेखेनहीं यहसुषुप्तिकाद्रष्टापुरुषही आत्माहै तथाअमृतअभयब्रह्मरूपहै ॥ ऐसेश्रवणकरि इंद्रजाइकरिपुनः अर्धमार्गविषे विचार करताहूआ सुषुप्तिअवस्थाकेअभिमानीप्राज्ञविषेभी भयकूंदेखताभया ॥ औरयाविचारकूंकरताभया ॥ यद्यपि यासुषुप्तपुरुषमें स्वप्नकेरोदनादि दुःखनहींहै ॥ तथापि यहकादाचित्कहै तथाआगामीभयकाऔरदुःखोंकाबीजहै ॥ और यहप्राज्ञसुषुप्तिअवस्थाविषे आपनेकूंजानेनहीं तथा अन्यभूतोंकूंभीजानेनहीं ॥ जैसेमृतहुआपुरुष स्वपरकेज्ञानसे शून्यहोवेहै तैसेयहसुषुप्तपुरुष जडकीन्यांई स्थितहोवैहै ॥ यासुषुप्तपुरुषमेंभी अमृतअभयब्रह्मरूपताबनेनहीं ॥ और यासुषुप्तपुरुषकेज्ञानसेभी कुछपुरुषार्थसिद्धिकूं मैंदेखतानहीं ॥ ऐसे विचारकरि पुनःसोइंद्र समित्पाणिहूआ प्रजापतिकीशरणकूंप्राप्तभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र! प्रसन्नहोइकरिं तूं चलागयाथा अबपुनः क्याइच्छाकरताहूआआयाहै ॥ इंद्रउवाच॥ हेभगवन्! यहप्राज्ञनामाजीव अनेकदोषोंकरि ग्रस्तहै आत्मातौअजरअमरअभयरूप आपनेकहाथा यातेंकृपाकरि यथार्थरूपसें आत्माका उपदेशकरो ॥ ऐसेइंद्रकेवचनोंकूंश्रवणकरि प्रजापतियहकहे है हेइंद्र

अबपंचवर्षपुनःब्रह्मचर्यकूंकरो पश्चात्मैंयाआत्माकेयथार्थरूपकूं तेरे-ताईकहूंगा ॥ याप्रकारकेवचनकूंश्रवणकरि इंद्रपुनःपंचवर्षब्रह्मचर्यकूं करताभया ॥ प्रथमतीनवार बतीसबतीसवर्षब्रह्मचर्यकरताभया ॥ चतुर्थवारपंचवर्षब्रह्मचर्यकरताभया ॥ सर्वमिलकरिएकशतएक १०१ वर्षभये ॥ ऐसेश्रेष्ठपुरुषकहेहैं जोइंद्रप्रजापतिकेपासएकशतएकवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरताभया ॥ ऐसेश्रेष्ठपुरुषोंकीसंमतिकूं श्रुतिभगवती आपही कहेहै॥ अबतुरीयआत्माकेउपदेशवासते प्रजापति प्रथमस्थूलशरीरविषे विनश्वरताकूं कहताभया ॥ हेइंद्र यहस्थूल शरीरविनश्वरहोनेसे मृत्युकरिग्रस्तहै ॥ तथासुखदुःखकरिकेव्याप्यहूआहै ॥ औरसूक्ष्मशरीरमेंभीविनश्वरता जडता तथासुखदुःखसमानहैं तथाकारणशरीररूप अज्ञानभी सर्वदुःखोंकाबीजहै विनश्वरताजडतादिअनेकधर्मोंकरियुक्त हैं ॥ चिद्रूपआत्माविषेतौ विनश्वरता तथासुखदुःखादिअनात्मधर्मोंकासंबंध किंचित्भीनहींहै ॥ जैसेहस्तपादादिकरियुक्त शरीरसेरहित वायु मेघ विद्युत् आदि प्राणिकर्मअनुसार अकस्मात् प्रगटहोइकरि वृष्टिआदिकार्योंकूंकरेहैं ॥ वृष्टिआदिकार्योंकूंकरिके सुखदुःखसेरहित-हूएही आपनेस्वरूपकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तैसेयहजीवशरीरोंकेसाथ तादात्म्याध्यासकूंप्राप्तहूआ किसीदयालुगुरुकेउपदेशकूंश्रवणकरि तिनशरीरोंमेंअध्यासकेत्यागसे आपनेस्वप्रकाशब्रह्मरूपकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताब्रह्मके स्वरूपसेअभिन्नभयेपुरुषकूं उत्तमपुरुषकहेहैं ॥ ऐसाउत्तमपुरुष जीवन्मुक्त प्रारब्धकर्मअनुसार अनेकप्रकारके विषयोंकूं भोगताहूआ तथाआपनेस्त्रीसंबंधी आदिकोंकेसाथरमणकरताहूआ तथारथादिकोंपरआरूढ हुआ जनोंकेसमीपवर्त्तमानजोआपनाशरीरहै ताकूंस्मरणकरेनहीं ॥ औरजैसेसारथीपुरुषकेउपरामहूएभी शिक्षितअश्व रथकूंआपनेस्थानमें प्राप्तकरेहैं ॥ तैसे याजीवन्मुक्तउत्तमपुरुषके उपरामहूएभी प्रारब्धकर्मकेअनुसार यादेहकीप्राणरक्षाकरेहैं ॥ औरप्रजापतिने जिसआत्माका

उपदेशकराथा सोआत्माही रूपादिकोंकेज्ञानवासतें नेत्रगोलककेकृष्ण-ताराऽग्रमेंस्थितहूआ चक्षुयानामकरिकेकह्याजावेहै ॥ ताआत्माका जबगंधग्रहणकासंकल्पहोवेहै ॥ तबआत्माही घ्राणनामवालाकह्याजा-वेहै ॥ जबशब्दकेउच्चारणकासंकल्पकरेहै तबवाक्यानामसेंकह्या जावेहै॥जबशब्दकेश्रवणकासंकल्पकरेहै तबश्रोत्रनामवालाहोवेहै॥ यह आत्माहीजबमननकासंकल्पकरेहै तबदैवचक्षुनामक मननामसेकहीये है ॥ दैवचक्षुमनसे व्यवहित तथाभूतभविष्यत्पदार्थोंकाज्ञानहोवेहै औरमुक्त पुरुषभी यादैवचक्षुरूपमनकरि संकल्पमात्रसे ब्रह्ममें स्थित नानाप्रकारके भोगोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे आत्माके उपदेशकूंश्र-वणकरि आत्मज्ञानकूंप्राप्तहूआइंद्र सर्वभोग्यपदार्थोंकूंप्राप्तभया ॥ औरसर्वदेवतावोंकूंभी उपदेशकरताभया ॥ इंद्रकीन्यांईजोकोई इदानींतनपुरुषअजरअमर अभयब्रह्मकूं यथार्थरूपसेजानेहैं सोपुरुष सर्वपदार्थोंकूं तथासर्वलोकोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे प्रजापतिकहतेभये ॥ अबपूर्वकहीदहरविद्याकेअंगभूतमंत्रोंके अर्थकूंकहेहैं ॥ उपासक क-हेहैं मैंहार्दब्रह्मकेध्यानसे ब्रह्मस्वरूपब्रह्मलोककूंप्राप्तहोताहूं ॥ केवल नामरूपउपाधिकरिकेही परिच्छिन्नसूक्ष्मरूपहार्दकूंप्राप्तभयाथा वा-स्तवसेमैंब्रह्मरूपहूं यातेंआपनेवास्तवरूपकूंही प्राप्तहोताहूं ॥ जैसेअश्व आपनेरोमोंके कंपायमानकरणेसे धूलीसेरहितहोवेहै ॥ औरजैसेचंद्रमा राहुसेमुक्तहुआप्रकाशरूपहोवेहै ॥ तैसेउपासकहार्दब्रह्मकेज्ञानकरि सर्व-कर्मोंकूंदूरकरताहुआ आपनेप्रकाशरूपब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरपूर्वनि-रूपणकराजोदहराकाश सोआकाशही बाह्यभूताकाशकीन्यांई व्याप-कहै ॥ औरतादहराकाशमेंही नामरूपवर्तेहैं ॥ यहदहराकाशही अमृ-तब्रह्मरूपहै यहदहराकाशहीआत्मरूपहै ॥ अबउपासकप्रार्थनाकरेहै ॥ मैंउपासक प्रजापतिकेसभामंदिरकूंप्राप्तहोवूं और मैंही ब्राह्मणोंका तथाराजावोंका तथावैश्योंका आत्माहूं ॥ औरब्राह्मणादिकोंके इंद्रि-

यादिकोंकासाक्षीहूं तासाक्षीआपनेरूपकूं प्राप्तहुआचाहताहूं ॥ हेपरमात्मन् मैंस्त्रीकीयोनिकूंमतिप्राप्तहोवूं ॥ यास्त्रीकीयोनिकूं सेवनकरणेवाले पुरुषोंकूं दांतोंसेविनाही यहस्त्रीयोनिभक्षणकरेहै ॥ हेभगवन् यामहाअपवित्रस्त्रीकीयोनिकूं मैंकबीनहींप्राप्तहोवूं ॥ यास्त्रीयोनिकीसेवाकरणेवालेपुरुषोंकी वारंवारगर्भवासमेंस्थितिहोवेहै याअर्थकेसूचनकरणेकूं उपनिषत्मेंवारंवारस्त्रीयोनिकानिषेधहै ॥ पूर्वकह्याजोसाधनोंसाहितआत्मज्ञानहै यासाधनोंसहितआत्मज्ञानकूंही प्रजापतिब्रह्मा विराट्केतांई कहतेभये ॥ सोविराट् आपनेपुत्रमनुकेतांई उपदेशकरताभया ॥ सोमनुभगवान् त्रैवर्णिक पुरुषोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरतेभये ॥ हेद्विजातयः ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासते जबतकतुमाराअंतःकरणशुद्धनहोवे तबतकचारिआश्रमोंमेंसेकिसीएकआश्रमकूंग्रहणकरि शुभकर्मोंकूंकरो॥ कर्मोंसेशुद्धअंतःकरणवालेहुए ब्रह्मज्ञानद्वारामोक्षकूंप्राप्तहोवोगे ॥ याउपनिषत्कीसमाप्तिमें कर्मीपुरुषोंकेसंतोषवासतेयहकह्याहै ॥ जोपुरुष सर्वदागुरुकीसेवामेंतत्परहै ॥ सेवासे शेषरहेकालमें गुरुसेवेदकाअध्ययन करिके गुरुकुलसेआइकरि स्त्रीकेग्रहणसे गृहस्थाश्रमकूंप्राप्तहूआ तथा पवित्रदेशमेंस्थितहुआ वेदोंकापठनकरेहै ॥ औरधर्मात्माशिष्योंकेप्रति इनवेदोंकापाठनकराताहै ॥ औरआपनेसर्वइंद्रियोंकूं निषिद्धविषयोंसे निवृत्तकरेहै ॥ ऐसापुरुषहिंसासेरहितहुआ जन्मभरशुभकर्मकरताहुआ शरीरकूंत्यागकरि ब्रह्मलोकमेंप्राप्तहोवेहै ॥ नचपुनरावर्त्तते ॥ अर्थयह ॥ ऐसापुरुषयासंसारविषे पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ उपनिषत्कीसमाप्तिकेबोधनकरनेकूं नचपुनरावर्तते यहवचनदोवारपठनकराहै ॥ ॥ ॐ शांतिःशांतिःशांतिः ॥ इतिछांदोग्येऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॐतत्सत् ॥ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य—श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादशिष्यसंप्रदायप्रविष्टपरमहंसपरिव्राजक—स्वामिअच्युतानन्दगिरिविरचितेप्राकृतोपनिषत्सारे छांदोग्यार्थनिर्णयः ॥ ९ ॥

श्रीः।

अथ

बृहदारण्यकोपनिषद्भाषांतरम्।

ॐश्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अबयजुर्वेदकीबृहदारण्यकउपनिषत्केअर्थकूं कहेहैं ॥ ब्रह्मज्ञानविनामोक्षहोवेनहीं यहवेदमेंवारंवारलिखाहै ॥ विवेक वैराग्य शमादिमुमुक्षुता इनसाधनोंसे ताब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिहोवेहै ॥ विवेकवैराग्यादिसाधन चित्तशुद्धिविनाहोवेनहीं ॥ शुभकर्मकरेविना चित्तशुद्धिहोवेनहीं ॥ यातेंचित्तशुद्धिवासते शुभकर्म प्रथमअपेक्षितहैं ॥ इसीवासते चित्तशुद्धिकेसाधनकर्मोंका प्रथमकर्मकांडमें निरूपणकराहै ॥ फलरूपज्ञानके प्रतिपादकज्ञानकांडका पश्चात्वर्णनकराहै ॥ सर्वयज्ञोंमेंश्रेष्ठ जोअश्वमेधयज्ञहै उपासनासहित तिसअश्वमेधयज्ञका हिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिरूपसंसारही परमफलहै यहदिखायाहै ॥ जबउपासनासहितअश्वमेधयज्ञकाभी संसारहीफलहै तबअत्यंतअल्पजेअग्निहोत्रादिकर्महैं तिनकासंसारफलहै यामेंक्याकहनाहै ॥ यातेंकर्मोंकेफलसे अधिकारी पुरुषोंने वैराग्यकूंप्राप्तहोना यातात्पर्यसे अश्वमेधमें अनधिकारी पुरुषोंकूं अश्वमेधकीउपासनासे अश्वमेधकेफलकीप्राप्तिवासते तायज्ञमेंप्रधानअंगरूप जाअश्वविषयक उपासनाहै ताउपासनाकावर्णनकराहै ॥ पश्चात्अश्वमेधयज्ञमेंहोनेहारी अग्निविषयकउपासनाकानिरूपणकराहै ॥ पश्चात्कर्मऔरउपासनाकाफल प्रजापतिभावकीप्राप्तिवर्णनकरीहै ॥ पुनःकर्मऔरउपासनाकीस्तुतिवासते प्रजापतिकी जगत्उत्पत्तिआदिकोंमेंस्वतंत्रतावर्णनकरी

है ॥ सृष्टिसेप्रथम यहजीवसाक्षी ब्रह्महीहोताभया अज्ञानकालमैं अंतःकरणादिउपाधिकरि आपकूंजीवमानेहै ॥ ब्रह्मनिष्ठदयालुगुरुके उपदेशसे ॥ अहंब्रह्मास्मि ॥ यहजानेहै ॥ ऐसेदेवताऋषि मनुष्योंमें जोब्रह्मकूं जानेहै सोब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेयाब्राह्मणमेंसंक्षेपसे ब्रह्मविद्याकहीहै ॥ औरआगेसप्तान्नब्राह्मणमेंतौपुरुषने काम्यकर्मऔर उपासनाकरिके उत्पन्नकरेप्रपंचकाभोगकासाधनहोनेकारि सप्तअन्नरूपसेवर्णनकराहै ॥ पश्चात्उत्पन्नभयेजगत्का नाम रूप कर्मऐसेतीनरूपसे संकोचवर्णनकराहै ॥ यातृतीयाध्यायसेलेकरि अष्टमाध्यायपर्यंत श्रीशंकराचार्योंने व्याख्याकरीहै ॥ यातृतीयाध्यायसेपूर्व प्रथमऔरदूसरेअध्यायमें कर्मोंकानिरूपणकराहै ॥ इसीवासतेतिनोंमें तिनदोनोंअध्यायोंकूंत्यागकरि यातृतीयाध्यायकीव्याख्याकरीहै ॥ याउपनिषत्की वनमेंअध्ययनकीविधिहै ॥ यातेंयाउपनिषत्कानाम आरण्यकहै ॥ ग्रंथसेतथाअर्थसे महान्होनेकरि बृहदारण्यककहेहैं ॥ ब्रह्मकूंसमीपप्रत्यगूरूपकरिकेबोधनकरेहै यातेंइसग्रंथकानाम उपनिषत् है ॥ ऐसेबृहदारण्यकउपनिषत् इनपदोंकाअर्थहै ॥ इतिबृहदारण्यके तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ॐश्रीसरस्वत्यैनमः ॥ पूर्वतृतीयअध्यायविषे आत्मेत्येवोपासीत यहविद्यासूत्रपठचाहै ॥ अर्थयह ॥ देशकालवस्तुपरिच्छेदरहित स्वप्रकाशात्माहै ऐसेचिंतनकरे ॥ इत्यादिकोंकरि संक्षेपसेसूचनकरीजाब्रह्मविद्या तासफलब्रह्मविद्याकेनिरूपणवासते याचतुर्थअध्यायकाआरंभहै ॥ आख्यायिकाद्वारा निरूपणकरा अर्थ बुद्धिविषे शीघ्रहीआरूढहोवेहै ॥ यातें प्रथमबालाकि औरअजातशत्रुराजाकी आख्यायिकाकूं निरूपणकरेहैं ॥ गर्गकेवंशमेंहोनेहारा तथाबलाकानामा किसीस्त्रीकापुत्रहोनेसे बालाकिनामकूंप्राप्तहुआ कोई एकब्राह्मणवेदकेपठनसे बहुतअभिमानी होताभया ॥ सोबालाकि कुरुपंचालादिदेशोंमें शास्त्रार्थसे आपनाविजयकरताभया ॥ अनेकदेशोंमें

विजयकरताहुआ सोबालाकि श्रीकाशीमेंभी विजयकरणेवासतेप्राप्तभ-
या ॥ ताश्रीकाशीमें राजाअजातशत्रुकूं प्राप्तहुआबालाकि आपनेवि-
जयवासते राजाअजातशत्रुकूं यहकहताभया ॥ हेअजातशत्रो ॥ ब्रह्म-
तेब्रवाणि ॥ याश्रुतिकाअर्थयह ॥ तेरेतांई मैंब्रह्मकाउपदेशकरताहूं तूं
सांवधानहोइकरिश्रवणकर ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि सोराजाअजातशत्रु
मत्सरसेरहितहुआ प्रसन्नहोइकरि एकसहस्रगौ ताबालाकिकेतांईदेता
भया ॥ राजाके गौवोंकेदेनेकाअभिप्राययह ॥ जोजनकनामकराजाहै
सोपिताकीन्यांईआपकूंमानकरि औरब्राह्मणोंकूंपुत्रकीन्यांईमानताहुआ
तिनब्राह्मणोंकेतांईदानकरेहै ॥ औरब्रह्मविद्याकादानभी आपकूंपिता-
रूपमानकरिहीकरेहै ॥ और मैंनेतौ ब्रह्मतेब्रवाणि यावचनकूंश्रवणक-
रतेही याबालाकिब्राह्मणकेतांई एकसहस्रगौदानकरीहैं ॥ यातेंब्राह्मण
जनककेसमीप किसवासतेगमनकरतेहैं ॥ राजायाअभिप्रायसे गौवांका
दानकरताभया ॥ राजोवाच ॥ हेबालाके ! मेरेसमीप आइकरि अनेक
वृद्धब्राह्मण आपनी अनेकविद्यावोंका निरूपणकरतेहैं ॥ परंतुब्रह्मवि-
द्याकूंतौ पूछेहुएभी निरूपणकरते नहीं ॥ औरआपतौबालकहुए तथा
पूछेविनाही उपदेशकरतेहो ॥ मैंआपकेउपरि बहुतप्रसन्नहूं आपब्रह्म-
काउपदेशकरो ॥ बालाकिरुवाच ॥ हेराजन् ! जोप्राणरूपपुरुष सम-
ष्टिव्यष्टिभेदसे आदित्यमंडलमें तथानेत्रोंमें स्थितहै ॥ ऐसेएकहीअभि-
मानीपुरुष जोनेत्रादिद्वाराहृदयमें प्रवेशकरि कर्त्ताभोक्ताहोवेहै ॥ तापु-
रुषकी मैंउपासनाकरताहूं ॥ यापुरुषकीउपासनाके फलकहनेकी इ-
च्छावालेबालाकिकूं हस्तसेवारणकरताहुआ राजा यहकहताभया ॥
हेबालाके ! यापुरुषकूं मैंजानताहूं यहपुरुष सर्वभूतोंमेंपूज्यहै ॥ तथा
सर्वकाप्रकाशकराजाहै ॥ ऐसेकर्त्ताभोक्तापुरुषकूं मैंनिरंतरजानताहूं ॥
जोअधिकारी यापुरुषकीउपासनाकरताहै ॥ सोअधिकारीपूज्यहोवेहै
तथाराजाहोवेहै ॥ पुनःबालाकि चंद्र विद्युत् आकाश वायु अग्नि जल

मेघशब्द आदित्यसहितइनअष्टअधिदैवतोंकूं ब्रह्मरूपसेनिरूपणकरिके अष्टव्यष्टिशरीरमेंस्थित अध्यात्मोंकूं ब्रह्मरूपसेनिरूपणकरताभया तिन अध्यात्मअष्टब्रह्मपुरुषोकूंदिखावेहैं ॥ प्रातिबिंबकेग्राहक दर्पणादि उ-ज्ज्वलपदार्थ १ श्रोत्र २ पुरुषकेआकारजैसीपुरुषकीछाया ४ स्थूल शरीर ५ सूक्ष्मशरीर ६ दक्षिणनेत्रमेंस्थितशरीरकासूक्ष्मआकार ७ तथावामनेत्रमेंस्थितसूक्ष्मआकार ८ पूर्वकहेअष्टअधिदैव तथाअ-ष्टअध्यात्मोंकूं ब्रह्मरूपसेकथनकरिके तिनकीउपासनाकेफलोंकूंकथ-नकराहै ॥ राजातौवारंवारयहहीकहतेभये ॥ मैंइसकूंजानताहूं और इससेभिन्नब्रह्मकहो ॥ इनसेभिन्ननिर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूं नजानता-हुआ बालाकि नीचेमुखकरिके तूष्णींस्थितभया ॥ पूर्व बालाकि-नेकह्याथा तेरेकूंमैंब्रह्मउपदेशकरताहूं ॥ तायथार्थब्रह्मकेनकहनेसे जा-कीप्रतिज्ञाभंगभयीहै सोबालाकि सभामेंचोरकीन्यांई स्थितभया ॥ ताबालाकिकूंदेखकरि अजातशत्रुयहकहताभया ॥ अरेबालाके ए-तावन्मात्रतूंजानताहै वाकुछअधिकभीजानताहै ॥ बालाकिरुवाच ॥ हेराजन्! मैं एतावन्मात्रजानताहूं इससेअधिकमैं नहींजानता ॥ ॥ राजोवाच ॥ हेबालाके! तैंनेब्रह्मकेस्वरूपकूं नहींजाना ॥ मिथ्या-संभाषणकरणेवालापुरुष आत्महत्याराकह्याहै ॥ औरदेवतागुरुराजा-दिकोंकेसमीप जोमिथ्यासंभाषणकरताहै सोपुरुष कर्मकरिचांडालहै ॥ सोतूं मैंराजाकीसभामें मिथ्यासंभाषणकरताभयाहै सो तुमने अ-त्यंतअनुचितकर्मकराहै ॥ आजसेलेकरि पुनःतुमनेमिथ्यासंभाषणनहीं करणा ॥ तुमनेकथनकरेजोषोडश १६ पुरुषहैं इनसर्वकाजोकर्त्ता ब्रह्महै तथासर्वजगत्का जोकर्त्ताब्रह्महै सोब्रह्महीं तुमकूंज्ञातव्यहै ॥ सोब्रह्मभी वेदविरुद्धशुष्कतर्कोंसे जानाजावेनहीं ॥ यातेंब्रह्मनिष्ठ किसीगुरुकी शरणकूंप्राप्तहोइकरि ताआपनेस्वरूपकूं शीघ्रहीनिश्चय करो ॥ याआत्माकेजानेविनातौ यहविद्यामद तथाधनमद तथाकुल-

मद तुमकूंनरकमेंप्राप्तकरेगा ॥ ऐसेवचनोंकूं श्रवणकरताहुआ सोवालाकि आपनेमनमें यहविचारकरताभया ॥ जोपुरुष किसीपुरुषकूं ऐसाउपदेशकरे जो जिसउपदेशकेग्रहणंकरणेसे श्रोतापुरुष लघुताकूं त्यागकरि गुरुत्वभावकूंप्राप्तहोवे॥ सोउपदेष्टापुरुष ताश्रोतापुरुषकागुरुहै॥ यहविद्यादिमद मेरेकूंलघुकरणेवालाथा मेरेकूंदुःखकरणेहारायहमद याराजानेनिवृत्तकराहै यातेंयहराजामेरागुरुहै ॥ इसगुरुरूपराजाकूंत्यागकरि जबीमैंकिसीअन्यकेसमीपजावूंगा तबमेरेकूं कृतघ्नतादोषकी प्राप्तिहोवेगी यातेंयाराजासेहीमैंब्रह्मविद्याकूंग्रहणकरूं ॥ औरयाराजासे भिन्नतौ मेरेतांईब्रह्मविद्याके उपदेशकरणेवालाकोईप्रतीतभीहोतानहीं जिसकेसमीपसे मैंब्रह्मविद्याकूंग्रहणकरूं ॥ औरकिसीसेभी मेरेतांई उपदेशहोनानहीं यामेंहेतुयह ॥ जेमेरेगुरुहैं तेजितनीविद्याजानतेथे सासंपूर्णविद्या मेरेतांई तिनगुरुवोंने उपदेशकरीहै ॥ याब्रह्मविद्याकूं मेरेगुरुजानतेनहीं ॥ औरहिमाचलसेलेकारि सेतुबंधरामेश्वरपर्यंत जेत्रैवर्णिकहैं ॥ तिनसर्वकूंजीतकरिही काशीकेंजीतनेवासते मैंप्राप्तभयाथा॥ यातेंऔरसर्वपुरुष मेरेकरिजीतेहुएहोनेसे ॥ मेरेशिष्योंकेतुल्यहैं ॥ तिनसेमेरेकूं यहदुर्लभब्रह्मविद्या प्राप्तनहींहोवेगी ॥ औरदेवतातौ भोगोंमेंआसक्तहोइरहेहैं ॥ यातेंतेदेवता आत्माकूंजानतेभीनहींजानते ॥ जैसेउन्मत्तपुरुष घटादिकोंकूं देखतेभीनहीं देखते तैसेदेवताविषयोंमें लंपटहोनेसे आत्माकूंजानतेभी नहींजानते ॥ औरयहराजातौ देवतावोंकेसदृश लक्ष्मीकूंप्राप्तहुआभी कामक्रोधसेरहितहोइकरि संन्यासीयोंकीन्यांई . गृहमेंभीस्थितहोइरहाहै औरइसराजाकेसदृश कामक्रोधसे रहित औरकोई पुरुषनहींहै ॥ यासंसारमें कामीपुरुषस्त्रीयोंके तथा नटविटादिकोंकेवासते हजारोंरुपीये खरच करतेहुए प्रतीतहोवेहैं ॥ ब्रह्मवेत्तावोंकेवासतेतौ पंचवराटकाभी खरचकरणी कठिनहैं ॥ कामीपुरुषकी कामरूपदोषकरि मलिनबुद्धिहोनेसे पात्रकुपात्रकाज्ञान ता-

कामीकूंहोवेनहीं ॥ जैसे ज्वरवालेपुरुषकूं मधुरभीशर्करादिक कटुभा-
नहोवेहैं ॥ तैसेकामरूपज्वरवालेपुरुषकूं सत्संग सच्छास्त्रश्रवण पात्रमें
दानादि सुखकरणेवालेकर्मभी दुःखदाताभानहोवेहैं ॥ सोसर्वदोषोंका
मूलकाम याराजाविषे मैं देखतानहीं ॥ जिससेअधिकारीब्राह्मणआ-
दिकोंकेतांई यहराजादानकरताहै ॥ औरयाराजामें क्रोधभीनहीं जिससे
मैं अपराधीकेतांईभी प्रसन्नहोइकरि सहस्रगौवोंकादानकरताभयाहै ॥
औरमैंनेगुरुशास्त्रसे यहश्रवणकराहै जोब्रह्मवेत्ताविना औरप्राणियोंमें
कामक्रोधरहेहैं ॥ ब्रह्मवेत्ताकेमनमें कामक्रोधहोवेंनहीं ॥ यातेंयहराजा
कामक्रोधकेरहितहोनेसे ब्रह्मज्ञानीहै ॥ यातेंइसराजासेहीमैंब्रह्मविद्या-
कूंग्रहणकरूं ॥ औरदेवतावोंसे ज्ञानलाभसंदिग्धहै ॥ यामेंहेतुयह जो
प्रथमतौ देवतावोंका प्रत्यक्षहोनाकठिनहै ॥ तपआदिकोंकेकरणेसे
याजन्ममेंवाजन्मांतरमें जवीदेवताप्रत्यक्षभीहोवें तौभीब्रह्मवेत्ताउनमेंभी
दुर्लभहै ॥ जवीब्रह्मवेत्ताभीहोवेगा तौभीभोगोंकी अधिकताहोनेसे
राजसप्रकृतिहोवेगा ॥ औरमेरेतपआदिकोंकरि प्रसन्नहुआभी मेरेतांई
ब्रह्मविद्याका उपदेशकरेवानहींकरे औरमेरेकूंभोगोंमेंही आसक्तकरि-
देवे ॥ यातें देवतावोंसेविद्याप्राप्तिहोनीसंदिग्धहै ॥ औरसर्वपुरुषतौ
मेरेसेन्यूनज्ञानवालेहैं ॥ ऐसेविचारकरि सोबालाकिपंडित राजाकेधर्षण
रूपदंडकरि शुद्धहुआ ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते समित्पाणिहोइकरि
राजाकेसमीपआवताभया ॥ ब्रह्मविद्याविना बृहस्पतिजैसाभी और
विद्यामेंपंडितहोवे सोभीशिष्यहीहै ब्रह्मविद्यावालाहीगुरुहै यावार्त्ताकूं
सोबालाकिदिखावताभया ॥ बालाकिरुवाच ॥ हेभगवन्! मेरेतांई
आपकृपाकरि ब्रह्मविद्याका उपदेशकरो ॥ राजोवाच ॥ हेबालाके
विधाताने जातिकरि ब्राह्मणहीगुरुउत्पन्नकरेहैं औरक्षत्रियादिशिष्यही
उत्पन्नकरेहैं ॥ मैंक्षत्रियराजाका आपकूंशिष्यहोनाउचितनहीं ॥ जवी
मेरेकठोरवचनकूं श्रवणकरिके आपकूंकोपउत्पन्नभयाहो औरताकोसपे

मेरेशिष्यहुआचाहतेहो॥ तबहम आपसे अपराधक्षमाकरातेहैं आपकृपा-करि मेरेअपराधकूं क्षमाकरो॥ मैंने आपकूं विद्यादिकोंकेमदसहितश्रवण करा औरमदसंहित तुमकूंनेत्रोंसेभीदेखा राजधर्मकूंआश्रयकरि आपकी शिक्षावासते मैंबालकने आपकूंकठोरवचनकहे ॥ मेरेकूंधिक्कारहै तथा क्रूरमेरेराजधर्मकूं धिक्कारहै ॥ आपकृपाकरिप्रसन्नहोवो ॥ औरजबी तुममेरेसे भयमानकरि शिष्यहूआचाहतेहो ॥ तबआपनिर्भयहोवोमेरे-से किंचित्आपकूंभयमतिहोवे ॥ जेचौरादिकहैं तिनकूंभी धनदेकरि चोरीआदिकर्मोंसे मैंनिवृत्तकरताहूं नाशनहींकरता ॥ जबीसर्वथातेचो-रीआदिकर्मोंसें तेचोरादिनहींनिवृत्तहोवें तबपश्चात्यथायोग्यमैं तिन-कूंदंडदेताहूं ॥ जबीचोरादिकअपराधीपुरुषोंमेंभी मैंदुःखकरतानहीं तौआपउत्तमब्राह्मणकूं किसवासतेभयप्राप्तहोताहै ॥ यातेंआपनिर्भय हूए ब्राह्मणहोइकरिक्षत्रियकाशिष्यहोनारूप याप्रतिलोमकर्मसे निवृत्त होवो ॥ जैसेआनंदसेआयेथे तैसेआनंदपूर्वक आपनेगुरुकीशरणकूं प्राप्तहोवो ॥ ऐसे अनेकवचनकूं श्रवणकरि बालाकिनीचे मुखकरिके पादकेअग्रसेभूमिकूंलिखताहूआ तथादीर्घश्वासोंकूं लेताहूआस्थितभ-या ॥ जबी बालाकिनेगमनकरानहीं तबराजातिसकीचेष्टासे तिसकी लज्जातथाचिंताकूंनानकरि यहकहताभया ॥ हेबालाके वेदपढाना यज्ञकराना दानलेना यहब्राह्मणोंकेकर्मकहेहैं ॥ क्षत्रियकेयहकर्मनहीं॥ औरमेरायहव्रतहै प्राणोंकूंभी मैं ब्राह्मणोंकेतांई दानकताहूं ॥ औरब्रह्म-विद्याकी आपयाञ्चाकरतेहैं यातेंयाविद्याकूं तुमग्रहणकरो ॥ परंतुदान-विधिसेंही विद्याकूंग्रहणकरो ॥ गुरुतौआपब्राह्मणहीहो ॥ हमक्षत्रि-यतौशिष्यंहीहैं ॥ ऐसेकथनकरिके पुनःराजायहकहताभया ॥ हेबा-लाके प्राणादिकोंसेभिन्न जोआनंदस्वरूपआत्मा प्राणादिकोंकूंप्रकाशे-है ताआत्माकूंब्रह्मरूपसेनिश्चयकरो ॥ ऐसेकहताहूआराजा बालाकि-केदृढनिश्चयवासते उठकरिताबालाकिकेहस्तकूंग्रहणकरिकेतेदोनों अं-

तःपुरकेद्वारमेंप्राप्तभये ॥ ताद्वारमें राजाकाकोईभृत्यशयनकरताथा ॥ तासुप्तपुरुषके समीप बालाकिसहितराजा स्थितहोताभया ॥ बालाकि जाप्राणकूं सूर्यचंद्रादिरूपसेजानताथा तिनप्राणकेनामोंकरि तासुप्तपुरुषकूं राजाबुलावताभया ॥ हेआदित्यचंद्ररूप ॥ हेबृहत्पांडुरवासः॥ बृहत्पांडुरवासकाअर्थयह ॥ बृहत्नामअधिक पांडुरनामशुक्ल अधिकशुक्लरूपवालेजेजल तेजलहीहैंवासनामवस्त्रजाका ॥ छांदोग्यश्रुतिमें प्राणकेजलवस्त्रहैं यहहमकहआयेहैं ॥ यातेंबृहत्पांडुरवास यहप्राणका नामहै ॥ हेसोम ॥ यासोमशब्दकाअर्थ प्रियदर्शन वा सोमनामचंद्रमाकाहै ॥ हेराजन् याराजन्शब्दकाअर्थयह अनेकदेवतारूपसेजो प्रकाशे ॥ ऐसेप्राणकेअनेकनामोंसे राजानेबुलायाभी परंतुसोसुप्तपुरुष उठानहीं ॥ जैसेजडघटादिक अनेक नामोंकरि बुलायेहूएभी स्वपरकूंजानेनहीं ॥ तैसेजडप्राणभी अनेकनामोंकरि बुलायेहूए किंचित्मात्रनजानतेभये ॥ ऐसे जडघटादिकोंकीन्यांईजडप्राणभीआत्मानहीं ॥ जबीप्राणोंकूं आत्मामाने तौसुप्तपुरुषकेप्राण विशेषरूपसेचलते हैं बुलानेसेकिसवासतेजानतानहीं ॥ यातेंघटकीन्यांई प्राणअनात्मा है॥ याअभिप्रायकेबोधनवासतेही राजाप्राणकेनामोंसे तासुप्तपुरुषकूं बुलाताभया ॥ ऐसे अनात्मता बोधनकरिके आपनेमनविषेराजा यहविचारताभया ॥ निर्विशेषआत्माका साक्षात्बोधनकरणातौबने नहीं ॥ स्थूलारुंधतीन्यायसे किसीउपाधिविशिष्टताकरिके ताआत्माका प्रथमउपदेशकरूं ॥ याअभिप्रायसे तासुप्तपुरुषकेहस्तकूं आपनेहस्तसेराजादबावताभया ॥ ताहस्तकेदबावनेसे सोसुप्तपुरुषउठता भया ॥ ऐसेकरणेसे बालाकिने उपाधिविशिष्टआत्माकूंतौजाना शुद्धआत्माकूंजानानहीं ॥ ताशुद्धआत्माके जनावनेवासतेराजाअजातशत्रु ताबालाकिसेयहपूछतेभये ॥ प्रश्नतौ राजाकेपास बालाकिनेहीकराचाहियेथा परंतु बालाकिनेजबीनहींपूछा तबराजा ब्रह्मविद्याकेदेनेकी

प्रतिज्ञाकूं पालनकरतेहूए शुद्धआत्माकेबोधनवासते यहपूछतेभये॥ हेबालाके बुद्धिउपाधिकहोनेसे विज्ञानमयनामकूं प्राप्तभयायहपुरुष हस्तकरिदबावनेसेप्रथम कैसेस्वरूपमें शयनकरताभया॥ औरसोकैसास्वरूपहै जास्वरूपसे यहपुरुष हस्तकेदबावनेकेउत्तर जागरितकालमेंप्राप्तभयाहै॥ ऐसेउपनिषद्भाष्यमें यहदोप्रश्नदिखायेहैं॥ आत्मपुराणकर्त्ता श्रीशंकरानन्दस्वामिने तीनप्रश्नदिखायेहैं॥ सोभीमुमुक्षुजनोंके उपदेशवासतेप्रकारहै॥ औरहमनेतौभाष्यकीअनुसारतासे दोप्रश्नकहेहैं॥ ऐसेशयनकाजोआधार तथाजासेजागरितअवस्थाभयीहै तिनदोनोंप्रश्नोंकेउत्तरकूं बालाकिनजानताभया॥ तब राजा याअभिप्रायसे उत्तरदेताभया॥ वास्तवसे आत्मामें कर्तृत्वभोक्तृत्वादिसंसारनहीं किंतुवागादिउपाधिकेसंबंधकरिही मिथ्या कल्प्याहै॥ राजोवाच॥ हेबालाके जाआधारविषे यहविज्ञानमयपुरुष शयनकरेहै ताआधारकूंश्रवणकरो॥ यहजीव वाग्नेत्रश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेसामर्थ्यकूं ग्रहणकरिके सुषुप्तिकालमें औपाधिकपरिच्छिन्नताकूं त्यागकरि स्वाभाविकआपनेस्वरूपमें एकताकूंप्राप्तहोवेहै॥ जबजीव वागादिकइंद्रियोंकेसामर्थ्यकूं ग्रहणकरिके शयनकरेहै॥ तबयापुरुषकूं स्वपिति यानामसे कथनकरेहैं॥ आपनेस्वरूपकूं जोप्राप्तहोवे ताकूंस्वपितिकहेहैं॥ तासुषुप्तिकालमें घ्राण वाग् नेत्र श्रोत्र मन आदिकोंकेलीनहोनेसे कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूप संसारकाभीअभावहै॥ जागरितस्वप्नमें इनवागादिकोंकासद्भावहै कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपसंसारभीबनरहाहै॥ ऐसेकर्तृत्वभोक्तृत्वसंसारकूं औपाधिकहोनेसे परमार्थसे निर्विशेषसच्चिदानंदआत्माहै॥ हेबालाके जबीयहपुरुष स्वप्नावस्थाकूंप्राप्तहोवेहै तबआपनीमायाके बलकरि अनेकमिथ्यापदार्थोंकूंउत्पन्नकरेहै॥ जागरितअवस्थामें भिक्षुभी स्वप्नावस्थामेंमहाराजाहोवेहै॥ मूर्खभी पंडितहोवेहै॥ देवादिउत्तमदेहोंकूं तथापशुपक्षीआदिनीचदेहोंकूं स्वप्ना-

वस्थामेंप्राप्तहोवेहै ॥ जैसेजागरितावस्थामें चक्रवर्तीराजा आपनीइ-च्छाअनुसार आपनेदेशोंविषे अटनकरेहै ॥ तैसेस्वप्नावस्थाकूं प्राप्तहु-आपुरुष अनेकदेशोंमें आपनीइच्छाअनुसार अटनकरेहै ॥ स्वप्नावस्था-में भिक्षुनेराजाहोइजाना तथादेशोंमेंअटनादि यहसर्वही जागरितकाल-मेंरहेनहीं यातेंमिथ्याहै ॥ तैसेजाग्रत्के जेसर्वपदार्थहैं तेसर्वही स्वप्नमें रहेनहीं यातेंमिथ्याहैं ॥ हेबालाके इनजाग्रत्स्वप्नदोनों अवस्थावोंविषे देहइंद्रियादिउपाधिरहेहै ॥ यातेंहीयहजीव अनेकप्रकारके दुःखोंकूंप्रा-प्तहोवेहै ॥ सुषुप्तिअवस्थामें नामरूपजगत्केविशेषज्ञानसेरहितहोइकरि स्थितहोनेसे परमानंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हृदयसेनिकसकरि बहत्तरहजार नाड़ीयां सर्वशरीरमेंव्यापकहोइरहीहैं ॥ इननाड़ीयोंकीअधिकसंख्या प्रश्नउपनिषत्मेंकहीहै ॥ हितफलकीप्राप्तिका यहनाड़ीयांद्वारहैं यातें इननाड़ीयोंकानाम हिताकह्याहै ॥ तानाडीयोंकरिके पुरीतद्वारा ब्रह्मा-नंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हृदयकमलकेचारोंदिशासे वेष्टनकरिकेस्थितजोच-र्महै ताचर्मकूंपुरीतत्नामसे कथनकराहै ॥ तापुरीतद्वारा सुषुप्तिअव-स्थाविषे ब्रह्मानंदकूंप्राप्तभया जोजीवहै तामेंयहदृष्टांतकहेहैं ॥ जैसे अत्यंतबालक दुग्धकूं पानकरि शय्यामेंस्थितहुआ रागद्वेषादिकोंकेअ-भावसे परमानंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तथाजैसेचक्रवर्तीराजा सर्वभोगोंकरितृ-प्तहुआ आनंदकीअवधिकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तथाजैसेविद्याविनयादिकोंकूं प्राप्तहुआजीवन्मुक्तब्राह्मण आनंदकीसीमाकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसेसुषुप्ति-अवस्थामें यहपुरुष निरवधिकआनंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेकिसआधारमें यहपुरुषशयनकरताहै याप्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं ऐसेकह्या ॥ जोयहजीव सुषुप्तिअवस्थामें पुरीतद्वारा ब्रह्ममेंएकताकूंप्राप्तहुआही शयनकरेहै ॥ ब्रह्मसेभिन्नहोइकरि किसीभिन्नआधारमेंरहेनहीं ॥ जागरितअवस्थामें किसअवधिसेप्राप्तभयाहै ॥ याद्वितीयप्रश्नकाउत्तरभी यहहीजानना ताब्रह्मसेहीजागरितकूं प्राप्तहोवेहै ॥ यातेंजागरितकी अवधिभीब्रह्महै

दूसरानहीं ॥ यास्थानमेंभाष्यविषे ऐसीशंकादिखाईहै ॥ देवदत्तनामक पुरुष श्रीगंगाजीसे आइकरि आपनेगृहमेंप्रवेशकरेहै ॥ याकहनेसे गंगा अवधिप्रतीतहोवेहै औरगृहआधारप्रतीतहोवेहै ॥ तैसेपुरुषकेशयनके आधार औरअवधिभिन्नभिन्नकहनेचाहिये ॥ एकब्रह्मकूं उभयरूपता कैसेनिरूपणकरी ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते ऊर्णनाभिनामलूताकीटका तथाअग्निकादृष्टांतकहाहै ॥ जैसेएकहीऊर्णनाभिनामककीट किसीदूसरे-कीसहायताविनाही आपनेमुखसे तंतुवोंकूं उत्पन्नकरिके आपनेविषेही लीनकरेहै ॥ तैसेयहजीव सुषुप्तिअवस्थामें जिसब्रह्मकेसाथ अभेदभा-वकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताब्रह्मसेही वागादिकसर्वप्राण भूरादिकसर्वलोक अग्निआदिसर्वदेव ब्रह्मादिपिपीलिकापर्यंतसर्वभूत उत्पन्नहोवेहैं ॥ और जैसेएकरूपप्रज्वलितअग्निसे अनेकविस्फुलिंग उत्पन्नहोवेहैं ॥ तैसेएक-ब्रह्मसेही नानाप्रकारकाजगत् उत्पन्नहोवेहै ॥ औरताब्रह्मविषेहीस्थित है ॥ तथाताब्रह्मविषेहीलीनहोवेहै ॥ ताजगत्केउत्पत्तिआदिकभीवा-स्तवनहींहैं ॥ जगत्हीवास्तवनहीं तबताकेउत्पत्तिआदिक वास्तव कैसेहोवेंगे ॥ हेबालाके यहसंपूर्णजगत् जाग्रत्स्वप्नमेंउत्पत्तिकूंप्राप्त होवेहै ॥ सुषुप्तिमें प्रलयकूंप्राप्तहोवेहै ॥ दूसरेजागरितस्वप्नमें पुनः उत्पन्नहोवेहै ॥ दूसरीसुषुप्तिविषे पुनःलीनहोवेहै ॥ ऐसेअनेक-वार जगत्केउत्पत्तिआदिकहोवेहैं ॥ सोईकलदिनकायहगृहहै सोईयह क्षेत्रहै इत्यादिप्रत्यभिज्ञाज्ञानसर्वभ्रमरूपहैं ॥ जैसेकोईकहे सोईयहनदी है ॥ सोईयह दीपज्वालाहै इत्यादिप्रत्यभिज्ञाज्ञानभ्रमरूपहैं ॥ काहेते सोनदीकाप्रवाहनहींरह्या तथासोईदीपज्वालानहींरही ॥ केवलअविवे-कसेही सोईयहनदीहै सोईयहदीपज्वालाहै यहज्ञानहोवे हैं ॥ तैसेदिन-दिनविषे लीनहोनेहारेजगत्में सोईकलदिनकायहगृहहै सोईयहक्षेत्रहै सोईयहपुस्तकहै इत्यादिसर्वज्ञानभ्रमरूपहैं ॥ वास्तवसेतौ क्षणक्षणविषे जगत्उत्पन्नहोवेहै ॥ क्षणक्षणविषेलीनहोवेहै ॥ इसीवासतेश्रीवसिष्ठ-

आदिसर्वज्ञऋषियोंने दृष्टिसृष्टिवाद अंगीकारकराहै ॥ दृष्टिकहीये ज्ञानरूपब्रह्महीसृष्टिनामप्रपंचहै तादृष्टिरूपब्रह्मसे भिन्नसृष्टिनहीं ॥ और दृष्टिसृष्टिइसशब्दका अर्थयहभीलिखाहै ॥ जबतकदृष्टिरूपवृत्तिहै तबतकयहसृष्टिहै वृत्तिसेआगेपीछेसृष्टिनहीं ॥ ब्रह्मरूपसमुद्रमें बुद्बुदकीन्यांई क्षणक्षणविषे यहप्रपंच उत्पन्नहोवेहै तथाक्षणक्षणविषे लीनहोवे है ॥ श्रीव्यासभगवान्‌ने शारीरककेदूसरेअध्यायमें जोक्षणिकवादका खंडनकराहै सोअधिष्ठानरूपसत्यब्रह्मकूं नमाननेहारेबौद्धके मतकाखंडनहै॥ द्रष्टादृश्यदोनोंकूं बौद्धक्षणिकमानेहै ॥ वेदांतसिद्धांतमें दृश्यरूपप्रपंचतौ क्षणिकमान्याहै द्रष्टारूपब्रह्मकूं एकरससत्यरूप अंगीकारकराहै ॥ यातेंश्रीव्यासकेअनुसारही यहप्रपंचक्षणिकवादहै विरुद्धनहीं ॥ ग्रंथविस्तारकेभयसे और विशेषयुक्ति हमनेलिखीनहीं ॥ ऐसेसर्वप्रपंच जाब्रह्मविषेउत्पन्नहोवेहै तथास्थितहोवेहै तथाप्रलीनहोवेहै ॥ ताब्रह्मकीप्रतिपादक यहउपनिषत्‌है॥उपनामसमीपकाहै निनामनिरंतरकाहै षत्‌नामप्राप्तकरणेहारेकाहै ॥ ब्रह्मकूं समीपहीजानिरंतर प्राप्तकरणेहारीहोवे ताकूंउपनिषत्‌कहेहैं ॥ तारहस्यरूपउपनिषत्‌कूं दिखावेहैं ॥ सत्यस्य सत्यमितिप्राणावैसत्यंतेषामेषसत्यम्॥अर्थयह॥ सत्यस्यसत्यं नाम ब्रह्मदेवसत्यकेसत्यहैं॥सत्यकेसत्यहैं इसकाअर्थ आपहीउपनिषत्‌कहेहै ॥ प्राणावैसत्यं प्राणहीस्थूलसूक्ष्मप्रपंचरूपसत्यहैं ॥तेषामेषसत्यंनाम तिनसर्वप्रपंचरूपप्राणोंका यहब्रह्मदेवसत्यहैकहीये अधिष्ठानहै ॥ ऐसेबालाकि विद्याकूंग्रहणकरि मोक्षकूंप्राप्तभयाइति ॥ पूर्वप्रथमब्राह्मणमें प्राणोंकूं सत्यरूपताकही तासत्यरूपप्राणकी शिशुरूपसेउपासनाकेवासते दूसरा शिशुब्राह्मणहै इति ॥ तीसरेमूर्त्तामूर्त्तनामकब्राह्मणमें प्राणरूपकार्यब्रह्मकूं सत्यरूपताकाकथनहै ॥ द्वेवावब्रह्मणोरूपेमूर्त्तंचैवामूर्त्तंच ॥ अर्थयह ॥ नेतिनेतिइत्यादिवाक्योंकरि निरूपणकराजोपरमार्थरूपब्रह्महै ताब्रह्मके मायामयदोरूपहैं एकमूर्त्तहै दूसराअमूर्त्तहै इनदोनोंविषे जोमू-

र्त्तहै ॥ सोमर्त्त्यनाममरणेहाराहै दूसराअमूर्त्तअमरहै ॥ मूर्त्तपरिच्छि-न्नहै अमूर्त्तअपरिच्छिन्नहै ॥ मूर्त्तप्रत्यक्षहै अमूर्त्तअप्रत्यक्षहै ॥ पृथिवी जल तेज यहभूतत्रयमूर्त्तहैं॥ वायु आकाश यहअमूर्त्तहैं॥ पृथ्वी आदितीन-भूतोंके सघनअवयवहोनेसे तिनकूं मर्त्यरूपताकही ॥ वायु आकाशकूं विपरीतहोनेसे अमर्त्यरूपताकही ॥ तिनपृथिवी आदितीनभूतोंका यह आदित्यमंडलसारहै ॥ वायुआकाशरूपअमूर्त्तका आदित्य मंडलस्थ हिरण्यगर्भरूपपुरुषसारहै ॥ ऐसेअधिदैवविभागकूंकथनकरिके अबअ-ध्यात्मविभागकूंकहेहैं ॥ पृथिवीआदिभूतत्रयका चक्षुसारहै वायु आकाशका दक्षिणचक्षुमें स्थित लिंगात्मापुरुषसारहै ॥ अबलिंगशरीर-उपाधिकआत्माके अनेकरूपोंकूंवर्णनकरेहैं ॥ यहलिंगात्मा स्त्रीआदि-कोंकेवियोगहोनेसे हरिद्राकरिकेरंगे पीतवस्त्रकेतुल्यहोवैहै ॥ ऐसेपीत शुक्लरक्तादिकअनेकरूपोंकूं सत्व रज तमइनगुणोंकीन्यूनताअधिकतासे यह पुरुषप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेसमष्टिव्यष्टिलिंगात्माके अनेकरूपोंकूंकथन करिके अब याहिरण्यगर्भरूपप्राणसत्यका ब्रह्मसत्यहै यासत्यके सत्यब्रह्मकानिरूपणकरेहै ॥ अथाऽत आदेशोनेतिनेति ॥ अर्थयह ॥ अथनामसत्यस्वरूपके निरूपणके पश्चात् सत्यकासत्यजो ब्रह्म है ताकूंकहेहैं ॥ जिससेमूर्त्तअमूर्त्तके निरूपणके पश्चात् ब्रह्मकाहीनिरूप-णअपेक्षितहै ॥ औरमूर्त्तअमूर्त्तका निरूपणभी ब्रह्मके निरूपण-वासतेहीकराहै ॥ यातें नेतिनेति ऐसेब्रह्मकाकथनहै ॥ दोनकारोंसे मूर्त्तअमूर्त्तका स्थूलसूक्ष्मका अविद्या अविद्याकेकार्यका भाव अ-भावका इत्यादि सर्वअनात्मपदार्थोंका निषेधजानना ॥ औरनिषेध अधिष्ठान विनाहोवैनहीं यातेंसर्वप्रपंचकेनिषेधका अवधिरूपब्रह्म अबा-ध्यहै ॥ औरशुद्धब्रह्मकूं मनवाणीका अविषयहोनेसे यह निषेधरूप-मुख्यउपदेशही ब्रह्मकेप्राप्तकरणेहारा है ॥ ऐसे हिरण्यगर्भरूपप्राण सत्यहै तिनप्राणोंका अधिष्ठानरूप ब्रह्महीसत्यहैइति ॥ ॥ तृतीय-

ब्राह्मणमें कहीजाब्रह्मविद्या ताब्रह्मविद्याके अंगरूपसंन्यासके विधान-वासते चतुर्थमैत्रेयीब्राह्मणहै ॥ मैत्रेयीब्राह्मण याउपनिषत्के याचतुर्थाध्यायमें तथाषष्ठाध्यायमें पठनकराहै ॥ तिनदोनोंस्थानोंमें पठनकरे मैत्रेयीब्राह्मणकाअर्थ याउपनिषत्के षष्ठाध्यायमेंकहेंगे ॥ औरइस-मैत्रेयीब्राह्मणमें सर्वात्मताकहीहै तासर्वात्मताकीसिद्धिवासतेही मधु-ब्राह्मणहै ॥ तामधुब्राह्मणकेअर्थकूंकहेहैं ॥ जैसेअनेकमधुकरमक्षिका एकमधुकेअपूपकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ तैसेब्रह्मादिपिपीलिकापर्यंत सर्वप्राणियोंकी यहपृथिवी मधुकीन्यांईमधुनामकार्यहै ॥ यापृथिवीके सर्व भूतकार्यहैं ॥ जोयापृथिवीमें प्रकाशस्वरूप तथाअमृतस्वरूपपुरुषहै ॥ तथाजोलिंगात्मापुरुष याशरीरविषेवर्त्तमानहै ॥ तिनदोनोंसमष्टिव्यष्टि अभिमानीपुरुषोंका अभेदहै ॥ यहएकहीआत्मा उपकारकरूपसे तथा उपकार्यरूपसेस्थितहै ॥ तथा जल अग्नि वायु आदित्य दिशा चंद्र विद्युत् मेघ आकाश धर्म सत्य मानुष्य इत्यादिसर्वअधिदैवोंमें तथा रेतवागादिक सर्वअध्यात्मोंमें स्थितजोपुरुषहै तिनदोनोंकाअभेदहै ॥ एकहीआत्मा पृथिवीआदिकोंमें स्थितहुआ सर्वभूतोंविषेउपकारकरणे-हाराहै ॥ व्यष्टिभूतोंके अदृष्टोंकेअधीनही पृथिवीआदिरचेहैं यातेंव्य-ष्टिभूतोंमेंस्थितहुआ यहआत्मा पृथिवीआदिकोंका उपकारकरणेहारा है ॥ ब्रह्मैवेदंसर्वम् ॥ अर्थयह ॥ वास्तवसे यहउपकार्यउपकारकरूप सर्वजगत् ब्रह्मस्वरूपहै ॥ औरयहब्रह्मात्मा सर्वभूतोंका स्वतंत्रपतिहै तथासर्वभूतोंका प्रकाशकराजाहै ॥ जैसेरथकीनाभिमेंअरास्थितहोवेहैं तैसे याब्रह्मात्मामें ब्रह्मादिपिपीलिकापर्यंत सर्वभूतस्थितहोवेहैं ॥ तथा अग्निआदिसर्वदेव तथाभूरादिसर्वलोक वागादिसर्वप्राण विज्ञानमयसर्व आत्मा यापरमार्थरूप अधिष्ठानआत्मामें स्थितहोवेहैं ॥ याब्रह्मविद्या-कीस्तुतिवासते आख्यायिकाकहीहै ताआख्यायिकाकूं संक्षेपसे कथन करेहैं ॥ कोईएकऋषि अश्विनीकुमारोंकूं आपनेकार्यवासते प्राप्तहुआ

यहकहताभया ॥ हेअश्विनौ ! मेरेकार्यकूंकरो ॥ जबीतुममेराकार्यनहीं करोगे तबतुमारेघोरपापकूं मैंप्रगटकरूंगा ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि अश्विनीकुमारकहेहैं ॥ हेऋषे ! हमारेपापकूं प्रथमप्रगटकरो पश्चात्हम आपकाकार्यकरेंगे ॥ ऋषिरुवाच ॥ हेअश्विनौ ! तुम रूपऔरयौवनअवस्थाके अभिमानकरिके कदाचित्देवराजइंद्रकी अवज्ञाकरतेभये॥ तुमकूंवैद्यजानकरि तथाअवज्ञाकूंप्राप्तहुआइंद्र तुमारेयज्ञभागकूं दूरकरताभया ॥ यज्ञभागसेरहितहुए तुम महान्दुःखकूंप्राप्त होतेभये ॥ आपनेदध्यङ्नामक दधीचगुरुके समीपआइकरि क्रोधसेयहवचनकहतेभये ॥ हेगुरो ! इंद्रने हमारायज्ञभाग दूरकराहै ॥ अबहमक्याकरें ॥ हमइंद्रकेमारणेके अनेकउपायजानतेहैं अबहमइंद्रकानाशकरेंगे ॥ आपकीकृपासे हमइंद्रसेमृत्युकूं नप्राप्तहोवेंगे ॥ आपभीसंमतिदेवो जोअब क्याकरणाउचितहै ॥ ऐसेतुमारे वचनकूंश्रवणकरि तुमारागुरु यहकहताभया हेअश्विनौ ! तुमाराइंद्र शत्रुनहींहै यहक्रोधही तुमाराशत्रुहै ॥ जबीतुमक्रोधरूपीशत्रुके जीतनेविषेभी समर्थ नहीं तबतुमइंद्रकूं कैसे जीतोगे ॥ जबीइंद्रही तुमाराशत्रुहोता तबतिसइंद्रने तुमारेक्रोधसे प्रथमही तुमारायज्ञभाग किसवासते दूर नकरा ॥ यातेंइंद्रशत्रुनहीं क्रोधनेही तुमारेकूं दीनसेदीनकराहै ॥ जोप्राणि आपनेमहावैरी कामक्रोधके जीतेविना औरसेवैरकरताहै सोमहामूढपुरुषहै ॥ हेअश्विनौ ! जबी तुमारेमें कुछसामर्थ्यहै तबतुम आपनेकामक्रोधरूपवैरीयोंकानाश किसवासतेनहींकरते ॥ दधीचगुरुने तुमारेक्रोधकेदूरकरणेहारे शांतिवाक्यकहेभी परंतुतुमाराक्रोधनिवृत्तनहींभया ॥ तबतुमारेगुरुने यह कह्या ॥ हेअश्विनौ ! जबतुमक्रोधरूपअग्निकूंशांतकरोगे तबतुमारेतांई दुर्लभब्रह्मविद्याका हमदानकरेंगे ॥ इंद्रकेसाथयुद्धकरणा अत्यंतअनुचितहै ॥ जबीपृथिवीकेदेवतारूप ब्राह्मणोंका मारणाभी महापातकहोनेसे अत्यंतअनुचितहै ॥ तबस्वर्गकेदेवता इंद्रादिकोंकामारणा कैसेअ-

नुचितनहींहै॥ यातेंइंद्रसे तुमवैरकात्यागकरो ॥ औरयज्ञभागकी प्राप्तिके उपायकूं मैंतुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ शर्यातिनामकराजाका जामातारूप च्यवनऋषि तुमारेकूं यज्ञभागकादानकरेगा॥ च्यवनऋषिकेनेत्रनहीं हैं॥ जबतुमताऋषिकेतांई नेत्रकादानकरोगे तबतुमारेतांई सोऋषि यज्ञभाग अवश्यदेवेगा ॥ ऐसेगुरुकेवचनोंकूंश्रवणकरि तुमच्यवनऋषिके समीप जाइकरि यज्ञभागकूंप्राप्तभये ॥ सोच्यवनऋषि इंद्रसेनिर्भयहोइकरि तुमारेतांई यज्ञभागकादानकरताभया ॥ याच्यवनऋषिकी कथा भारतके वनपर्वमें लोमशनामकऋषिने महाराजाधर्मपुत्र युधिष्ठिरकेप्रति कथनकरीहै ॥ जबतुमदधीचनामकगुरुकेसमीपसे चलेआये ॥ तबपश्चात् तादधीचनामकगुरुकेसमीप देवराजइंद्र प्राप्तहोताभया ॥ तुमारेगुरुने इंद्रका आतिथ्यभावकरिके यहकहा ॥ हेइंद्र तुमाराप्रियमैंक्याकरूं ॥ इंद्रउवाच ॥ हेऋषे दुर्लभजाब्रह्मविद्याहै ताब्रह्मविद्याकूं मेरेतांई तुमकथनकरो ॥ तबदधीचऋषि आपनेमनमें यहविचारकरताभया ॥ वैराग्य श्रद्धा गुरुभक्तिआदिसाधनोंसे विना अनधिकारीकूं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा अत्यंतअयोग्यहै ॥ भोगोंमेंलंपटयाइंद्रमें वैराग्यादिकसाधनोंकेअभावसे ब्रह्मविद्याका अधिकारनहीं ॥ और जबीमैं ब्रह्मविद्याका उपदेशनहींकरूं तबमेंनेप्रथमयहकह्याथा ॥ जो तेरा प्रिय मैं क्याकरूं ॥ इंद्रनेब्रह्मविद्यामांगी ॥ जबीमैं ब्रह्मविद्याका दाननहींकरूं तबमेरीप्रतिज्ञाभंगहोवेगी ॥ ताप्रतिज्ञाभंगकेभयसे इंद्रके तांई दधीचऋषि ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ साब्रह्मविद्या मधुब्राह्मणरूपहै ॥ ताकापूर्वनिरूपणकराहै ॥ औरसंक्षेपसे मधुब्राह्मणका अर्थयहहै ॥ एकहीब्रह्मात्मा पृथिवीआदिकोंमें तथामनुष्यशरीरादिकोंमें व्यापकहोइरहाहै ॥ औरयाब्रह्मात्मानेही पशुपक्षीआदिकोंके शरीरोंकूं उत्पन्नकरिके आपहीप्रवेशकराहै ॥ हेइंद्र एकहीआत्मा तेरेशरीरमें तथाश्वानकेशरीरमें समानहीव्यापकहै ॥ पंचभूतोंकादेहभी

श्वानका तथातुमइंद्रका तथामेरासमानहै ॥ औरइंद्रनाम परमऐश्वर्य-वालेकाहै परमऐश्वर्यवालापरमात्माहै तुमतौव्यर्थही अभिमानकरि आपनाऐश्वर्यमानतेहो ॥ ऐसेअनेकयथार्थवाक्योंकूं श्रवणकरि राज-सप्रकृतिवालाइंद्र परमक्रोधकूंप्राप्तहोताभया ॥ और यहकहताभया हेऋषे आजसेलेकरि यामधुविद्याकूं तूंकिंसीकेतांईकहेगा तबतेराशिर आपनेवज्रसे मैंकाटदेवूंगा ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि दधीचऋषि परम हर्षकूंप्राप्तभया ॥ जिसविचारकूंकरिके तादधीचऋषिने इंद्रकूंशाप नदीया सोविचारयहहै देवोथर्वाऋषिमेरेगुरुने मेरेतांई वेदविद्याका उपदेशतौकरा परंतु जीवन्मुक्तिकेसुखकीप्राप्तितौ इंद्रकीकृपासेही भयीहै ॥ जीवन्मुक्तिसुखकाविरोधीतौ मेरेमेंयहहीथा जोविद्याकाउप-देशकरणा ॥ यहमेराशिष्यहै मैंगुरुहूं इत्यादिभेदबुद्धिकी इंद्रकीकृपासे सर्वथानिवृत्तिभयीहै ॥ औरकिंचित् अपकारकेप्राप्तहोनेसे ज्ञानीपुरु-षभी जबीक्रोधकरेंगे तबसर्पश्वानादिकोंसे ज्ञानीकीक्याविलक्षणता होवेगी ॥ जेपुरुष अपकारकरणेवालेमैं क्रोधनहींकरते उत्तमज्ञानीतेहैं॥ औरअपकारकरणेवालाभी आत्माकाअपकारकरताहै वादेहइंद्रिया-दिरूप अनात्माका अपकारकरताहै ॥ निर्विकारआत्माकेअपकार करणेकूंतौ कोईसमर्थनहीं ॥ अंगीकारकरेंतौभी आत्मानाम आपने स्वरूपकाहै आत्माएकहीहै तबअपकारकर्त्तासोपुरुष आपनाही अप-कारकरेहै ॥ औरअनात्मादेहइंद्रियादिकोंके अपकारकरणेसेभी ज्ञा-नीकोक्या ज्ञानीतौ देहइंद्रियादिकोंसेभिन्न शुद्धनिर्विकारब्रह्मरूप आपकूंमानताहै ॥ औरज्ञानीकेहीसर्व देहहैं एकदेहसे दूसरेदेहकेअपकार हुएभी ज्ञानीकूंक्रोधकरणायोग्यनहीं ॥ जैसेआपनेदंतोंकरि आपनी जिह्वाकेकाटनेसे पुरुष पाषाणकरिके आपनेदंतोंकूं तोडकरि बाहिर-निकासेनहीं ॥ तैसेएकदेहमेंस्थितहुआआत्माअपकारकरेहै दूसरेदेहमें स्थितहुआ अपकारकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरवास्तवसेतौ आत्मामेंअप-

कारादिकोंकासंबंधनहीं ॥ आत्माकेयथार्थस्वरूपकूं नजाननेवालेपुरु-
षनेभी यहविचारकरणाचाहिये उपकारअपकारादिकोंसेहोनेवालेसुख
दुःख आपनेकर्मजन्यहैं ॥ यातेंआपनेपापरूपकर्मकेफलदुःखकूं पुरुष
प्राप्तहोवेहै ॥ दूसराकोई सुखदुःखकेकरणेहारानहींहै ॥ ऐसेअनेक
प्रकारकेविचारकरि सोदधीचऋषि शापनदेताभया ॥ पश्चात्इंद्रकूं
सोऋषियहकहताभया ॥ हेइंद्र तुमकुछऔरआपनाकार्यकहो विद्याका
उपदेशनहींकरणा यहजोतुमनेमेरेकूंकहा सोयहतौमेराही हितकराहै ॥
आपनाकोईऔरकार्यकहो जाकूंमैंकरूं ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि इंद्र
यहकहताभया ॥ हेऋषे मेरायहहीकार्यहै तुमनेविद्याका किसीकूंउप-
देशनहींकरणा ॥ ऐसेकथनकरिके इंद्रस्वर्गलोकमें प्राप्तहोताभया ॥
पश्चात् तुमदोनों तादधीचगुरुकेसमीप आइकारि यहकहतेभये ॥ हेगुरो
आपने ब्रह्मविद्याकेदेनेवासतेकहाथा ॥ सोअबआपकृपाकरि ब्रह्म-
विद्याकाउपदेशकरो ॥ ऐसेतुमारेवचनकूंश्रवणकरि सोदधीचऋषि परम
चिंताकूंप्राप्तभया ॥ औरचिंताकानिमित्त तुमारेकूं सर्वकहकरि यह
कहताभया ॥ जबीतुमारेकूं मैंब्रह्मविद्याकादाननहींकरता तबमेरी
प्रतिज्ञाभंगहोवेहै जबीताब्रह्मविद्याका तुमारेकूंउपदेशकरूं तब इंद्र
मेराशिरकाटेगा ॥ मरणसेतौ मैंभयनहींकरता ॥ काहेते जोशरीर
तौदृष्टविनश्वरहै ॥ शरीरकानाशहोनेके यहनिमित्तप्रसिद्धहैं ॥ व्या-
धि सर्प सिंह चोर विष जल अग्नि शत्रु अजीर्ण उच्चस्थानसेगिरना
इत्यादिअनंतनिमित्त याशरीरकेनष्टहोनेकेवर्त्तमानहैं ॥ यातेंशरीरका
नाशतौ अवश्यहोवेगा शरीरकेनाशहोनेसे मेरेकूंकिंचित्भीतिनहीं ॥
भीतितौमेरेकूंप्रतिज्ञाभंगसेंहै ॥ औरशरीरनाशहोनातो उत्तमहै पर-
तु प्रतिज्ञाभंगकरणी अत्यंतनिंदितहै ॥ जबीतुमारेतांई ब्रह्मविद्याका
मैंदानकरणेलगा बीचमेंही इंद्रनेमेराशिरकाटदीया तब मेरीप्रतिज्ञाभं-
गहोवेगी ॥ ऐसेगुरुकेवचनोंकूंश्रवणकरि तुमनेगुरुवोंकूंयहकहा ॥ हे-

गुरो यहअश्वहै इसकाशिरकाटकरि हमआपकीग्रीवामें स्थापनकरतेहैं आपकाशिरकाटकरि अश्वकीग्रीवामैं स्थापनकरतेहैं ॥ ताअश्वकेमुखसे आपहमारेतांई ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ जबीइंद्रवज्रसे आपकाशिरकाटदेवेगा तबहमपुनः आपकाशिरहीस्थापनकरेंगे ॥ ऐसे करणेसे आपकाभीमृत्युनहींहोगा तथाअश्वकाभीमृत्युनहींहोगा ॥ जबीआप हमारेतांई ब्रह्मविद्याकादानकरोगे तबआपकीप्रतिज्ञाभंगभी नहींहोगी ॥ जबीतुमारेगुरुने अंगीकारकरा तबतुमशस्त्रसे आपनेगुरुकाशिरकाटकरि अश्वकाशिरलगाइदीया ॥ हेअश्विनौ जबीतुमने ऐसाघोरपापकरा तबतुमारागुरुअश्वकेशिरसेही तुमकूं तामधुविद्याका उपदेशकरताभया ॥ तिसकालमें दधीचगुरुके ताअश्वकेशिरकूंइंद्र काटदेताभया ॥ तबतुमने अश्वकेशिरकूं पृथिवीमेंगिरादेखकरि अश्वकेशिरकूं अश्वकीग्रीवामैंस्थापनकरा ॥ औरदधीचगुरुकेशिरकूं गुरुकीग्रीवामें स्थापनकरा ॥ हेअश्विनौ संक्षेपसे ताविद्याकूं मैं कथनकरताहूं ॥ यहआत्मा पृथिवीआदिसर्वभूतोंकूंउत्पन्नकरिके दोपदोंवालेशरीरोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तथाचारिपदोंवालेशरीरोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ शरीरोंकूंउत्पन्नकरिके तिनमें लिंगशरीरउपहितहूआ प्रवेशकरताभया ॥ सर्वशरीररूपीपुरीयोंमें स्थितहोनेसेही पुरुषकहावेहै ॥ परमात्माहीअंतरबाहिर सारेपरिपूर्णहै ॥ याआत्माकाप्रवेशभी सूर्यकेप्रतिबिंबकीन्यांई बुद्धिमैंप्रतिबिंबरूपहीजानना ॥ यहआत्मा अनेकशक्तिवाली आपनीमायाशक्तिकरि बहुतरूपसे प्रतीतहोवेहैं इति ॥ षष्ठब्राह्मणमें ब्रह्मविद्याकीस्तुतिवासते तथाजपवासते-तथाब्रह्मविद्यामें असांप्रदायिकत्वशंकाकीनिवृत्तिवासते ऋषियोंकावंशकथनकराहै ॥ ॥ इतिबृहदारण्यकेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

॥ ॐनमः परमेष्ठिने ॥ पूर्वचतुर्थाध्यायमें शास्त्रप्रधानतासे आत्माकानिरूपणकरा ॥ युक्तियोंसें आत्माकेनिरूपणवासते यापंचमाध्याय-

काआरंभहै ॥ प्रथमविद्याकीस्तुतिवासते कथाकहीहै ॥ विदेहोंके वंशमेंहोनेसे वैदेहनामकूं प्राप्तहोनेवालाजनकराजा यज्ञकूंकरताभया ॥ तायज्ञकानाम बहुदक्षिणथा ॥ तायज्ञमें कुरुपांचालादिदेशोंकेब्राह्मण एकठेहोतेभये ॥ तिनअनेकब्राह्मणोंकूं देखकरि राजाजनककेमनविषे ऐसीजिज्ञासाभयी जोइनमेंअधिकवेदकेअर्थकूं जाननेवाला ब्रह्मिष्ठ कौनहै ॥ पश्चात्राजाने आपनेमनविषे यहविचारकरा धनमेंअनेकप्रकारकेदोषहैं ॥ धनकरिहीआपसमेंविवादकरेंगे तब इनब्राह्मणोंविषे ब्रह्मिष्ठकानिर्णयहोवेगा ॥ ऐसेविचारकरि एकसहस्रगौवोंके एकएक शृंगमें पंचपंचमुहररूपस्वर्णकूं बांधकरि सभामेंस्थापनकरताहूआ यहकहताभया ॥ भोब्राह्मणा जोतुमारेमें अतिशयकरिब्रह्मज्ञहै ऐसेब्रह्मिष्ठकेवासते यहगौवांस्थापनकरीहैं ॥ जबकोई ब्राह्मणभी आपनेकूंब्रह्मिष्ठमानकरि गौवोंकेलेजानेविषे समर्थनभया ॥ तबयाज्ञवल्क्य सामवेदकेपठनकरणेवाले ब्रह्मचारिशिष्यकूं यहकहतेभये ॥ हेसौम्य इनगौवोंकूं मेरेगृहविषे तूलेजा ॥ ऐसेयाज्ञवल्क्यकेवचनकूंश्रवणकरि सोब्रह्मचारी गौवोंकूं याज्ञवल्क्यकेगृहविषे लेजाताभया ॥ तिसकालमें ब्राह्मणक्रोधकूंप्राप्तभये ॥ औरयहकहतेभये यहयाज्ञवल्क्य आपकूंब्रह्मिष्ठमानकरि हमारासर्वकातिरस्कारकरताभयाहै ॥ तबराजा जनककाऋत्विग् राजआश्रितहोनेसे महाअभिमानी याज्ञवल्क्यकूं यहकहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य तूं आपकूं सर्वसेअधिकब्रह्मज्ञानी मानताहै क्यादूसरेब्राह्मणब्रह्मिष्ठनहींहैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेआश्वल ब्रह्मिष्ठकूं हमवारंवार नमस्कारकरतेहैं ॥ आश्वलउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य जबतूंब्रह्मवेत्ताकूं नमस्कारकरताहै तबसर्वब्रह्मिष्ठब्राह्मणोंके वासते प्राप्तभयीगौवोंकूं तूंआपने गृहविषे किसवासतेलेजाताभयाहैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेआश्वल स्वर्णसहितगौवोंकूं देखकरि मेरेमनविषे अभिलाषाउत्पन्नभयी यातें

हीमैंगौवोंकूं आपनेगृहविषेलेगया ॥ राजादेनेवालाहै मैं लेजानेवालाहूं ब्राह्मणोंकूं अकारणक्रोध किसवासतेउत्पन्नभयाहै ॥ औरधनकूं यह ब्राह्मणराजासेग्रहणकरें हेआश्वल तुमयाराजासे औरधनकूंग्रहणकरो मैंवारणनहींकरता ॥ यातेंब्राह्मण क्रोधकिसवासतेकरतेहैं ॥ जैसेअग्निमें आहुतिकेगेरनेसे अग्निप्रज्वलितहोवेहै ॥ तैसेयाज्ञवल्क्यकेवचनकूं श्रवणकरि आश्वलमहान्क्रोधकूं प्राप्तहुआवादकरताभया ॥ सोआश्वल कर्मसंबंधीअनेकप्रश्नोंकूंकरताभया इति ॥ पश्चात् आर्त्तभाग ग्रहऔर अतिग्रहविषयकप्रश्नकरताभया ॥ औरमरणकालमेंपुरुषके वागादिक जबलीनहोवेहैं तबपूर्वशरीरकूंत्यागकरि किसकूं आश्रयकरिके दूसरे शरीरकूं पुरुषग्रहणकरेहै ॥ ऐसेप्रश्नोंकूंश्रवणकरि तबयाज्ञवल्क्यमुनि उत्तरदेतेभये ॥ इंद्रियग्रहहैं औरविषयअतिग्रहहैं ॥ जैसेसमुद्रविषे प्राप्तभयेपुरुषकूं मकरादिकग्रह भक्षणकरेहैं औरतिनमकरादिकोंकूं अतिग्रहरूपतिमिंगिलादि भक्षणकरेहैं ॥ तैसेसंसाररूपसमुद्रमें नेत्रश्रोत्रादिरूपग्रह पुरुषकूं आपनेअधीनकरेहैं ॥ तिनग्रहरूपइंद्रियोंकूं रूपादिविषयरूपअतिग्रह आपनेअधीनकरेहैं ॥ और दूसरेशरीरकेग्रहणकानिमित्त कर्मकूंकथनकरा ॥ हेआर्त्तभाग पुण्यकेकरणेहारापुरुष देवादि उत्तमयोनियोंकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ पापकेकरणेहारापुरुषश्वानशूकरादि नीचयोनियोंकूं प्राप्तहोवेहै इति ॥ पश्चात् भुज्युनामकब्राह्मण याज्ञवल्क्यसे यहपूछताभया ॥ अश्वमेधनामकयागकेकरणेहारे पुरुष याशरीरकूं त्यागकरि कहांप्राप्तहोवेहैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेभुज्यो इंद्रादिकदेवतावोंकीकृपासे अश्वमेधकरणेहारेपुरुष याब्रह्मांडसेबाह्य सूत्रात्माकूं प्राप्तहोवेहैं इति ॥ ऐसेसंसारमेंहोनेहारे कर्मफलकीअवधिकूं निरूपणकरिके अबवास्तवब्रह्मस्वरूपके निरूपणवासते अध्यायकाशेषहै ॥ प्रथमचतुर्थउषस्तब्राह्मणमें ॥ अपरोक्षसाक्षीआत्मासे ब्रह्मका अभेदनिरूपणकराहै ॥ उषस्तउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य जैसेकोईपुरुष

गौकाशृंगग्रहणकराइकरि गौकाउपदेशकरे जोयहगौहै ॥ तैसेतूंमेरेतांई आत्माकाअपरोक्षरूपसेकथनकर जोयहआत्माहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउषस्त यहजडप्राण जाआत्माकीचेतनतासे चेष्टाकरेंहैं ॥ तथा रूपादिकोंकूं नेत्रादिग्रहणकरेंहैं ॥ यहसर्वकेअंतरआत्मादेहइंद्रियादिकोंकी चेष्टाकरानेवालाही ब्रह्मरूपहै ॥ अतोऽन्यदार्त्तं ॥ अर्थयह ॥ हेउषस्त याअंतरब्रह्मात्मासे अन्यनामरूपप्रपंच आर्त्तहैनाम पीडितहै ॥ अर्थयहमिथ्याहै इति ॥ पूर्वचतुर्थब्राह्मणमें ब्रह्मविद्याकही ॥ अबजीवन्मुक्तिसुखकीप्राप्तिवासते संन्याससहितब्रह्मविद्याका यापंचमब्राह्मणमें कथनकरेंहैं ॥ कहोलनामकब्राह्मण यहप्रश्नकरेंहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य क्षुधापिपासा शोकमोह जरामृत्यु इनषट्ऊर्मियोंसहितजीवात्माकी सर्वधर्मातीतशुद्धब्रह्मकेसाथ एकताकैसेहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेकहोल क्षुधापिपासा प्राणोंकाधर्महैं ॥ शोकमोहमनकाधर्महैं ॥ जरामृत्यु यास्थूलशरीरकाधर्महैं ॥ साक्षीआत्मा सर्वधर्मसेरहितहै ॥ यातेंही याप्रत्यगात्माकी ब्रह्मसेएकताबनेहै ॥ याब्रह्मात्माकूं जानकरि सर्व इच्छारूपएषणाकूंत्यागकरि विद्वान्संन्यासकूंग्रहणकरेंहैं ॥ जिनएषणावोंका ज्ञानीत्यागकरेंहैं तेएषणातीनप्रकारकीहैं ॥ एकपुत्रएषणाहै ॥ दूसरीवित्तएषणाहै ॥ तीसरीलोकएषणाहै ॥ यालोककी तथास्वर्गादिलोकोंकी इच्छाकानाम लोकएषणाहै ॥ इनसर्वएषणावोंकूं त्यागकरि संन्यासाश्रमकूंग्रहणकरतेहूएविद्वान् भिक्षाअटनसे शरीरनिर्वाहकूं करेहैं ॥ औरहेकहोल पुत्र पशु गृह क्षेत्र धन इनसर्वपदार्थोंकानामवित्तहै ॥ यातेंवित्तएषणा तथालोकएषणा यहदोनोंएषणाहैं ॥ ऐसीएषणासे निवृत्तहूएवामदेवादिविद्वान् जीवन्मुक्तिके परमानंदकूंप्राप्तहोते भये ॥ यातेंअबकेमुमुक्षुजनोंकूंभी सर्वएषणाकेत्यागपूर्वक संन्यासाश्रमकूं ग्रहणकरिके आत्माकेश्रवणमननिदिध्यासनकर्त्तव्यहैं ॥ तिनश्रवणादिकोंसे अपरोक्षज्ञानकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताअपरोक्षज्ञानकूं प्राप्तहुआ

विद्वान् कृतार्थताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरयाब्रह्मात्मारूपज्ञानीसेभिन्न नामरूपप्रपंचमिथ्याहै॥ औरमिथ्याभूत क्षुधापिपासादिअनात्मधर्मोंसे निर्विकारअसंगआत्माका संबंधनहींहै ॥ यातेंताअसंगप्रत्यगात्माकी ब्रह्मके साथ एकतावनेहै इति ॥ पूर्वनिरूपणकरे सर्वांतरआत्माकेनिर्णयवासते षष्ठगार्गीब्राह्मणकाआरंभहै ॥ वचक्नुऋषिकीपुत्री गार्गीनामाब्रह्मविदुषी तायाज्ञवल्क्यकूं यहपूछतीभयी ॥ हेयाज्ञवल्क्य यहनियमहै ॥ जोजोकार्यहै सोसोआपनेकारणमें स्थितहोवेहै ॥ जैसेपटरूपकार्य आपनेतंतुरूपकारणमें स्थितहोवेहै ॥ तैसेब्रह्मांडरूपपृथिवी आपनेकारणरूपजलोंमें स्थितहोवेहै ॥ तिनजलोंका आश्रयकौनहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी, तेजलवायुमेंही तंतुवोंविषेपटकीन्यांई ओतप्रोतहोइकरिस्थितहैं॥इंधनादिआश्रयसे विना अग्निप्रतीतहोवेनहीं यातेंअग्निरूपआश्रयकूं त्यागकरि वायुकूंहीपृथिवीकाआश्रयकथनकरा ॥ गार्गीप्रश्नकरेहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य वायुकिसमेंओतप्रोतहै ॥ पक्षीआदिकोंकेगमनकाआश्रय जोअंतरिक्षलोकहै ताअंतरिक्षलोकमेंही वायुओतप्रोतहै॥ अंतरिक्षलोकका आश्रय गंधर्वलोकहै ॥ गंधर्वलोकका आश्रय आदित्यलोकहै ॥ आदित्यलोकका आश्रय चंद्रलोकहै ॥ चंद्रलोकका आश्रय नक्षत्रलोकहै ॥ नक्षत्रलोकका आश्रय देवलोकहै ॥ देवलोकका आश्रय इंद्रलोकहै ॥ गंधर्वलोकसे लेकरियाइंद्रलोकपर्यंत स्थूलभूतोंकी सूक्ष्मअवस्थाजाननीयोग्यहैं तेअवस्था पूर्वअवस्थाकी अपेक्षासे सूक्ष्महैं उत्तरउत्तरअवस्थाकीअपेक्षासे स्थूलहैं ॥ इंद्रलोकको जनकजे भूतोंकी सूक्ष्मावस्थाहैं तेअवस्थाही इंद्रलोकका आश्रयहैं ॥ इंद्रलोककीआश्रय जाअवस्थाहै तिसकानाम प्रजापतिलोकहीश्रुतिमेंकह्याहै ॥ प्रजापतिपदकाअर्थ स्थूलभूतरूप विराट्है ॥ तिसस्थूलभूतरूप विराट्का अपंचीकृत सूक्ष्मभूतआश्रयहैं ॥ तिनअपंचीकृतसूक्ष्मभूतोंका सूत्रात्मरूप ब्रह्मलोकनामसे कथनकराहै ॥ गार्गीनेपूर्वपूर्वकेआश्र-

यकाप्रश्नकरा याज्ञवल्क्यनेउत्तरउत्तरआश्रयवर्णनकरे ॥ पश्चात् गार्गी तर्करीतिसे तिसब्रह्मलोकका आश्रयपूछतीभयी ॥ शास्त्रगम्यसूत्रात्माकूं तर्करीतिसेपूछनेवालीगार्गीकूं याज्ञवल्क्ययहकहतेभये ॥ हेगार्गी तुमअतिप्रश्नमतिकरो ॥ शास्त्रगम्यसूत्रात्माकूं जबीतुम तर्करीतिसेपूछेगी तबतेराशिर पृथिवीपरगिरजावेगा ॥ ऐसेश्रवणकरि भयभीतहूईगार्गी तूष्णींहोतीभयीइति ॥ सप्तमब्राह्मणमें शास्त्ररीतिसे सूत्रात्मातथाअंतर्यामिका निर्णयकराहै ॥ उद्दालकप्रश्नकरेहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य यहपृथिवीलोक तथापरलोक तथाब्रह्मासेलेकरि पिपीलिकापर्यंत सर्वभूत जासूत्रकरिकेग्रथितहैं तासूत्रकूंतूंजानताहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउद्दालक तासूत्रकूं मैंजानताहूं ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य जबीतूंजानताहैं तौकिसंवासतेकहतानहीं व्यर्थहीआपनीवाचालतासे तूंकहताहैमैंजानताहूं मैं जानताहूं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउद्दालक श्रवणकर ॥ सूत्रात्मरूप समष्टिवायुकरिकेही यहलोक तथापरलोक ब्रह्मादिसर्वभूत ग्रथितहोइरहेहैं ॥ जबप्राणरूपवायु याशरीरसे निकसेहै तबयहशरीरनाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य अबअंतर्यामीका निरूपणकर ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ यःपृथिव्यांतिष्ठन् पृथिव्याआंतरो यंपृथिवीनवेद यस्यपृथिवीशरीरं यःपृथिवीमंतरोयमयति एषत आत्मा अंतर्याम्यमृतः ॥ अर्थयह ॥ हेउद्दालक जोपृथिवीमें स्थितहै सोअंतर्यामीहै ॥ पृथिवीमेंस्थिततौ घटादिकभीहैं क्याघटादिकहीअंतर्यामीहैं ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासतेपृथिवीके अंतरहै ॥ यहकह्या घटादिकपृथिवीकेबाह्यहै अंतर्यामी पृथिवीके अंतरहै पृथिवीके अंतरतौ पृथिवीअभिमानीदेवताहै क्या पृथिवीअभिमानीदेवताही अंतर्यामीहै ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते पृथिवीदेवताजाकूं जानेनहीं यहकह्या ॥ ताअंतर्यामीकाशरीरकौनहै ॥ तहांउत्तरकहेहैं यस्यपृथिवीशरीरं जाअंतर्यामीका पृथिवीहीशरीरहै ॥

अंतर्यामी जिसकूंप्रेरणकरैहै ताप्रेर्यसे भिन्नप्रेरकरूप अंतर्यामीकाशरीर नहींहै ॥ ऐसेअंतरवर्त्तमानहूआजोअंतर्यामी पृथिवीकूं तथापृथिवीअभिमानीदेवताकूं प्रेरणकरैहै ॥ हेउद्दालक सोयहअंतर्यामी तेराआत्माहै ॥ औरअंतर्यामीआत्मा ॥ अमृतनाम कूटस्थतथाआनंदस्वरूपहै ॥ ऐसेही जोअंतर्यामी जलोंमेंस्थितहै जलअभिमानीदेवता जाकूं जानेनहीं इत्यादिसर्वपदार्थोंविषे पृथिवीमेंकहीरीतिसे सोअर्थसर्व घटायलेना ॥ अग्नि अंतरिक्ष वायु स्वर्ग आदित्य दिशा चंद्र तारा आकाश तमः तेजसामान्य इनअधिदैवपदार्थोंमें अंतर्यामीकह्या ॥ अब अधिभूत पदार्थोंविषे अंतर्यामीका निरूपणकरैहैं ॥ ब्रह्मादिपिपीलिकापर्यंत सर्वभूतोंविषे अंतर्यामीस्थितहै सर्वभूत जाअंतर्यामीकूंजाने नहीं ॥ पृथिवीमेंकहीरीति सर्वत्रइनपदार्थोंविषे घटायलेनी॥अबअध्यात्मपदार्थोंमें अंतर्यामीकानिरूपणकरैहै ॥ जोअंतर्यामीप्राणमेंहै तथा वाक् चक्षु श्रोत्र मन त्वक् विज्ञान रेत इत्यादिसर्वजगत्में जोअंतर्यामी व्यापकहै ॥ जोअंतर्यामी नेत्र श्रोत्र मन बुद्धिआदिकोंका अविषयहै ॥ तथानेत्र श्रोत्र मन बुद्धिके साथ मिलकरि द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाताहोवैहै ॥ औरवास्तवसे याअंतर्यामीसे द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता जीव भिन्ननहींहै ॥ यहअंतर्यामीही जीवभावकूं प्राप्तहुआ द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञातादिरूपहोवैहैइति ॥ सप्तमउद्दालकब्राह्मणमें सोपाधिकब्रह्मकानिरूपणकरा निरुपाधिकब्रह्मकेनिरूपणवासते यहअष्टमगार्गीब्राह्मणहै ॥ याज्ञवल्क्यकेशापकेभयसे गार्गी ब्राह्मणोंसे आज्ञालेवैहै॥ हेब्राह्मणा भगवंतः जबआप मेरेकूं आज्ञादेवो तबमैंदोप्रश्न याज्ञवल्क्यसे पूछतीहूं तिनमेरेदोनों प्रश्नोंकेउत्तरोंकूं जबयहयाज्ञवल्क्यकहदेवेगा तबतौ यायाज्ञवल्क्यकूं कोईजीतनेवालानहींहै ॥ जबीनहींकहेगा तब मेरेशापसे इसयाज्ञवल्क्यकामस्तक पृथिवीपर गिरेगा ॥ यातें तुमसर्वही मेरेकूं आज्ञादेवो ॥ ब्राह्मण आज्ञादेतेभये ॥ तबगार्गीयाज्ञवल्क्यकुं

यहकहतीभयी ॥ हेयाज्ञवल्क्य बहुलताकरिके पुरुषोंसे स्त्रीकीबुद्धि अधिकहोवेहै ॥ तिनस्त्रीयोंमेंभी मेरेकूं सरस्वतीजैसा तुमनेजानना ॥ मैंतौयहजानतीहूं जोपुरुष आपनेहृदयमें साक्षीरूपसेस्थित आत्माकूं नहींजानता सोपुरुषनपुंसकहै पुरुषनहीं ॥ औरजोपुरुष आत्मज्ञानसे रहितहै सोईस्त्रीहै ॥ आत्मज्ञानकरियुक्त मैं स्त्रीनहींहूं ॥ अज्ञानीपुरुष स्त्रीयोंमेंभी निषिद्धस्त्रीवेश्यारूपहै ॥ जैसेवेश्याकूं अनेकपामरपुरुष भोगतेहैं तैसेकामक्रोधलोभमोहअहंकारादिरूपअनेकपुरुष अज्ञानीपुरुषरूपस्त्रीकूं भोगतेहैं ॥ औरमैंतो दुःसहयायौवनअवस्थामें कामक्रोधादिकोंसेरहितहुईस्थितहूं ॥ यातें मैंस्त्रीनहीं किंतुपुरुषहूं ॥ आत्मबोधसहितही पुरुष होवेहै ॥ आत्मबोधशून्यतौ वेश्याजैसीस्त्री है ॥ और हेयाज्ञवल्क्य वास्तवसेतौ स्त्रीपुरुषनपुंसक यहभेदही अज्ञानकृतहै ॥ जैसेएकनट आपनीमायासे अनेकरूपोंकूं धारणकरेहै ॥ तैसेएकही आत्मदेव आपनीमायाकरि अनेकरूपोंकूं धारणकरेहै ॥ परंतु वास्तवसेतौ अद्वितीयब्रह्महै ॥ जैसेस्वप्नमें एकहीद्रष्टा आपनीनिद्राशक्तिकरि हस्ती सिंह पुरुष स्त्रीआदिरूपसे प्रतीतहोवेहै ॥ तैसेएकहीब्रह्मदेव आपनीमायाशक्तिकरि अनेकरूपसे प्रतीतहोवेहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! जैसे काशीकाराजा दिवोदासकापुत्रप्रतर्दन वा जनकराजा आपनेधनुषमें दो बाणोंकूं आरोपणकरिके क्रोधसेशत्रुवोंपर चलावे ॥ तैसेमैंगार्गी दो प्रश्नरूपीबाणोंकूं आपनीवाणीरूपीधनुषमें आरोपणकरिके चलातीहूं ॥ तिनबाणरूपीप्रश्नोंकूं सहारो अर्थयह तिनप्रश्नोंका उत्तरदेवो ॥ याज्ञवल्क्यउवाच॥हेगार्गी तुमप्रश्नकर ॥ गार्गीकहतीभयी ॥ हेयाज्ञवल्क्य ! पृथिवीतथास्वर्गकेमध्यमें होनेहारेसर्वपदार्थ तथापृथिवीकेनीचे तथा पृथिवी औरस्वर्गलोक तथाभूतभविष्यत्‌वर्त्तमान यातीनकालमेंहोनेहारेपदार्थ इत्यादिसर्वपदार्थ किसमेंओतप्रोतहैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ! अव्याकृतआकाश ईश्वर अंतर्यामीनारायण इत्यादिजाके

अनंतनामहैं ॥ तामायाशबलईश्वरमेंही सूत्रात्मापर्यंत सर्वजगत् स्थित है ॥ ऐसेजबीयाज्ञवल्क्यने प्रथमप्रश्नकाउत्तरदीया तबगार्गी यहकहतीभयी ॥ हेयाज्ञवल्क्य! तेरेतांई मेरानमस्कारहै ॥ अब दूसरेप्रश्नके उत्तरकूंकहो ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी! तुमदूसराप्रश्नकरो ॥ गार्गीकहेहै हेयाज्ञवल्क्य! जिसअव्याकृत आकाशमें सर्वनामरूपप्रपंच ओतप्रोतहै सोअव्याकृतआकाश किसमेंओतप्रोतहै ॥ गार्गीके मनमें यह अभिप्रायथा ॥ याज्ञवल्क्य जबीउत्तरकहेगा तबशुद्धब्रह्मकूं वाणीकाअविषयहोनेसे अवाच्यवचनरूपदोषहै ॥ उत्तरनहींकहेगा तबउत्तरकी अस्फूर्तिरूप अप्रतिभानामक निग्रहस्थानकूंप्राप्तहोवेगा ॥ जिसदोषकेप्राप्तहोनेसे उत्तरदाता जीत्याजावे ताकूंनिग्रहस्थानकहेहैं ॥ सोयाज्ञवल्क्य उत्तरकहेगा तबभीजीत्याजावेगा ॥ नहींकहेगा तबभी जीत्याजावेगा ॥ दोनोंप्रकारोंसे गार्गी आपनाजयमानतीहुई पूछती भयी॥ तबयाज्ञवल्क्यभी तागार्गीकेअभिप्रायकूं जानतेहुए॥ यहउत्तरदेते भये ॥ स्थूलतासूक्ष्मतादिधर्मोंसेरहित जोअक्षरब्रह्महै ताशुद्धब्रह्ममेंही अव्याकृतआकाश ओतप्रोतहै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्ताकहेहैं ॥ ऐसेकहनेसे दोनोंदोषोंका याज्ञवल्क्यने निवारणकरा ॥ प्रथमअवाच्यवचनदोषतौ मेरेकूंतबप्राप्तहोता जबकेवलमैंहीकहता ॥ सर्वब्रह्मवेत्ताऐसे कहेहैं यातें अवाच्यवचनरूप प्रथमदोषनहीं ॥ स्थूलतादिसर्वधर्मोंसे रहित अक्षरब्रह्मकूं अव्याकृतआकाशका आश्रयकथनकरा ॥ यातें अप्रतिभानामक दूसरादोषनहीं ॥ अब ताअव्याकृतआकाशके अधिष्ठानरूपअक्षरकाही निरूपणकरेहैं ॥ हेगार्गी! यहअक्षरनामनाशसेरहित तथाव्यापक जो ब्रह्महै सोह्रस्व दीर्घ लोहित स्नेह छाया तम इनसर्वसेंरहितहै तथाइनसर्वसेंभिन्नहै ॥ पृथिवीआदिपंचभूतोंसें तथाशब्दस्पर्शादिकोंसें रहितहै तथातिनपृथिवीआदिकोंसें भिन्नहै ॥ हेगार्गी! यहअक्षरआत्मा भोक्तृत्वभोग्यत्वादिकधर्मोंसेंरहितहै ॥ और

यहशुद्धअक्षरही आपनीमायाशक्तिसाथमिलकरि सूर्यचंद्रादिकोंकूं आपनीआज्ञाविषे चलावेहै ॥ हेगार्गी याअक्षरब्रह्मकीआज्ञाविषे स्वर्गलोक तथापृथिवीलोक इत्यादिलोकस्थितहैं ॥ याअक्षरब्रह्मकी आज्ञाविषे निमेष मुहूर्त्त दिन रात्रि पक्ष मास ऋतु वर्ष युग कल्प इत्यादिकालस्थितहै ॥ हेगार्गी! पर्वतोंसेंनिकसकरि पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिणादिदिशावोंमें चलनेहारी श्रीगंगायमुना नर्मदादिनदीयां याअक्षरब्रह्मकी आज्ञामेंवर्त्तेहैं ॥ और हेगार्गी! फलप्रदाता याअक्षरआत्माकूं मानकरिही दातापुरुष अन्न वस्त्र गौ स्वर्णादिकोंका दानकरेहैं ॥ औरताअक्षरकूं मानकरिकेही श्रेष्ठपुरुष दातापुरुषकीस्तुतिकरेहैं ॥ औरयजमानपुरुषके आश्रयहोइकरि देवता पितर आपनाजीवनकरेहैं ॥ सोदेवतादिकोंका यजमानकेअधीनहोनांभी ताअक्षरकी आज्ञासें जानना ॥ महान्‌शक्तिवालेइंद्रादिकभी यजमानकेअधीनही परमेश्वरनेरचेहैं ॥ हेगार्गी जोपुरुष याअक्षरकेज्ञानविना यालोकमें अग्निहोत्रयज्ञ तप दानादिअनेककर्मकरेहै तिनसर्वकर्मकाफल विनाशीहीउत्पन्नहोवेहै ॥ योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वाऽस्माल्लोकात् प्रैतिसकृपणः ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष याअक्षरकेजानेविना यालोकसें मृत्युकूंप्राप्तहोवेहै सोपुरुष कृपणहैनाममहादीनहै ॥ और जोपुरुषयाअक्षरब्रह्मकूंजानकरि याशरीरकात्यागकरेहै ॥ सोविद्वान्‌ब्राह्मणहोवेहै ॥ अर्थयह ब्रह्मस्वरूपहूआमुक्तहोवेहै ॥ हेगार्गी यह अक्षर नेत्र श्रोत्र मन बुद्धिआदिकोंका अविषयहूआभी आपद्रष्टाश्रोतामंताविज्ञातादिरूपहै ॥ चैतन्यरूपहोनेसें द्रष्टृत्वादिक मुख्यआत्माविषेहीहैं ॥ नेत्रादिकोंविषेतौ आत्माकेअधीनही रूपादिकोंकेदर्शनकासामर्थ्यहै ॥ औरहेगार्गी याअक्षरसेंभिन्न द्रष्टाकोईनहींहै ॥ तथा याअक्षरसेंभिन्न श्रोतामंताविज्ञातानहींहै ॥ याब्रह्मात्मारूपअक्षरमेंही अव्याकृतआकाश ओतप्रोतहोइकरिस्थितहै ॥ अर्थयह मायाका

आश्रय निर्विभाग शुद्धचितिहै ॥ ऐसेयाज्ञवल्क्यसें श्रवणकरि ता-याज्ञवल्क्यकूं गार्गीनमस्कारकरतीभयी ॥ औरसागार्गी ब्राह्मणोंकूं यहकहतीभयी ॥ हेब्राह्मणा मैंसत्यकहतीहूं तुमसर्वश्रवणकरो ॥ या-याज्ञवल्क्यसे तुमनेव्यर्थहीविवादकाआरंभकराहै ॥ जबतुम याया-ज्ञवल्क्यमुनिकेतांई नम्रस्कारकरोगे तवहीतुम कल्याणकूं प्राप्तहोवोगे॥ औरइसयाज्ञवल्क्यके जीतनेकी इच्छाकवीकरणीनहीं यहतौ सर्वज्ञपु-रुषहै ॥ ऐसीअनेकप्रकारकी याज्ञवल्क्यकीस्तुतिकरतीहूई सागार्गी पश्चात् तूर्ष्णींहोइजातीभयी ॥ गार्गीकेवचनोंकूं श्रवणकरि सर्वब्राह्म-ण याज्ञवल्क्यकेतांई नमस्कारकरतेभये ॥ परंतुएकशाकल्यनामब्रा-ह्मणनमस्कारकूं नकरताभया ॥ ऐसे या अष्टमगार्गीब्राह्मणमें अक्षरब्र-ह्मका पारमार्थिकरूपवर्णनकराइति ॥ पूर्वअंतर्यामीब्राह्मणमें सूर्यचं-द्रादिदेवतावोंका प्रेरकअंतर्यामी परमात्माहै यहकह्याथा ॥ तिनप्रेर-णेयोग्यदेवतावोंके विस्तारसंकोचद्वारा तापरमेश्वरके निर्णयवासते-ही यहनवमशाकल्यब्राह्मणहै ॥ देवतावोंकीसंख्याके प्रश्नोंकेउत्तर याज्ञवल्क्यमुनिनेसर्वकहे ॥ परंतुसोशाकल्य कालकरिप्रेराहूआ प्रश्नों-सें उपराम न होताभया ॥ अनेकप्रश्नोंकेउत्तर देतेपश्चात् याज्ञवल्क्यता-शाकल्यकूं यहकहतेभये ॥ हेशाकल्य तुमप्रश्नोंसेंउपरामहोइजावो ॥ जबशाकल्यनिवृत्तनभया तबयाज्ञवल्क्ययहकहतेभये ॥ हेशाकल्य जबसूर्यभगवान्‌सें मेनेविद्याग्रहणकरीथी तबतासूर्यभगवान्‌ने मेरेकूं यह कह्याथा ॥ जोपुरुष तेरेमेंस्थितमेरी विद्याका तिरस्कारकरेगा तिसकामैंशिरकाटदेवूंगा ॥ पुनःमेने नानावरोंकूंलेकरि तासूर्यभगवा-न्‌कूं क्षमाकरवाई ॥ पश्चात्सूर्यभगवान् यहअवधिकरतेभये ॥ हे-याज्ञवल्क्य! जोपुरुष वीस २० प्रश्नपर्यंतभी निवृत्तनहोगा तादुरा-त्माका मैंशिरकाटदेवूंगा ॥ तबमैंतासूर्यभगवान्‌सें भयभीतहूआतू-ष्णींहोइजाताभया ॥ यातेंतुमारामृत्युनहोवे ॥ ऐसेकहनेसेंभीशाक-

ल्य द्वेषकूं नत्यागताभया ॥ तबअंतमेंयाज्ञवल्क्यने यहवचनकहा ॥ तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि ॥ अर्थयह ॥ हेशाकल्य तिस उपनिषदोंकारि जाननेयोग्य आत्माकूं मैंतेरेसेंपूछताहूं ॥ जबीतुमयासर्वके अधिष्ठानआत्माकूं नहींकहेगा तबतेरामस्तक पृथिवीपरगिरजावेगा ॥ जबशाकल्य उत्तरकहनेकूं समर्थनहींभया तबशाकल्यकामस्तक पृथिवीपरगिरगया ॥ तबसर्वब्राह्मणभयभीतहोइजातेभये ॥ शाकल्यकीहीसर्वलोकनिंदाकरतेभये ॥ तबयाज्ञवल्क्य ब्राह्मणोंकूं यहकहतेभये तुमसर्वही प्रश्नकरो मैं उत्तरदेवूंगा ॥ जबकिसीब्राह्मणने प्रश्ननहींकरा ॥ तबयाज्ञवल्क्य आपहीप्रश्नकरतेभये ॥ विस्तारभयसे याशाकल्यकेप्रश्न तथायाज्ञवल्क्यकेप्रश्नलिखेनहीं इति ॥ ॥इति बृहदारण्यकेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ ॐ नमःस्वप्रकाशचिदात्मने ॥ पूर्वपंचमाध्यायमें जल्पकथासे ब्रह्मकानिरूपणकरा अब षष्ठाध्यायमें वादकथासे ताब्रह्मकानिरूपणकरेहैं ॥ पंचमाध्यायकेअंतमें विज्ञानानंदरूपब्रह्मकानिरूपणकराहै ॥ ताब्रह्मकी प्राणवागादिकोंके अधिष्ठातावायुअग्निआदिकोंमें ब्रह्मदृष्टिरूपउपासनाके विधानवासते प्रथमदोब्राह्मणहैं ॥ प्रथमब्राह्मणकानाम षडाचार्यब्राह्मणहै ॥ दूसरे ब्राह्मणकानाम कूर्चब्राह्मणहै ॥ विद्याकीस्तुतिवासते कथादिखावेहैं ॥ जबयाज्ञवल्क्यमुनिकेशापकारि ॥ शाकल्यमृत्युकूंप्राप्तभया ॥ और सारात्रिव्यतीतभयी प्रातःकालविषे राजाजनक आपनीसभामेंविराजमानभया ॥ तथायाज्ञवल्क्यमुनि अत्यंतसत्कारकूंप्राप्तहुए तासभामें विराजमानहोतेभये ॥ तबराजाजनक नम्रतासहितहुआ याज्ञवल्क्यमुनिकूं यहकहताभया ॥ हेभगवन् आपसदृशमहात्मा केवलहमलोकोंके उद्धारवासतेही यापृथिवीमंडलमेंविचरतेहैं आपकृपाकारि मेरेकूंउपदेश करो जिसकूंग्रहणकारि मैंमोक्षकूंप्राप्तहोवूं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हे राजन् तेरेतांईजोऋषियोंनेपूर्व उपदेशकराहै सोमेरेकूं श्रवणकरावो

पश्चात् मैंतेरेतांईकहूंगा ॥ तबराजा जोऋषियोंने देवतावोंकीउपासना-रूपउपदेश कराथा ताकूंकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउनउपासनावोंमें न्यूनताकहतेहुए ताउपासनाकीपूर्तिकूं कथनकरतेभये ॥ तबराजा जनक गुरुदक्षिणा एकसहस्रगौदेनेकूं कहताभया ॥ याज्ञवल्क्य यह कहतेभये ॥ हेराजन् मेरेकूंआपनेपिताने यहउपदेशकराथा जोशिष्यके कृतार्थहुएविना गुरुदक्षिणाग्रहणकरणीनहीं ॥ ऐसेलोभरहितयाज्ञवल्क्यमुनिकूं देखकरिराजा आपनेकूर्चनामसिंहासनकूं त्यागताहुआ दंडवत्प्रणामकरिके तायाज्ञवल्क्यमुनिकूं यहकहताभया ॥ हेमुने तेरेतांईमेरावारंवारनमस्कारहै ॥ संसारसमुद्रविषेडूबरहाजोमैंहूं तिसमेरेकूं आपकृपाकरि शीघ्रबाहिरनिकासो ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेराजन् यहइंद्ररूपआत्मा जागरितअवस्थामें दक्षिणनेत्रमेंस्तिथहोवेहै ॥ औरबुद्धिरूपइंद्राणी वामनेत्रमेंस्थितहोवेहै ॥ जागरितअवस्थामें नेत्रश्रोत्रादिइंद्रियोंसे नानाप्रकारकेभोगोंकूं सोइंद्रभोगताहुआ नाडीरूपद्वारकरि स्वप्नकूंअनुभवकरेहै ॥ तथासुषुप्तिमें परमानंदकूं प्राप्तहोवेहै ॥ औरवास्तवसे यहआत्मा स्थूलसूक्ष्मसंघातसेरहितहै ॥ यहआत्मा कर्मइंद्रियोंकरिग्रहणहोवेनहीं ॥ देहइंद्रियादिकोंकेनाशहोनेसे आत्माकानाशहोवेनहीं ॥ औरयाअसंगआत्माका किसीकेसाथवास्तवसे संबंधनहींहै ॥ हेजनक याआत्माकूंजानकरि तूंअभयपदकूंप्राप्तभयाहै॥ जनकउवाच ॥ हेभगवन् आपमेरेकूंअभयरूपताका बोधनकरतेहो ॥ यातेंआपकेतांई मेरावारंवारनमस्कारहै ॥ मेरेविदेहदेशोंकूं आपभोगवासतेग्रहणकरो ॥ औरयहमेरादेहभी आपकीसेवाविषे सर्वदातत्पर रहे ॥ मेरेकूंआपनादासजानकरि आपनेचरणोंविषेराखो ॥ ऐसेवचनकूं श्रवणकरि याज्ञवल्क्यमुनि आपनेआश्रममें चलनेकासंकल्पकरतेहुए राजाजनककूं यहकहतेभये ॥ हेराजन् यहदेश तथाधन तथातुमाराशरीरयह सर्वहीहमारेहैं ॥ परंतुहमारीआज्ञासे तुमयादेशकाराज्यकरो तुम

हमारेदासहो तुमारी इसीप्रकारकीश्रद्धाभक्ति सर्वदाबनीरहे ॥ ऐसेकथनकरिकै याज्ञवल्क्यमुनितौ आपनेआश्रममें चलेआवतेभये ॥ काल पाइकरि राजाजनक अग्निहोत्रमेंतत्परहुआ ताआत्मज्ञानकूं विस्मरण करताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिभी लोकोंसे यहश्रवणकरतेभये तथादिव्यदृष्टिसे यहजानतेभये जोराजाजनकनेआत्मज्ञानकूं विस्मरणकराहै ॥ तबयाज्ञवल्क्यमुनि आपनेमनमें यहविचारकरतेभये ॥ अबजनककूं जातेही आत्मउपदेशकरेंगे ॥ औरव्यवहारकीवार्त्ता करणीनहीं ॥ ऐसेविचारकरि जनककीसभामें सोयाज्ञवल्क्यमुनि प्राप्तहोतेभये ॥ आगे राज्ञाजनकने आपनीसभामें त्रैवर्णिकपुरुषोंकूं यहकह्याथा ॥ जोतुम अग्निहोत्रविषे प्रश्नकरो॥मैंसर्वकेउत्तरदेवूंगा॥तबयाज्ञवल्क्यमुनि अग्निहोत्रमें नानाप्रकारकेप्रश्नकरतेभये ॥ राजाजनक संपूर्णप्रश्नोंकेउत्तरोंकूं कहताभया ॥ तबराजाकीबुद्धिकीकुशलताकूं देखकरि परमप्रसन्नहुए याज्ञवल्क्यमुनि वरदेतेभये॥राजाजनक कामप्रश्नरूपवरकूं मांगताभया॥ जैसे शाकल्य बहुतप्रश्नकरणेसे मृत्युकूंप्राप्तभया ॥ तैसेबहुतप्रश्नोंके करणेसे यायाज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरि मैंभीमृत्युकूं प्राप्तनहींहोवूं ॥ याअभिप्रायसे प्रश्नसमुदायरूपवरकूं सोजनकराजामांगताभया ॥ ऐसे कामप्रश्नरूपीवरकूं प्राप्तहुआ राजाजनकप्रश्नकरताभया ॥ जनकउवाच ॥ हेभगवन् यहस्थूलसूक्ष्मसंघातरूपपुरुष किसप्रकाशकज्योतिकरिके अनेकव्यवहारोंकूंकरैहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेराजन् याआदित्यरूपज्योतिकरिके यहसंघातरूपपुरुष आसनादिव्यवहारकरैहै ॥ तथायाआदित्यकरिकेही देशांतरोंमेंगमनकरैहै तथागमनकरिके कर्मकरैहै ॥ तथादेशांतरोंसे आगमनकरैहै ॥ जनकउवाच ॥ हेभगवन् जबसूर्यअस्तहोवैहै तबयासंघातका प्रकाशकज्योतिकौनहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेजनक तबचंद्रमाकरिके यापुरुषका पूर्वकह्यासर्वव्यवहारसिद्धहोवैहै ॥ जनकउवाच ॥ भगवन् जबसूर्यचंद्रमादोनोंअस्तहो-

इजावें तबयापुरुषकाकौनज्योतिहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ तबअग्निही यासंघातकाज्योतिहै ॥ जनकउवाच ॥ भगवन् जबसूर्यचंद्र यहदोनों अस्तहोइजावें औरअग्निशांतहोइजावे तबकौनज्योतिहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ तबवाग्हीज्योतिहै ॥ जाअंधकारमें आपनाहाथभी नहींदिखाजाता ताअंधकारमें दूसरेपुरुषकेकहनेसे पुरुष आसनादि सर्व व्यवहारकरेहैं ॥ यातेंसूर्यचंद्रअग्निइनतीनोंकरि जहांप्रकाशनहीं तहां वाग्रूपज्योतिसेही व्यवहारहोवैहै ॥ जनकउवाच ॥ भगवन् जास्वप्नअवस्थामें सूर्यादिच्यारोंकाप्रकाशनहीं तहांकिसज्योतिकरिसर्वव्यवहारहोवैहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ तास्वप्नावस्थामें साक्षीआत्मारूपज्योतिकरिके सर्वव्यवहारसिद्धहोवैहै ॥ जनकउवाच ॥ भगवन् देहइंद्रिय प्राण मन बुद्धि इनमें कौनज्योतिआत्माहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेराजन् देहइंद्रिय प्राण मन बुद्धिआदिकोंसेभिन्न देहइंद्रियादिकोंकीचेष्टाकरानेवाला स्वयंज्योतिआत्माहै ॥ बुद्धिउपाधिकहोनेसे ताआत्माकूं विज्ञानमयभीकहेहैं ॥ सोविज्ञानमयआत्माही बुद्धिकेसाथमिलकरि लोकपरलोकमेंतथाजागरितस्वप्नमें गमनआगमनकरेहै ॥ जैसे अग्निकरितपायेलोहके चतुष्कोणादिकेहोनेसेअग्निभीचतुष्कोणादिरूपप्रतीतहोवैहै। ध्यायतीवलेलायतीव॥ अर्थयह॥ तैसेलोहप्रविष्टअग्निकीन्यांई बुद्धिकेध्यानकरते आत्माभीध्यानकरतेकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ और बुद्धिप्राणादिकोंकेचलनेसे आत्माभीचलतेकीन्यांईप्रतीतहोवैहै॥ वास्तवसेताआत्मामें ध्यानादि तथाचलनादिनहींहैं ॥ काहेते जोयहबुद्धिउपाधिकविज्ञानमयआत्मा जबजागरितमेंहोनेहारे स्थूलशरीरकेअभिमानकूं त्यागकरेहै ॥ तथातास्वप्नअवस्थामें अविद्यारचितजागरितकेपदार्थोंका त्यागकरेहै ॥ औरयहविज्ञानमय आपनेकर्मोंकेअनुसार पूर्वशरीरके त्यागरूपमरणकूं प्राप्तहुआ अपूर्वशरीरकेसाथप्राणादिकोंकेसंयोगरूपजन्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ताविज्ञानमयकेही दोस्थानहैं एकतौयहदृश्यमानज-

न्महै दूसराभावीजन्महै ॥ औरतीसरास्वप्नस्थानरूपसंध्यहै ॥ तासंध्यरूपअवस्थामें स्थितहुआपुरुष याजन्मकेशुभाशुभकूंदेखेहै ॥ तथाभावीजन्मकेशुभाशुभकूं देखेहै ॥ औरस्वप्नअवस्थामें आपनेकर्मकेअनुसार स्वप्नकेदेहकूंरचकरि आपहीप्रकाशकरेहै ॥ अत्रायंपुरुषःस्वयंज्योतिर्भवति ॥ अर्थयह ॥ यास्वप्नावस्थामें यहआत्मा स्वयंज्योतिहीप्रकाशकहै ॥ आदित्यादिप्रकाशक स्वप्नअवस्थामेंहैनहीं वागादिकउपसंहारकूंप्राप्तहोइरहेहैं ॥ औरमन आपहीविषयरूपकरि प्रणामकूं प्राप्तहोइरहाहै ॥ यातेंस्वप्नअवस्थामें आत्माकूं स्वयंज्योतिरूपसे वर्णनकराहै ॥ तास्वप्नअवस्थामें रथनहींहैं तथारथकेचलानेवालेअश्वनहींहैं तथारथकेचलनेयोग्यमार्गनहींहैं व्यावहारिकरथादिकोंके अभावहुएभी तास्वप्नमें आपनीअविद्याकेबलसे तिनरथादिकोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तैसेजागरितमें होनेहारेसर्वसुख तथातडागनदीयां इत्यादिसर्वजगत् स्वप्नमेंव्यावहारिकनहींहैं ॥ केवलआपनीअविद्याकरिके यहविज्ञानमय तास्वप्नअवस्थामें तिनसर्वकूंउत्पन्नकरेहै ॥ तास्वप्नअवस्थामें दृग्रूप यहआत्मा उत्पन्नभयेमिथ्याभूतसर्वपदार्थोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ औरयह आत्माप्राणकरिके यास्थूलशरीरकीरक्षाकरेहै ॥ वास्तवसेआपअसंग हुआभी जिनजिनविषयोंमें याकीकामनाहै तिनतिनविषयोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथातास्वप्नअवस्थामें देवादिउत्तमदेहोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथापशुपक्षीआदिनीचदेहोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेअनंतशरीरोंकूं धारणकरताहुआ तथास्त्रीआदिकोंकेसाथ मोदमानहुआ तथा सिंहादिकोंसेभयकूंप्राप्तहुआ यहआत्मास्वप्नकूं अनुभवकरेहै ॥ आराममस्यपश्यंतिनतंपश्यतिकश्चन ॥ अर्थयह हेजनक अज्ञानीपुरुष याआत्माकीक्रीडाकेस्थानस्वप्नरूपसर्वजगत्कूंहीदेखेहैं ताद्रष्टा आत्माकूं कोईदेखेनहीं ॥ जागरितस्वप्नदोनोंतुल्यहैं दोनोंअवस्थामें आत्मास्वप्रकाशहै ॥ औरस्वप्नअवस्थामें जोस्वप्रकाशता श्रुतिमें वर्णनकरीहै सोमुमुक्षु-

केबोधनवासतेंहै ॥ जागरितअवस्थामें सूर्यादिकप्रकाशकोंके संकीर्ण होनेसे आत्माकीस्वयंज्योतिरूपता मुमुक्षुजनोंकूं निर्णयहोवेनहीं ॥ औरसुषुप्तिअवस्थामें मनआदिसर्वकेलीनहोनेसे विशेषज्ञानकाअ-भावहै ॥ यातें मुमुक्षुजनकूं तासुषुप्तिअवस्थामें कोईव्यवहार प्रती-तंहोवेनहीं जाव्यवहारकासाधक आत्माअंगीकारकरे ॥ यातेंतिन जागरितसुषुप्ति इनदोनों अवस्थावोंकूंत्यागकरि केवलस्वप्नअवस्थामें श्रुतिभगवतीने आत्माकीस्वप्रकाशता निरूपणकरीहै ऐसेउपदेशकूंग्रह-णकरिंके राजाजनक याज्ञवल्क्यकूंयहकहताभया ॥ हेमुने आपने मेरेतांईउपदेशकराहै याते आपकेतांईमैं एकसहस्रगौदेताहूं ॥ और हे-भगवन् स्वप्नअवस्थामें आत्माकीस्वप्रकाशतातौकही परंतु स्वप्नअव-स्थामें भयशोकादि जेसंसारधर्महैं तिनसेरहित यथार्थज्ञानकीप्राप्तिवास-ते आपउपदेशकरो ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेराजन् यहविज्ञानमय आत्मा स्वप्नअवस्थामें अनेकप्रकारकीक्रीडाकूंकरताहूआ सुखदुःखकूं अनुभवकरिंके सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरस्वप्नअवस्थामें जिन पुण्यपापकेफलसुखदुःखकूं अनुभवकरेहै ॥ तिनसुखदुःखकेसंबंधसे यहआत्मारहितहै॥ असंगोह्ययंपुरुषः॥अर्थयह॥ जिसहेतुसे यह आत्मा असंगहै इसीवासते यहआत्मा सुखदुःखादिसंसारधर्मोंसे संबंधकूंप्राप्तहो-वेनहीं ॥ हेजनक जैसेएकमहामत्स्य नदीके पूर्व तथापरतीरमेंविचरेहै औरतिनदोनोंतीरोंसे आपअसंगहै तथाभिन्नहै ॥ तैसेंयहआ-त्मा जागरितस्वप्नइनदोनोंस्थानोंकूं प्राप्तहोवेहै औरतिनस्थानों-केसंबंधसेरहितहोनेसे तिनस्थानोंसेभिन्नहै ॥ औरजैसे श्येनपक्षी वागरुडपक्षी अनेकप्रकारकीचेष्टासे श्रमकूंप्राप्तहूआ आपनेपक्षोंकूं संकोचकरिंके नीडविषेधावनकरेहै ॥ तैसेयहविज्ञानमय जागरितस्वप्न-में भ्रमणकरणेसे श्रमकूंप्राप्तहूआ आपनेनीडरूपब्रह्ममें आनंदप्राप्तिवास-ते धावनकरेहै ॥ पूर्वकही हितानामानाडीयोंसें आपनेस्वरूपभूत-

ब्रह्मानंदकूंप्राप्तहूआ नामरूपप्रपंचके ज्ञानसेरहितहोवेहै ॥ जैसेआपनी प्रियास्त्रीसे गाढआलिंनकरणेवाला कामीपुरुष सुखकूंअनुभवकरताहुआ बाह्यघटादिकोंकूं अंतरदुःखादिकोंकूंजानेनहीं ॥ तैसेसुषुप्तिअवस्थाविषे अंतःकरणरूपउपाधिकेलीनहोनेसे ब्रह्मकेसाथएकताकूंप्राप्तहूआ यहविज्ञानमय बाह्यअंतरप्रपंचकूं जानेनहीं ॥ सुषुप्तिअवस्थामें जिसब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूं यहविज्ञानमयप्राप्तहोवेहै सोब्रह्म सर्वकाम पापशोकादि अनात्मधर्मोंसेरहितहै औरतासुषुप्तिअवस्थामें ब्रह्म स्थूलशरीरादिकोंकेसंबंधसेरहितहै याविज्ञानमयकूं ताब्रह्मसे अभिन्न होनेसे ताविज्ञानमयकापिताअपिताहोवेहै ॥ माताअमाताहोवेहै ॥ ऐसेयास्थूलशरीरके सर्वधर्मोंसेरहितहूआ तथापुण्यपापकेफलसुखदुःखसेरहितहूआ सर्वशोकादिकोंसेरहितहोवेहै ॥ औरहेजनक ! सुषुप्तिअवस्थामें नामरूपप्रपंचकूं आत्माजानेनहीं सो आत्मानेप्रपंचकूं नजानना प्रपंचकेहीअभावहोनेसेहै ॥ कोईआत्माकेअभावसेनहींहै ॥ जिसहेतुसे साक्षीकूटस्थआत्माकी स्वरूपभूतजादृष्टिहै तादृष्टिका कदाचित्नाश होवेनहीं ॥ औरतासुषुप्तिअवस्थामें साभासअंतःकरणनहीं है चक्षुआदिकरणनहीं हैं रूपादिविषयनहींहैं ॥ यातेंहीताअवस्थामें नामरूपप्रपंचकूं आत्माजानेनहीं ॥ ऐसेहीसुषुप्तिअवस्थामें घ्राणकरिगंधकूं जानेनहीं ॥ रसनाकरिरसकूंजानेनहीं ॥ वाणीकरि शब्दकूंकथनकरे नहीं ॥ श्रोत्रकरि ताशब्दकूंश्रवणकरेनहीं ॥ मनकरि किंचित्मननकरे नहीं ॥ त्वगइंद्रियकरिस्पर्शकरेनहीं ॥ बुद्धिकरि किसीकेनिश्चयकूंकरे नहीं ॥ पूर्वकहीरीतिसे तासुषुप्तिमें प्रमाताप्रमाणप्रमेयका अभावहोनेसे श्रोत्रादिइंद्रियोंकरि शब्दादिकोंकेज्ञानहोवेनहीं॥जागरितस्वप्नमें साभास अंतःकरणरूपप्रमाताहै इंद्रियादिरूपप्रमाणहैं रूपादिविषयहैं॥इसीवासते जागरितस्वप्नमें भिन्नभिन्नरूपादिकोंकूं तिननेत्रादिकोंकरिके देखेहै ॥ ऐसेउपाधिकरि तीनअवस्थाकूं प्राप्तहोनेवालाआत्मा वास्तवसेशुद्ध

है ॥ सलिलएकोद्रष्टाऽद्वैतोभवति ॥ अर्थयह ॥ हेजनक यहआत्मा शुद्धजलकीन्यांई शुद्धहै यातेंताआत्मामें विजातीय भेदनहीं ॥ एककहनेसे संजातीय भेदका वारणकरा ॥ अद्वैतहैनाम द्वितीय-हस्तपादादिकों करिके होनेहारे स्वगत भेदसे रहितहै ॥ ऐसे विजातीय सजातीय स्वगतभेदसेरहितहोनेसे यहआत्मास्वप्रकाशद्रष्टाहै तथापरम-पुरुषार्थरूपहै ॥ औरविज्ञानमयआत्माकी यहआत्माहीपरमगतिहै ॥ ब्रह्मलोकादिकोंकीगतितौ अपरमहैं ॥ तिनसर्वगतियोंसे यहआत्माही गतिनाम परमगंतव्यस्थानहै ॥ औरकुबेरकीसंपत्कीन्यांई परमसंप-त्रूपहै तथास्वप्रकाशपरमानंदरूपहै ॥ एतस्यैवानंदस्यान्यानिभूतानि मात्रामुपजीवंति ॥ अर्थयह ॥ इसआनंदरूपआत्माके लेशमात्रआनं-दकूं ग्रहणकरिकै चक्रवर्त्तीराजासेलेकरि हिरण्यगर्भपर्यंत सर्वभूतआनं-दीहोइरहेहैं ॥ चक्रवर्त्तीराजासेलेकरि हिरण्यगर्भपर्यंत शतशतगुणअ-धिकआनंदकह्याहै सोतैत्तिरीयउपनिषत्मैं हमकथनकरिआयेहैं ॥ ऐसे उपदेशकूं श्रवणकरिके राजायहकहताभया ॥ हेभगवन् ! आपनेमेरे-तांईविद्याकाउपदेशकराहै यातें सहस्रगौवोंकूं मैं आपकेतांईदेताहूं ॥ औरजिसउपदेशसे मेरामोक्षहोवे ताउपदेशकूं आपकृपाकरिकहो ॥ राजाकेमनमें अभिप्राययह जोवास्तवसे असंगआत्माभी अविद्याकरि जागरितस्वप्नके भोगप्रदकर्मोंकेक्षीणहोनेसे सुषुप्तिमें ब्रह्मानंदकूं प्राप्त होवैहै ॥ पुनः तिनकर्मोंकरि जागरितस्वप्नकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अवस्थात्र-यसेविवेककरेभी जन्ममरणरूपसंसारकेहेतु अविद्याकामकर्मके युक्ति-योंकरि ननिराकरणकरणेसे याउपदेशसेभी मुक्तिहोवेनहीं ॥ यातेंकर्तृ-त्वभोक्तृत्वादिकोंकानिवर्त्तक मोक्षकेकरणेहारा अबउपदेशकरो ॥ ऐसेप्रश्नकूंश्रवणकरि याज्ञवल्क्यमुनि भयकूं प्राप्तहोतेभये ॥ भयप्राप्तहो-नेमेंनिमित्तयह ॥ जोमेरेहजारोंशिष्यहैं परंतुयाजनकराजाकेसदृश कोई बुद्धिमान्नहींहै ॥ जिसजनकने एकवरकरिके संपूर्णमेरीविद्या ग्रहण

करीहै ॥ वररूपपाशकरिके मैंनिरुद्धहुआ अबविद्याकूंकहूं ॥ ऐसेमनमेंविचारकरि अविद्याकरिप्राप्तहोनेहारेसंसारकूं प्रथमयाज्ञवल्क्यमुनि वर्णनकरतेभये ॥ हेजनक ! जैसेस्वप्नकेभोगप्रदकर्मके क्षीणहोनेसे यह जीव जागरितकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तैसेशरीरकेनिमित्तभूतप्रारब्धकर्मके क्षीणहोनेसे अन्यशरीरकूं जीवप्राप्तहोवेहै ॥ पूर्वशरीरकेत्यागमें दृष्टांतकूंश्रवणकरो ॥ जैसेकिसीधनीका कोईशकट अनेकपदार्थोंकरिपरिपूर्णहोवे ॥ जबसोधनी किसीनगरमें शकटसहित गमनकरेहै ॥ तबसो शकट अनेकपदार्थोंकरिपूर्णहोनेसे मार्गविषे शब्दोंकूंकरताहुआ मंदमंद गमनकरेहै ॥ ऐसेजीवरूपीधनीका पुण्यपापरूपीपदार्थोंसे पूर्णहुआ सूक्ष्मशरीररूपीशकट यास्थूलदेहके त्यागकालमें नानाप्रकारके शब्दोंकूं करताहुआ परलोकविषेगमनकरेहै ॥ मरणकालमें प्रियपुत्रस्त्रीआदिकोंकेवियोगसे यहकहेहै ॥ हापुत्र हाजाये नवयौवने हाधनजोमेरेकूं बहुतक्लेशोंसे प्राप्तभयाथा हामित्र हाबंधुजन ॥ धिक्कारहैमैंपापीकूं जो इनकूंत्यागकरिअत्यंतदूरमार्गविषे एकलाहीमैंचलाहूं ॥ औरमैंनेबालकोंकूं बहुतताडनकराहै ॥ तथादेवतावोंकेमस्तकमें आपनेपादोंका स्थापनकराहै ॥ औरजिसमाताने मेरेकूं बहुतदुःखोंसेउत्पन्नकरा तथा मेरामलमूत्र आपनेहस्तोंसे जामाताने उठाया तथाबहुतयत्नोंसे मेरापालनकरा तामाताका मैंनेपालन न करा॥ उलटातामाताकूं मैंनेदुःखदीया तथातामाताकूं दुःसहकठोरवचनकहे ॥ जामाताकाउपकार किसी प्रकारसे दूरनहींहोईसकता तामाताकेहितवचन मैंनेअंगीकार नकरे ॥ केवलआपनीस्त्रीके तथाआपनेशरीरके पालनपोषणमेंही आसक्तरहा ॥ धिक्कारहैमेरेकूं जिसमैंने ऐसेउपकारकरणेवालीमाताका तिरस्कारकरा॥ औरपिता तथा वेदवेत्ताब्राह्मण तथासंतजन तथा सुहृज्जन इत्यादिकोंकूं मैंनेकठोरवचनकहे ॥ औरअभक्ष्यमांसादिमैंनेभक्षणकरे ॥ और अपेयमदिरादि मैंनेपानकरे ॥ औरलोकवेदविरुद्धही सर्वकर्मकरे ॥ यो-

वनअवस्थामें प्रियायुवतीकाहीचिंतनकरा ॥ जैसेउत्तमपुरुष आपनेकल्याणवासते शिवविष्णुआदिदेवतावोंकासर्वदा चिंतनकरेहैं ॥ तैसेयौवनअवस्थाविषे आपनी तथापरकीस्त्रीयोंकाहीमैनेचिंतनकरा ॥ तिनस्त्रीयोंकीकूकरसूकरयोनियोंमेंभीप्राप्ति होतीरही तिनक्लेशकरणेहारेविषयोंकाहीध्यानकरा ॥ औरआपनेकल्याणवासते तिनशिवविष्णुआदिकोंका ध्यानकरानहीं ॥ हा महान्‌शोकहै यहदुर्लभमानुष्यदेह व्यर्थही खोइदीया ॥ औरदुष्पूरलोभकेनित्यवृद्धहोनेसे साधुवोंके तथाब्राह्मणोंके गृहक्षेत्रधनादिक मैनेहरलीये ॥ ऐसेयौवनअवस्थामैं संपूर्णदिन लोभकरिके मैनेव्यतीतकरे॥औरसर्वरात्रि स्त्रीयोंसेक्रीडाकरतेही व्यतीतकरी॥ औरजेब्रह्महत्यादिघोरपाप मैनेकरेहैं तेपापमेरेकूं अबमहान्‌दुःखदेवेंगे॥ जबमैंवृद्धअवस्थाकूंप्राप्तभया तबकामक्रोधलोभादि अत्यंतअधिक होइगये ॥ तिनकामक्रोधलोभादिकोंकरि मैनेअसमर्थहोनेसे अत्यंतदुःखकूंही अनुभवकराहै ॥ औरयावृद्धअवस्थामें पुत्रस्त्रीआदिकोंकरिके महान्‌तिरस्कारकूं मैनेसहनकराहै ॥ औरशरीरतौ मेरासर्वथा जीर्णहोइगया परंतुकामक्रोधलोभादिवैरी जीर्णनभये ॥ जैसे काष्ठोंकरि अग्नि दिनदिनविषे प्रज्वलितहोवेहै तैसेदिनदिनविषे यावृद्धअवस्थामें मेरेकामक्रोधादि वृद्धिकूंप्राप्तहोतेगये ॥ अबमृत्युभी मेरेमारणेवासते समीपआयाहै ॥ हाकष्टहै मेरेकूंकोईकाटताहै ॥ जैसेहिंसकपुरुषपशुकीहिंसाकरेहैं तैसेमेरेअंगोंकूं कोईकाटताहै ॥ जैसेबहुत सूचीयोंकरि केईपुरुष किसीकेशरीरकाभेदनकरें ॥ तैसेमेरेअंगोंकूं कोईभेदनकरिरहाहै मेरेकूंदिखतानहीं ॥ औरमेरेहस्तपाद काष्ठकेसदृशजड़होतेजावेहैं ॥ जैसे दुर्दांतपशु आपनेवशहोवेनहीं तैसेनेत्रश्रोत्रमनआदि मेरेअधीनरहेनहीं ॥ नेत्रोंसें मेरेकूंकुछ दिखतानहीं श्रोत्रोंसे श्रवणहोवेनहीं ऐसेऔरसर्वइंद्रियोंके व्यापारहोवेंनहीं ॥ जाठरअग्नि पवनसहितहूआ मेरेशरीरका दाहकरि रहाहै ॥ जैसेकोईको-

टिवृश्चिक किसीपुरुषकूं वारंवारकाटैंतिनकेकाटनेसे जितनीतापुरुष-
कूं पीडाहोवेहै ॥ तैसीहीअबमरणकालमें मेरेकूंपीडाहोइरहीहै ॥
हेजनक ऐसेअनेकप्रकारकेशब्दोंकूं उच्चारणकरताहूआ यास्थूलदेहका
त्यागकरेहै ॥ जैसेसुषुप्तिअवस्थामें यहजीवविशेषज्ञानसेंरहितहूआ
ब्रह्मानंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसेमरणकालमैं विशेषज्ञानसेंरहितहूआ
यहजीवदीर्घऊर्ध्वश्वासलेताहूआ कारणोपाधिकईश्वरसे अभिन्नहोवेहै॥
जबजराअवस्थासे तथाज्वरादिकव्याधियोंसे अत्यंतकृशताकूं यह
देहप्राप्तहोवेहै ॥ तबयादेहकात्यागकरेहै ॥ जैसेआम्रादिकफल पक्क
हूए पृथिवीपर अवश्यगिरेहैं ॥ तैसेशरीरकेहेतु प्रारब्धकर्मके क्षीण
होनेसे जीवआत्मा यादेहकात्यागकरेहै ॥ यादेहकूंत्यागकरि पापों-
की अधिकताहोनेसे अनेकप्रकारकीनरकोंमें पीडाकूंअनुभवकरेहै ॥
जबीपूर्वदेहकेउत्पादक वासनातथाकर्मके तुल्यहीवासनातथाकर्महो-
वें तबपूर्वदेहकेसदृशही दूसरेदेहकूंप्राप्तहोवेहै ॥ विनाब्रह्मबोधसे या-
सूक्ष्मशरीरका विनाशहोवेनहीं ॥ हेजनक जैसेराजाकेकिंकरादि कि-
सींदेशांतरसेआनेवालेआपनेराजाकी प्रतीक्षाकरेहैं ॥ तैसेजीवजबपूर्व
स्थूलदेहका त्याग करेहै तबदूसरे स्थूलशरीरकेजनक जेभूतहैं तेभू-
तदूसरेशरीरमें याजीवकीप्रतीक्षाकरेहैं ॥ हेराजन् जबयहजीवअन्य-
लोकमेंगमनकरेहै तामेंदृष्टांतकूंश्रवणकरो ॥ जैसेराजाकेकिसीदेशके
गमनसमयमें ताराजाकेभृत्यादिक संपूर्णसाथहीगमनकरेहैं ॥ तैसेजब
मरणकालमैं यहजीव ऊर्ध्वश्वासोंकूलेताहै तबवागादिइंद्रिय मुख्यप्रा-
णसहित याजीवकेसाथही गमनकरेहैं ॥ तबयहशरीर श्मशानभूमिके
योग्यहोवेहै इति ॥ पूर्वज्योतिब्राह्मणमैं प्रथमआत्माके स्वप्रकाशरूप-
कूं कथनकरिके अंतमैं आविद्यकसंसारकावर्णनकरा ॥ तासंसारके
निरूपणवासते तथासंसारकीनिवृत्तिकेनिरूपणवासते यहशारीरकना-
माब्राह्मणहै ॥ जबयहशरीर अतिनिर्बलताकूंप्राप्तहोवेहै तबयहजीव

आपनेपुत्रादिकोंकूंजानेनहीं तथावागादिक इंद्रियोंकूंग्रहणकरिके हृदयमेंस्थितब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताब्रह्ममेंएकताकूंप्राप्तहूआ नेत्रादिकइंद्रियोंसें दर्शनादिकरेनहीं ॥ जबीमरणकालमैं पृथिवीपर शयनकरेहै तबपासमैं स्थितपुरुष यहकहेहैं ॥ जोअबयहनहींदेखता तथानहीं श्रवणकरता नहींमननकरता ॥ जबसर्वइंद्रियोंकूं उपसंहारकरि हृदयमेंस्थितहोवेहै तब हृदयकानाडीरूप अग्रभाग चैतन्यकेआभासकरिके प्रकाशितहोवेहै ॥ ताप्रकाशितनाडीरूपमार्गकरि नेत्रश्रोत्रमुखनासिकादिद्वारसे प्राणोंसहितबाह्य गमनकरेहै ॥ गुदासेनरकीपुरुष बाह्यगमनकरेहै लिंगइंद्रियसे कामीका निकसनाहोवेहै ॥ अन्नरसमेंआसक्त पुरुष मुखसेनिकसेहै ॥ गंधमें आसक्तपुरुष नासिकासेनिकसेहै ॥ गायनकेजाननेवाला श्रोत्रसेंनिकसकरि गंधर्वलोककूंप्राप्त होवेहै ॥ नेत्रसे निकसकरि 'सूर्यकूंवाचंद्रकूंवा अग्निकूंप्राप्तहोवेहै ॥ मस्तकसेंनिकसनेवाला ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेनेत्रश्रोत्रादिमार्गोंकेज्ञानवालाहूआ पुनः भाविशरीरके ज्ञानवालाहोवेहै ॥ पूर्वजन्मकीविहितनिषिद्धउपासना तथाविहितनिषिद्धकर्म तथापूर्वजन्मकेसंस्कार यहतीनों इसजीवकेसाथगमनकरेहैं॥औरयहजीव स्थूलशरीरविनास्थितहोवेनहीं॥ जैसेतृणजलौकानामकजीव उत्तरदूसरेतृणकूंग्रहणकरिकेही पूर्वतृणका त्यागकरेहै॥तैसेयहजीवभी उत्तरदेहकूं ग्रहणकरिकैही पूर्वदेहकात्यागकरेहै॥औरताआत्मामें गमनआगमनादिकसर्व बुद्धिकेसंबंधकरिकै आरोपितहैं ॥ वास्तवसेआत्मामें गमनागमनादि नहीं हैं ॥ जैसेस्वर्णकार स्वर्णकूंग्रहणकरिकै पूर्वरचनासे नवीनकुंडलादिरूप रचनाकूं करेहैं ॥ तैसेआत्मा अविद्यारूपीस्वर्णसे नवीनही देहकूंउत्पन्नकरेहै ॥ पूर्वशुभकर्मोंसे उत्तमपितृलोकमें तथागंधर्वलोकमें वा विराट्लोकमें वा हिरण्यगर्भलोकमें देहकूंप्राप्तहोवेहै ॥ मिश्रितकर्मोंसे मनुष्यादिदेहोंकूंप्राप्त होवेहै ॥ अधमकर्मोंसे श्वानशूकरादिदेहोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ यहबंधके-

वलउपाधिकरिकैही कल्पितहै वास्तवनहीं ॥ याअर्थकेकहनेवासते तिनउपाधियोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेजनक ! यहब्रह्महो बुद्धिकेसाथ अध्यासकरणेसे विज्ञानमयकहीयेहै ॥ मनकेसाथअध्यासकरणेसे मनोमयकहीयेहै ॥ ऐसे प्राणमय चक्षुर्मय श्रोत्रमयकहीयेहै ॥ पृथिवीके शरीरकेसाथ अध्यासकरणेसे पृथिवीमयकहीयेहै ॥ ऐसेहीआपोमय वायुमय आकाशमय तेजोमय तिनतिनभूतोंके देहोंकेसाथ अध्यास करणेसे वायुमयइत्यादिरूपजानने ॥ और पशुप्रेतादिकोंकेशरीर अतेजोमयहैं ॥ आत्माभीतिनशरीरोंसाथमिलकरि अतेजोमयकहीयेहै ॥ कार्यशरीरोंकेसाथमिलकरि अनेकवृत्तियोंकेभेदकरिआत्मा काममय अकाममय क्रोधमय अक्रोधमय धर्ममय अधर्ममय सर्वमय इत्यादि रूपवालाहोवेहै ॥ प्रत्यक्षघटादिरूप आत्माहीहोवेहै ॥ यातें आत्माकूं इदंमययहकह्याहै ॥ परोक्षपदार्थरूपभीआत्माहीहोवेहै यातें आत्माकूं अदोमयकह्याहै ॥ देहइंद्रियादिकोंकेसाथमिलकरि आत्माजैसेकर्मकरेहै तैसेहीदेहकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरयासंसारका असाधारणकारणतौकामहै॥ जैसापुरुषकेकामहोवेहै ॥ तैसाहीतापुरुषकानिश्चयहोवेहै ॥ तानिश्चयकेअनुसारही पुरुषकर्मकरेहै ॥ जैसेकर्मकरेहै तिनकर्मोंकेअनुसार तैसेहीफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जिसपदार्थमें इसपुरुषका दृढआसक्तमनहै कर्मोंसहित तिसपदार्थकूंहीप्राप्तहोवेहै॥ यामनुष्यदेहमें जेकर्मकरेहैं तिनकर्मोंकेफलकूं परलोकादिकोंमेंभोगकरि यापृथिवीलोकमें पुनःप्राप्तहोवेहै ॥ पुनःपृथिवीमेंकरेकर्मकेफलकूं भोगकरियापृथिवीमंडलमें पुनःप्राप्तहोवे है ॥ ऐसेकामनावालापुरुष यासंसारमें घटीयंत्रकीन्यांई प्राप्तहोवेहै यातें मुमुक्षुजनोंकूं कामनासेरहितहोनाचाहिये ॥ और हेजनक ! जोपुरुष आत्माविषेही कामनावालाहै सोईपुरुष आप्तकामहै ॥ यातेंहीतापुरुषकी अंतरबाह्य सर्वकामना निवृत्तभयीहैं ॥ नतस्यप्राणाउत्क्रामंति ब्रह्मैवसन् ब्रह्माप्येति ॥ अर्थयह ॥ निवृत्तकामतिसजीवन्मुक्तकेशरी-

रसे बाह्यप्राणनिकसेनहीं ब्रह्मविषेहीलीनहोवेहैं ॥ औरसोज्ञानी पूर्व ब्रह्मरूपहुआही ब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ कामनाहीप्रतिबंधथा कामनाके निवृत्तहोनेसे शरीरकालमेंही ब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जैसेसर्प आपनीत्वचाकूं आपनास्वरूपनजानताहुआ तात्वचाकात्यागकरेहै ॥ तैसेजीवन्मुक्त पुरुष स्थूलसूक्ष्मशरीरमें आत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरि अशरीरसाक्षीअ-मृतब्रह्मविज्ञानघनरूपसेस्थितहोवेहै ॥ ऐसेजनकउपदेशकूंग्रहणकरिके यहकहताभया ॥ हेभगवन् आपकेतांईमैंसहस्रगौदक्षिणादेताहूं ॥ राजानेतत्त्वज्ञानतौश्रवणकरा परंतुतातत्त्वज्ञानकेकारण साधनोंकेजान-नेकीइच्छावालाहुआ पूर्वकीन्यांई प्रश्नकरताभया ॥ जनकउवाच ॥ भगवन् आपज्ञानकेसाधनोंकूंभीकथनकरो ॥ तबयावल्क्यमुनि आ-त्मज्ञानकेसाधनोंकूं मंत्रोंसेकथनकरतेभये ॥ तिनमंत्रोंकेअर्थ ईशावास्य कठ इत्यादिउपनिषदोंमेंहमकथनकरिआयेहैं ॥ जिनमंत्रोंकेअर्थनहीं कहे तिनमंत्रोंकासंक्षेपसेअर्थकहेहैं ॥ हेजनक यहज्ञानरूपमोक्षका मार्ग सूक्ष्महैं तथासंसारसमुद्रकेपारकरणेहाराहै तथावैदिकहोनेसे यहज्ञान-मार्गपुराणहै ॥ औरयाज्ञानमार्गकरिके ब्रह्मचर्यादिसाधनयुक्तहुएविद्वान् यादेहकूंत्यागकरि मोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ हेजनक यहज्ञानमार्ग मेरेकूंप्राप्त भयाहै ॥ ऐसेज्ञानमार्गकीस्तुतिवासते इतरनाडीआदिमार्गोंकीनिंदाक-थनकरीहै ॥ पुनःज्ञानमार्गविषेस्थितपुरुषके क्लेशोंकीनिवृत्तिकूं यहमंत्र कथनकरेहै ॥ आत्मानंचेद्विजानीयादयमस्मीतिपूरुषः! किमिच्छन्क-स्यकामाय शरीरमनुसंज्वरेत् ॥ अर्थयह ॥ यानित्यअपरोक्षपूर्णआ-त्माकूं हृदयमेंस्थित क्षुधातृषादिधर्मोंसेरहित जबीअधिकारीजाने तब आत्मासेभिन्न किसफलकीइच्छाकरताहुआ किसभोक्ताकेवासते तथा किसफलकीप्राप्तिवासते शरीरोंकेदुःखीहोते आपदुः खीहोवे ॥ तात्पर्य यह विवेकीपुरुषप्रारब्धानुसार शरीरोंके दुःखीहोतेभी आपकूं असंगनि-र्विकारमानताहुआ तपायमानहोवेनहीं ॥ याश्रुतिकेव्याख्यानकरते श्री-

विद्यारण्यस्वामीने पंचदशीनामकग्रंथमें चिदाभासकीसप्तअवस्थाकथनकरीहैं ॥ अज्ञान आवरण विक्षेप परोक्षज्ञान अपरोक्षज्ञान शोकापगम निरंकुशतृप्ति यहसप्तअवस्थाहैं ॥ जैसे सरलमतिवाले दशपुरुष नदीसे पारउतरकरि दशमपुरुषकूं नदीमें वहगयामानतेभये ॥ तादशमकूं नजाननायहहीअज्ञानहै ॥ दशमनहींहै औरदशमभाननहींहोता इनदोनोंव्यवहारोंकाकारण असत्त्वापादक तथाअभानापादक दोप्रकारकायहआवरणहै ॥ दशमकेशोकसे रोनापीटनारूपविक्षेपहै ॥ कृपालुपुरुषकेकहनेसे दशमकहींजीवताहै यहज्ञानपरोक्षज्ञानहै ॥ दशमतूंहै यहवचनश्रवणकरते दशममैंहूं यहज्ञान अपरोक्षज्ञानहै ॥ दशमके लाभहोनेसे शोककीनिवृत्तिकानाम शोकापगमहै ॥ दशमकेलाभहोने सेही पश्चात्होनेहारेपरमआनंदकानाम निरंकुशतृप्तिहै ॥ तैसेयहचिदाभासरूपजीव विषयोंमेंआसक्तहुआ आपनेस्वरूपकूंजानेनहीं आपने स्वरूपकूंनजानना यहअज्ञानरूप प्रथमअवस्थाहै ॥ औरप्रसंगसे यहकहेहै कूटस्थनहींहै ॥ औरकूटस्थ नहींभानहोता यहद्विविधआवरणहै ॥ कर्त्ताभोक्तासुखीदुःखी कामीक्रोधी क्षुधातृषावाला बलीनिर्बलइत्यादिरूपविक्षेपहै ॥ गुरुकेउपदेशसे प्रथमकूटस्थहै ऐसाज्ञानहोना परोक्षज्ञानहै ॥ विचारकरणेसे पश्चात् मैंही कूटस्थहूं ऐसेअपरोक्षज्ञानकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ताअपरोक्षज्ञानकूं प्राप्तहुआ कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूप शोककूं निवृत्तकरेहै ॥ औरकरणेयोग्य मैंनेकरिलीया प्राप्तहोनेयोग्यकूंमैं प्राप्तभया ऐसीनिरंकुशतृप्तिकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेसप्तअवस्थाप्रसंगसे दिखलाईहैं ॥ और हेजनक यहआत्मा अनेक अनर्थयुक्तदेहमें प्रविष्टहुआभी स्वयंज्योतिरूपहै तथासर्वअनात्मधर्मोंसेरहितहै ॥ यहआत्माही सर्वप्रपंचकाकर्त्ताहै याआत्माकेजाननेवालाब्राह्मणभी सर्वप्रपंचका कर्त्ताहोवेहै ॥ तथाताब्राह्मणकाही सर्वप्रपंचआत्माहै सोप्रपंचताब्राह्मणसेभिन्ननहींहै ॥ ऐसेयथार्थब्रह्मकेस्वरूपकूं निश्चयकरो ॥ याभारत-

खंडमें मानुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकरि मानुष्यदेहमेंभी शूद्रादिकअनधिकारीदेहसेभिन्न उत्तमदेहकूं प्राप्तहोइकरि तथारोगादिउपद्रवोंकेनहोतेभी जबहमआपनेस्वरूपकूं नजानेतबहम अनंतवारजन्ममरणादिरूप अत्यंतहानिकूं प्राप्तहोवेंगे ॥ यातें ऐसेदुर्लभ मानुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकरि क्षणिकविषयसुखकूं त्यागकरि जेपुरुषआत्माके यथार्थरूपकूं जानतेहैं तेपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ और आत्माके यथार्थरूपकूं नजाननेवाले पुरुषोंकेवासते चौरासीलक्षयोनिवर्त्तमानहैं ॥ तिनयोनियोंविषे तेअज्ञानीपुरुषविषयरसास्वादी महान्दुःखकूं अनुभवकरेहैं ॥ हेजनक सूर्यादिज्योतियोंकाज्योति सर्वकाअधिष्ठान आकाशकीन्यांईव्यापक तथा अजन्मा नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावयाआत्माकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशसे जानकरिआत्माकारवृत्तिकूंही मुमुक्षुपुरुषकरे ॥ औरअनात्मवार्त्ताके कहनेसे कंठशुष्कहोवेहै औरमनकूंविक्षेपहोवेहै ॥ ऐसेआत्माकूं जाननेवालेविद्वान्की पापकर्मोंसेकिंचित्हानिनहीं पुण्यकर्मोंसेकिंचित्वृद्धि नहीं ॥ अभिप्राययह जोविद्वान् सर्वप्रपंचकूंमिथ्याजाननेवाला तथा परमानंदस्वरूप आपनेकूंमानताहुआ पापोंविषे कर्तृत्वबुद्धिकेअभावसे प्रवृत्तहोवेनहीं ॥ औरजेपिपीलिकामर्दनादि अज्ञातपापहैं तिनसेलिपायमानहोवेनहीं ॥ पूर्वजन्मकेसंचित पुण्यपापोंकाज्ञानरूप अग्निकरि भस्मीभावहोवेहै ॥ कमलपत्रमेंजलकीन्यांई आगामीकर्मलिपायमान होवेंनहीं प्रारब्धकाभोगकरिनाशहोवेहै ॥ ऐसेसर्वबंधरहितहुआविद्वान् मोक्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेजनक ऐसेआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतेहीवेदकापठन यज्ञ दान तप इत्यादि साधनहैं ॥ और या आत्माकेजाननेकीइच्छा करतेहुए अधिकारीजनविधिपूर्वक विविदिषासंन्यासकूं धारणकरेहैं ॥ और याआत्माकूंजानकरीभी जीवन्मुक्तिकेसुखकीप्राप्तिवासते पुत्र वित्त लोक इनतीनोंकीएषणाकूं त्यागकरि विद्वत्संन्यासकूं विधिपूर्वकग्रहणकरेहैं ॥ औरहेजनक साधनोंसेविना जिसवासते आत्माकी प्राप्तिहोवेनहीं इसीवासते बाह्यइंद्रियोंकेनिरोधरूपदमसहितहोवे ॥ तथा

शांतमनहूआ संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरे ॥ तथाश्रद्धातथाशीतोष्णादि-द्वंद्वोंकासहनरूपतितिक्षा तथाचित्तकी सावधानता इनसाधनोंसहितहूआ आपनेअंतःकरणमें आपनेस्वरूपकूंप्रत्यक्षकरे ॥ ताआत्माकेप्रत्यक्षकर-णेसे सर्वपुण्यपापादिकोंकूंदूरकरि निःसंदेहहूआ ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेजनक ऐसेअभयब्रह्मकूंतूंप्राप्तभयाहै ॥ जनकउवाच ॥ हेभगवन् आ-पकीकृपाकरि मैं अभयब्रह्मकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यातेंमेरेविदेहनामदेशोंकूं आपग्रहणकरो और मेराशरीरभीआपकीसेवामेंलगे मेरेकूंआपनासेवक जानकरिग्रहणकरोइति ॥ ॥ पूर्वयुक्तियोंसेआत्माकानिरूपणकरापुनः आगमप्रधानतासे आत्माकेनिरूपणवासते तथासंन्यासकूंब्रह्मविद्याकी अंगताके निरूपणवासते मैत्रेयीब्राह्मणहै॥ याउपनिषत्के चतुर्थाध्यायमें तथा षष्ठाध्यायमें पठनकरे मैत्रेयीब्राह्मणका अर्थकहेहैं॥ ऐसेसूर्यकेशिष्य याज्ञवल्क्यमुनि जनकादिकराजावोंकूं तथाअनेकब्राह्मणोंकूं वेदविद्या-का उपदेशकरतेभये॥ वृद्धावस्थाकूं प्राप्तहुएयाज्ञवल्क्य विषयोंमें अनेक दोषोंकूंदेखकरि परमवैराग्यकूंप्राप्तहुए संन्यासाश्रमके ग्रहणका संकल्प करतेभये ॥ तायाज्ञवल्क्यमुनिकींदोभार्याहोतीभयी ॥ एककानामका-त्यायनीथा दूसरीकानाम मैत्रेयीथा॥ कात्यायनीतौ गृहकार्योंमेंबहुत-निपुणमति होतीभयी ॥ दूसरीज्येष्ठाभार्यामैत्रेयी परमवैराग्यकूं प्राप्त होतीभयी ॥ औरसंसारकूं दुःखरूपजानकरि उत्कटमोक्षकीइच्छाकूं करतीभयी ॥ याज्ञवल्क्यमुनिसंन्यासकेग्रहणकालमें आपनीज्येष्ठाभा-र्यामैत्रेयीकूं बुलायकरि यहकहतेभये ॥ हेमैत्रेयी ! तेरेकूंतथाकात्या-यनीकूं भिन्नभिन्नधनदेकरि मैंतुमाराविभागकराचाहताहूं ॥ औरमेरा संन्यासलेनेकासंकल्पहै ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि अबमैत्रेयीकहेहैं ॥ सर्वापृथिवीवित्तेनपूर्णास्यात्कथंतेनामृतास्याम् ॥अर्थयह॥ हेभगवन्! यहधनकरिपूर्ण सर्वपृथिवी जबमेरेकूं प्राप्तहोवे तबताधनकरि तथाध-नकरिहोनेहारे अग्निहोत्रादिकर्मोंकरि क्यामैंमुक्तहोवूंगी ॥ याज्ञवल्क्य-

उवाच ॥ हेमैत्रेयी! धनकरिकेयालोकमें अनेकभोगप्राप्तहोवेहैं धनके प्राप्तहोनेसे भोजनआच्छादनादिकोंकरिके तेराजीवनाहीहोवेगा ॥ अमृतत्वस्यतुनांशास्तिवित्तेन ॥ अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी! मोक्षकीतौ ताधनकरिके आशाभीकरणानहीं ॥ मैत्रेयीकहेहै ॥ हेभगवन्! जिसधनकरि मेरामोक्षनहींहोना ताधनकूं मैंक्याकरूंगी ॥ जोआपमोक्षकासाधनजानतेहैं तासाधनकूंही मेरेतांई कृपाकरिकथनकरो॥ याज्ञवल्क्यउवाच॥ हेमैत्रेयी तूंमेरेकूं प्रथमभीप्रियरूपसेज्ञातथी अबभीमेरेअनुकूलहीकथन करतीहैं ॥ अबमैंतेरेतांई मोक्षकेसाधन आत्मज्ञानकूंकथनकरताहूंतूं सावधानहोइकरिश्रवणकर ॥ प्रथमयाज्ञवल्क्यमुनि आत्मज्ञानकेसाधन वैराग्यकीउत्पत्तिवासते कथनकरेहैं ॥ नवाअरेपत्युःकामायपतिः प्रियोभवत्यात्मनस्तुकामायपतिः प्रियोभवति ॥ अर्थयह ॥ अरेमैत्रेयी वैनाम यहवार्त्तासंसारविषेप्रसिद्धहै भार्याकूंपतिकेप्रयोजनवासते पतिप्रियनहींहै किंतु आपनेप्रयोजनवासतेही भार्याकूंपतिप्रियहै ॥ ऐसे पतिकूं जायाकेप्रयोजनवासते जायाप्रियनहींहै किंतु आपनेप्रयोजनवासते पतिकूंजायाप्रियहै ॥ हेमैत्रेयी पुत्र धन ब्राह्मणजाति क्षत्रियजाति भूरादिलोक देवता भूत इत्यादिसर्वजगत् आपनेप्रयोजनवासतेहीप्रियहै ॥ पुत्रादिकोंकेप्रयोजनवासते पुत्रादिकप्रियनहीं ॥ यातेंऔरसर्वजगत्में गौणीप्रीतिहै आत्मामेंमुख्यप्रीतिहै ॥ आत्मावाअरेद्रष्टव्यः श्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यः ॥ अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी परमप्रीतिकाविषयजोआत्माहै सोआत्मा साक्षात्कर्त्तव्यहै ॥ ताआत्माके साक्षात्कारवासते शास्त्रआचार्यसे श्रवणकर्त्तव्यहै ॥ तथाभेदबाधकयुक्तियोंसे मननकर्त्तव्यहै ॥ तथावारंवारध्यानकर्त्तव्यहै ॥ हेमैत्रेयी आत्माके श्रवणमननिदिध्यासनपूर्वक प्रत्यक्षकरणेसे सर्वप्रपंचका ज्ञानहोवेहै औरहेमैत्रेयी भेदरहितयाआत्मासे जोकोईपुरुष ब्राह्मणजाति तथाक्षत्रियजातिकूं भिन्नजानताहै ॥ ताभेदद्रष्टाका साब्राह्मणजा-

तितथाक्षत्रियजातितिरस्कारकरेहैं ॥ नीचजातिकूंप्राप्तहोइकरि तिन-ब्राह्मणादिउत्तमजातियोंकी प्राप्तिनहोनी यहहीतिनजातियोंकातिरस्कारहै ॥ ऐसेस्वर्गादिलोक तथादेवता तथाभूतादिसर्वजगत् ताभेदद्रष्टाका तिरस्कारकरेहै ॥ यातें अभिन्नआत्मामें भेददेखनानहीं ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय लोकदेवादिंसर्वजगद्रूपसे यहआत्माही प्रतीतहोवेहै ॥ हेमैत्रेयी जैसे दुंदुभि शंख वीणा इनसेउत्पन्नभये जे अनेकप्रकारकेविशेषशब्दहैं ॥ तिनसर्वशब्दोंमेंरहणेहारे शब्दत्वरूपसामान्यकेग्रहणविना तिनदुंदुभीआदिकोंसे उत्पन्नभयेविशेषशब्दोंका ज्ञानहोवेनहीं ॥ किंतुशब्दत्वरूपसामान्यके ग्रहणहोनेसेही तिनविशेषशब्दोंका ज्ञान होवेहै ॥ तैसे अस्ति भाति प्रियरूपसे व्यापकजोआत्माहै ताआत्माकेभानविनाकिसीपदार्थकी प्रतीतिहोवेनहीं ॥ ऐसेयहसर्वजगत् ब्रह्ममेंस्थितहै यामें दुंदुभीआदिकदृष्टांतकहेहैं ॥ उत्पत्तिमें अग्निकादृष्टांतहै ॥ जैसेप्रज्वलित अग्निसे धूमविस्फुलिंगादि उत्पन्नहोवेहैं ॥ तैसेयाविभुआत्मासे पुरुषकेश्वासकीन्यांई चारिवेद इतिहास पुराण विद्या उपनिषत् मंत्र सूत्र विवरणवाक्यादिसर्वजगत्उत्पन्नहोवेहै ॥ अबप्रलयकालमें प्रपंचकीब्रह्ममें अभिन्नताविषे दृष्टांतकहेहैं ॥ हेमैत्रेयी जैसेसर्व नदीयोंकिजलोंका समुद्रआश्रयहोवेहै ॥ तैसेसर्वस्पर्शोंका त्वक् आश्रयहै ॥ रसोंका जिह्वा आश्रयहै ॥ गंधोंका नासिकाआश्रयहै ॥ रूपोंकाचक्षु तथाशब्दोंकाश्रोत्रआश्रयहै ॥ सर्वसंकल्पोंका मनआश्रयहै ॥ ऐसेसर्वविषयोंके इंद्रियोंकूंआश्रयताजाननी ॥ पूर्वकहेदृष्टिसृष्टिवादके अभिप्रायसे शब्दादिविषयोंका श्रोत्रादि इंद्रियकारणहैं ॥ यातेंशब्दादिविषय आपनेकारणश्रोत्रादिकोंमें लीनहोवेहैं ॥ श्रोत्रादिइंद्रिय आपने कारणआकाशादिभूतोंविषे लीनहोवेहैं ॥ सर्वभूत मायाशबलब्रह्मविषे लीनहोवेहैं ॥ अबआत्यंतिकप्रलयमें दृष्टांतकहेहैं ॥ जैसेलवणकाखंड जलमेंगेराहूआ जलभावकूंही प्राप्तहोवेहै ॥ ताविलीनलवणखंडकूं

पुनःकोईपुरुष निकाससकेनहीं ॥ तैसेहेमैत्रेयी त्रिविधपरिच्छेदशून्य जोयहविज्ञानघनआत्माहै भूतोंकरि शरीरकेउत्पन्नहोनेसे यहआत्माभी प्रतिबिंबरूपसे उत्पन्नहोवेहै ॥ ब्रह्मवेत्ताकेशरीराकारभूतोंके नाशहोनेसे अमुकदेवदत्तनामामैंहूं अमुककापुत्रहूं मेरायहक्षेत्रहै मेरायहधनहै इत्यादिसर्वविशेषज्ञान नष्टहोवेहैं ॥ अबमैत्रेयी प्रश्नकरेहैं ॥ हेभगवन् आपनेमेरेतांई मोहकेउत्पन्नकरणेहारा वचनकह्याहै ॥ पूर्वआपने आत्मा विज्ञानघनहै ऐसे कह्याथा अबयहकहतेहो जोमृत्युकूंप्राप्तहूआ ज्ञानसे रहितहोवेहै ॥ यातेपूर्वउत्तरविरोधहोनेसे मेरेकूंमोह उत्पन्नहोवेहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेमैत्रेयी याशरीरकाही नाशहोवेहै अविनाशीआत्माकानाशहोवेनहीं औरशरीरकेविनाशहोनेसे मनआदिकोंसेहोनेहारे विशेषज्ञानका अभावकह्याहै विज्ञानघनस्वप्रकाशनित्यआत्माका कदाचित्नाशहोवेनहीं ॥ और अज्ञानकालमेंही अज्ञानीआपकूं भिन्न मानताहूआ स्वभिन्नगंधकूं ग्रहणकरेहै ॥ तथारूपकूंदेखेहै ॥ शब्दकूं श्रवणकरेहै तथावाणीकरि शब्दकाउच्चारणकरेहै ॥ इतरकूंमनन करेहै ॥इतरकूंही निश्चयकरेहै॥यत्रत्वस्यसर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकंपश्येत्तत्केनकं जिघ्रेत् ॥ अर्थयह ॥ जाज्ञानकालमें इस विद्वान्के सर्वनामरूपप्रपंच आत्मरूपताकूंही प्राप्तभयाहै ॥ ताज्ञानकालमें किसइंद्रियकरि रूपकूंदेखे तथागंधकूंग्रहणकरे तथाकिसकाकथन किसकामनन किसका निश्चयकरे॥विदेहकैवल्यावस्थामें इंद्रियादिकोंकेअभावहोनेसे किसीपदार्थकाभी दर्शन श्रवणमननादिहोवेनहीं ॥ और हेमैत्रेयी जाआत्माकरि नामरूप प्रपंचकूं यहपुरुषजानेहै ताआत्माकूं किससाधनकरिजाने ॥ सर्वके विज्ञाता आत्माकूं कोई श्रोत्रादि विषयकरिसकेनहीं ॥ ऐसे याज्ञवल्क्यमुनिमैत्रेयीकूंउपदेशकरिके संन्यासाश्रमकूंग्रहणकरतेभये॥और प्रारब्धकूं भोगकरि क्षयकरतेहूए मोक्षकूंप्राप्तहोतेभये ॥ इतिबृहदारण्यकेषष्ठोध्यायः ॥ ॥ ॐनमोस्तुतेपूर्णात्मने ॥ पूर्वअ-

ध्यायमें निरुपाधिकब्रह्मका निरूपणकरा अबउपाधिविशिष्टआत्माकी उपासनावोंके निर्णयवासते उत्तरकेदोअध्यायहैं॥ सर्वउपासनावोंके अंगभूत ॐकारदमदानदया इनसाधनोंके विधानकरणेकी इच्छावाली हुईश्रुति जोउपासनाकाविषयब्रह्महै सोवास्तवसेशुद्धहै याअभिप्रायसे शुद्धब्रह्मकेस्वरूपकूं मंत्रसेवर्णनकरेहै ॥ ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ॥ पूर्णस्यपूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ अर्थयह ॥ प्रथम तत्पदकेलक्ष्यकूं पूर्णकहेहै अदःनाम परोक्षजोतत्पदकालक्ष्यब्रह्महै सोब्रह्मपूर्णहै ॥ अबत्वंपदकेलक्ष्यकूंपूर्णकहेहै ॥ इदंनाम यहजोनामरूपउपाधिविशिष्ट व्यवहारकाविषयभयाहै ॥ सोभीनिरुपाधिकरूपकरिकेहीपूर्णहै विशिष्टरूपकरिके पूर्णनहीं ॥ ऐसे दोनोंलक्ष्यअंशोंकूं कथनकरिके अबदोनोंवाच्यअंशोंका निरूपणकरेहै ॥ पूर्णस्यपूर्णमादाय नाम पूर्ण जोकार्यात्माब्रह्म ताकीएकरसतारूप पूर्णताकूं ग्रहणकरिके पूर्णहीशेषरहेहै॥तात्पर्ययह जोआविद्यकउपाधिकृतधर्मोंकेत्यागकरणेसे स्वभावसेशुद्धपरिपूर्णब्रह्महीशेषरहेहै॥ पश्चात् ॐ कारकाध्यानकह्याहै॥ प्रधानॐकारकी उपासनाकथनकरिके दमदान दयाइनतीनसाधनोंकाविधानकरेहैं ॥ प्रजापतिकेसंतानरूप देवता मनुष्य औरअसुर यहतीनों प्रजापतिकेसमीपब्रह्मचर्यकूंकरतेभये ॥ प्रथमदेवता प्रजापतिकूं यहकहतेभये॥ हेभगवन् आपकृपाकरि हमारेतांई उपदेशकरो॥प्रजापति दकारअक्षरका उपदेशकरिके पूछतेभये ॥ हेदेवा तुमनेजानलीयावानहीं ॥ देवाऊचुः ॥ भगवन् जानलीया आपने यहउपदेशकरा है तुमदेवता स्वभावसेभोगोंविषे लंपटहो यातेंतुम इंद्रियोंका दमनकरो ॥ प्रजापतिरुवाच॥हे देवा तुमने यथार्थ जानलीयाहै॥ इसरीतिसे मनुष्योंकूं दकारअक्षरसे दानकाउपदेशकरा औरअसुरोंकूं तादकारअक्षरसेही दयाका उपदेशकरा ॥ यातें यहदैवीवाक् मेघकीन्यांई ददद यहतीनअक्षरोंकरि उपदेशकरेहै ॥ मुमुक्षुजनोंने दमदानदया यहतीनदकारअक्षरोंका
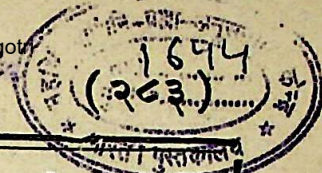
अर्थरूप धारणकरणेयोग्यहैं ॥ ऐसेदमादिसाधनोंकाउपदेश करिके पश्चात्हृदयरूपसे तथासत्यरूपसे ब्रह्मकीउपासनाकहीहै ॥ पुनःतासत्यब्रह्मकी आदित्यमंडलमैं तथादक्षिणनेत्रमैं उपासनाकथनकरी ॥ पुनःतासत्यब्रह्मकी मनउपाधिकरूपसें उपासनाकथनकरिकैं पश्चात् विद्युत् ब्रह्महै ऐसेध्यानविधानकरा ॥ पश्चात्वाणीकीधेनुरूपसें उपासनाकथनकरिके पुनःताब्रह्मकीजाठराग्निरूपसें उपासनाकही ॥ पश्चात्तिनउपासनावोंके फलोंकूंनिरूपणकरिके पुनः अन्नकी तथाप्राणकी ब्रह्मरूपसे उपासनाकथनकरी ॥ पश्चात् प्राणउपाधिकआत्माके उक्थादिगुणोंविशिष्टरूपसे ध्यानकह्या उक्थनामदेहादिकोंके उठानेवालेकाहै ॥ ऐसेहृदयादिअनेकउपाधिविशिष्टब्रह्मकी उपासनाकथनकरिपुनः गायत्रीउपाधिविशिष्टब्रह्मकी उपासनाकही ॥ गायत्रीके चतुर्थपादकरि कथनकराजोसूर्यभगवान् तासूर्यभगवान्केआगे तथाअग्निदेवकेआगे उपासकप्रार्थनाकरैहै ॥ ताप्रार्थनाकेप्रकारकूं हम प्रथम ईशावास्यउपनिषत्में कथनकरिआयेहैं ॥ ॥ इतिबृहदारण्यकेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥

॥ ॐ प्राणाद्यात्मनेनमः ॥ सप्तमाध्यायमें शेषरहीजेउपासनाहैं तिनउपासनावोंकानिर्णय याअष्टमाध्यायमेंकराहै ॥ प्राणउपासनाका तथापंचअग्निउपासनाका प्रथमनिर्णयकराहै ॥ पश्चात्देवयानमार्गका निर्णयकराहै ॥ तथापापीपुरुषोंकूं तिर्यग्योनियोंकीप्राप्तिरूप तृतीयस्थानकावर्णनकराहै ॥ यहसर्वछांदोग्यउपनिषत्मैं हमकथनकरिआयेहैं ॥ पश्चात्कर्मी गृहस्थकेवासते धनकीप्राप्तिकेसाधन श्रीमंथनामककर्मका निरूपणकराहै ॥ पश्चात्ताकर्मीगृहस्थकेवासतेही पुत्रमंथनामककर्मकाविधानकराहै ॥ पश्चात् याविद्याके सांप्रदायिकत्वकेबोधनवासते ब्रह्मविद्याकेप्रवर्त्तकऋषियोंकेवंशकाकथनहै ॥ ॥ इतिबृहदारण्यकेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॐ शांतिः

शांतिः शांतिः ॥ ॐनमोब्रह्मादिभ्योब्रह्मविद्यासंप्रदायकर्तृभ्यो वंशऋषिभ्योनमोगुरुभ्यः ॥ ॥ ॥ नमस्तस्मैभगवते शिवविष्णवादिरूपिणे ॥ यत्कृपालवलेशेन सारमेतत्समुद्धृतम् ॥ १ ॥ भाषाप्रबद्धोयमतीवरम्योग्रंथःसतांहर्षमिहातनोतु ॥ स्वाम्यच्युतानन्दविनिर्मितोयःप्रयत्नतः सज्जनरंजनाय ॥ १ ॥ श्रीमानुपनिषत्साराभिधःसोयंविजृंभताम् ॥ शिष्यप्रशिष्यतच्छिष्यद्वारासर्वत्रभूतले ॥ २ ॥ दयामयामृतात्मानंवंदेशैलसुतापतिम् ॥ यत्पदांबुजयोर्भक्तिर्लोकेकामदुघायते ॥ ३ ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकरभगवत्पूज्य-
पादशिष्यसंप्रदायप्रविष्टश्रीस्वामिलक्ष्मणानन्दगिरिशि-
ष्येणस्वाम्यच्युतानन्दगिरिणाविरचिते प्राकृतो-
पनिषत्सारेबृहदारण्यकसारार्थनिर्णयः॥ १० ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-मुम्बई.